Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दादासाहिब जं० यु० प्र०
श्रीजिनदत्तसूरिचरित-
उत्तरार्द्धम् ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्राचीन पुस्तकोद्धारक फंड ग्रंथांक ३१

॥ अर्हम् ॥

श्रीजिनदत्तसूरिचारितम्।

उत्तरार्द्धम्।

श्री।राचार्यभट्टारक यं० यु० प्र० श्रीजिनकृपाचंद्रसूरीश्वर सदुपदेशात्
उ० श्रीजयसागर गणिना संदृब्धम् सुरतनिवासी जवेरी
श्रेष्ठी श्री कल्याणचंद गेलाभाइआदिकृत द्रव्य-
सहायेन श्रीजिनदत्तसूरि ज्ञानभांडागारेण
प्रकाशितम्

मुम्बापुर्यां
निर्णयसागरमुद्रालये मुद्रयित्वा प्रकाशितम्।

वि० सं० १९८४, सन १९२८.

प्रथमावृत्तिः] मूल्यं १ रूप्यकम्। [प्रति ५००

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

Published by Shet Chaganmalji Jaitaranwala,
Hyderabad Deccan.

Printed by Ramchandra Yesu Shedge, at the Nirnaya-Sagar Press.
26–28, Kolbhat Lane, Bombay.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीजिनदत्तसूरिचरित उत्तरार्ध
विषयानुक्रमणिका.

ग्रंथांक.	विषयानुक्रम.	पृष्ठांक.
१	षष्ठसर्ग मंगलाचरणं	३८९
२	कोटिकगणपट्टावलि संक्षिप्त चरित्	३९०
३	तदंतरगत ६४ योगिनी नाम ५२ वीर ८ भैरव नाम	३९२
४	योगनीयोने ७ वरदानदीया ७ बोल करणा ...	३९४
५	युगप्रधान पदपाया	३९६
६	श्रीजिनदत्त सूरिपद स्थापना	३९८
७	सातवर	४०२
८	युगप्रधान अधिकार गच्छमतादि अधिकार... ...	४०३
९	खरतर विरुद अधिकार	४०७
१०	श्रीजिनेश्वर सूरि आदि पट्टाधि०	४०७
११	राजगच्छाधिकार	४०८
१२	गोत्राधिकार	४१०
१३	साढी बारेज्ञातिनाम	४१४
१४	ओसवालश्रीमाल गोत्र	४१६
१५	युगप्रधानढालां युगप्रधानतप	४१७
१६	युगप्रधान संख्या उदय प्रमाण	४२१
१७	जिनवल्लभसूरि समाचारि प्राकृत	४२२

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ग्रंथांक.	विषयानुक्रम.	पृष्ठांक.
१८	जिनदत्तसूरि समाचारि प्राकृत	४२५
१९	जिनपतिसूरि समाचारि प्राकृत	४२८
२०	व्यवस्थापत्रम् संस्कृत	४३१
२१	तरुणस्त्री मूलना० पूजा निषेध	४३३
२२	स्त्रीआश्रित पूजावि० प्रश्नोत्तर	४४१
२३	ऋतुवंतिसज्झाय	४४७
२४	उत्तराध्ययनका २६ मा समाचारी अध्ययन ...	४५५
२५	गच्छाचारपयन्नो मूल	४५९
२६	सुविहित गच्छ प० आ० प०...	४६९
२७	पट्टावलिपद्यसंस्कृत...	४७०
२८	भाषामे अर्थ	४७२
२९	खरतर शाखा ११ का नाम	४७८
३०	जैन जाति प्रतिबोधका वि०	४७९
३१	जिनदत्तसूरि स्तवन	४८०
३२	गुणसमूह वर्णन	४८१
३३	षष्ठसर्ग समाप्तः	४८४
३४	श्रीजिनदत्तसूरिस्वर्ग जिनचन्द्रसूरि चरित्र ...	४८९
३५	श्रीजिनपतिसूरि चरित्र	४९१
३६	श्रीजिनेश्वरसूरि च० मतान्तरोत्पत्ति	४९३
३७	श्रीजिनप्रबोधसूरि च०	,,
३८	श्रीजिनचंद्रसूरि च०	४९४

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ग्रंथांक.	विषयानुक्रम.	पृष्ठांक.
३९	श्रीजिनकुशलसूरिणां चरित्रम्	४९५
४०	अष्टप्रकारि पूजाज्ञानसारजीकृत	५०२
४१	लघु अष्टप्रकारि पूजा	५०४
४२	श्रीजिनपद्मसूरि च०	५०८
४३	जिनलब्धिसूरि जिनचंद्रसूरि च०	५०९
४४	श्रीजिनोदयसूरिच०	,,
४५	श्रीजिनराजसूरि च०	५१०
४६	श्रीजिनभद्रसूरि च०	,,
४७	श्रीजिनकीर्तिरत्नसूरि च०	५१२
४८	श्रीजिनचंद्रसूरि च०	५१६
४९	लौंकालेखकने लौंकामतनिकाला	,,
५०	श्रीजिनसमुद्रसूरि च०	५२१
५१	श्रीजिनहंससूरि च०	५२२
५२	कडुवालौंकावीजामत पार्श्वचंद्र मतउ०	५२३
५३	श्रीजिनमाणिक्यसूरि च०	५२५
५४	श्रीजिनचंद्रसूरि च०	५२७
५५	उ० धर्मसागर अधिकार तपोटमतउत्पत्ति	५३१
५६	श्रीजिनसिंहसूरिः श्रीजिनराजसूरिः	५४४
५७	श्रीजिनरत्नसूरि श्रीजिनचन्द्रसूरि च०	५४६
५८	ढुंढियामतकी उत्पत्ति	५४७
५९	श्रीजिनसुखसूरि च०	५४८

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ग्रंथांक.	विषयानुक्रम.	पृष्ठांक.
६०	श्रीजिनभक्तिसूरि च०	५४९
६१	श्रीजिनलाभसूरि च०	५५०
६२	श्रीजिनचन्द्रसूरि च०	५५२
६३	श्रीजिनहर्षसूरि च०	५५३
६४	श्रीजिनसौभाग्यसूरि च०	५५५
६५	श्रीजिनहंससूरि च०	५५८
६६	श्रीजिनचंद्रसूरि च०	५५९
६७	श्रीजिनकीर्तिसूरि च०	५६०
६८	श्रीजिनचारित्रसूरि च०	५६१
६९	मंगलाष्टक प्रथम	५६७
७०	मंगलाष्टक द्वितीय	५६८
७१	अरिहाणादिस्तोत्र	५६९
७२	श्रीदादासाहिबकीपूजा	५७३
७३	श्रीदादासाहिबकी आरति	५८५
७४	धर्मस्वरूप कालचक्र	५८६
७५	कालस्वरूप कालचक्र	५८८
७६	छ आरास्वरूप ग्रंथसमाप्त	५८९

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीजिनदत्तसूरिचरित्र अशुद्धिशुद्धिपत्रम्.

पृ० पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
३९३।१४।	श्रीपूज्यनां	श्रीपूज्यानां
४०४।२।	भाक	भावक
४०५।१९।	३३	३६
४२४।१।	विहिण	विहिणा
४४७।१५।	सामाय करे	सामायक करे
४४९।२२।	रोगायं	रोगायंका
४७१।१२।	तत्पदां	तत्पादां
४९६।५।	०	वांदनेको गये
४९६।६।	द	दी
४९७।९।	आकरावाली	आकारवाला
४९९।१४।	वर्णननका	वर्णनका
५०८।२२।	न्नतिकरः	न्नतिकराः
५१०।१४।	पाटण नगमें	पाटण नगरमें
५१५।५।	श्री०	श्री
५१६।१।	वार्थ	टवार्थ
५३०।२।	उहां पांचपर	उहां पांचपीर
५४७।१२।	तत्सप्रदायका	तत्संप्रदायका
,, ।१७।	शास्रधार	शास्राधार
५४८।२।	मुसकिसलसैं	मुसकिलसैं
५५४।१८।	सूरिजीनेने	सूरजीने
५६१।११।	बजिऽगोत्रीय	छाजेडगोत्रीय

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रस्तावना.

अहो देवानुप्रियो, अहो सर्वे सद्गृहस्थो, विचारणा चाहिये, कि वर्त्तमान कालमें इंग्रेजसरकारकी शोभनीक राज्यनीतीसें, और छापेके प्रचारसें, बहुतसें, मतवाले अनेक प्रकारसें, उलटे तथा सुलटे विकल्प करनेवाले विद्यापात्र होते जाते हैं, और अपनी अपनी युक्ति मुजब बुद्धिके फैलावसें, देशका तथा अपनें कुलधर्मका फेर विशेष बुद्धिके दिखलानेकों सर्व मतका इतिहासकिये, और करते हैं, सर्व इसकूलोंमें हिन्दी गुजराति मराटी इंग्रेजी सीखनेंवाले, विद्यार्थियोंकों इतिहास अवश्य सिखातें हैं, परन्तु कितनेक ऐसे पंडित हुवे, सो अन्यमतका किंचित्स्वरूप जाणके अपनी कुयुक्तियोंसें अन्यमतका खंडन वा अन्यमतका इतिहास प्रगट किये हैं और करतें हैं, परन्तु कोई धर्मका असली तत्वसमझेविगर खंडनमंडन करना सो कैसा है कि निरपेक्षविद्वज्जनोंके सन्मुख अपनी मूर्खताका चिन्ह प्रगट करना है, कितनेक इतिहास पुस्तकोंमें जैनधर्मकी उत्पत्ति विषय अनेक अपना अपना झूठा विकल्प करके, जैनोकों स्थापित करतें हैं, (याने जैन धर्मका स्वरूप उत्पत्ति मन्तव्य भेद शाखादिक यथेच्छपणें निरंकुश होके निरूपण कीया है, और करतें हैं, १ कोई लिखता है कि बौद्धमत एक जैनधर्मकी शाखा है, २ कोई लिखता है जैनधर्म बौद्धमतकी एक शाखा है, ३ कोई कालमें यह दोनुं मत एक थे, ४ कोई लिखता है कि जैनमत मछंदरनाथके पुत्रोंका चलाया हुवा है, ५ कोई लिखता है कि क्या जानते नहिं हो, विष्णु भगवान् दैत्योंके धर्म भ्रष्ट करनेंको अर्हतका अवतार

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लियाथा जबसें जैनमत चला है, ६ कोई कहेता है कि हमारे गौतम ऋषिनें नाराज होकर यह जैनमत चलाया है, ७ कोई लिखता है कि और सब बात झूठी, यह जैनधर्म संवत् ६०० के लगभग चला है, इत्यादि अनेक विकल्प जैनधर्म विषई किये हुवे हैं, और करते जातें हैं, औरपिण जैनदेवविषयि जैनगुरुविषयि जैनआचारविषयि, अनेक-विकल्प करतें है, केई कहतें हैं कि जैनधर्मवाले ईश्वर नहिं मानतें हैं, १ केई कहतें हैं कि जैनधर्मवाले ईश्वर मानतें हैं पण भगवानकी नग्न मूर्त्ति रखतें हैं, इसलिये मंदिरमें जाना दर्शन करना न चाहिये, २ केई कहतें हैं जैनलोक कुलाचारसें भ्रष्ट हैं, और कुलाचार करानें-वाले जैनीब्राह्मण कुलगुरुभी नहिं हैं, और जो आचार करतें हैं, सो अन्यमतकी अपेक्षा करते हैं, और आचारशास्त्रभी जैनोंके नहिं हैं इस-लिये नहिं करतें हैं, मलीन अपवित्र वस्त्रवाले दानदयाके उत्थापक गुरु होतें हैं, इत्यादि अनेक झूठे विकल्प किये हुवे पुस्तकोंमें देखके वा को-ईके पास सुनके उन लोकोंकों जो जैनतत्व जाननेंवाले जैनतत्ववेत्ता विद्वज्जन लोक तो अवस्यहि झूठे समजतें हैं, और हास्य करतें हैं, क्योंकि मोहमदिराके नसेमें व्याप्त हुवे, जो वचन नहिं कहेनें लायक हैं, सो कहे देतें हैं, इससें देखा जाता है कि जितने पुराण हैं, उन सबमें एकेकसें विरुद्ध वाक्य हैं, जूदेजूदे ईश्वर मानणेंसें, तथा जूदेजूदे प्रकारसें जगत्सृष्टीकी रचना मानणेंसें एकेककी अपेक्षा एकेक झूठे हो-नेसें, जैनधर्मकी अपेक्षा सर्व झूठे होतें हैं, क्योंकि जैनधर्म तो अने-कांतिक है, और अनादि है, और जीवस्वरूप जगत्कास्वरूप अनादि मानतें हैं, और संसारी सकर्मा जीव अनन्त है, कर्मरहित मुक्तभी अ-नन्त है, और भव्याश्रित संसारी सकर्माजीवोंके साथ कर्मका संबन्ध

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनादि सान्त है, और अभव्याश्रित संसारी सकर्माजीवोंके साथ कर्मका संबन्ध अनादि अनन्त है, और जीवकर्मका संबन्ध अनादि है स्वर्णमृत्तिकाका दृष्टान्त मानतें हैं और रागद्वेषादिक अठारे दूषणोंकरके रहित, सर्व देवगणके पूजनीक, सर्व जीवोंके ऊपर दया भाव धारण करनेंवाले, परमपुरुष परमात्म गुण पायके जो सिद्धिस्थानकमें निश्चल रहे हैं, कभी संसारमें जिसका आवागमन नहिं रहा है, ऐसा ईश्वरको जैनधर्मवाले ईश्वर मानतें हैं, परंतु जगतका रचनेवाला, तथा संहार करनेवाला, रागद्वेषादिकसें अनेक कुकर्म करनेंवाला होय, ऐसे ईश्वरकों जैनीलोक ईश्वर तुल्य न मानतें हैं, और गृहस्थ धर्मका जन्मसें मरणपर्यन्त १६ संस्कार रूप गृहस्थधर्मका संपूर्ण आचार तथा साधुधर्मका संपूर्ण आचार जैनलोक मानतें हैं, क्युंकि जैनधर्ममें मोक्षप्राप्ति ज्ञानक्रिया दोनुंसें होती है, और कोई क्रियाकों उत्थापके केवल ज्ञानकोंहि मानतें हैं, कोई ज्ञानकों उत्थापके केवल क्रियाकोंहि मानतें हैं, ऐसे जो एकान्तिक हैं, उन सबकों जैनीलोक मिथ्यात्वी कहेतें हैं, इत्यादिसंपूर्ण जैनधर्मका स्वरूप तथा ईश्वरका स्वरूप तथा जैनकुलाचारका स्वरूप तो बडेबडे जैन सिद्धान्तोंमें हेतु युक्ति प्रमाण दृष्टान्तोंके विस्तारसें लिखे हुवे हैं, जिसमें बहुत तो जैनाचार जैनजोतिष जैननीतिके ग्रन्थ, कितनेक वर्षोंसें अन्यमति म्लेच्छादिक केई राजावोंके अनीतिके सबबसें विच्छेद तुल्य होगए हैं, तथापि आवश्यकसूत्र, आचारदिनकरादि अनेक आचारग्रन्थ प्रसिद्ध है, जिससें जो विद्वज्जन पुरुष हैं, सो तो संपूर्ण जैन आचारकों जान सक्तें हैं, परन्तु व्याकरणादि बोधरहित सामान्य वर्गवाले सर्व बालजीवोंको उस ग्रन्थोंसें अपना संपूर्ण आचारका जाणपणा नहिं हो सक्ता है, और जैनऐतिहासिक आवश्यकपीठिका महापुरुषचरित्र त्रिषष्टिशलाका

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुरुषचरित्र परिशिष्टपर्वादिक अनेक ग्रन्थ हैं परन्तु संस्कृतादिक शास्त्रीय भाषामें हैं, समूलवर्त्तमान गुरु अर्थात् आचार्यपर्यन्त एकत्रित लोक भाषामें नहिं है, इसलिये वर्त्तमान सद्गृहस्थादिकोंकी प्रेरणासें मैंने मेरी अल्पमतिप्रमाणें बहुत प्रयास करके सर्व जैनधर्मानुरागी भव्यप्राणियोंके, अवश्य जाणनें सीखनें करनें लायक जैनऐतिहासिक युगप्रधान श्रीमज्जिनदत्तसूरिजी चरित्रका दूसरा भाग छपवाके प्रसिद्ध किया है, और सर्व जैनाचारभी यथार्थपणें लोकभाषामें ऐतिहासिक युगप्रधान श्रीमज्जिनदत्तसूरिचरित्रके तीसरे भागमें यदि पाठकगणकी अभिलाषा होगा तो प्रगट करेंगें, यद्यपि इस ऐतिहासिक चरित्रमें श्रीसंघकी तरफसें हरेकतरहकी प्रथम विशेष मदत वा सामग्री मिले विगरहि गुवाज्ञा प्रमाणकर सुरु किया है, इसलिये संभावना है कि कितनेक ठिकाणें सुधारावधाराकी आवश्यकता रह गई है, तथापि सर्व जैन शुद्ध धर्मानुरागियोंके अवश्य उपयोगी पुस्तक है, और ऐसा ऐतिहासिक चरित्र नहिं हैं और न देखा गया है, और बहुत परिश्रमके साथ परउपकारार्थ अनेक ग्रन्थोंसें खंडशः खंडशः कृत्वा उद्धृत्य, उद्धार करके यह ऐतिहासिक चरित्र लिखा है, इसलिये मेरेंकों आशा है, कि गुणग्राही धर्मप्रभावक पुरुष एकदफे आद्योपान्त अवश्य इस चरित्र पुस्तककों लेकर अपने पास रखेंगें और ज्ञानवृद्धि खाते पांचपचवीस पुस्तक लेकर और सर्व ठिकाणें अपना धर्म इतिहासरूप चरित्रकों देकर प्रवर्त्तन करके मेरा परिश्रम सफल करेगें, इत्यलं विस्तरेण, नमोस्तु वर्धमानाय गुरुदीपक गुरुदेवता, गुरुविनघोरअंधार, जे गुरुवाणी वेगला, रडवडी या संसार, समाप्ता इयं प्रस्तावना श्रीगुरुप्रसादात् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीजिनदत्तसूरिचरित सूची

संख्या.	विषयानुक्रम.	पृष्ठांक.
१	मंगलाचरणम्	१
२	भूमिका	४
३	तिर्यक्लोकप्रमाणम्	४
४	मनुष्यलोकस्वरूपम्	४
५	कालस्वरूपम्	६
६	बावनबोलगर्भितश्रीऋषभदेवस्वामीका अधिकार ...	८
७	सो पुत्रोंका नाम	१५
८	राज्याभिषेकम्	१६
९	विनीतानगरीस्वरूपम्	
१०	पुरुषोंकी बहुत्तरकलानामानि	१९
११	स्त्रीयोंकी चोसठकलानामानि	२०–२१
१२	अठारेलिपीनामानि	२१
१३	सर्वकलाकास्वरूप	
१४	विद्याधरोंकीउत्पत्तिः प्रथमविद्याधरनमिविनमिस्वरूपम्	२३–२५
१५	समवसरणरचनाकास्वरूपम्	२७
१६	सांख्यमतस्वरूपम्	२९
१७	जैनब्राह्मणोंकी उत्पत्तिः, मिथ्यात्वी भवनस्वरूपं च	३२
१८	चारवेदोंकी उत्पत्तिः आर्यअनार्यभवनस्वरूपं च ...	३२
१९	यज्ञोपरि याज्ञवल्क्य सुलसा पिप्पलादका दृष्टान्त ...	३५
२०	कैलासअष्टापद महादेवकानिर्वाणादि अधिकार ...	३६

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संख्या.	विषयानुक्रम.	पृष्ठांक.
२१	श्रीअजितनाथस्वामीका पचावनबोलगर्भित अधिकार	४३
२२	सगरचक्रवर्त्तिका अधिकार	४४
२३	जान्हवी गंगोत्पत्तिस्वरूप	४५
२४	श्रीसंभवनाथस्वामीका पचावनबोलगर्भित अधिकार	४६
२५	श्रीअभिनन्दनअधिकार	४८
२६	श्रीसुमतिनाथअधिकार	४९
२७	श्रीपद्मप्रभुअधिकार	५१
२८	श्रीसुपार्श्वनाथअधिकार	५३
२९	श्रीचन्द्राप्रभुअधिकार	५४
३०	श्रीसुविधनाथस्वामीका पचावनबोलगर्भित अधिकार	५६
३१	श्रीशीतलनाथअधिकार	५८
३२	श्रीश्रेयांसनाथअधिकार	५९
३३	श्रीवासुपूज्यअधिकार	६२
३४	श्रीविमलनाथअधिकार	६४
३५	श्रीअनन्तनाथअधिकार	६६
३६	श्रीधर्मनाथस्वामीका अधिकार	६८
३७	श्रीशान्तिनाथअधिकार	७०
३८	श्रीकुंथुनाथअधिकार	७२
३९	श्रीअरनाथअधिकार	७४
४०	श्रीमल्लिनाथअधिकार	७६
४१	श्रीमुनिसुव्रतअधिकार	७८

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संख्या.	विषयानुक्रम.	पृष्ठांक.
४२	श्रीनमिनाथअधिकार	८०
४३	श्रीनेमिनाथअधिकार	८२
	श्रीपार्श्वनाथजीका अधिकार	८४
४४	श्रीवर्धमानस्वामीका अधिकार	८६
४५	श्रीबारेचक्रवर्त्तिअधिकार	९३
४६	श्रीभरतचक्रवर्त्तिअधिकार	,,
४७	श्रीसगरचक्रवर्त्तिअधिकार	,,
४८	श्रीमघवाचक्रवर्त्तिअधिकार	,,
४९	श्रीसनत्कुमारचक्रवर्त्तिअधिकार	,,
५०	श्रीशान्तिनाथचक्रवर्त्तिअधिकार	,,
५१	श्रीकुंथुनाथचक्रवर्त्तिअधिकार	,,
५२	श्रीअरनाथचक्रवर्त्तिअधिकार	,,
५३	श्रीसुभूमचक्रवर्त्तिअधिकार	,,
५४	श्रीपद्मचक्रवर्त्तिअधिकार	,,
५५	श्रीहरिषेणचक्रवर्त्तिअधिकार	,,
५६	श्रीजयचक्रवर्त्तिअधिकार	,,
५७	श्रीब्रह्मदत्तचक्रवर्त्तिसंक्षिप्तअधिकार	,,
५८	बारेचक्रवर्त्तिकी समानऋद्धिअधिकार	,,
५९	नववासुदेव नवबलदेव संक्षिप्तअधिकार ...	९४
६०	श्रीपृष्ठवासुदेव श्रीअचलबलदेव संक्षिप्तअधिकार ...	,,
६१	श्रीद्विपृष्ठवासुदेवश्रीविजयबलदेव ,, ...	,,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संख्या.	विषयानुक्रम.			पृष्ठांक.
६२	श्रीस्वयंभुवासुदेव श्रीभद्रबलदेव संक्षिप्तअधिकार		...	९४
६३	पुरुषोत्तमवासुदेव श्रीसुप्रभुबलदेव	,,	...	,,
६४	श्रीपुरुषसिंहवासुदेव श्रीसुदर्शनबलदेव	,,	...	,,
६५	श्रीपुरुषपुंडरीवासुदेव श्रीआनंदबलदेव	,,	...	,,
६६	श्रीदत्तवासुदेव श्रीनंदनबलदेव	,,	...	,,
६७	श्रीलक्ष्मणवासुदेव श्रीरामचन्द्रबलदेव	,,	...	,,
६८	श्रीकृष्णवासुदेव श्रीबलभद्रबलदेव	,,	...	,,
६९	इननववासुदेवबलदेवकेसामिलहिनवप्रतिवासुदेवोंका नाम संक्षिप्तअधिकार ...	...	...	,,
७०	श्रीअश्वग्रीवप्रतिवासुदेवसंक्षिप्ताधिकार ...		...	,,
७१	श्रीतारकप्रतिवासुदेव	,,	...	,,
७२	श्रीमेरुकप्रतिवासुदेव	,,	...	,,
७३	श्रीमधुप्रतिवासुदेव	,,	...	,,
७४	श्रीनिशुंभप्रतिवासुदेव	,,	...	,,
७५	श्रीबलिप्रतिवासुदेव	,,	....	,,
७६	श्रीप्रल्हादप्रतिवासुदेव	,,	...	,,
७७	श्रीरावणप्रतिवासुदेव	,,	...	,,
७८	श्रीजरासिंधप्रतिवासुदेव	,, प्रतिवासुदेवकोंमारेसोवासुदेवहोवे		
७९	श्रीरुद्रगणदेवनाममात्राधिकारगतिविचारश्च		...	१०४
८०	श्रीभीम ,,	...	...	,,
८१	श्रीजितशत्रु ,,	...	...	,,
८२	श्रीबल ,,	...	...	,,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संख्या.	विषयानुक्रम.	पृष्ठांक.
८३	श्रीविश्वानर नाममात्राधिकारगतिविचारश्च ...	१०४
८४	श्रीसुप्रतिष्ट ,, ...	,,
८५	श्रीअचल ,, ...	,,
८६	श्रीपुंडरीक ,, ...	,,
८७	श्रीअजितधर संक्षिप्तरुद्राधिकार	,,
८८	श्रीअजितबल ,, ...	,,
८९	श्रीपेढाल ,, ...	,,
९०	श्रीसत्यकी रुद्रकी विस्तारपूर्वकउत्पत्ति प्रथमसर्गसमाप्तिः	१०५
९१	श्रीवीरएकादशगणधराधिकार	११३
९२	श्रीपट्टधारी आचार्योंका नाम वा संक्षिप्तस्वरूप ...	,,
९३	श्रीएकादशगणधरनामप्रतिबोधाधिकार	,,
९४	श्रीगौतमस्वामी यानें श्रीइन्द्रभूतिगणधराधिकार ...	,,
९५	श्रीअग्निभूतिसंक्षिप्तगणधराधिकार	,,
९६	श्रीवायुभूतिसंक्षिप्तगणधराधिकार	,,
९७	श्रीव्यक्तस्वामीसंक्षिप्तगणधराधिकार	,,
९८	श्रीसुधर्मास्वामीसंक्षिप्तगणधराधिकार	,,
९९	श्रीमंडिकस्वामीसंक्षिप्तगणधराधिकार	,,
१००	श्रीमौर्यपुत्रसंक्षिप्तगणधराधिकार	,,
१०१	श्रीअकंपितसंक्षिप्तगणधराधिकार	,,
१०२	श्रीअचलभ्राता ,, ,, ...	,,
१०३	श्रीमेतार्य ,, ,, ...	,,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संख्या.	विषयानुक्रम.			पृष्ठांक.
१०४	श्रीप्रभाससंक्षिप्तगणधराधिकार	...	...	११३
१०५	श्रीसुधर्मास्वामीसें पट्टधरआचार्योंकी परम्परा चली जिस्कास्वरूप ...	... ...	...	१२४
१०६	श्रीपंचमगणधरसुधर्मास्वामी	संक्षिप्ताधिकार	...	,,
१०७	श्रीचरमकेवली जंबूस्वामी	,,	...	,,
१०८	श्रीप्रभवस्वामी	,,	...	,,
१०९	श्रीशय्यँभवसूरिः	,,	...	१२५
११०	श्रीयशोभद्रसूरिः	,,	...	१३२
१११	श्रीसंभूतिविजयसूरिः	,,	...	,,
११२	श्रीभद्रबाहुस्वामी	,,	...	,,
११३	श्रीथूलभद्रस्वामी	,,	द्वितीयसर्गसमाप्तिः	
११४	श्रीआर्यमहागिरिस्वामी		संक्षिप्ताधिकार	१३२
११५	श्रीआर्यसुहस्तिसूरिः		,,	,,
११६	श्रीसिद्धसेनदिवाकरसूरिः		,,	१३५
११७	श्रीसुस्थितसूरिः		,,	,,
११८	श्रीइन्द्रदिनसूरिः		,,	,,
११९	श्रीदिन्नसूरिः		,,	,,
१२०	श्रीसिंहगिरिसूरिः		,,	,,
१२१	श्रीवज्रसूरिः		,,	,,
१२२	श्रीवज्रसेनसूरिः		,,	,,
१२३	श्रीचन्द्रसूरिः		,,	,,
१२४	श्रीसमन्तभद्रसूरिः		,,	,,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संख्या.	विषयानुक्रम.		पृष्ठांक.
१२५	श्रीबृहद्देवसूरिः	संक्षिप्ताधिकार	१३५
१२६	श्रीप्रद्योतनसूरिः	,,	,,
१२७	श्रीबृहन्मानदेवसूरिः	,,	,,
१२८	श्रीमानतुंगसूरिः	,,	,,
१२९	श्रीवीरसूरिः	,,	,,
१३०	श्रीजयदेवसूरिः	,,	,,
१३१	श्रीदेवानन्दसूरिः	,,	,,
१३२	श्रीविक्रमसूरिः	,,	,,
१३३	श्रीनरसिंहसूरिः	,,	,,
१३४	श्रीसमुद्रविजयसूरिः	,,	,,
१३५	श्रीलघुमानदेवसूरिः	,,	,,
१३६	श्रीविबुधप्रभसूरिः	,,	,,
१३६	श्रीजयानन्दसूरिः	,,	,,
१३७	श्रीरविप्रभसूरिः	,,	,,
१३८	श्रीलघुयशोभद्रसूरिः अपरनामश्रीयशोदेवसूरिः	,,	,,
१३९	श्रीविमलचन्द्रसूरिः	,,	,,
१४०	श्रीलघुदेवसूरिः अपरनामश्रीदेवचन्द्रसूरिः	,,	,,
१४१	श्रीनेमिचन्द्रसूरिः	संक्षिप्तचरित्राधिकार	तृतीयसर्गसमाप्तिः
१४२	श्रीउद्योतनसूरिः	,,	१५४
१४३	श्रीवर्द्धमानसूरिः	,,	१६०
१४४	श्रीजिनेश्वरसूरिः	,,	१७२
१४५	श्रीबुद्धिसागरसूरिः पट्टक्रममें नही	,,	२०७

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संख्या.	विषयानुक्रम.			पृष्ठांक.
१४६	श्रीजिनचन्द्रसूरिः	संक्षिप्तचरित्राधिकार		२१३
१४७	श्रीजिनाभयदेवसूरिः	,,		२१५
१४८	श्रीजिनवल्लभसूरिः	,,	चतुर्थसर्गसमाप्तिः	३४५
१४९	श्रीजिनदत्तसूरिः	,,	पञ्चमसर्गसमाप्तिः	३५८
१५०	श्रीजिनचन्द्रसूरिः	,,		४८९
१५१	श्रीजिनपतिसूरिः	,,		४९१
१५२	श्रीजिनेश्वरसूरिः	,,		४९३
१५३	श्रीजिनप्रबोधसूरिः	,,		,,
१५४	श्रीजिनचद्रंसूरिः	,,		४९४
१५५	श्रीजिनकुशलसूरिः	,,		४९५
१५६	श्रीजिनपद्मसूरिः	,,		५०९
१५७	श्रीजिनलब्धिसूरिः	,,		,,
१५८	श्रीजिनचन्द्रसूरिः	,,		,,
१५९	श्रीजिनोदयसूरिः	,,		,,
१६०	श्रीजिनराजसूरिः	,,		५१०
१६१	श्रीजिनभद्रसूरिः	,,		,,
१६२	श्रीजिनकीर्तिरत्नसूरिः पट्टक्रममें नहीं,,			५१२
१६३	श्रीजिनचन्द्रसूरिः	,,		५१६
१६४	श्रीजिनसमुद्रसूरिः	,,		५२१
१६५	श्रीजिनहंससूरिः	,,		५२२
१६६	श्रीजिनमाणिक्यसूरिः	,,	सप्तमसर्गसमाप्तिः	५२५
१६७	श्रीजिनचन्द्रसूरिः	,,		५२७

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संख्या.	विषयानुक्रम.			पृष्ठांक.
१६८	श्रीजिनसिंहसूरिः	संक्षिप्तचरित्राधिकार		५४४
१६९	श्रीजिनराजसूरिः	संक्षिप्तचरित्रस्वरूप		,,
१७०	श्रीजिनरत्नसूरिः	,,	,,	,,
१७१	श्रीजिनचन्द्रसूरिः	,,	,,	५४६
१७२	श्रीजिनसुक्खसूरिः	,,	,,	५४८
१७३	श्रीजिनभक्तिसूरिः	,,	,,	५४९
१७४	श्रीजिनलाभसूरिः	,,	,,	५५०
१७५	श्रीजिनचन्द्रसूरिः	,,	,,	५५२
१७६	श्रीजिनहर्षसूरिः	,,	,,	५५३
१७७	श्रीजिनसौभाग्यसूरिः	,,	,,	५५५
१७८	श्रीजिनहंससूरिः	,,	,,	५५८
१७९	श्रीजिनचंद्रसूरिः	,,	,,	५५९
१८०	श्रीजिनकीर्त्तिसूरिः	संक्षिप्तच०	... ...	५६०
१८१	श्रीजिनचारित्रसूरिः (तथा श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरिः सो विचरे हैं इति समाप्तविषयानुक्रमणिका।) अष्टमसर्ग			५६१
१८२	जैनधर्मअनादि अधिकार	...	... ...	५८६
१८३	जैनईश्वरस्वरूपनामवगेरे	...	... ...	५८७
१८४	कालचक्रका स्वरूप आरोकाअधिकार	...	...	५८८
१८५	सातकुलगराधिकार	...	... ...	५९३

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जेसलमेर भांडागारे ताडपत्रीया खरतरपट्टावली

[१] जिण दिट्ठइं आनंदु चडइ अहरहसु चउग्गुणु, जिण दिट्ठइ झडहडइ पाउ तणु निम्मलु हुइ पुणु, जिण दिट्ठइ सुहु होइ कट्ठु पुव्वुक्किउ नासइ, जिण दिट्ठइ हुइ रिद्धि दूरि दारिद्दु पनासइ । जिणदिट्ठइ हुइ सुह धम्ममइ अबुहहुकाइं उइखहहु ॥ पहु नवफणिमंडिउ पासजिणु अजयमेरि कि न पिक्खहहु ॥१॥ मयण मकरि धरिधणुहु वाण पुणि पंचम पयडहि । भूविण पिम्मपयावि वंभहरिहरु मन विनडहि ॥ भूउ पिम्मु ता वाणमयण तादरिसहि धणुहरु ॥ नवफणिमंडिउसीसि जाव नहु पेक्खहि जिणवरु, जइ पडिहसि पासजिणिंद वसि नाणदंत निम्मलरयण । तसु धणुहरु वाण न भूवनहि नभुय पिंमु हुइ हइ मयण ॥ २ ॥ नम फणिपासजिणिंदु गढिउ अन्नहि जु दिट्ठउ । अजयमेरि संभारि नरिंदु ता नियमणि तुट्ठउ । कंचणमउ अह कलसु सिहरि साणउ रज्जविअउ । जणु सुतरणि तओ तवइ तिव्वु आयासिसउन्नउ । जा वुकमिसिण ढक्कारविण करउज्झिवि फरहरइ धर ॥

[२] जिणदत्तसूरि धरधमलि जसि ता पसिद्धि सुरभवणिकय ॥३॥ देवसूरि पहु नेमिचंदु बहुगुणिहिं पसिद्धउ, उज्जोयणु तह वद्धमाणु खरतरवरल-

१ जिनदृष्टे आनन्दश्चटति (भवति) अहरहः सुचतुर्गुणः । जिनदृष्टे झटिति हटति (नश्यति) पापस्तनुर्निर्मलो भवति पुनः । जिनदृष्टे सुखं भवति कष्टं पूर्वकृतं नश्यति, जिनदृष्टे भवति ऋद्धिर्दूरं दारिद्रं नश्यति, जिनदृष्टे भवति शुभधर्ममति-रशुभघूकादिरेति क्षयम् ॥ १ ॥

२ जिनदत्तसूरिं धरसि शिरसि ततः प्रसिद्धिः सुरभूयसी, देवसूरिः प्रभुः नेमिचन्द्रो-बहु गुणिभिः प्रसिद्धः, उद्द्योतनस्तथा वर्धमानः खरतरवरलब्धकः, सुगुरुर्जिनेश्वरसूरिः, नियमीजिनचन्द्रः सुसंयमी, अभयदेवः सर्वगो ज्ञानी जिनवल्लभः आगमी, जिनदत्तसूरिः स्थितः पट्टे तस्य येन उद्द्योतितं जिनवचनं, श्रावकैः परीक्ष्य परिचरितो मूल्यं महद् दत्त्वा यथा रत्नम् ॥ २ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

द्धउ, सुगुरुजिणेसरसूरि नियमि जिणचंदु सुसंयमि, अभयदेवु सवंगु नाणि जिणवल्लहु आगमि, जिणदत्तसूरि ठ्ठिउ पट्टि तहि जिण उज्जोइउ, जिण-वयणु, सावइहिं परिक्खिवि परिवरिउ मुल्लि महग्घउजिमरयणु ॥ ४ ॥ धणुहर धयवडधरय सारि सिंगार सुसज्जिय, सोहग्गिण गुडगुडिय पंच वरपडिम निमज्जिय, तियड अ तेअ अग्गलिय पिम्मपडिकारनिरुत्तिय। रइरणरह सुचलिय गरुयमाणिण मइ अन्निय। करिकडसडमुणि महिवइहिं रहिय रूवय संपुन्नभय। जिणदत्तसूरिसीहह भयणमयण हकर वियड विहडि गय ॥ ५ ॥ तवतलप्फभीसणह धम्मधीरिमसूविसुविसालह। संजमसिरभासुरह। दुसहद्वदाढकरालह। नाणनयणदारुणह नियमनि सनहर समिद्धह। कम्मकोवनिट्ठुरह। विमलपहपुछ पसिद्धह। उपसमणउपरधरदुविसह. गुणगुंजारवजीहह। जिणदत्तसूरि अनु-सरह पयपावकरडिघडसीहह ॥ ६ ॥ जरजलवहलरउदु लोहलहरिहिं गज्जंतउ मोहमच्छ उच्छलिउ। कोवकल्लोल वहंतउ मयमयरिहिं परि-वरिउ। वंचबहुवेलदुसंचरु, गंथगरुय गंभीरु, असुहआवत्तभयंकरु, संसारसमुद्दु जु एरिसउ जसु पुणु पिक्खिविदरियइ। जिणदत्तसूरि उवएसुसुणितपरतरंडइ सुतरियइ ॥७॥ सावयकिवि कोयलिय केवि खर-तरिय पसिद्धिय, ठाइ ठाइ लक्खियहिं मूढनियवित्ति विरुद्धिय। दरहिं न किंपि परत्त वेवि सुपरुप्परु जुज्झहि, सुगुरु कुगुरुमणि मुणिवि न किं वि पट्टंतरु बुज्झहिं। जिणदत्तसूरि जिन नमहि पयपउम सच्चुनियमणि वहहि। संसारउयहि दुत्तरि पडिय जिनहु तरंडइ चडितरहि ॥ ८ ॥ तव संयमसय नियम धम्मकम्मिण वावरियउ विसमछंदलक्खणिण सत्थ अत्थत्थ विसालह, जिणवल्लभ गुरु भत्ति वंतु पयडउ कलिकालह।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अन्निहिविगुणिहि संपुन्नतणु । दीणदुहिय उद्धरणु धर, जिणदत्तसूरि पर पल्ह भणु तत्तवंत सलहियइ धर ॥ ९ ॥ वक्खाणियइ न परमतत्तु जिणपाउपणासइ । आराहियइ न वीरनाहु कइपल्हुपयासइ धमु त दय संजत्तु जेण वरगइ पाविज्जइ । चाउ त अणखंडियउ जु वंदिणु सलहि ज्जइ । जइ ठाइ उत्तिममुणि वरह वि ॥ पवरवसहिं हो चउरनर । तिम सुगुरुसिरोमणि सूरिवर खरतर सिरिजिणदत्तवर ॥ १० ॥ इति श्री पट्टावली संवत् ११७१ वर्षे पत्तनमहानगरे श्रीजयसिंहदेवविजयि-राज्ये श्रीखरतरगच्छे योगीन्द्रयुगप्रधानवसतिवासिश्रीजिनदत्तसूरीणां शिष्येण ब्रह्मचन्द्रगणिना लिखिता शुभं भवतु, श्रीमत्पार्श्वनाथाय नमः सिद्धिरस्तु ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीजिनदत्तसूरिचरिते

उत्तरार्द्धम् ।

अथ षष्ठसर्गः प्रारभ्यते ॥

तत्रादौ मंगलाचरणम् यथा—

कल्याणं वः प्रतन्यात्प्रथमजिनपतिर्विश्वविश्वेशपूज्यो यस्य श्रीपुण्डरीकः प्रथमगणधरः पंचकोटी समेतः ॥ श्रीमच्छत्रुंजयाद्रौ सकलरिपुजयात्प्राप्तसत्कीर्त्तिपूरः, प्रेयः श्रेयःसुकन्यापरिणनमहोब्रह्मचारीव्यधत्त ॥ १ ॥ श्रीविक्रमपुरश्रीमहावीरदेवस्थापन भूतप्रेतनिरासन श्रीमदुज्जयिनीयोगिनीचक्रप्रतिबोधकःकुमार्गनिरोधकः अणहिल्लपाटकसप्तवर्षावस्थानःप्रतिवादिसिंहनादभंगविधानः श्रीत्रिभुवनगिरिदेशनियमितपंचसप्तयतिवासनिवारणःश्रीपार्श्वनाथ नवफणधारणःवामावर्त्तार्तिकास्थापनः निरंतरागछद्गछदनेकसुरासुरविरचितांघ्रिसेवनःश्रीमदंबिकादेवीस्वहस्तप्रदत्तनागदेवश्रावक हस्ताक्षरवाचनोत्पुंसनस्वप्रकटितयुगप्रधानभावः नानाप्रभावः श्रीविधिमार्गप्रभावनाद्यनेकावदातकर्पूरसुरभितः त्रिभुवनाभोग समाश्रितः ध्वस्ताशेषरोगयोग स्वप्रतिभापहसितदेवसूरिः युगप्रधानश्रीमज्जिनदत्तसूरिः तेषां च भव्यनव्यनव्यतरश्रद्धालवलतावितानविवेकविमलजलसेचनप्रख्यं षष्ठसर्गे सावशेषं चरित्रलेशं चिकीर्षुः समस्तप्रत्यूहव्यूहव्यपोहाय

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भावमंगलमभिधेयादेव श्रोतृजनप्रवृत्तये प्रतिपादयितुं प्रथममिमां गाथामाह, गुणमणिरोहणगिरिणो, रिसहजिणंदस्स पढमगुणिवइणो, सिरिउसभसेण गणहारिणो णहे पणिवयामिपए ॥ ॥ १ ॥ अथकोटिकगणपट्टावल्यां दर्शितचरित्रलेशं यथा—॥ ४४ मा ॥ श्रीजिनवल्लभसूरिजीके पाटऊपर, श्रीजिनदत्तसूरिः हूए ॥ सो वडादादाजीके नामसें सर्व लोकमें प्रसिद्ध भए॥इनोंका किंचित् अधिकारलिखताहुं ॥ धवलकनामनगरमें, हुंवडगोत्रियवाछिगनामें एकमंत्री हुवा, जिसके वाहडदेवी नामें स्त्री, उसकी कूखसें चंद्रस्वप्नकरके सूचित संवत ११३२ में जन्महुआ, तब मातापितानें दशदिनकाबहुतउत्सवकरके सर्वस्वजनोंकेसामने सोमचंद्र ऐसानामदिया, शुभलक्षणोंकरकेयुक्त और श्रेष्ठचिन्होंसे सूचित कराहै अपणापुन्यप्राग्भारजिसने, ऐसा पांचधायमायकरके पालीजता जब पांचवरसकाभया, तब मातापितानें शुभदिनमे पंडितकेपास पढानेंकों बैठाया, बुद्धिकेबलसें थोडा दिनोंमें बहोतसी कलाविद्याशीखी, आठबरसका हुयेपीछे गुरुमहाराजके पास उपदेशसुनके वैराग्यकोंप्राप्तभया, तब अपनामातापिताकी आज्ञालेके संवत् ११४१ के सालमें उपाध्यायश्रीधर्मदेवगणिजीके पास दीक्षाग्रहणकरी, अर्थात् जैनसाधुभया, पीछे गुरूके पास संपूर्णशास्त्रोंकाअभ्यासकरनेलगा, इस अवसरमें गुरुमहाराज सारंगपुरकेविषे श्रीकुंअरपालउपाध्यायकों अणशणदिराया, आराधनाकराई, सो श्रीकुंवरपालउपाध्याय आयुपूर्णकरदेवगतिकों प्राप्तभया, तब ग्यानकेउपयोगसें पूर्वभवकासंबंध जाणके गुरूके-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पासआया, गुरूकोंनमस्कारकरके श्रीसोमचंद्रमुनिकों कहनें लगा की भोसोमचंद्र तुम आचार्यपदकोंप्राप्तहोवोगे. परंतु तीन मुहूर्त्त देखनेमें आवेगा, जिसमें पहले मुहूर्त्तमें मरणान्त कष्टहै, अरु दूसरेमुहूर्त्तमें गच्छभेदहै, इससें तीसरामुहूर्त्तश्रेष्ठहै, तीस-रामुहूर्त्तमें आचार्यपद ग्रहण करना, ऐसाकहकर देव अदृश्य होगया, पीछे कथंचित् भावी प्रबलसे दूसरा महूर्त्तमें संवत् ११६९ मिति वैशाख वद ६ शनिवारकेदिन संध्यासमयशुभ-लग्ने श्रीदेवभद्रसूरिजीने (श्रीविजयदेवसूरिजीयें) युगप्रधानश्री-जिनवल्लभसूरिजीकेवचनसें, सूरीमंत्रदेके पं० श्रीसोमचंद्रगणिजीकों आचार्यपदमें स्थापनकिये, तब श्रीजिनदत्तसूरिजी ऐसा नाम प्रसिद्धकरा, पीछेविहारकरते दूसरीवक्त चित्रकूटनगरमें गए, उहां श्रीचिंतामणिपार्श्वनाथके मंदरके स्तंभमेरहिहुई विद्या-म्नायकी पुस्तक विद्याबलसें प्रगटकरके ग्रहणकरी, फेर उज्जयणी-नगरीमें गए, उहां महाकालके मंदरके स्तंभमेंसें विद्याधरगच्छे श्रीवृद्धवादीशिष्य श्रीसिद्धसेनदिवाकर श्रीविक्रमादित्यके गुरुकी विद्याम्नायपुस्तक विद्याबलसें आकर्षणकरके ग्रहणकरी, फेर साढातीनक्रोडमायाबीजकाजापकिया, जापकरता चोसठयोगणी-योंनें महाराजकों छलनेंकाविचारकिया तब कोइवीरआयके महाराजकों खबर दीनी, के आज व्याख्यानमें ६४ योगणी आवेगी, उक्तंच बावनवीरकियेअपनेवस चोसठजोगणिपाय-लगाई, डाइणसाइणव्यंतरखेचर भूतप्रेतपिशाचपुलाई, बीजत-डक कडक भटक अटक रहे जुं खटकनकांई, कहे धर्मसिंह

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लंघेकुंणलीह दियेजिनदत्तकी एकदुहाई ॥ १ ॥ इसीतरह गुरुकी स्तुतिमेकहाहै अब इहांपर ५२ वीर ६४ जोगणीयां जों कि गुरुमहाराजके आज्ञाकारीहोकर सेवामेंउपस्थितभये, उनका नामयहहै ॥ अथ चतुःषष्ठियोगिनी नामानि दर्शयति यथा वाराही १ वामनी २ गरुडी ३ इंद्राणी ४ आग्नेयी ५ याम्या ६ नैर्ऋती ७ वारुणी ८ वायव्या ९ सौम्या १० ईशानी ११ ब्राह्मी १२ वैष्णवी १३ माहेश्वरी १४ विनायकी १५ शिवा १६ शिवदूती १७ चामुंडा १८ जया १९ विजया २० अजिता २१ अपराजिता २२ हरसिद्धि २३ कालिका २४ चंडा २५ सुचंडा २६ कनकनंदा २७ सुनंदा २८ उमा २९ घंटा ३० सुघंटा ३१ मांसप्रिया ३२ आसापुरा ३३ लोहिता ३४ अंबा ३५ अस्थिभक्षी ३६ नारायणी ३७ नारसिंही ३८ कौमारी ३९ वानरता ४० अंगा ४१ वंगा ४२ दीर्घदंष्ट्रा ४३ महादंष्ट्रा ४४ प्रभा ४५ सुप्रभा ४६ लंबा ४७ लंबोष्ठी ४८ भद्रा ४९ सुभद्रा ५० काली ५१ रौद्री ५२ रौद्रमुखी ५३ कराली ५४ विकराली ५५ साक्षी ५६ विकटाक्षी ५७ तारा ५८ सुतारा ५९ रजनीकरा ६० रंजना ६१ श्वेता ६२ भद्रकाली ६३ क्षमाकरी ६४ चतुःषष्टिःसमाख्याता, योगिन्यःकामरूपिकाः, पूजिताः प्रतिपूज्यंते, भवेयुर्वरदाःसदा, इतिविधिप्रपायाम् ३८ द्वारम्

॥ अथ (५२) वीरकानामलिखतेहैं क्षेत्रपालवीर १ कपिल २ बटुक ३ नारसिंह ४ गोपाल ५ भैरव ६ गरुड ७ रक्तसुवर्ण ८ देवसेन ९ रुद्र १० वरुण ११ भद्र १२ वज्र १३ वज्रजंघ १४

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्कंद १५ कुरु १६ प्रियंकर १७ प्रियमित्र १८ वह्नि १९ कंदर्प २० हंस २१ एकजंघ २२ घंटापथ २३ दजक २४ काल २५ महाकाल २६ मेघनाद २७ भीम २८ महाभीम २९ तुंगभद्र ३० विद्याधर ३१ वसुमित्र ३२ विश्वसेन ३३ नाग ३४ नागहस्त ३५ प्रद्युम्न ३६ कंपिल ३७ नकुल ३८ आह्लाद ३९ त्रिमुख ४० पिशाच ४१ भूतभैरव ४२ महापिशाच ४३ कालमुख ४४ शुनक ४५ अस्थिमुख ४६ रेतोवेध ४७ स्मशानचार ४८ कलिकल ४९ (केलिकल ४९) भृंग ५० कंटक ५१. विभीषण ५२ इति अथ अष्टौ भैरवनामानि भैरव १ महाभैरव २ चंडभैरव ३ रुद्रभैरव ४ कपालभैरव ५ आनंदभैरव ६ कंकालभैरव ७ भैरवभैरव ८ इति कपिल १ पिंगल २ पूर्णभद्र ३ माणिभद्र ४ यहनामांतरसंभवे देशकार्यस्थानभेदतःद्विपचाशत्संख्याकाःक्षेत्रपालाःभवन्ति अन्येच-भवनपतिवानव्यंतरज्योतिष्कवैमानिकचतुर्विधनिकायान्तर्गतकेचित्-देवाःदेव्यश्च श्रीपूज्यनां नामग्रहणेनपर्युपासनां कुर्वन्तसन् तिष्ठन्ति जगतितले" वाद गुरुमहाराज श्रावकोंके पास ६४ पाटिया मंगायके मंत्रके श्रावकण्योंकों सोंपदिये, और कहा आज व्याख्यानमें ६४ स्त्रीयों नवी आवेगी उनोंको पाटियां ऊपर बैठाणां, पीच्छे जब व्याख्यानमें श्रावकण्योंके रूपसें ६४ योगण्यों आई, नमस्कारकरके श्रावकण्योंमें पाटियां ऊपर बैठगई, व्याख्या-नपूरणहुए पीच्छे जब उठनेलगी, तब उठशकी नहि वाद बोली हम सबहितो आपकों छलनें आईथी परंतु आपनें हम सर्वकों छललीनी अब हम सर्व आपकीआज्ञाकरणेंवालीहोके, रहेंगी हमकों

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छोडो, जब गुरुमहाराज कहा कि फेर कभी कोई खरतर आचार्यको छलनानहीं, तबयोगणियोंनें ऐसावचनअंगीकार-किया और सातवरदानदिया" १ प्रतिग्राममें खरतरश्रावकदीप्ति-वंतहोगा ॥ २ ॥ प्रायकरके खरतरश्रावक निर्धननहिंहोगा ॥ ३ ॥ संघमें मरीआदिकसें कुमरणनहिंहोगा ॥ ४ ॥ अखंड शीलपालनेवाली साधवीके ऋतु न आवेगा ॥ ५ ॥ आपका नाम लेतां वीजलीआदिकोईतरेकाउपद्रवसंघमें नहिंहोगा ॥ ६ ॥ प्रायें अकालमृत्युनहिंहोगा ॥ ७ ॥ प्रायें खरतरश्रावक सिंधुदेशमें गया धनवंतहोगा ॥ यह सातवरदेके फेर योगणियों कहनेंलगीकि, १ खरतरआचार्य सिंधुदेशगयांथकां पंचनदीकों साधनकरे ॥ २ ॥ खरतरआचार्य दिनप्रति दो हजार (२०००) सूरिमंत्रको जापकरे ॥ ३ ॥ खरतरसाधु नित्य दो हजार (२०००) नवकारमंत्रकाजाप-करे ॥ ४ ॥ खरतर श्रावक दिन प्रति सवेर सांझे दोनों कालमें सात-स्मरणशुद्धअक्षरोंसें शुद्धचित्तसेंगुणतेरहैं ॥ ५ ॥ खरतरश्रावकदिन-प्रति तीन खीचडीकी माला गुणतेरहैं, एकमणिकाऊपर एक नवकार १ उवसग्गहर, स्तौत्रगुणें, उसकों खीचडीकी मालाकहतेंहैं ॥ ६ ॥ खरतरश्रावक मासमें दो आंबिलअवश्यकरे, और आप श्रीकीध्यावनारखे ॥ ७ ॥ खरतरसाधुछतीसक्ति सदाएकासणो-करे, ॥ यह ७ वर पालनेंसें पूर्वोक्त ७ वर सफलहोवेंगें, ऐसा, कहके फेर योगणियों कहनें लगी कि दिल्ली १ अजमेर २ भरु-अछ ३ उज्जैण ४ मुलतान ५ उच्चनगर ६ लाहोर ॥ ७ ॥ इननगरोंमें पूर्णशक्तिरहितखरतरगछनायकरात्रिवासो नरहे ऐसा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कहके अपणेठिकाणेंगई, तथा फेर अजमेरनगरमें पाक्षिक पडिक्कमण करते वक्त श्रीगुरुमहाराजने वेरबेरझबत्कारकरतीथकी-वीजलीकों मंत्रबलकरके पात्रकेअधोभागमेंरक्खी, तब प्रतिक्रमण बाद पात्रकेनीचेसें निकाली, जब उसनें कहा कि श्रीजिन-दत्तनामग्रहण करणेंसें में नहिं पडूंगी ऐसा वरदेके अपनें ठिकानें गई, फेर एकदा गुरुमहाराजविहारकरते थके वृद्धनगर गए, उहां जिनमतकी उन्नतीकों नहिं सहता थका ब्राह्मण लोक जिनमंदिरमें मरी भई गऊकों डाल गए, उहां मरी गउकों देखके ब्राह्मणकहणें लगे, अहो जैनीयोंका देव गउ घातकहै, एसा वचन सुनकै खेदातुर भए, श्रावक लोक गुरुमहाराजसें वीनतीकरी तब गुरुमहाराज मंत्र बलें व्यंतर प्रयोग करके मरी भई गउकों अछी करी, तब गउ अपणी इच्छासें उठके शिवमंदिरमें शिवमूर्ति ऊपर आके पडगई, तब नगरमें ब्राह्मणकों अत्यंत लज्जा उत्पन्न भई, तब लज्जित भये ब्राह्मण गुरुमहा-राजके चरण कमलमें पडके ऐसा कहते भए, अहो स्वामिन् आप महं-तहो अब आप हमारा अपराध क्षमा करो आज पीछे इस नगरमें जो कोई आपकी परंपराके सूरि आवेंगें उनोंका प्रवेशउत्सव हम लोक करेगें आप कृपाकरके हम लोकोंको कोई नोकरीभोलावो, तब महाराजबोले मंदिरोंकीभक्ति करो, मंदिरोंमें पडिलेहणकरो, और चावल नैवद्य फल जो खाणेकी चीज चढे सो लिया करो तबसें वे ब्राह्मण मंदिरोंकी भक्तिकरनें लगे, सो गंध्रपभोजक नामसें प्रसिद्धहुए उसवखतमें बहोतसी जैन धर्मकीप्रभावना भई तथा फेर एकदा गुरुमहाराज उच्चनगरमें गए, उहां प्रवेश

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उच्छवसमयें मनुष्योंके बाहुल्यसें उस नगरका मालिक मुगलका पुत्र बाहनसें पडके मरगया तब श्रावक सर्व खेदातुरभया गुरूमहाराजको वीनती करी तब गुरूमहाराज यह बातसुनके, जिनमतकी प्रभावनाके वास्ते व्यंतरप्रयोगकरके ६ मास तक मरेभए मुगलपुत्रको जीवाया, तथा नागदेवनामश्रावक, अंबड इति दूसरा नाम, एकदा गिरनार पर्वतपर तीन उपवास करके अंबिकाकों आराधन करके कहाकि हे माताजी इस समयमें भरत क्षेत्रके विषे युगप्रधानपदधारककोणसूरिहै, जिनकों में अपनें गुरूपणें स्थापनकरूं ऐसा पूछा तब अंबिकादेवी तिसके हाथमे सुवर्ण अक्षरोंसें एक श्लोकलिखा

दासानुदासा इव सर्वदेवा, यदीयपादाब्जतले लुठन्ति ॥
मरुस्थली कल्पतरुःस जीयात्, युगप्रधानोजिनदत्तसूरिः १

इसकाव्यकों जो वाचैंगे उनकोंयुगप्रधानजाणना बाद नागदेवश्रावक ठिकाणें ठिकाणें बोहोतसूरिकोंहाथदिखावे, परंतु कोईभीअक्षरवाचणकों समर्थनहिंभए, पीछे एकदा वह श्रावक पाटणनगरमें तांबावाडापाडेकेउपाश्रयमें श्रीजिनदत्तसूरिजीके पास आके हाथदिखलाया, तब गुरुमहाराज उसके हाथमें लिखितस्वर्णाक्षर ऊपर वासचूर्णडालके शिष्यकों आज्ञा दीवी तब शिष्यनें उनहरफोंकुं वाचे, जब नागदेवश्रावक परमभक्तिवंतभया, इसमुजब कलिकालमें युगप्रधानपदधारक श्रीगुरूमहाराजभए, एकदा व्याख्यानकरतेथके श्रीगुरू महाराजनें विद्याबलसें अपना स्मरण करताहुवा श्रावकका जहाज डूबता जानके तत्काल जहाजकों देवबलसें समुद्रकेपारउतारा,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ये वात जब संघकों मालुमभई तब बहुतमहिमाकरनेंलगे, तथा एकदा श्रीगुरूमहाराज प्रवलप्रवेशउच्छत्र करके मुलतान नगरमेंगए, तब पत्तनमेंवसनेवाला, परपक्षीय अंबड नामें श्रावक खरतरगच्छकीउन्नतिकों नहिं सहताथका बोलाकि इस नगरमें इस आडंबरसें आप आएहो, परंतु अणहिल्लपत्तनमें इसतरेसें आवोगे जबमें जानोंगा, यह वातसुनके गुरुमहाराजबोले कि हमतो इसीप्रकारकरके आवेगें. परन्तु तें तैललवणादिचीज खांधेरखके सन्मुखमिलेगा, पीछे जब गुरुमहाराज कितनें दिन वाद अणहिल्लपुरपत्तनगए, तबअंबडश्रावकदैववससें निर्धन भया मुलताननगरसें भागके पत्तनजाके तेललवणादिव्यापार करके आजीवकाकरनेंलगा, उहां गुरूकेप्रवेशउत्सवसमय सन्मुख मिला गुरुमहाराजनें ओलख के बतलाया, तब गुरू ऊपर अप्रीति-धारनकरताथका कपटकरकेखरतरश्रावक होगया, एकदा श्रीगुरु-महाराजकों विषमिश्रितशाकरकाजल वहराया तब श्रीगुरू-महाराजनें विषप्रयोग जानके राय भणसालीगोत्रीय आभूनामें मुख्यश्रावकप्रतें यह स्वरूपकहा तब आभूनामें श्रावक घडी-भरमें जोजनजावे ऐसा ऊंठ ऊपर नोंकरकों चढाके पाल्हणपूरसें विषअपहारिणीजडी या मुद्रिका मंगवाके निर्विषकीए, तब बोअंबड लोकमें निंदीजताथका मरके व्यंतरभया, व्यन्तरहोके फेर श्राव-कोंमें उपद्रव करनें लगा, तब गुरुमहाराज विद्याबलसें सर्व उपद्रव दूर किया, और व्यन्तरभी भागके अपनें स्थानक गया, तथा फेर एकदा विक्रमपुरमें मरीका उपद्रवप्रगट भया तब गुरुमहाराजने

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रावकोके उसउपद्रवकों दूरकरा तब दुःखित भएथके महेश्वरी लोक बोले कि हे स्वामिन् हमारे ऊपर कृपाकरके हमारे कुटंबका उपद्रव दूर करो तब गुरुमहाराजनें उनोंका वचन ग्रहण करके उन लोकोका उपद्रव दूर करा, तब महेसरी गोत्रका श्रावक भया, तथा कितनेक शिवमतवाले श्रावक नहिं भए तब तिनमेंसें जिसके चार पुत्रथा उसका एक पुत्र ग्रहणकरा, जिसके तीनपुत्रीथी तिससें एक पुत्रीग्रहण करी, ऐसें पांचसें (५००) शिष्यहुए, सातसें (७००) साधवीहुइ, इसीतरे श्रीजिनदत्तसूरिजीमहाराज बहोत नगरोंके विषे विहारकरते रजपूत ब्राह्मणादिककों प्रतिबोधके नाहट्टा, राखेचा, भणसाली, नवलक्खा, डागा, बाफणा, इत्यादि गोत्र १४४४ अलंकृत एकलाखतीस हजार घरकुटंबप्रतिबोधके श्रावक करा, तथा एक जीर्णप्रायप्रतिमें, एवं लिखितं यथा–तेहनेपाटे (अर्थात् श्रीजिनवल्लभसूरिजीनेपाटे) श्रीजिनदत्तसूरिजी हुंबड ज्ञाति चीतोड श्रीसंघे थाप्या, सारंगपुरनें विषे कुंवरपाल उपाध्यायकों तिहां श्रीसंघने आग्रहे निर्जराव्यो, दिन तीन अणसण पाली देव थयो, प्रत्यक्ष हूवो अने कहे थानें सांनिधकरीस, ओर तीनमहूर्त्त जोयाछे, १ मुहूर्त्त सूरिमंत्र लिधां छट्ठे मासमृत्यु, २ गछफाट, ३ श्रेष्ठछे, महारोस्वरूप किणहिरे आगे कहेना नहिं, श्रीसंघआव्यो पहिलोमुहूर्त्तकाउसग्गवेलाव्यतीतकीधो २ मुहूर्त्तेंकाउसग्ग करिवालागा, साधुश्रावके निषेध्या, २ मूहूर्त्तें थाप्या संवत् ११६९ चीतोडश्रीसंघे, श्रीजिनदत्तसूरिएहवो नामदीधो, श्रीजिनदत्तसूरिजीये, एक साधु श्रीजिनवल्लभसूरिजीये, गच्छबाहिर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

काढीयो हुंतो, तिणनें श्रीजिनदत्तसूरिजीये मांहें लीधो, भात-पाणी करतांचोलपटोफाटो गच्छफाटहोसी, १२ आचार्यमिल्या आहारवेला, मांडलवेसतां कहे ईयेनें अलगोवैसाणो, गुरुकहे मेंमांहेंलीयोछे, तीएरीसकीधी विणपूछीयां गछमांहेंलीधो, ३ ठाणे श्रीजिनदत्तसूरिजी विक्रमपुर गया, मरकी उपद्रव निवारतां चिहुंदीकरे एकदीकरो, ३ पुत्रीयें एकपुत्री आप्या, श्रावक लूणीया डागा, प्रमुख कीधा, तठाथी नारनोलपुरेगया, तत्र श्रीमालपुत्रमूवो, तेहनी स्त्रीनें काष्टभक्षण करायवा भणीआरंभ मांडयो, नासिनें गुरांरे पूठेलुकी रोइवालागी म्हानें विहरो, विहरी दीक्षादीधी उणरेजूंलीखघणीपडी साधवीकहै, बडी अहंडछे, श्रीजिनदत्तसूरिजीये कह्यौ, सातसे (७००) चेलीरो परिवार थास्ये, महत्तरापद दीधो, विक्रमपुर पांचसे (५००) शिष्यदिख्या ७०० सातसयचेलीदीखी, वली गछमांहें आव्या, अर्थात् आकर समुदायके साथ भये, सर्व आवी पगे लागा, रुद्रपल्लीबीजोगछभेदहूवो, अन्यदा श्रीजिनदत्तसूरिजीसिंधुदेसे मुल-तान चउमास रह्या, कमलेश्रावके पतिसाहनें घणो दानदीधो, खरतर विध्वंसकरो, एसहिनांणी, तिलकअणकीयेआवे ते मारिवा, तिलकसहित ते छोडवा, हाथी गुरांने वांदणआवतो गुरु-ऊंचेस्वरधर्मलाभदेता, सिंधूश्रावकरीसकरता निरसने आदर सो गुरुकहता हाथी राजद्वारे सोहे, हाथीरेवीवी धर्मबहिन छे, तीयेवातफेरिनाखी, हाथीनासाहमीथया तेसर्वेछूटा खर-तरांनो सुबोल हूवो, तिवारे हाथी लूणीयांनै अजितशान्ति-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्तवनदीधो, एकदा श्रावककहे महारेथांसरीखा गुरु अम्हे तुह्मारा श्रावक हूआ, तिमकरो जिम महारे घणो धनहुवे तिवारे श्रीजिनदत्तसूरिजी कहै, मकराणा गाम जावो, ३२ अंगुल प्रतिमा करावो, अमुक वेला मुहूर्त्तकरावी, रूनीवरकीमांहें घाली मार्गनें विषे किणहीरे घरे जीमज्योमत, अठे आणो तीये प्रतिमारे-नेत्रेसिलाकाफेरस्यां घणी लक्ष्मी थास्ये, श्रावक मकराणे जई प्रति-माभराई, अनुक्रमेनागोररे परिसरे आया, तिहां श्रीशान्तिसूरिजीये सूतांथकांरात्रिनें विषे द्रव्यकोडि लक्ष्मी जातीदीठी, अधिष्टायकेकह्यो श्रीजिनदत्तसूरिजीये आकर्षीछे, तीहां श्रावकांनेंकह्यो, विछायतांनें नोतरोजिम लक्ष्मीनागोररराखुं, तीए घणो आग्रहकरी नोतस्या, जीमणगयां पूठांथी प्रतिमाकाढीनें गुरेकाजलथीप्रतिष्ठी, द्रव्य सर्व तिहांरह्यो, अनुक्रमे ते आव्या, श्रीजिनदत्तसूरिजीयेकह्यो, रे छोह-रीया जिसागया तिसाआया, प्रतिमारेनेत्रेकाजलदीठो, तिवारे श्रावक वली कहे द्रव्यनो उपाय करो, गुरुकहे, भट्टनगरे श्रीमहा-वीरस्वामीरे देंहरे श्रीमाणिभद्रयक्षरी प्रतिमाछे, ते आणो तिवारें च्यार श्रावक व्यापारमिसे तिहांगया, नित्य भगवंतरी पूजाकरें अवसरे यक्षरी प्रतिमा लेई नाठा, पूठे वाहरथई अनुक्रमे सिंधुदेश पंचनदी वहे, पांचवर्णपाणी तिहां आव्या, वाहरपिणपूठे आवी, प्रतिमापाणी मांहिनांखी, जाणीयोपछे लेस्यां, वाहर सोधीपाछीगई, तिवारे श्रीजिनदत्तसूरिजी तिहां आवे, नदीतट मांणिभद्र यक्ष प्रत्यक्षहूवो, यक्षकहेहूं अठेईजरहीस बाहिरमतकाढो, अठाथकी सांनि-धकरीस, ते यक्ष गुरांकन्हे नित्यरहे, माहोमांहिं परम प्रीतिहूई,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीजिनदत्तसूरिजीकन्हेमाणिभद्रयक्षें ७ वरमांग्या–यथा–भट्टारक पंचनदीसाधे तिको सिंधु मांहैं आवे, १ सूरिसदा २ सहस्रसूरिमंत्र जापकरे, २ सामान्यसाधु २००० नवकारजापकरे, ३ खरतर श्रावक बेईटंकसातस्मरण गुणे, ४ श्रावक प्रतिदिन २०० खीचडी नवकार उवसग्ग गुणे, ५ श्रावकघरघर महीनेमें, २ आंबिलकरे ६ दीवो एकटंककरे, ७ श्रीजिनदत्तसूरिजीनें ७ वरदीधा, माणि भद्रे, गाम गाम एक श्रावक दीपतो होस्ये, १ श्रावक सर्वथानिर्धन नहूवे, २ वली कुमरणनमरे, ३ महासतीनें ऋतुनावे, ४ थांरेनाम-लीधां बीजली न पडसी, ५ निर्धनश्रावकसिंधुमेंजास्ये ते सुखी थास्ये, ६ वली थांरेनामलीधां शाकीनीनछलस्ये, ७ सिंधुदेशे सेले पर्वतवासी खोडीयो क्षेत्रपाल माणिभद्र पंचपीर पांचनदी साधे ते संतोषकरे, भट्टारक खरतर पंचनदीसाधे, एकदा श्रीजिन-दत्तसूरिजी दिल्लीगया तिहां ६४ योगनी पीठ छे, ते कोपीछलवा आवी, श्रीपूजांनें एक व्यन्तरे पहिला कह्यो, तिवारे श्रीपूजरात्रे महणसी नाम श्रावकतेड्यो, अनेकहे ६४ नवापाटियालाव मोटो-कार्यछे, तीये आण्या पाटियारात्रे मंत्रिया प्रभाते वखाणवेला एक श्रावकनें कह्यो ६४ श्राविकारोटोलो आवे, जींवणें हाथमे धवला वस्त्र तीयेनें एपाटीया बेसवाने देज्यो, तीये तिमहीज कीधो बेठ्यां मुंहडे गुरु वखाणकरे, गोडेऊपरि मंत्रगुणि हाथफेरे सर्वथंभ्यां ऊठि-सकीनहीं, साम्हे उछली लाजी, श्रीपूजे कह्यो, वरद्यो जिमछोडुं, तिवारे ७ वरदीधा, यथा–खरतरजती मूर्ख नहोस्ये, १ महासतीने-ऋतु नावस्ये, २ खरतरसाधु साध्वी सर्पहूंती न मरसी, ३ खरतर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वचनसिद्धि,४ वली श्रीजिनदत्तसूरिजीरोनाम लीधां बीजली न पडसी, ५ शाकिनी नछले, ६ जिमसिंधुदेश खरतर सगला तिमदिल्ली श्रावक आचारविचार चतुर थास्ये इति ७ वरदीधा, जोगणीकहे एक कह्यो माहरोकरो ताहरेपाटिजेगणनायकहूवे, ते योगिनीपीठनावे दिल्ली १ अजमेर २ उज्जयण ३ उच्चनगर ४ लाहोर ५ मुलतान वगेरे योगिनीपीठे नरहे, कदाचित् भोजनकरेतो रात्रिनरहे, बोललेई पोताने स्थानक पुहती, अन्यदा गुजराती नागदेव श्रावकें चित्तेचिंतव्यो, श्रीभगवंतेकह्योछे, सर्वदा एकयुगप्रधानहोवे, तीयेकारणि गिरनारपर्वत ऊपर अंबिकाटूंके अंबामाताआगेतीनउपवासकीधा प्रत्यक्षथई तीयेकह्यो युगप्रधानवतावो, तिवारे अंबिकातीयेरे हाथे अक्षरलिख्या जेवाचेते युगप्रधानजाणो, अनुक्रमे पाटणआव्यो, सगलाआचार्योंनेंहाथदेखाडे कोइअक्षरनदेखे, ८४ गछफिर्यो तिवारे किसीनें कह्यो, इहां श्रीजिनदत्तसूरिजीछे, तठेआव्यो नागदेव श्रीपूजानें हाथदेखावे वासक्षेपकीधो अक्षर प्रगटकीधा दासानुदासाइव सर्वदेवा, यदीयपादाब्जतले लुठंति, मरुस्थली कल्पतरुः स जीयात् युगप्रधानोजिनदत्तसूरिः ॥१॥ इमयुगप्रधानप्रगटथया, एकदा अजमेरनगरमें पडिक्कमणकरतां, पाक्षिने दिन उजोहीकरे तेपिणगुरुयेंमंत्री बीजलीथंभी तूठीवरदीओ, और पिणपरचाघणादेखाड्या, वरस ७९ सर्वआयुपाली, संवत् १२११ वर्षे अजमेरमांहे स्वर्गपुहता' तठे थुंभछे, इतिप्रत्यंतरेलेखोस्ति, श्रीगुरुमहाराजमुलताननगरकेविषे लूंणीयागोत्रीय हाथीसाहके ऊपरकृपाकरके पडिक्कमणमें तिसको अजियंजियसव्वभयं ?

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यहस्तोत्रदीया, तथा अणहिल्लपत्तनके विषे, बोथरागोत्रीयश्रावकोंको जयतिहुअणवरकप्परुक्ख जयजिणधन्नंतरि यह स्तौत्रदीया फेरगुरुमहाराजमेडतानगरके विषे, गणधर चोपडागोत्रीय श्रावकांकों उवसग्गहरं पासं यहस्तवनदीया, फेरजलउपरकंबली तिराणा वगेरे प्रकारकरके पंचनदी पंचपीरसाधक' संदेह दोलावली आदि अनेक ग्रंथकारक, नानाविद्यासहित, परमउपकारी परमयशसौभाग्यधारक महाप्रभावीक श्रीजिनदत्तसूरिः संवत्१२११ आषाढसुदिएकादशीकेदिन अजमेरनगरमें अणशणकरके पहला सौधर्मनामादेवलोकमें टक्कलनामा विमानमें ४ पल्योपमके आऊखे महर्द्धिक देवतापणें उत्पन्नभए, ॥ यदुक्तं भणियं तित्थयरेहिं, महाविदेहे भवंमितइयंमि, तुह्माणं तेगुरुणो, मुक्खेसिग्धंगमिस्संति ॥१॥ टक्कलयंमिविमाणे, संपइ सोहम्मकप्पमझंमि, चउपलिओवमआउ, देवो जाओ महड्ढीओ ॥ २ ॥ श्रीजिनवल्लभसूरिजीके पट्ट प्रभाकर श्रीजिनदत्तसूरिजी महाराजके शिष्यादि सर्वसंघकेसामनें देवतानेंआयके ऐसावचनकहा, इसीतरेवडे प्रभाविक श्रीजिनदत्तसूरिजीमहाराजकों बडादादाजीकेनामसें सर्व संघपूजनें ध्यावणेलगे, ॥ ४४ ॥ इतिकोटिकगच्छपट्टावल्याम् अथयुगप्रधानसूरीणां क्रमोऽस्माभिजीर्णप्रतौ यथादृष्टं तद्यथा श्रीवीरे मोक्षंगते संवत् ३७५ वर्षेवल्लभीनगरीभंगोजातः श्रीवीरे मोक्षंगते ४७० विक्रमादित्यसंवत्सरोजातः, ५०० वर्षे वयरस्वामि जन्म ५४४ जटाधरमतं निर्गतं आलंभिकायां, अथ विक्रमकालात् सं० १०८ श्रीशत्रुंजये जावडेन श्रीऋषभदेव प्रतिष्ठां उद्धारितंच ६०९

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्षपणकमतं दिगंबरमतम् रहवीरपुरे निर्गतं, ९८० तत्पश्चात्प्रवचनप्र-भाकः पुस्तकानांलेखयिता श्रीलोहित्याचार्यशिष्येण वल्लभीवाचना कृता, अर्थात् वल्लभीनगर्यांपुस्तकवाचनासंजाता, ९९२ श्रीकालिका-चार्यैश्चतुर्थ्यां श्रीपर्युषणापर्वंकृतम्, तत्पश्चात् अपश्चिम पूर्वश्रुतवित्स-त्यमित्रसूरयो जाताः विक्रमात् ५८५ श्रीहरिभद्रसूरिसंजातः, जैनप्रकरण १४४४ कर्ता चित्रकूटनगरे बौद्धाणां आकर्षणं, तथा हंस परमहंसौ संग्रामे हते सति विद्याप्रभावात् तेषांपुस्तकं श्रीगुरूणा मंतिके समागतम्, तस्मिन् पु० बौद्धशासनसत्कं साम्नायं बृहच्छन्ति वसुधारा घंटाकर्णादि समागतम्, इतिगीतार्थाः ब्रूवन्ति, छठासइ-कामें पंचशतप्रकरणकर्त्ता श्रीउमास्वातिः संजातः तत् पश्चात् भाष्य-कारोजातः तच्छिष्यो शीलांकाचार्योजातः १३०० श्रीबप्पभट्टसूरि-स्संजातः, तत क्रियोद्धारकृत् श्रीदेवसूरिः जातः ततः चतुरशीति-गछस्थापकाः श्रीउद्योतनसूरयोजाताः, ततः युगप्रधानपदविभूषित-खरतगछेः श्रीजिनेश्वरसूरिः जातः, १०८० श्रीअणहिल्लपुरपत्तने श्रीदुर्लभराजसमक्षंश्रीजिनेश्वरसूरिभिः संप्राप्तं खरतरविरुदं, ततः खरतरगछे नवांगवृत्तिकृत् श्रीअभयदेवसूरिः जातः, ११५९ पूर्णि-मिकागछोजातः, १२१४ आंचलिकानांगच्छनिर्गतः, १२३३ आ-गमिकोगणः संजातः, १२३६ सार्धपूर्णिमिकागणोजातः, संवत् १२८५ आघाटपुरेतपगछो जातः गच्छमतशब्दयोर्विशेषार्थस्तुएवं-आख्यायते येषां समकाले श्रीउद्योतनसूरिभिःविहतःवासक्षेपानांसू-रिणांयासंततिः सागछशब्देनोपलक्ष्यते गछोत्पत्तेः पश्चात् प्राचीनं स्वगुरुजनाम्नायं परिहृत्य स्वकल्पनानुसारेण ये निर्गताःते मतशब्दे-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नोपलक्ष्यंते तद्यथा १ संवत् ११६५ मे मतान्तरसें १२१३ या १४ में आंचलीया, २ संवत् १२५० मे पूर्णिमा पक्षीया, पूनमीया सार्धपूनमीया, ३संवत् १२८५ मे चित्रवालगछसें तपगछभया, ४ संवत् १५२४ अथवा २८ में लौंकामत भया, संवत् १५२४ में ५ कडुवा मत, ६ संवत् १५३१ में गुजराती लुंका भया, ७ संवत् १५७० में बीजामती भया, ८ संवत् १५८५ नागोरी लौंकामत भया, इसी अरसेमें ९ पाटणीया मती, १० सागरमती, ११ कोथलमती १२ आत्ममती १३ पायचंदमती, १४ चिंतामती, १५ आगमियामती, १६ काजामती, १७ शाकरियामती, १८ संवत् १६१७ में धर्मसागरसें तपामती हुवा, १९ ढूंढीयामती भया १७०० में, २० संवत् १८१५ में तेरापंथी मत भया, २१ त्रिस्तुतिमतं १९२४ में भया, इत्यादि अनेक मतमतान्तर हैं, गच्छेषु प्रायशः चतुर्थ्यां सांवत्सरिक प्रतिक्रमणं कुर्वन्ति, प्रायशः मतेषु पंचम्यां सांवत्सरिकं कुर्वन्ति, अधुना एतेषां मतानामपिगच्छशब्देन उपलक्षणं कार्यते, इति दृश्यते श्रीवीरायुः ७२ वर्ष श्रीगौतमायु ९२ तत्पदे १ श्रीसुधर्मास्वामितत्पदे २जंबूस्वामितत्पदे ३ श्रीप्रभवसूरिः तत्पदे ४श्रीशय्यंभवसूरिः तत्पदे ५ श्रीयशो भद्रसूरिः तत्पदे ६ आर्यसंभूतिविजयसूरिः तत्पदे ७ श्रीभद्रबाहुस्वामितत्पदे ८ श्रीस्थूलभद्रस्वामितत्पदे ९ श्रीआर्यमहागिरितत्पदे १० आर्यसुहस्तिसूरिः श्रीसंप्रतिराजा प्रतिबोधक सवाकोटिबिंब सवालक्ष प्रासाद३३ सहस्र जीर्णोद्धार ९५ सहस्र पित्तलमय प्रतिमा ७०० दानशालामंडावी' एहवा संप्रतिराजाप्रतिबोधक' श्रीआर्यसुहस्थिसूरिः ११ श्रीकालिकसूरिः श्रीसंडिलसूरिः १२ श्रीरेवतीमित्रसूरिः १३ श्रीधर्मसूरिः १४

२७ दत्तसूरि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीगुप्तसूरिः १५ श्रीआर्यसमुद्रसूरिः १६ आर्यमंगुसूरिः १७ श्रीआर्यसुधर्मसूरिः १८ श्रीभद्रगुप्तसूरिः १९ श्रीवयरस्वामि २० श्रीआर्यरक्षितसूरिः २१ श्रीदुर्बलिकापुष्पसूरिः २२ श्रीआर्यनन्दिसूरिः २३ श्रीआर्यनागहस्तिसूरिः २४ श्रीआर्यरेवंतमित्रसूरिः २५ श्रीब्रह्मद्वीपसूरिः २६ श्रीस्कंदिलसूरिः २७ श्रीहिमवंतसूरिः २८ श्रीनागार्जुनवाचकसूरिः २९ श्रीगोविंदवाचकसूरिः ३० श्रीसंभूतिदिन्नवाचकसूरिः ३१ श्रीलोहित्यसूरिः ३२ श्रीदूषगणि ३३ श्रीदेवर्द्धिगणि ३४ श्रीउमास्वातिवाचकसूरिः ३५ श्रीजिनभद्रगणिक्षमाश्रवणसूरिः ३६ श्रीहरिभद्रसूरिः श्रीवीरात्सहस्रवर्षेहूवा' १४ शत ४४ प्रकरणकर्त्ता, श्रीदेवसूरिः ३७ श्रीनेमिचंद्रसूरिः ३८ श्रीउद्योतनसूरिः ३९ सुविहितचक्रचूडामणि मालवदेश हुंती श्रीशत्रंजययात्रा जातां अर्धरात्रे आकाशे रोहिणी सकटाकार नक्षत्र मध्ये बृहस्पतियें प्रवेशकस्योदीठो, सूरिमंत्रधारी थापीजे, तो गच्छवृद्धिथाय, बद्धो मांडलियो लघुशिष्य जागतो हूंतो वासचूर्णपिणकन्हें नहिं, गोच्छगणकचूर्ण लूंकडीयावडवृक्ष नीचे थाप्या, श्रीवर्धमानसूरिः ४० प्रभाते गुरु कह्यो भाग्यवंत होस्ये सर्व पगे लागा, एकदा विमलमंत्री श्रीवर्धमानसूरिजीनें कह्यो हूं थांहरो श्रावक होवुं, जो अर्बुदतीर्थ प्रकट करो, सवाकोडि सूरिमंत्र जाप आंबिल छम्मासी सीम, धरणेंद्र प्रत्यक्ष दर्शन दीधो, कुमारी कन्या हाथे फूलमाला जठे पडे, धरती खिणतां आदिनाथ प्रतिमा प्रगट थास्ये, ब्राह्मणना मुख विछाय थया, द्रव्यसटे धरती देस्यां तिवारे मैणपाथरीफदीयामूक्या

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चिहुंदिसा विचाले ठालीरहे, पांचमोवली मूक्यो पांचेफदीएटको कहांणो, विमलमंत्री श्रावक हूवो, विमलवसहीकरावी, एकदा सरसे पाटण विहार करतां चोमासरह्या, जिनदास बुद्धिदास ब्राह्मण सासणदेवता गुरुनें कह्यो रात्रे आवी प्रभाते वादथास्ये, मस्तकमां माछलीनीकलस्ये तुह्मे वादे जीतस्यो जीत्यां शिष्यथया, जोग्य जाणी संवत् १०८० मे श्रीजिनेश्वरसूरि थाप्या, ४३ अणहिल्लवाडे चैत्यवासीयां थी वादकरी खरतर विरुद पाम्यो, कमला काहाणा "चोरासी आचार्य दससे असीए वरसे नयरपाटणि अणहिलपुरे, हूवे वादसुविहित चेइवासी सुबहुपरे, दुर्लभनरवैइसला समुख जिण हेलैजित्तो, चैत्यवास उत्थापि देशगुज्जरहविदित्तो, सुविहित्त गछ खरतर विरुद दुर्लभनरवइ तिहांदीयो, वर्धमानपदेतिलो, सूरिजिनेसर गहगह्यो" इति खरतर विरुदं प्राप्तं गछ स्थापना जिनेसरपदे श्रीजिनचंद्रसूरयः दिली आया मोजदीन पीजारेने बेटेनें कह्या दिलीपति होस्ये तदपीछेमोजदीनपतिसाहदिलीनोधणी हूवो वाद धनपालश्रीमालपतिसाहरी वेगमनें गुदराया (दिखाये) पति साह पेसारोकीधो नगरमांहि पधार्या ते श्रीमहतीयाण गोत्रीया दोयकुं नमस्कारकरे, जिनवर के जिनचंद, पद्मावती प्रत्यक्ष थइ चोथे पाटताहरो नाम देज्यो, तीये कारणि चोथे पाट श्रीजिनचंद्र सूरिजीनाम कीजेछे, तत्पदे श्रीजिनअभयदेवसूरिः ४५ श्रीथंभणपार्श्वनाथजी प्रगटकीधा, श्रीनवांगीवृत्तिसूत्रधार जयतिहुअणबत्तीसीकारक, गाथा २ दोय भंडारी इत्यादि संबंध जांणिवो यतः

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

'भणियंतित्थयरेहिं' महाविदेहे भवम्मितइयंमि, तुह्माणचेवगुरुणो, मुक्कं सिग्घं गमिस्संति ॥ १ ॥ श्रीअभयदेवसूरिपदे संवत् ११६७ वर्षे आषाढ वदी ६ श्रीचित्रकूटे पट्टाभिषेकः श्रीजिनवल्लभसूरिः ४६ श्रीपिंडविशुद्धि प्रकरणादिकर्त्ता चित्रकूटे चामुंडादेवी प्रतिबोधी २५ काव्यकरी सम्यक्तधारणीकीधी, अन्यदावागडदेसे १८ सहस्र श्रावककीधा, तीयेरे, महुकराखरतरशाखानीकलीते सोरठदेसे प्रसिद्धछे, संघपट्टो प्रकरणकीधो, पंचतीर्थंकर स्तवन, भावारिवारणवीरस्तवकर्त्ता जांणिवा, तत्पदे श्रीजिनदत्तसूरिः तत्पदे श्रीमणिमंडितभालस्थलजिनचंद्रसूरिः तत्पदे षट्त्रिंशद्वादी जेता श्रीजिनपतिसूरिः इत्यादिक्रमसे, प्रत्यक्षसिद्धपद्मावती श्रीजिनप्रभसूरिः श्रीजिनमाणिक्यसूरिः पदविभूषितश्रीजिनचंद्रसूरिः, इति श्रीयुगप्रधानसूरिणां स्थविरावली" इयं भिन्नभिन्नगच्छोत्पन्नयुगप्रधानस्थविराणां स्थविरावली नतु एकगच्छोत्पन्नानां स्थविराणामिति, विशेषस्तु संप्रदायतो ज्ञेयमिति, अथराजगच्छाधिकारोवर्ण्यते, तिहांप्रथमयुगप्रधानश्रीजिनदत्तसूरिजीने दशदशहज्जारकुंटुंबसहित ४ राजाओंको प्रतिबोधे इसहेतुसें श्रीजिनदत्तसूरिजीका राजगछभया, तत्संबंधो यथा—चालोसंघ सबपूजनकूं गुरु समस्या सनमुख आवतहेरे' ॥ चा ० ॥
आनंदपुरपट्टनकोराजा गुरुशोभासुण पावतहेरे ॥ चा० १॥
भेज्यानिजपरधानबुलाणें नृपअरदास सुणावतहेरे' ॥चा०॥
लाभजांणगुरुनगरपधारे भूपतिआय वधावतहेरे ॥चा० २॥
राजकुमरकोकुष्ट मिटायो अचरजतुरत दिखावतहेरे॥चा०॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दशहज्जारकुंटुंबसंगनृपकूं, श्रावगधर्म धरावतहेरे ॥ चा० ३ ॥ दयामूल आज्ञाजिनवरकी बारहव्रत उचरावतहेरे ॥ चा० ॥ एसे च्याररराजसमकितधर, खरतरसंघवणावतहेरे ॥चा० ४॥ कुष्टजलंधर क्षयभगंदर, केइयक लोकजीवावतहेरे' ॥ चा० ५ ॥ ब्राह्मणक्षत्रिय अरुमाहेश्वर, ओसवंस पसरावतहेरे ॥ चा० ॥ तीसहज्जारएकलख श्रावक, महिमा अधिकरचावतहेरे ॥ चा० ६ ॥ इत्यादि अधिकार-जाणना" औरचंदेरीकेराजाखरहत्थसिंहराठोड इसकुं चंद्रपुरपट्टनवि कहेतेहैं, श्रीलोद्रवपुरपट्टनके चंद्रवंशी राजपूत सागररावलकेसंतान-सिंधदेशमें एकहज्जार ग्रामोंके भाटीराजपूत राजाअभयसिंहको तथा धारानगरीकाराजापृथ्वीधरपँवारराजपूतके संतानीय जोबन और सच्चू-नामक कुमारोंकों, सोलगराचौहान राजपूत राजारतनसिंहके संतानी-यधनपालकों, पालीनगरमें राजपूतजातिकेकाकू और पाताकनामक विशेषमहर्द्धिकदोभाईयोंको, पूगलका राजा भाटीराजपूत सोनपाल तथा उसका पुत्रकेलणदेनामकाथा उसको, मुलताननगरमें मुँधडामहेश्वरी हाथीशाह राजाकादेशदीवानथा उसको प्रतिबोधके श्रावकक्रिया आनंदपुरपट्टन विगेरे ४ महाराजाओंको दशदशहज्जारके परिवार-सहित श्रावकधर्मधराणेसें, इत्यादि अनेक बडेबडे राजपूतमहर्द्धिक, राजा महाराजा दीवान वगेरेको प्रतिबोधणेसें खरतरविरुद्धारक युगप्रधान श्रीजिनदत्तसूरिजीका राजगछभया, और महाराजाविगेरेका विशेषस्वरूपगोत्राधिकारमें आगे दियाजावेगा, इसके सिवाय क्षत्रिय-वैश्य ब्राह्मण शूद्र ४ वर्णवालोंको प्रतिबोधके घरकुंटुंबकी संख्यासें

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रावक किये' और खरतरविरुदधारक युगप्रधान श्रीजिनदत्तसूरिजीके पूर्वजोंनें तथा इनोंके संतानीय आचार्योंनें श्रीमाल ओसवाल पोरवाल हुंबडजैनश्वेताम्बरवंशजातिकी विशेष वृद्धि कीहै और युगप्रधान श्रीजिनदत्तसूरिजीस्थापित संक्षिप्तगोत्रस्वरूप यह है ॥

अथ अंबाप्रदत्तयुगप्रधानपद श्रीजिनदत्तसूरिजीए तीस हजार एक लाख घर कुटुंब गोत्रबद्ध श्रावक प्रतिबोध्या तिणरो सरूप लिखे है ॥

॥ श्रीसुधर्मास्वामिजीकी परंपरामें श्रीकोटिकाख्यगच्छमें अपर नाम श्रीखरतरगच्छ श्रावकोंका गोत्र संक्षेपपणें लिखेहै ॥

१ श्रीरायभंडसालीमंडणश्रीआभूसाषिबद्धगोत्रखरतर सोलंकी रजपूत २ श्रीथेरुभणसालीबद्धगोत्रखरतर देवडारजपूत ३ कांकरीया गोत्रबद्ध खरतर भाटी रजपूत ४ बोथरा गोत्र बद्ध खरतर देवडा रजपूत, मल्हाडा अडक फोफलिया ५ करमदीया गोत्र बद्ध खरतर ६ मणहेडा बद्ध गोत्र खरतर ७ नवलखा १० नी दिहाडीवाला खरतर साहणै साहाथी ८ बेगड छाजेड १० नी दिहाडीवाला खरतर सं. १२४५ खेडेचा राठोड ९ धांधलौ भरण साहथी खरतरहूया १० ब्राह्मेचा १० री दिहाडीवाला खरतर पमार रजपूत ११ सांवणसुखा बद्ध गोत्र खरतर सिंधू ओष० सांउसुषे मिलेसो बद्ध गोत्र खरतर १२ डांगी गोत्र तथा डांगि गोत्रमध्ये काजलोत सर्व खरतर गहलोत साषी १३ रांका सेठीया तथा काला सर्व खरतर १४ पूथडा कुहाल बद्ध गोत्र खरतर १५ कुकड चोपड़ा बद्ध गोत्र खर-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तर १६ पडिहार मंडोवरा कोठारी राव चांडाथी कहाणा बद्ध गोत्र खरतर १७ गणधर चोपडा बद्ध गोत्र खरतर कायथ हिंसारी १८ पीतलीया गोत्र १० नी दिहाडीवाला खरतर १९ कान्हउडा बद्ध गोत्र खरतर २० गुंदवछा मुहता १० री दिहाडीवाला खरतर २१ बैतालीयां बद्ध गोत्र खरतर २२ नाहटा तथा बाँफणा घुल्लत्त ते सवे १० री दिहाडीवाला खरतर १३ शाषि २३ सोनगरा १० नी दिहाडीवाला खरतर २४ बुचा बद्ध गोत्र खरतर २५ वेदवोहड वर्द्धमान शाखा बद्ध गोत्र खरतर सेवडीया २६ शंखवालेचा कोचर संघवीना केडारा खरतर चहुआंण रजपूत २७ माल्हू बद्ध गोत्र खरतर कनोजीयाराठोड २८ लोढा १० दिहाडीवाला खरतर, राया १ कष्ट २ चहुआंण रजपूत देवडा नांडुलाईवाला खरतर २९ वरडीया मध्ये दरडा बद्ध गोत्र खरतर ३० चण्डालीया १० नी दिहाडीवाला गोत्र बद्ध खरतर ३१ आयरीया बद्ध गोत्र खरतर ३२ ढीकबद्धगोत्र खरतर ३३ सीसोदीया नाडुला-ईवाला खरतर ३४ मांडुगरेचा बद्ध गोत्र खरतर ३५ फलसा बद्ध गोत्र खरतर फूसला खरतर ३६ भाटीया बद्ध गोत्र खरतर ३७ सोनी अडक गोत्र खरतर ३८ पंचकुंहाल बहुरा बद्ध गोत्र खरतर ३९ नवकुहाल बहुरा बद्ध गोत्र खरतर ४० भेलडा बद्ध गोत्र खरतर ४१ महतीयांण लघुशाखा औसवाल खरतर ४२ खांटहड १० दिहाडावाला खरतर ४३ माधवांणी गोत्र खरतर मदारीया मध्ये छे ४४ राखडीया बहुरा गोत्र कटारीका गोत्र खरतर देवलवाडा मध्ये ४५ लूणीया बद्ध गोत्र खरतर मूंबडा महे-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सरी विक्रमपुरे प्रतिबोध्या ४६ डागा गोत्र बद्ध खरतर मूंधडा महेसरी तथा राठी महेसरी ४७ भाभूपारिख झोहरीया गदहीया सेलुहत भूरा रीहड बद्ध गोत्र खरतर राठी महेसरी ४८ पूथडा मालवीया जांगडा डागलीया चम्म गोलवछा वलाही ४९ वाँफणा १० नी दिहाडीवाला खरतर ५० जांगडीया मगदीया धाडीवाहा वेद दोसी दरडा गोत्र खरतर महेसरी कोठीभोडा ५१ जांमडा बवूकीया गोत्र खरतर ५२ पोरवाड पंचाइणेचा बद्ध गोत्र खरतर ५३ मलढीया गोत्र खरतर लघुशाखी ५४ गांधी गणधर चोपड-लघुशाखी साचोरा खरतर ५५ वरढीया गोत्र बद्ध खरतर ५६ नाहटा बद्ध गोत्र खरतर पमार रजपूत ५७ दोसी खरतर ५८ पारिख अबीद्ध पमार रजपूत ५९ तेलहरा खरतर कोठीफोडा खरतर ६० धाडीवाल गोत्र खरतर ६१ घीया गोत्र खर-तर सीसोदीया रजपूत ६२ बूबकीया गोत्र खरतर पडिहार रजपूत ६३ मिन्नी गोत्र खरतर ६४ भाटीया गोत्र खरतर ६५ सेवडीया गोत्रखरतर ६६ कटारीया अडक खरतर ६७ आकोल्या अडक खरतर ६८ श्रीपन्ना अडक खरतर ६९ सोझतीया अडक खरतर ७० मेनाला अडक खरतर ७१ सालेचा बुहरा अडक खरतर ७२ सांवसुखा १८ गोत्र खरतर ७३ वछावत बद्धगोत्र खरतर ७४ महेसरी फोडा बद्धगोत्र खरतर ७५ दूगड ते बद्धगोत्र खरतर देवल-वाला मध्ये ७६ फोफलिया अडक खरतर वाँपणारी साखि १४ गोत्र वाँफणा १ घुल्ल २ पोरठाड ३ हुंडीया ४ जांगडा ५ सोमलीया

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

६ वाहंतीया ७ वसाहा ८ मींठडीया ९ वाघमार १० भाभू ११ धत्तुरीया १२ नाहटा १३ मगदीया १४ एचवद शाखा एकगोत्रे मिले सो सब बद्धगोत्र खरतर मूंधडा माहेसरी माहेसुं नीकल्या सांवसुखा गोत्रमाहे इतरागोत्रमिले सांवणसुखा १ गोलछा २ पारिख ३ चोरवेडीया ४ बूचा ५ एपांचसगाभाई चम्म ६ कक्कड ७ सेल्होत ८ गादहीया ९ भटाकीया १० नाबरीया ११ बबूकीया १२ पूथडा १३ नालेरीया १४ सिंदूरीया १५ कुंभटीया १६ सापाला १७ सभ्राप १८ चाहिल १९ मूंघडा २० नींबाणीया २१ सींबड २२ कुरकचीया २३ ए तेवीसगोत्र एकशाखेमिले बद्धखरतर जडीयागोत्रउत्पत्तिः यथा–सवालखदेशेकुभारीनगरे यादवकुलधररे राँणी ३२पिण संतान नहीं पछेश्रीपद्मप्रभसूरिना चरणधोवणनोपाणी नित्यपीयां पुत्रहूवा' तठासुं प्रतिबोध २१ मीलीयां देवरीयात्राहूवे तिणसुं माथे जटाघणीरहै तिणसुं जडीयागोत्रहूवो १ लोढागोत्रोत्पत्तिर्यथा–संवत ७०१ भट्टारक श्रीरविप्रभसूरियें लखोटीयो माहेश्वरी लाखणसी प्रतिबोध्यो वधूकंठे स्वर्णमयलोढकस्याभरणं कारापितं तेन लोढा इति गोत्रं जातं ऊधरणसाहरा केडाइत १२४५हूवा बारसयपणयाले विक्कम संवछराओ बओलीणे, उद्धरण साह पमुहाछाजहडा खरयरा जाया इति छाजेडगो-त्रोत्पत्तिः १ आदित्यनामगोत्रे गादहीयानीलुटत्त शाखायां सचीया गोत्रजा पूर्वं भीनमाले संवत ११०८ पूर्वं भीनमाले सा० भेंसातेन देवगुप्तसूरयः स्थापिताः सप्तलक्षद्रव्यं व्ययीकृतं ततो डिंडभपुरे भेंसा भार्यातयायात्राकृता सचिका वरदानात् छगणकस्थापितानिगुरूपदेशात्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तज्ज्वालने रूप्यं जातं, तेन प्रासादः कारितो गर्दभमुद्राश्च कारिताः तदनंतरे सा० भेंसाख्यस्य माता श्रीशत्रुंजय यात्रायै गता पत्तने व्यवहारिणां पुरउद्धारकतया द्रव्यं याचितं तैरुक्तं त्वं कासि तयोक्तं भेंसाख्यस्यमाताहं तैः प्रोक्तं भेंसाऽस्मद्गृहे जलं वहन्ति तस्या पत्रेणोपहासो ज्ञापितः, मदहिया नाणकेन रूपारेलेतिवरदानं दत्तं तदा गदीया शाखायां पीपाडपुरे चैत्यं कारितं तस्मात् पींपाडेतिशाखा निर्गता पींपाडामांहिसुंगोगडशाखा नीसरीगोगड बेटेरेनामे पींपाडागोत्रोत्पत्तिर्यथा पींपाडनगरे गोहिलौतवंशे करमसिंहं प्रतिबोधितः श्रीजयशेखरसूरिभिः सिकारजायआयोथो रातेचूरमो खातांकीडीयां मुंहडे मूछांलागी' पछेदीवेसुंजांणी पछे प्रतिबोधहूवो, तिणसुं पींपाडागोत्रे अच्छूप्ता माता पूज्यते इतिपींपाडागोत्रोत्पत्तिर्जाता३संवत्११०१ पूर्वं उपकेशवंशीयाः सहस्र श्रावकत्वं जातः तस्य पुत्र ४अंबदेव१ बलदेव २ भेंसेत्याह्वः शुभः, अंबरा चोरबेडीया तिणमें प्रतिशाखा १८ नींवरा भटनेर चोधरी भेंसरा गोलव ॥ जांबड गोत्रोत्पत्ति यथा जांबड गोत्रे पूर्वं राजपुत्र यादव पूर्वं मंडलीक गोत्रे ततो मत्तोष्ट्र मुख जर्बट विदारणात् जांबड इति ।

छजलांणी गोत्रोत्पत्ति यथा यदा चैतेषां राजपुत्रेभ्यः श्रावकाः कृताः तथापि कुलदेवी पशुमेव षष्ठेमासि नवरात्रिषु नवछागान् बलिं याचते तदा गुरुभिर्विद्याबलेन सा कृष्टा वाचां गृहीत्वा मुक्तास्तद्वचनेन जायलनगरस्य कूपमध्ये निक्षिप्ता एतेषां वंशीयः कोपि तं कूपकं न पश्यति तद्दिनात् गोत्रजा देवी न पूज्यते ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तत्रवंशे प्रथमतो जायलनगराधीश राजपुत्र राउत वीरसिंहः प्रतिबोधितः सचातीवाखेटकाशक्तः तस्मिन् समये श्रीजयशेखरसूरिः नागपुरात् विहारं कुर्वन् तत्र वने स्थितः तदा तेन आखेटकात् आगच्छता दृष्टास्तेनोक्तं ग्राममध्ये समागच्छन्तु तदा गुरुभिः प्रोक्तं आखेटकशपथं करोषि तदा ग्राममध्ये समागमिष्यामः तदा तेन गुरुवचसा कथंचित् शपथं कृतं गुरवः ग्राममध्ये समागताः ततः प्रतिदिनं गुरुपार्श्वे समायाति ततः रात्रिभोजनं त्यक्तं ततः क्रमेण श्रावको जातः कटोतियागोत्रे अजमेरा ब्राह्मणः ॥ संवत् १२-१३भद्रेसर गाममां है नरसिंहगुरुना उपदेसथी साह श्रीसोल्हा पुत्रजगडू अन्नदाता रायासाधार विरुदो विख्यातः ॥ श्रीमालवंशे बीजोजगडू ललवाँणी माथासरो मंडोवरे साह श्री हेमराज साल्हावतगोत्र पोकरणा वास चौकडी सिहारे तिणरो कवित्त गयौ माहनि ६ संवत् १२३६ श्री धवलनगरे वीरधवलराज्ये श्रीवस्तुपालतेजपालः संजातः मूलसंबधः अणहिल्लपुरपाटण साह आसराजपिता मातासुरानुवास्तव्य साह आभूसुता कुँअरि तत्र साह आसराजमेलापकसंबंधः, श्रीहरिभद्रसूरिणा कृतः पोरवाडगोत्रे पाटणनगरे राजारामुंहता था संवत १२९९ वर्षे वस्तुपाल स्वर्गगतः तदनु तेजपाल १० वर्षे स्वर्गं गतः ।

॥ अथ साढीवारे ज्ञातिः श्रीमाले १ उवएसवालनगरे २ पल्लीपुरे ३ मेडते, ४ वग्घेरे ५ वरडिंडुयाणनगरे ६ षष्ठेलके ७ मायले, ८ राजन् हर्षपुरे ९ नराण नगरे १० टिंटोलके ११ पुष्करे १२

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

षंड षंडेलके स्थिता दशमिताः सार्द्धद्वया पंक्तयः ॥ १ ॥ इति यथादृष्टं लिखितं मया नास्त्यत्र दोषोमे ।

॥ संवत् ९९४ वर्षे श्रीउद्योतनसूरिणा सिद्धवटतरोरध ८४ आचार्यान् स्थापितवान् तेच श्रीवर्धमान, सर्वदेवादयः ज्ञेया तेषां ८४ शाखा विस्तीर्णा जाता भुवि, द्वितीयपक्षे, बृहत् वटतरोर्मूले अष्टौ आचार्यान् स्थापिताः तेषां क्रमेण ८४ शाखा विस्तीर्णाः श्रीवडगछस्थापकः जंवड, दूगड, गोखरू, पोकरणा, वरडीया, रूणवाड, हींगड, श्रीमाल, डूंगरीया राँक्याँण, तवभोया, मालविया, माधलपुरा, प्रतिबोधकः ।

॥ अथ श्रीसूरिभिर्निजगछीया ये श्राद्धाः प्रतिबोधितास्तेषां नामानि लि० तत्र ओसवालगोत्राणि यथा–जंबड घिन्ना १ लोढा २ छजलाणि ३ वेगवाणि ४ डांगर ५ नाहर ६ दूगड ७ गोखरू, चौधरी ८ पींपाडा, गोगड ९ जोगड, संघवी १० रूणवाल, ११ जडिया', १२ तेलखाण १३ हींगड, लिँगा १४ नवलखा भूतेडिया १५ वहुराछत्री, वहूरामट्टा, रायवहूरा, सुरहीयाबहूरा, १५ सोनी सोनीगरा बूंजडिया गंगोदरा सुरहीयासोनी सेठीयासोनी १६ छोहरीयालाडा १७ चंडालिया १८ सांखुला १९ कठोतिया २० सूरूया २१ पोकरणा २२ बंभ २३ वरहडिया २४ इत्यादि ओसवालगोत्राणि अथ श्रीमालगोत्राणि लिख्यंते डूंगरिया १ रांक्यांण २ नवलखा ३ माधलपूरा ४ मालविया एते ५ चहुआंण श्रीजयशेखरसूरि प्रतिबो० माधल पुरा रह्या सो माधलपुराश्रीमाल ४ गर्दणा, गाथा, गोयम सोहमजंबु, प्पभवापमुहआयरिया, तुमदिट्ठं ते

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दिट्ठा वंदियाते सव्वे आयरिया ॥ १ ॥ श्लोक, येषां हि वस्त्रे न पतन्ति यूका, न देशभंगः खलु येषु सत्सु, पादोदकेनापि गदोपशान्ति-र्युगप्रधानं मुनयोवदन्ति ॥ ४१ ॥ दूहा, पंचमआरे जे थया, दोयहजारनेचार, जुगप्रधानमुनीसरु, तेछेंजगआधार ॥ १ ॥ जुगप्रधान मुनीसरु, वरतमानश्रुतधार, दुप्पस्सहसूरिलगे, दशवैका लिकधार ॥ २ ॥ षट्व्रतधारी षट्पदे, लेता शुद्धाहार, जुगप्रधानश्री जंबुये, पूच्छया अर्थविचार ॥ ३ ॥ षट्व्रतधारी महामुनि, जंबु-जुगप्रधान, सामी सुधरमानें नमी, पूछे अर्थनिधान ॥ ४ ॥ कहे सोहम जंबुसुणों, ज्ञातासुअखंधदोय, उगणीसअध्ययनअछे, पदसंख्याता जोय ॥ ५ ॥ ढालपहिली, भवितुमे पूजो जुगप्रधान सुधरमा जगधणीरेलोल, भवितुमे प्रथमउदये सूरिवीसके, जंबुज-गमणीरेलोल, ६, भवितुमे प्रभवादिक गुरुराजके, पाटे सोभतारे-लोल, भवि तुमे सेवो थइ सावधानके, मिथ्यामतिखोभतारे लोल, ७, भवितुमे बीजेउदये तेवीसके, आचारजखरारे लोल, भवितुमे वयरसेन नागहस्तिके, रेवतीमित्रभलारेलोल, ८, भवितुमे तीजे उदये अठाणुंके, जगमां दीपतारेलोल, भवितुमेपाडिवयादिक जेहके, जगमणीजीपतारेलोल ९, भवितुमे हरिस्सह धरणसूरी-सके, नागमित्र कह्यारे लोल, भवितुमे चोथे उदये मनलावोके, अठोत्तरलह्यारेलोल, भवितुमे पांचमे उदये सुजाणके. पंचोत्तर कह्यारेलोल, भवितुमे नंदमित्र जेष्टपुत्रके, नैषदसूरिथयारेकलोल, १० "भवितुमे छठाउदयनीवातके, मुणीनव्यासीमनराचसोरे-लोल" भवितुमे सूरसेन सूरिदत्तके, कुलध्वजमाचसोरे लोल, ११,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भवितुमे सातमेंउदये सुभावोके, सो गणपतिभलारेलोल, भवितुमें रविमित्र इंद्रलाभके, उग्रदत्तसूरीसरारे लोल, १२, भवितुमे आठमे उदये अवधारोके, सत्यासीकह्यारे लोक, भवि तुमे श्रीप्रभ श्रीकुणालके, गंभीरदत्तथयारेलोल, ॥ १३ ॥ भवितुमे मणिरथ श्रीविश्वभूतिके, वसुपाल लोहपतिरे लोल, भवितुमे नवमे उदये एम जाणोके, पंचाणुं मुनिपतिरेलोल ॥ १४ ॥ भवितुमेदसमें उदये एम पावोके, सत्यासी गणधरुरेलोल, भवितुमे सोममित्र नागिलके, फल्गुमित्रमुनीसरुरेलोल ॥ १५ ॥ भवितुमे इग्यारमें उदयनीवाणीके, चित्तधरजो सदारेलोल, भवितुमे धनसंग भरतसूरींदके, सुरदत्तछोतेर भलारेलोल, ॥ १६ ॥ भवितुमेबारमे उदये हितकारीके, अठ्योतेर गणपतिरेलोल, भवितुमे श्रीसत मित्रसूरीसके, भवान गणधर थयारेलोल ॥ १७ ॥ भवितुमे प्रमोदगणी पसायके, उद्योतकर्योरे लोल, भवितुमे दानदेइ दयापालिके, सोभाग्यपणुं लह्योरेलोल ॥ १८ ॥ इतिश्रीप्रथमढाले युगप्रधान ९०६ ॥ अथ ढाल बीजी ॥ श्रीधम्मिह्लसूरिथया श्रीकारजो, तेरमे उदये चोराणुं परिवारजो, सोमदेवसूरी कृष्णरथकह्या भलाजो, ॥ १९ ॥ चवदमो उदय सुणिजो, हवे भविलोकजो, एकसो आठ थया सूरिना थोकजो, विजयानंद जुगप्रधान सूरीश्वराजो, ॥ २० ॥ पनरमाउदयनी वातछे मोहोटीजो, सुमंगल उदये सूरीरयणायरुजो, एकसो तीन गणधरुजो ॥२१॥ सोलमो उदय धारोतमे भविप्राणीजो, एकसो सात युगप्रधाननी खाणी जो, धर्मदेव श्रीदेवसूरीजो, ॥ २२ ॥ सतरमो उदय छे तें जयकारजो, एकसो चार थयाछेते सूरिराय जो, जयदेवसूरि, देवधन-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर्म सूरीकह्या जो, ॥ २३ ॥ अढारमा उदयमां छे सूरीराज जो, एकसो पन्नरनोछे ते परिवार जो, सूरदिन्न शिवदिन्न सुभकांतथया भला जो, ॥२४॥ उगणीसमा उदयनोछे अधिकारजो, एकसो तेतीस युग प्रधान जगसारजो, विशोधनसूरी बलसूरी सोभताजो ॥ २५ ॥ वीसमा उदयमां आचारजमनोहारजो, सो थया तेगणजो तमे निर धार जो, कोडीसूरि इन्द्रदिन्नसूरि जुहारता जो ॥ २६ ॥ इकवीसमा उदयनी छे हवेवाणीजो, पंचाणुं गुणधर तारणभविप्राणीजो मथुरसूरि धर्ममित्रसूरि थया जो ॥ २७ ॥ बावीसमा उदयनो हवे विस्तारजो, नवाणुं युगपरधानथया दिल धारजो, विनयपुत्र धनपुत्र तारकदीपता जो, ॥२८॥ तेवीसमो उदय भाख्यो जिनराज जो, चालीस युगपरधान ते दिलमां राखजो, श्रीदत्तश्रीनिर्वाणी सूरीसर जो ॥ २९ ॥ प्रमोगमणी उद्योत गुरुमहाराजजो, दानदयानो छे मोटो आधारजो, तपतपतां सौभाग्यपणो पामो सदाजो ॥ ३० ॥ इति श्रीद्वितीयढाले युगप्रधान १०९८॥ सर्वयुगप्रधान २००४, ॥ अथ युगप्रधानतपविधिलिख्यते पहिलि ओलीवीस दाडानी, बीजीओली तेवीस दाडानी, एहवी रीते, ओलीओ तेवीस, जेजे ओलीना जेटला दिवस होय ते परमांणे तेटला दिवसनी ओली करवी, तेमां छेलुंनें पहिलुं तप आंबिल तथा उपवास करवो, बाकीना एकासणा करवा, नें तेनुं काउस्सग्ग तथा खमासमण तथा प्रदक्षिणा विगेरे जेजे ओलीना दिवस होय, तेटला लोगस्सनो काउसग्ग तथा खमासमण तथा स्वस्तिक, तेटली प्रदक्षिणा विगेरे सर्व तेटला तेटला करवा, जेजे दिवसे जेजे जुग-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रधाननुं नाम होय, ते नामनी वीस नोकरवाली गणवीनें, छेले तथा पहिले दिवसे, जुगपरधाननी, पूजारूपानाणेथी करवीनें, साथीया उपर, नीवेद फल तथा श्रीफल, तथा बदामोविगेरे सारसार पदारथ मुंकवाने निरंतर जुगप्रधान आगल धूप तथा दीप करवोने पछी जुगपरधानना आगल निरन्तर साथीयाविगेरे करीने त्रणखमासमण दीजे, जेजे दिवसे जेजे जुगप्रधाननो नाम होय, तेजुग प्रधाननो नाम लेइने वंदणवत्तिआनो पाठकहिजे एक लोगस्सनो काउसग्ग सागरवर गंभीरा सुधीकरवोनें पारीनें थोई कहवीने, त्यारपछी पच्चक्खाण करवुं, त्यारे पछे ज्ञानपदनी पूजा भणाववीनें ज्ञाननी पूजा छेलेने पहिले दिवसे रूपानाणेथी ते बीजे दिवसे पैसेथी पूजवुंनेंछेले दिवसे गुरुकरवुंने, युगप्रधानपदनी पूजा भणाववीनें, वरघोडो बडा आडंबरथी चढाववो, अठाइ महोत्सव करवुं, तथा पूजा परभावना गुरुपदपूजा संघपूजा संघभक्ति श्रीगुरुयात्रा तीर्थयात्रा साहमीवत्सल चोरासी तेतीस आशातनारहित विनय बहुमानादि सहिततत्त्वत्रिकनी आराधना करवी, महानिर्जरादायक दश प्रकारनी वैयावच्च करवी, सम्यक्त और श्रावक तथा साधुना व्रत अत्यंत निर्मल शुद्धपालवा, यथाशक्ति दानादिचतुष्कमां प्रवृत्तिकरवी, यथाशक्ति सातक्षेत्रमां धनवावरवो (खरचवो) एवीरीते श्रीयुग प्रधान तपनी आराधना करवाथी युगप्रधानपणुं पामे निर्विघ्नपणें मोक्षपदपामे सुखे धर्मनीप्राप्ति थाय, परभवे विशेष सुखी होवे ॥

इति श्रीयुगप्रधानपदतपविधिः समाप्तः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१	उदय	२०
२	उदय	२३
३	उदय	९८
४	उदय	७८
५	उदय	७५
६	उदय	८९
७	उदय	१००
८	उदय	८७
९	उदय	९५
१०	उदय	८७
११	उदय	७६
१२	उदय	७८
१३	उदय	९४
१४	उदय	१०८
१५	उदय	१०३
१६	उदय	१०७
१७	उदय	१०४
१८	उदय	११५
१९	उदय	१३३
२०	उदय	१००
२१	उदय	९५
२२	उदय	९९
२३	उदय	४०

॥ अवतरण–युगप्रधानसूरीसंखत्ति, एटले युगप्रधान आचार्यनी संख्यानुं वशेने चोसङ्घ मुद्धारकहेछे मूल जोदुप्पसहोसूरी होहिंती जुगप्पहाणआयरिया, अज्जसुहम्म प्पभिई चउरहि आदुन्निय सहस्सा,४५१ व्याख्या–आ अवसर्पिणिए पांचमा दुषमा-नामा आरा ने छेहडे बेहाथप्रमाण शरीर २० वर्षनुं आयू अने जेनातपे करीनें घणाकर्मो खप्याछेतेणेकरीने अणाहाररूप मुक्ति जेनेढूंकडी थइछे अनेमात्र दशवैकालिक सूत्रनो धरनारछतापण चउदपूर्वधरनी पेरेशक्रनेपण पूजनीक एहवा समस्त आचार्योने प्रांतेथशे, एवाजे श्रीदुप्पसहनामा सूरी तेज्यांलगेथशे, अने पहेला श्रीसुधर्मोस्वामी आदे समस्त प्रव-चनना जाणथया तेने आदेलेइने ए भरत क्षेत्र नेविछे युगप्रधान आचार्यबे हजारने चारे-करी अधिक एटलाथशे एक आचार्यबली एमकहेछे केबे हजारते चारेकरी रहित करिये एटले एक हजार नवसे ने छन्नुंथशे, अनेउ-त्तंच, इत्थं आयरियाणं पणपन्नाहुंति कोडीलक्खाओ, कोडसहस्से कोडी सएय तह इन्तियाचेव ॥ १ ॥ एवुं श्रीमहानिशीथमाहे पंचावन

२८ दत्तसूरि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कोडी प्रमुख कह्याछे, ते सामान्य आचार्य आश्रि जाणवा, त्यांजवली एम कह्युंछे के एमां केटलाक गुरू श्रीतीर्थंकर सरखा गुणगणसहित थशे ॥ ४५२ ॥ इति प्रवचनसारोद्धारप्रकरणे गाथार्थः ॥

॥ सर्वमिलि युगप्रधान २००४ छे ते उपरोक्त विधिप्रमाणे युगप्रधानत्रयाणां सप्रश्नोत्तरा समाचारीर्यथा–ननु श्रीजिन वल्लभसूरीणां परमसंविग्नानां सत्क्रियापात्राणां का सामाचारी प्रवर्त्तते यदुपरि सर्वोपि श्रीखरतरगछसंघः प्रतिक्रमणादिक्रियां कुर्वाणोस्ति, उच्यते श्रूयतां एषां चत्वारिंशद् गाथारूपा तेषां सामाचारी, तथाहि–सम्मंनमिउं देविंद, विंदवंदिअपयं महावीरं, पडिक्कमणसमायारिं, भणामि जहसंभरामि अहं ॥ १ ॥ पंच विहायारविसुद्धिहेउमिह साहुसावगोवावि, पडिक्कमणं सह गुरुणा, गुरुविरहे कुणइ इक्कोवि ॥ २ ॥ वंदित्तुचेइआइं, दाउंचउराइए खमासमणे, भूनिहिअसिरोसयलाइआरमिच्छुकडं देई ॥ ३ ॥ सामाइअपुव्वमिच्छामि ठाइओकाउसग्गमिच्चाइ, सुत्तं भणिअ पलंबिअ भुअकुप्परधरिअपरिहाणो ॥ ४ ॥ संजइ १ कविठ्ठ २ घण ३ लय ४ लंबुत्तर ५ खलिण ६ सबरि ७ बहु ८ पेहा ९ वारुणि १० भमुहं ११ गुलि १२ सीस १३ मूअ १४ हय १५ काय १६ निहलु १७ द्धा १८ ॥ ५ ॥ थंभाइ १९ दोसरहिअं, तो कुणइ दुहूस्सिओतणुस्सग्गं, नाभिअहो जाणुड्ढं, चउरंगुलठ्ठविअकडिपट्टो ॥ ६ ॥ तत्थय धरेइ हिअए, जहक्कमं दिणकए अईआरे, पारित्तुनमुक्कारेण, पढइ चउवीसत्थवदंडं ॥ ७ ॥ संडासगेपमज्झिअ, उवविसिअ लगाविअबाहुजुओ, मुहणंतयंचकायं, पेहए पंचवीस इह

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ ८ ॥ उट्ठिअट्ठिओसविणयं, विहिणा गुरुणो करेइ किअकम्मं, बत्तीसदोसरहिअं पणवीसावस्सयविसुद्धं ॥ ९ ॥ थद्ध, पविद्ध २ मणाढिअ ३ परिपिंडिअ ४ मंकुसं ५ मच्छुव्वंतं ६ कच्छवरिंगिअ ७ टोलगइ ८ ढड्डरं ९ बेइआबद्धं, ॥ १० ॥ मणदुट्ठ ११ रुट्ठ १२ तज्जिअ १३ सढ १४ हीलिअ १५ तेणिअ १६ भंडणीअंच १७ दिट्ठमदिट्ठं १८ सिंगं १९ कर २० मोअण २१ मूण २२ मूअंव २३ ॥ ११ ॥ भय २४ ॥ मित्ती २५ गारव २६ कारणेहिं २७ पलिउंचिअ २८ भयंतंच २९ आलिद्धमणालिद्धं ३० चूलिअ ३१ चुडुलित्ति ३२ बत्तीसा ॥ १२ ॥ उपवेसमहाजायं, दुहोणयं पयडबारसावत्ता, इगनिक्खमण तिगुत्तं, चउसिर नमणंति पणवीसा ॥ १३ ॥ अहसम्मवयणंगो, करजुअविहिधरिअपोत्तिरयहरणो, परिचिंतेअइआरे, जहक्कमंगुरुपुरो विअडे ॥ १४ ॥ अहउवविसित्तुसुत्तं, सामाइअंपढिअतओ, अब्भुट्ठिओमि इच्चाइ, पढइ दुहओ ठिओ विहिणा ॥ १५ ॥ दाऊणवंदणंतो, पणगाइसु जइसु खामएतिन्नि, किइकम्मं किरिअठिओ, सड्ढोगाहातिगंभणई, ॥ १६ ॥ अहसामाइअ उसग्ग, सुत्तमुच्चरिअकाउसग्गठिओ, चिंतेइ उज्झोअदुगं, चरित्तअइआरसुद्धिकए ॥ १७ ॥ विहिणासम्मत्तसुद्धिहेउंच पढिअ उज्झोअं, तहसव्वलोए, अरिहंतचेइआराहणुस्सग्गं ॥ १८ ॥ काउंउज्झोअगरे, चिंतइ पारेइ सुद्धसम्मत्तो, पुक्खरवरदीवड्ढं, कड्ढइ सोइ सोहण निमित्तं ॥ १९ ॥ पुण पणवीसुसासगं उस्सग्गं कुणइ पारए

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विहिण, तो सयलकुशलकिरिआफलाणसिद्धाण पढइ थयं ॥ २० ॥ अहसुअसमिद्धिहेउ, सुअदेवीएकरेइ उस्सग्गं, चिंतेइ नमुकारं, सुणइ व देई व तीइथुअं ॥ २१ ॥ एवं खेत्तसुरीए, उस्सग्गं कुणइ सुणइ देइ थुअं, पढिअंच पंचमंगलं, उवविस्स पमज्ज- संडासं ॥ २२ ॥ पुव्वविहिणेव पेहिअ, पुत्तिदाऊण वंदणं गुरुणो, इच्छामो अणुसट्ठिंति, भणिअ जाणुहि ताठाइ ॥ २३ ॥ गुरुथुइगह- णेतिन्निवद्धमाणक्खरस्सरा, पढइ सक्कत्थयं थवं पढिअ, कुणइ पच्छित्तमुस्सग्गं ॥ २४ ॥ एवंतादेवसिअ, राइअस्सवि एवमेवनवरि- तहिं, पढमंदाउ मिच्छामिदुक्कड पढइ सक्कत्थयं ॥ २५ ॥ उट्ठिअ करेइ विहिणा, उस्सग्गं चिंतएअ उज्जोअं, बीअंदंसणसुद्धीए, चिंतए- तत्थवि तमेव ॥ २६ ॥ तइए निसाइआरे, जहक्कमं चिंतिऊणपारेइ, सिद्धत्थयं पढित्ता, पमज्ज संडासमुवविसए ॥ २७ ॥ पुव्विवपोत्ति पेहण, वंदणमालोअसुत्तपढणंच, वंदण खामण वंदण, गाहातिगप- ढणमुस्सग्गो ॥ २८ ॥ तत्थयचिंतइ संजम, जोगाण न जेण होइ मेहाणी, तंपडिवज्जामि तवं, छम्मासंती न काउमलं ॥ २९ ॥ एगाइ गुणतीसूणिअंपि, न सहो न पंचमासमवि, एवं चउतिदुमासं, नसम- त्थोएगमासमपि ॥ ३० ॥ जातंपितेरसूणं, चउतीसइमाइ तो दुहा- णीए, जावचउत्थं आयंबिलाइ, जापोरसिनमोवा ॥ ३१ ॥ जंस- क्कइ तंहिअरा, धरित्तु पारित्तु पेहएपोत्ति, दाउंवंदणमसढो, तंचिअ पच्चक्खई विहिणा ॥ ३२ ॥ इच्छामोअणुसट्ठित्ति, भणइ उवविसिअ पढइ तिन्निथुई, निसद्देणं सक्कत्थवाइ, तो चेइएवंदे ॥ ३३ ॥ अहप- क्खिअचउद्दसिदिणंमि, पुव्वं च तत्थ देवसिअं, सुत्तंतं पडिक्कमिउं,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तो सम्ममिमं कमं कुणइ ॥ ३४ ॥ मुहपोत्तिअ वंदणयं, संबुद्धा खामणं तहालोए, वंदण पत्तेअ खामणाणि, वंदणय सुत्तंच ॥३५॥ सुत्तं अब्भुट्टाणं, उस्सग्गो पोत्ति वंदणं तहय, पज्झंतिअ खामणयं, तहचउरोच्छोभवंदणयं ॥ ३६ ॥ पुव्वंविहिणेवसव्वं, देवसिअं वंदणाइतो कुणइ, सिज्झसूरी उस्सग्गो, अजिअसंतित्थय पढणे ॥ ३७ ॥ एवं चिअ चउमासे, वरिसेअ जहक्कमं विहीणेओ, पक्ख चउमासवरिसे, नवरं नामम्मिनाणत्तं ॥ ३८ ॥ तहउस्सग्गोज्जोआ-बारस, बीसा समंगलगचत्ता, संबुद्धाखामणं तिअ, पणसत्तसाहूणं जहसंखं ॥ ३९ ॥ इयजिणवल्लहगणिणा, लिहिअं जं सुसमरिअंच मइणावि, उस्सुत्तमणाइन्नं, जंमिच्छामि दुक्कडंतस्स ॥ ४० ॥ इति युगप्रधानश्रीजिनवल्लभसूरि समाचारी ॥ १ ॥

॥ ननु श्रीजिनदत्तसूरीणां युगप्रधानगुरूणामपि अनायतन चैत्य, स्त्रीकृतमूलप्रतिमापूजाप्रमुखनिषेधकवाक्यानि समाचारीरूपाणि कापि संकलितानि सन्ति, सन्तीति ब्रूमः, स्वकृतोत्सूत्रपदोद्घट्टनकुलके तैः सविस्तरप्ररूपितत्वात्तथाहि–तत्कुलकं, लिंगी जत्थगिहिव्व, देवनिलए निच्चंनिवासीतयं, सुत्तेणायतणं नत त्थउ जओ नाणाइ वुड्ढीभवे, निस्सानिस्स जिणंदमंदिरदुगं तल्लाभहेऊ तयं, सिद्धंतंमि पसिद्धमेव तहवी खिंसंति ही बालिसा॥ १ ॥ चेइअमढेसु जइवेसधारया, निच्चमेव निवसंति, तमणाययणं जइ, सावगेहिं खलु वज्झणिज्झंति ॥ २ ॥ उस्सुत्तदेसणाकारएहिं, केहिं तु वसइवासीहिं, पडिबोहिअसावयचेइअं, पुणोहोयणाययणं ॥ ॥ ३ ॥ एअंमिहुस्सुत्तं पुण, जुवइपवेसो निसाइ चेइअरे, रयणीइ

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिणपइट्ठा, ह्लाणंनेवज्जदाणंच ॥ ४ ॥ पूएइ मूलपडिमंपि, साविआ चिइनिवासि सम्मत्तं, गब्भापहारकल्लाणंपि, न हु होइ वीरस्स ॥५॥ कीरइ मासविहारोहु, णासाहूहिअ नत्थि किरदोसो, पुरिसित्थिओविपडिमा, वहंतितत्थाइमा चउरो ॥ ६ ॥ कंडुअ संगरिआओ, नहुंतिबिदलं न विरुहगाणंतं, नयसिवइवोराअं, सच्चित्तं सिंधवोदक्का ॥ ७ ॥ इरिआवहिअंपडिक्कमिअं, जोजिणाईणपूअणाइपुरो, कुज्जाइरियं पडिक्कमिअ, कुणई किइकम्मदाणाई ॥ ८ ॥ विहिचेइअनामंपिहुं, न जुत्तमेअंजमागमेणुत्तं, निस्साकडाइ जिणचेइआइं, लिंगीहिं वि जुआइं ॥ ९ ॥ तत्तिअमित्तंकुज्जा, जत्तिअमित्तं जलादिभुंजिज्जा, अजिअजलाहारिगिहि, पाणागारे समुच्चरइ ॥ १० ॥ उग्गएसूरे सूरुग्गमेअ, भणिअंमि नत्थि किरदोसो, एगजुगेजुगपवरा, दसपंच हवंति नहुएगो ॥ ११ ॥ बत्तीसंदेविंदा चउसट्ठीने अहुंति जिणपयडा, पूआ अट्ठविअप्पा, पास सुपासान नव तिफणा ॥१२॥ नवसत्तपण फणंसो, पासंकीलावइ जिणं पासं, तिपणफणाइ सुपासं, भणिअ पढमाणुओगम्मि ॥ १ ॥ इति विचारसारग्रंथे ॥ खीरघएहिंह्लाणं, जिणपडिमाणं जओ जुत्तमिणं, दव्वत्थओत्तिकाउं, गिहीणमुच्चिआ जिणपइट्ठा ॥ १३ ॥ कत्तिअ अमावसाए, पच्छिमरयणीइवीरपडिमाए, कीरइ न्हाणंपूआ, वाइअमहनट्टिगीअंच ॥ १४ ॥ लउडारसोविट्ठिज्जइ, विहिजिणभवणंमि सावएहिंपि, वासाणसुसणमंदोलणं च तत्थेव जलकीलं ॥ १५ ॥ माहे मालारोवणमिहकीरंतंच साहए सिद्धिं, मालग्गहणे ह्लाणे, जिणाण रयणीइ को दोसो ॥ १६ ॥ ह्लवणयरसिहाबंधो, मुद्दाकलसेसु वासखे-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाई, सूरीविणा पइट्ठं, कुणइ अ उस्सुत्तमाइअं ॥ १७ ॥ गिहिणोवि दिसाबंधो, कीरंतो धम्मसाहगो होई, चेइअ वसहि निवासिवि, साहूवे सड्डिआपुज्जा ॥ १८ ॥ जिणबिंबमणाययणं, नहोइ निवसंति ते जहिं समढो, सोसुविहिअ साहूहिं, परिहरणिज्जो न य गिहीहिं ॥ १९ ॥ मेरुगिरिम्मि तिअसाहिंवेहिं, जिण जम्मन्हाणमविकिरिअं, आरत्तिअमुत्तरिअं, मंगलदीवं कयंनट्टं ॥ २० ॥ आरतिअमेगजिणंद पडिमपुरओकयं न निम्मल्लं परिहाविज्जइजेणं वत्थेणं तमवि निम्मल्लं ॥ २१ ॥ आरत्तिअमुवरिजलं, भामिज्झइतह पयत्तउपूअं, तम्मिअ जमुत्तरंते तदुवरि कुसुमंजलिखेवो ॥ २२ ॥ आरत्तिअं धरिज्जइ, जमंतरालेवि उत्तरंतंतुं, कीरइनट्टंगीअं वाइअमुअगीअनट्टंच ॥ २३ ॥ जिण पुरओवि फलरकय, पमुहं जोढोइअंतु पूअट्ठा, तमवि न कप्पइ निम्मल्ल, मित्थकाओ पुणोदाओ ॥ २४ ॥ कप्पइ न लिंगिदव्वं, विहि जिण भुवणंमि सव्वहादाओ, सासणसुराणपूआ, नोकायवा सुदिट्ठीहिं ॥ २५ ॥ पव्वज्झागहणुठावणाइ, नंदीविकीरइ निसाए नेमिविवाह रकोडय, रहचलणा राईमइसोगं ॥ २६ ॥ सिद्धंतसुत्तजुत्तीहिं, जमिह गीअत्थ सूरिमायरिअं, न कुणंति तं पमाणं पयडंतिय समयमाहप्पं ॥ २७ ॥ पोत्तिंबिणावि गिहिणो, कुणंतिचेलंचलेण कियकम्मं, पाउरणेणं खंधेकएण जइणो परिभमंति ॥ २८ ॥ सुगुरुकयपारतंता, सुत्तंवि सअत्थयं विआणंता, विहिपडिकूलासंतो, कुणंति जं मुणत मुस्सुत्तं ॥ २९ ॥ गणणाइआलोआ, उस्सुत्ताणं पयासिआसमए, इह जे जिणदत्ताणं, मन्नंति कुणंतिताणि न ते ॥ ३० ॥ इति श्रीजिनदत्तसूरि सामाचारी ॥ २ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ननु श्रीजिनदत्तसूरिप्रशिष्याणां श्रीजिनपतिसूरीणामपि कापि सामाचारी प्रवर्त्तते न वा, उच्यते प्रवर्त्तते एव कासौ कियती च, उच्यते एकोनसप्ततिशिक्षारूपा सा तथाहि–आयरिय उवज्झाए, इच्चाइ गाहितिगं पडिकमणे, साहुणोन भणंति ॥ १ ॥ पडिक्कमणंते सिरिपासनाह सक्कत्थवो काउस्सग्गोअ ॥ २ ॥ चउवडमुंहप्रत्तीए अप्पाभिमुहदसिआए सावयाणं साविआणय आवस्सयकरणं ॥ ३ ॥ पडिकमणमाईसु सामाइअदंडगो नवकारोअ वारतिगं भणिज्जइ ठ्ठवणायरिअ ठ्ठवणंच तिहीं नवकारेहिं ॥ ४ ॥ सड्ढाणं सामाइअ गहणे अट्ठहिं नवकारेहिं सज्झायकरणं ॥ ५ ॥ उस्सुत्तभासग, चियवासि, दव्वलिंगीणं, वरकाण सुणणस्स, कियकम्मस्सय निसेहो ॥ ६ ॥ खमासमणदुगंतराले इच्छकार सुहदेवसिअ सुहराइअपुच्छा ॥ ७ ॥ संगर कंडुअ गोयाराइ बिदलं ॥ ८ ॥ तिहिबुड्ढीए पच्चरकाणकल्लाणय ण्हवणाइसु पढमतिही घेतव्वा ॥ ९ ॥ मासवुड्ढीए पढममासस्स पढमपरकोवा बीअमासस्स बीअपरकोवा कल्लाणगेसुघेत्तव्वो ॥ १० ॥ सावणे भद्दवएवा अहिगमासे चाउम्मासाओ पण्णासइमे दिणे पज्जोसवणा कायव्वा न असीइमे ॥ ११ ॥ सावगाणं पाणस्स लेवाडेणवा इच्चाइ पाणगागार अणुच्चारणं॥१२॥ विगई ओपच्चारकाइ, इच्चेव भणणं नसेसिआओत्ति ॥ १३ ॥ कत्तिअवुड्ढीए पढमकत्तिएच्चेव चोम्मासिअं पडिकमिज्जइ, सेसमासवुड्ढीए पंचमासेसु चउमासंकीरइ ॥ १४ ॥ इत्थीण देवपूआनिसेहो ॥ १५॥ वायणायरिअ, उवज्झाय, सूरीणं, जह संखं इग दु तिकंबलानि सिज्झा ॥ १६ ॥ सामण्ण साहूणं अपं गुरिआणं उवओगकरणं चंदणकप्पूरपूआनिसेहो अ ॥ १७ ॥ नए-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गागिणीए इत्थीए वसहीप्पवेसो ॥ १८ ॥ वरिसयाले अगलिअ तक्कनिसेहो ॥ १९ ॥ पारुडिआ, जडाल, कंबल, बोरिआणं अ परिभोगो ॥ २० ॥ संघवय, सूरिपय, कुलेसुवि, दसाहं सुअसूअग कुलाणं, च एगारसाहं पुत्तिआसूअगं, बारसाहं मयगकुलाणं, च वज्झणं, ॥ २१ ॥ दक्खा खज्जूर उत्तत्तिमाईणं सकुलिआणं, साहूहिं अगहणं ॥ २२ ॥ एगजुगे जुगप्पहाणो एगो न उणणेगे ॥ २३ ॥ चित्तासोअसत्तमठमी नवमीसुकयं तहापुप्फवईएकयतवं आलोअणाएनपडइ ॥ २४ ॥ आयंबिले पप्पड, घुग्घरिआ, वेढमिआ, इम्मरिआ, तक्काइ, निसेहो ॥ २५ ॥ साहूणं वासारत्ते वीर कल्लाणगेसु अ एगाविगई उवहाणे गिहीणंवि ॥ २६ ॥ रयस्सलाभत्तस्सवज्झणं ॥ २७ ॥ पुप्फवईए तिचउरदिणे छुत्तिरक्खणं चेइअवसही सु अगमणं पडिक्कमणाइसुमोणं ॥२८॥ कंधआणं तइअदिण ह्वाणंजावदेवअपूअणं ॥२९॥ वायणायरिआइपयट्ठाणं ठवणायरिअस्सय असंफुसणं निअमिअपडिक्कमणाइ मोणेणं कुणंति ॥३०॥ गोअमपडिग्गह, मुक्ख दंडग, मउड सत्तमि, माणिकपत्थरिआइ तव अकरणं ॥३१॥ संपइकाले सावयपडिमाओ न वहिज्जंति ॥३२॥ देवस्सगाम, गोउल, आराम, कूवाइ, नकीरइ ॥ ३३ ॥ चेइअहराइसु अद्धूडं चयनिसेहो ॥ ३४ ॥ राईमईविरहगीआइपरिहारो ॥३५॥ जहन्नओवि पारुत्थयं विणा न न्हवणं ॥३६॥ रयणीए नंदि, बलि, पइट्ठा रहजत्ता, न्हवणाई, समण समणी सावय साविआणं चेइअपवेसो अ न, मंगलदीवस्स न भामणं ॥३७॥ नय आरत्तिए विसेसपूआ ॥ ३८ ॥ लवणस्सजलस्स उत्तारिअजलणेखिवणं ॥ ३९ ॥ नयथालं विणा आरत्तिअमंगलदीवो ॥४०॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नचेइए वेसानच्चणं ॥ ४१ ॥ न य लउडारसदाणं ॥ ४२ ॥ लोण जल आरत्तिआइ जिणस्स सक्केण न च कयं किंतुगीअत्थेहिं आईण्णं संहारेणय जुत्तं ॥ ४३ ॥ अट्ठाहिआओ तहा आरंभिअव्वाओ जहा सत्तमि अट्ठमि नवमीओ अठाहिआमज्झेइंति ॥ ४४ ॥ परिग्गहप्प माणग्घिप्पणए मूलगुरु पासे इमंगहिअंति लिहिज्जइ न उण अन्नेहिं वि आयरिअउवज्झाय वायणायरिएहिं रुदिन्नेपरिगाहपमाणे सनाम लिहिअव्वं ॥ ४५ ॥ मूलगुरु पत्थाणं काउ जावविवक्खिअंठाणं नसंपत्तो ताव धोवणीआ सव्वठाणेसुसाहूहिं न कायव्वा ॥ ४६ ॥ कंधकंबलिआए असमप्पिआए दंडगो न अप्पेअव्वो आयरिअ उवज्झायाणं गिण्हंते पढमं दंडओ घेत्तव्वो पच्छा कंधकंबलिआ ॥४७॥ आयरिअ उवज्झायाणंकंधकंबलीविहारभूमीए वेआवच्चगरेण घेत्तव्वा न उण वायणाअरिअस्स ॥ ४८ ॥ चउरो तिप्पाओघेत्तव्वा न उण तिन्नि ॥ ४९ ॥ अपडिक्कमंतवंदणदायारो सावया जहाप भाए तहा संज्झए विदोहिं २ वंदणेहिंकमेण आलोयण खामणया ॥ ५० ॥ सावयापडिक्कमणसुत्तं ते तस्सधम्मस्सकेवलिपन्नत्तस्सत्ति न भणंति ॥ ५१ ॥ पडिक्कमणे साहुणो सावयाय काउस्सग्गे अइआर मुक्कलं चिंतिंति न उण गाहासूअं ॥५२॥ वक्खाण वायणे वि रागझुणी न कायव्वो, ॥ ५३ ॥ सामाइअदंडगं मुहपोत्तिआपडिलेहणपुव्वं भणिअ तओ इरिआवहि पडिक्कमिज्जइ न उण इरिअंपडिक्कमित्ता तओ सामाइअग्गहणं ॥ ५४ ॥ पक्खिअपडिक्कमणे पुढोकयआलोअणंमुत्तुं परोप्परं एगमंडलीए न च्छंदणादोसो अओ मुहपोत्ती पडिलेहिज्जइ ॥ ५५ ॥ अट्ठमीचउद्दसीसु उववासकरणं सइसामत्थे बीआ पंचमी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एगारसीसु निव्विगयं अन्नया एगभत्तमवंजणजायखुड्डिअ, गिला-णाइ मोत्तुं ॥ ५६ ॥ पइदिणं संपुण्णचिअवंदणादेवालए ॥ ५७ ॥ रत्तीए गुरुणो सोअत्थं दुप्परिआए जलोल्लिअचीवरखंडट्ठावणं अइसाराइसु लुहणयाइ धोवणभंडए धारेयव्वं ॥ ५८ ॥ चउमासि आधोवणि॥ ५९ ॥ वासाचउमासए सूरीणं दुकंबला निसिज्झा उव-ज्झायस्स एगकंबला वायणायरिअस्सय ॥ ६० ॥ जेट्ठ उवज्झाया महोवज्झाया इति भणंति न उण अन्ने ॥ ६१ ॥ आयरिअ नामं लेहाइसु अमुगआयरिअ इयलिहिअव्वं न उण सूरित्ति ॥ ६२ ॥ संघाडइ बाहिरिमए तस्संतिअंवत्थपत्त पुत्थयाइपडआसण कंबल-सहिअं मूलगुरुणो दिज्जइ ॥ ६३ ॥ साहूसु कणिट्ठो भोअणमंडलीं समुद्धरइ ॥ ६४ ॥ ओमरायणिआजलं विहरंति सेसाभत्ताइअं ॥६५॥ वीसउसिरिमाल ओसवाल पोरुआडकुलसंभूओचेव आयरिओट्ठविज्जइ, उवज्झाओवितहेव, न उण दसाजातिओ महुतीयाणो ठाविज्जइ, वायणा गुरुजोवा सोवा, ठाविज्जइ, महत्तरा सिरिमालाचेव ठाविज्जइ ॥ ६६ ॥ पंथे सइजाय दुप्पडिलेहगोअरचरिअभंगोत्ति जहा जेट्ठं साहुणो विस्सामिअ, सुहविहारोपुच्छिअव्वो ॥ ६७ ॥ साहूणं पढमोवहाणे वुड्ढे उत्तरज्झयणाइ जोगा बोढव्वा ॥ ६८ ॥ वीरस्स छकल्लाणया ॥ ६९ ॥ इति श्रीजिनपतिसूरिसामाचारी, ॥ ३ ॥ ननु श्रीराजगच्छे एतत्सामाचारी त्रयातिरिक्तं व्यवस्थापत्रमपि किमपि वर्त्तते न वा, उच्यते वर्त्तते एव साधूनां शिक्षारूपं, तथाहि सर्ववस्त्रपात्रादि विहृत्य मूलगुरुभ्यो निवेदनीयं १ प्राभृतकादिपरिष्ठापने आचाम्लं अन्यत्र चातुर्मासिक १ सांवत्सरिक २ पारणातः ३ पात्रक्षालने कल्प-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परिष्ठापने निर्विकृतिकम् ३ गुरुणा सह संस्तारकमुखवस्त्रिकाऽप्रतिलेहे निर्विकृतिकम्, मार्गश्रमग्लानत्वादि २ कारणं विना ४ गुरोरनापृच्छा साधुभ्यो वस्त्रादिदानं न कार्यं अन्यत्र पृथक्संघाटकात्, ५ पात्र १ त्रेपणक २ घटभंगे ३ आचाम्लं चेतणी १ ढांकणी २ प्रभृतिभंगे, निर्विकृतिकम्, ७ आत्मरुच्या गृहस्थपार्श्वात्किमपि न आनाय्यं किंतु संघाटकं प्रति पृष्ट्वा ८ विंशतिवर्षपर्यायं विना योगपट्टादि न ग्राह्यं ९ सन्निधिधारणवर्जनं १० संस्तारके सामान्यतपोधनस्य कंबलिकानिषेधोग्लानवर्जं ११ क्रीतादिना वस्त्रादि अपूर्वं न आनाय्यं १२ सागरिकसमक्षं गाढकलहे आचाम्लं, अज्ञाते निर्विकृतिकम् १३ सागारिकेभ्यो याचकेभ्यश्च निजान्नपानादि न देयं १४ उपाध्याय १ वाचनाचार्ययोर्मण्यक्षतपूजानिषेधः १५ गुरोराज्ञया विहारो गमनागमनादिकः १६ उपाध्याय १ वाचनाचार्याणां २ प्रावृतानामेवोपयोगकरणं आचार्यवत् १७ उपाध्यायवाचनाचार्याणामारात्रिकावतारणं न १८ प्रथमदिने आचार्यो १ पाध्याय २ वाचनाचार्यैर्यथा ज्येष्ठं रात्निकपादशौचं कार्यं १९ उपाध्याय १ वाचनाचार्याणां २ पृष्ठपट्टेकंबलं वस्त्रं च नास्ति, २० भोजनकाले आचार्योपाध्यायैरग्रे पट्टकं धार्यं, न वाचनाचार्येण २१ व्याख्यानारंभे गच्छाधिपतेर्नमस्कारकथनं प्रतिक्रमणे तन्नामकथनं च, २२ दीक्षादानं मूलगुरोः तदाज्ञया आचार्याणांच २३ सागारिकदृष्टौ उच्छोलनाभ्यंगनिषेधः अन्यत्र हस्तपादशौचात् २४ वर्षाचतुर्मास्यां एका विकृतिर्वीरकल्याणके च बालग्लानवर्जं २५ राद्धकाचरनिषेधः २६ देवस्वं ज्ञानधनंच न क्वापि व्यापार्यं देव ज्ञानकार्यादन्यत्र २७ पूर्णिमाऽमावस्योर्नंदीश्वरदेववंदनं २८ कार्त्तिक-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चतुर्मासिकपारणं बहिर्विधेयं यतनया २९ गुरुस्तूपद्रव्यमपि देवस्वज्ञानवत् ३० अकालसंज्ञायां यथातथा उपवासः प्रेश्यः ३१ अष्टमीचतुर्दश्योः पादशौचवर्जं उच्छोलनानिषेधः करणे उपवासः ३२ उत्सर्गेण दुग्धनिषेधः ३३ इति व्यवस्थापत्रम् ॥४॥ अनेनैव क्रमेण प्रतिसंघाटकं सिद्धान्तानुसारेण गच्छानुकूलेनैव सांप्रदायेन वर्त्तमानिकैः सुविहितगीतार्थैः संविग्नरीत्या निर्वाहयोग्यम् व्यवस्थापत्रं लेख्यम् ॥ अथोत्सूत्रस्यैकलेशः ज्ञाप्यते' तथाहि—ननु आगमे स्त्रीणां पूजानिषेधः कापि नश्रूयते' प्रत्युत प्रभावतीद्रौपद्यादीनां, तद्विधेरेव श्रवणात्' आधुनिकवनितानां अपि जिनार्चनं युक्तमेव, अन्यथा तासां दुर्लभार्हद्धर्मलाभो वैफल्यमापद्येत' सम्यक्तशुद्धेः अन्यथानुपपत्तेरिति चेत्, शृणु तरुणीनां स्वहस्तेन जिनांगस्पर्शनं न युक्तिमत्, यतस्तासामनियतकालतया स्वयमप्यलक्षणतया च स्त्रीधर्मस्य संभवेन सर्वासां तदयोग्यतोपपत्तेः किंच लोके लोकोत्तरे च स्त्रीधर्मस्य महादोषत्वेन श्रवणादपि स्त्रीणां तद्विधानं न संगतिमियर्ति, अन्यथा सिद्धान्ताध्ययनादौ साध्वीनां कथंचित् स्त्रीधर्माविर्भावे, श्रुताशातनाघातनाय छेदग्रन्थेषु तादृक् प्रयत्नं गणभृतो न व्याहरेरन्, देहधर्मतया भवदाशयेन तत्र दोषानवकाशात्, तथा पंचेंद्रियजन्तुदेहक्षतादिक्षतजस्यापि वसत्यादिषु बिन्दुमात्रस्य पतितोद्धृतस्याप्याशातनानिमित्तेनाहोरात्रादिमर्यादया सिद्धान्ताध्ययनादिप्रतिषेधः सूत्रे प्रत्ययादि, किंपुनर्नारीरजसः, लौकिका अपि मलिनीं प्रत्याहुः प्रथमे अहनि चंडाली, द्वितीये ब्रह्मघातिनी, तृतीये रजकी प्रोक्ता, चतुर्थे अहनी शुध्यतीति, एवंच यदा रुधिरसन्निधौ सिद्धान्तमप्यधीयानाविराधयन्ति, तदा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तत् स्रष्टुर्भगवतो रजस्वलाभिर्विरच्यमाना पूजा तु तासां सम्यक्त्वादिनाशमेव कुर्यादिति, ताभिस्तद्विरचनं कथमिव प्रेक्षावतां चेतांसि प्रीणीयात्, किंच ननु कास्तास्तवाभिप्रेताः ता एव शौचदशायां वर्त्तमाना इति चेत्, ननु सर्वैः पूजोपकरणैस्तासां तदधिकारस्त्वं प्रस्तूयते कतिपयैर्वा न प्रथमः तदाहि उभयतस्तीर्थकृद्बिंबं व्यवस्थिताभिः कोमलकरकमलकलितधौतकलधौतकलशाभिः पुरुषवत्ताभिरपि पुष्पादिपूजावत् स्नात्रादिरपि निर्माणप्रसंगात्, जिनपडिमाए वामंमि इत्थिया इत्यादिक्रमेण चैत्यवंदनवद्वा दक्षिणेनजिनप्रतिकृतिं तस्थुषा, पौंस्नेनोत्तरेण च स्त्रैणेन तद्विधानापातात्, इन्द्रानुकारेण स्नात्रविधेर्विधीयमानतया तत्करणं, पुंसामेवौचितीं चिनोति, न स्त्रीणां इति चेत् यद्येव इंद्राण्यनुकारेणैव तासां पूजाविधिर्युज्येत न च जन्माभिषेकमहसि रत्नसानुशिरसि सिंहासनमध्यासीनस्य परमेश्वरस्य वपुषि स्नानवसनपुष्पस्रगाद्यारोपणभक्तिमिंद्राण्योनुतष्ठु, किंतर्हि भुवनगुरोः पुरोवस्थितास्ता अक्षतैरक्षतैरष्टावष्टापदाचलचूलायां मांगलिक्यान्यालिख्य गुणान् गायंति नृत्यंति च, एवं श्राविका अपि शुचिभूतश्राद्धहस्तेन स्नपनसुरभिगंधसारघनसारसुमनोमनोरमवस्त्रादिभिः पूजां प्रयुंजाना मेदुरानिंद्यहृद्यनैवेद्यदानविदुरा अनवगानगाननर्त्तनप्रवर्त्तनपेशला यदि भगवंतमाराधयन्ति, तदा नकंचनदोषमुत्पश्यामस्तावतैव द्रव्यस्तवद्वारा तासां सम्यक्तशुद्धिसिद्धेः, यथाधिकारं विहिताचरणस्यैव चागमे निःश्रेयसहेतुतया प्रतिपादनात्, एवमनभ्युपगमे तु पुरुषवद् योषितामपि अहो कायं कायसंफासमित्यादिसूत्राण्यनुपपत्त्या स्वकराभ्यां गुरुचरणस्पर्शेनैव वंदनकविधिप्रसंगात्, दृश्यन्ते चा-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

द्यापि चिरंतनजिनसदनेषु स्त्रीणां पूजानिवारणाय गर्भागारद्वारे भुजार्गलाः, अतएव गर्भागारबहिर्विधीयमानपूजायामेव तासां प्रायः स्वपाणिना करणाधिकार इत्यवसीयते न द्वितीयो यतः कियतीरेव पूजाः पुष्पारोहणाद्याः स्त्रियो विदधति, ननु स्नात्रादिका अपि कुत-एव तद् भवतानिश्चायि न तावदागमात्, भवद्विवक्षितकतिपयपूजा-धिकारित्वनियमस्य तासां तत्रादर्शनात्, अनादिसंप्रदायादिति चेत्, न, तस्याप्यस्मिन् वटे यक्षः प्रतिवसतीत्यादिसंप्रदायवदप्रामाणिकस्य परीक्षकैरनभ्युपगमात्, इंद्राण्यनुकारादिति चेत्, तर्हि तद्वदेव तावत्य स्नास्ताभिरपि कर्तुमुचिता, न स्वरोचकरुचिता, यदपि प्रयोगद्वयेन तत् समर्थनं तदपि प्रतिपन्नश्रावकधर्मत्वादित्यस्य हेतोस्तथाविधश्चित्रादि, आमयाविभिर्व्यभिचारात्, न समीचीनं तेषां तथात्वेप्यशुचितया स्वहस्तेनसपर्यानधिकारात् द्वितीयप्रयोगेपि हेतोस्तादृशीभिः स्त्रीभिर नेकान्तात्, न खलु त्वयापि कुष्टादिकायविकृताभिस्ताभिर्भगवत्-प्रतिकृतिषु स्वहस्तार्चनमभ्युपेयते अप्रयोजकश्च अन्यथानुपपद्यमान-सम्यग्दर्शनशुद्धित्वादिति हेतुर्नहि प्रभावत्यादीनामेतत् साधनधर्मध-र्मप्रयुक्तः, स्वकरपूजाधिकारा किंनाम तासामवरोधनिरुद्धतया तथा-विधार्चकपुरुषार्थलाभप्रयुक्ततयौपाधिकः तथाहि—या अन्यथानुपप-द्यमानसम्यक्त्वशुद्धिकास्तादृगर्चकपुरुषार्थलाभभाज इति व्याप्तेः, पक्षीकृतयोषित्स्वेव संभावितं, तादृग् अर्चकपुरुषलाभानुव्यभिचारात् साधनाव्यापकत्वेन तथा याः स्वहस्तेन पूजाधिकारिण्यस्ता उद्-भावितोपाधिभाजः याश्चैवंभूतास्ताः स्वहस्तेन पूजाधिकारिण्यो यथा प्रभावत्यादय एवेति साध्यसमव्याप्तिकत्वेन चोपाधिलक्षणस्येहो-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पपत्तेः, अतएवापवादिकोसौ विधिः, नारिविशेषोद्देशेन प्रवृत्तेः, विशेषविधेरेव चापवादपदेनाभिधानात्, नचांतःपुरसंचरिष्णुभिः स्ववल्लभैः तत् करणोपपत्तौ कथं पूजकपुरुषालाभ इति वक्तव्यम्, तेषां मिथ्यादृष्टितया केषांचित् सम्यग्दृष्टित्वेप्यत्याज्यप्राज्यराज्यप्रयोजनवर्गव्यग्रतया यथाकालं तदकरणं संभवात् एवं व्यवस्थिते प्रयोगोप्यभिधीयते' उत्सर्गेणतरुण्योर्हद्विंबं स्वकरेण पूजानधिकारिण्यः' आकस्मिकशोणितोद्भेदसंभावनावत्वेनावश्यसंभाव्यभगवदाशातनात्वात्' तादृग्नासिकादिशोणितप्रवाहसंभावनासु कुपुरुषवदिति, नचात्र प्रभावत्यादिभिरेव व्यभिचार इति शंकनीयं, उक्तयुक्त्या अपवादेन नीरजस्कता दशायां तासां तत् समर्चनेन, व्यभिचारानुपपत्तेः, अतएव तन्निरासाय प्रतिज्ञायामुत्सर्गपदमवादि, एवं तर्हि कन्यानां विगतार्त्तवानां च तत् निर्माणप्रसंग इति चेत्, न तासां स्वपाणिसपर्याविधिदर्शनेन किमाभ्योपि वयं हीना, इतीर्ष्यालुतया तुच्छतया प्रायः सातिरेकविवेकविकलतया चाधुनिकन्यायेनाहमहमिकया तरुणीनाम् तत्प्रवृत्तिप्रसंगात्, प्रवृत्तिदोषस्य च, इक्कणकयमकज्जं, इत्यादि आगमेन भगवता निवारणात्, इतरथा निरंकुशतया सर्वासमंजसतोत्पत्तेः, तथाच प्रयोगः विवादास्पदस्थानमस्याः, कन्याविगतार्त्तवानामपि कर्त्तुमनुचिता, प्रसंगदोषापादकत्वात्, तासामेव रजन्यां निजमंदिरोदराद्बहिः संचारवत्, श्रमणानां स्वार्थं गृहस्थप्रासुकिकृतार्द्रकाभ्यवहारवद्वेति,न चसाध्यविकलः, प्राच्यो दृष्टान्त दंडनीत्यादिशास्त्रेषु कुलवधूनां निशायां स्वगृहात् वहिरनिर्गमस्य वंधकीभावावंध्यनिबंधनतया प्रतिषेधोपदेशात्, एवंच यदि पुष्पचापचापलनिरर्गल-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तया भूभुजां च स्वतंत्रस्त्रैणदोषदर्शनेपीश्वरलीलतया गजनिमिलिकावस्थानेन काश्चन शठा हठाच्छास्त्रक्रमं व्यतिक्रामेयुः' तदा कस्तासां निवारयिता, पुरुषभुजं गवां मांसादि तत्स्वादतया अकांडचंडदण्डपातेनाप्यमेध्यप्रवृत्तेर्व्यावर्त्तयितुमशक्यत्वादितिपौर्णमासिकादिमतवर्त्तिपक्षनिरासः, अथ कैश्चित् पुनःपंडितंमन्यैर्यदपि विकल्पचतुष्टयीमुद्भाव्य तन्निरासेन स्त्रीणां स्वहस्तेन जिनार्चनसमर्थनं तदप्यसंगतं, माभूवन् यतीनामिव प्रतिमानामचेतनतया कामोत्कलिकादयः स्त्रीसंघट्टजन्या दोषाः किन्तु उत्कटरजसां स्त्रीणां संघट्टात् कदाचित् भंगादिदर्शनात्, कथं तत् संघट्टस्तासामौचित्यं भजेत, यत्पुनरुक्तं यतीनां हि सरागसंयमस्थानानां संभवन्ति, स्त्रीसंघट्टप्रभवदोषाः, तीर्थंकृतान्तु वीतरागतया तत्संघट्टेपि न किंचिदिति तन्नघटामुपैति, एवं हि जीवन्मुक्तानामपि, तीर्थंकृतां सामान्यकेवलीनां च, स्त्रीसंघट्टो भवतानुज्ञातः स्यात्, तेषां वीतरागत्वेन सर्वथा तत्प्रभवदोषानुसंगासंभवात्, एवमस्त्विति चेत् न, जत्थित्थीकरफरिसं, लिंगी अरिहा विकुणइ नियमेण, (सयमविकारिज्जा) तं (निछयओ) गोयम जाण गणं, न मूलगुणसंपयं वहइ (जाणिज्जामूलगुणभट्ठं) ॥१॥ इत्यादिना यत्रारिहापि वीतरागोपि यतिः स्त्रियाः करस्पर्शमात्रमपि कुरुते नासौ गच्छो मूलगुणोपेत इति भगवतो गौतमं प्रति गच्छसंस्थोपदर्शनवैफल्यापत्तेः, अन्यथायतीनामित्यादिप्रसंगश्च न किंचित्, जीवद्यतिकल्पप्रतिमाकल्पयोरत्यंतं भेदादिति, यच्च स्त्रीणां अपावित्र्यमाशंक्य विकल्पैर्दूषितं तदपि न माभूत् यावज्जीविकमपावित्र्यं, तथापि कदाचित्,कमपि तस्मात्पूजनानर्हत्वस्य तासामुपपत्तेः ननूक्तं कदाचित् कात्तस्मात्, कदाचित्कमेव तत्सिद्ध्यति, नतु सर्वदिशमिति चेत् न,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अपावित्र्यनिबंधनस्य कुसुमोद्भेदस्याकस्मिकत्वेन पावित्र्यावस्थायां अपि तत्संभावनया तासां सर्वदापि पूजानर्हत्वस्यानुगुणत्वात्, श्रूयते च तत्रदृष्टान्तैरुपपादितानां मालापहृतादिभिक्षाग्रहणदोषाणां कादाचित्कत्वेपि प्रवृत्तिदोषादिहेतुना यावज्जीवं यतीनां तद्वर्जनं तत्कस्य हेतोः, इक्केणकयमकज्जं इत्यादिन्यायेनातिप्रवृत्त्या सर्वोपप्लवांतरपातात् यदपि मूलप्रतिमा जगतिप्रतिमानामविशेषापादनेन स्त्रीणां मूलप्रतिमायां अपि स्वहस्तेनपूजनसमर्थनं तदप्यचारु वाचा तासामविशेषमभिदधानैरपि भवद्भिर्मनःकायाविशेषस्योपदर्शनात्, तथाहि चतुर्विंशत्यादिजिनालये चैत्यवंदनावसरे यूयं किमिति प्रथमं मूलप्रतिमां वन्दध्वं, तदनुदेवकुलिकाप्रतिमाः, नहि युष्मदाशयेन द्वयीनामप्यारोप्यमाणतीर्थंकरगुणैरस्ति कश्चिद्विशेषः, तथा प्रथमचैत्ये या मूलप्रतिमात्वेनासीत्, तज्जातीयैव चैत्यान्तरे यदा जगतिप्रतिमात्वेन व्यवस्थिता प्रतिमान्तरं तु मूलप्रतिमात्वेन तदा किमिति तत्रगतैर्भवद्भिः प्रतिमान्तरं प्रागभिवन्द्यते, प्रथमचैत्यमूलप्रतिमाजातीयानुपश्चादुभयोरपि प्राग्वद्विशेषात्तथा किमिति तदेवदेवगृहं मूलप्रतिमानामाधेयेन सर्वत्राधारः व्यपदिश्यते, न जगति प्रतिमानाम्नेति किमिति च पूर्वं सर्वोपि कश्चिन्मूलप्रतिमायाः सपर्यां रचयति, पश्चात्तु शेषप्रतिमानां ततश्चेदुपस्थितम् यत्रोभयोः समो दोषः, परिहारश्च तत्समः, नैकपर्यनुयोज्यस्यात् तादृश्यार्थविचारणे ॥१॥ तस्मान्मूलेतरप्रतिमानां प्रतिष्ठादिकृतः कश्चिदस्ति संस्कारविशेषः अन्यथा तीर्थंकरगुणाध्यारोपाविशेषेपि तासां वन्दनपूजनादिविषयप्राक्पश्चाद्भावादिः नियमानुपपत्तेः, तस्मादपवादत्वेन तथाविधपूजकालाभे मंडपादिप्र-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तिमागृहप्रतिमाश्च शुचिर्भूतश्राविकाः स्वहस्तेन पूजयन्त्यपि, न पुनर्मूलप्रतिमामिति स्थितम् यदपि युगप्रधानगुरुरेक एवेत्यादिप्रत्यपादि, तत्र विवक्षितकाले संख्यामाश्रित्य एकएवेत्यनुमन्यामहे, यत्पुनरस्मदीय एवेति तन्न युक्तं नहि वयमस्मद्वंश्य एव, युगप्रधानमित्यभ्युपेयकिन्तु कालाद्यपेक्षया देशकुलजाइरूवी इत्यादिश्रुतभणितगुणगणशाली स्ववंश्यपरवंश्यो वा भवतु न तत्रास्माकं रागद्वेषौ स्तः, यच्च व्यवहारतस्तु तण्णंतेदोथूलिभद्दसीसा जुगप्पहाणा इत्यादिजल्पितं, तत्रास्तां द्वयोर्बहूनां वा युगप्रधानत्वं को निवारयिता केवलं न युगपत्, आर्यमहागिरौ संघधुरांप्रति जाग्रति. तस्यैव मुख्यो युगप्रधानव्यपदेशः, आर्यसुहस्तिनस्तु राज्यार्हकुमारस्य राजव्यपदेश इव तदानीमसौ गौणएवमनभ्युपगमे, एरोनिवडइगुणगणाइण्णे, इत्यादिमहानीसीथवचनात्संगतिप्रसंगात्, अपिचैकदा युगप्रधानत्वे द्वयोरपि स्वप्रधानतयार्यसुहस्तिनस्तत्तदार्यमहागिरिनिर्देशवर्त्तित्वं कथानकप्रतीतं नघटामाटीकेत ॥ तथा यत् त्रैधारात्रिकशब्दव्युत्पादनं, तत्र किंचिद् विचार्यते, तथाहि आरात्रिभवमित्यत्र यद्याङ् अभिव्याप्त्यर्थस्तदासकलां रात्रिं तद्विधीयते इत्यर्थः, स्यान्नचैतदस्ति भगवन्मतेरात्रिमभिव्याप्य तद्विधानस्यानुपगमात्, अथेषदर्थस्तदाह्नि तद्विधानानुपपत्तिः, अथ रात्रेरुपलक्षणत्वाद्दिनेपि तद्विधिरुपपद्यत इतिचेत्, न लोकिकलोकोत्तरयोर्दिवसस्य प्राधान्येन गौण्यारात्र्या तदुपलक्षणायोगात्, अथ सीमार्थस्तदा प्रातरारभ्य सायं यावत्तन्निर्माणप्रसंगः, अथाद् भगवतामदूरसामिप्येन त्रिरुत्तार्यत इतिव्युत्पत्तिः, तत्रापि द्विर्दशद्विदशा एवं त्रिर्दशः त्रिदशा इत्यादौ बहुव्रीहिसमासेन सुच् प्रत्य-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यार्थस्योक्तत्वादुक्तार्थानां अप्रयोगः इति भवति,तत्र सुचो अप्रयोगः, आरात्रिकमित्यत्रतु यथारादित्यनेन पदेन त्रिरिति पदं समस्यते, तदासंख्यासमासे इति सूत्रेण संख्यावाचिनो नाम्नः, समासमात्रे पूर्वनिपाताभिधानात् त्रिरादिति प्राप्नोति न तु सुचो अप्रयोगः स्यात्सुच् प्रत्ययार्थस्य वा रस्यकेनाप्यनुक्तत्वात् , अथोत्तार्यत इत्यनेन क्रियावाचिना अध्याह्रियमाणेन समस्यते, तदानामनाम्नैकार्थ्ये समासो बहुलमिति व्याकरण सूत्रेण नाम्नोनाम्नासाक्षाद्धियमानेन समासाभिधानात् , क्रियावाचिना पदेन अध्याह्रियमाणेन च द्वितीयेनापि समासाभावप्रतिपादनात्सुच् प्रत्ययस्य अनुक्तार्थत्वेन तदनवस्थत्वप्रसंगाच्च, अथारात्रायते इत्यादिव्युत्पत्त्या मत्वर्थीये इके आरात्रिकपदसिद्धिस्तदपि न हरिहरादिविषयत्वेनापि तदवतारणस्य बहुलं लोके दर्शनात् , तस्मात्पूर्वसूरिग्रन्थेषु रूढस्यारात्रिकशब्दस्यैवान्वाख्यानं श्रेयः, किंस्वः प्रागल्भीप्रकाशनछद्मना कल्पितस्यारात्रिक शब्दस्यासंबद्धार्थानेकव्युत्पत्तिकल्पनाभिरात्मनायासितेन, तथा यदपि जिनपूजाव्याप्रियमाणपुष्पादिसंघट्टादिना जीवविराधनासंभवादीर्यापथिकीप्रतिक्रमणसमर्थनं तत्राप्युच्यते, प्रतिक्रमणं हि आलोयण पडिकमणे इत्यादि गाथोक्तदशविधप्रायश्चित्तमध्याद् द्वितीयं प्रायश्चित्तं तच्च प्रतिपंक्रमणं प्रतिक्रमणं, अतिचारान्निवृत्य गुणेष्वेव गमनं किमिति मया प्रयोजनमंतरेणैवंविधासत्कृत्यमध्यवसितमित्यादि पश्चात्तापरूपविकल्पेन मिथ्यादुष्कृतदानमितितात्पर्यमिति श्रीमदभयदेवसूरिभिः प्रायश्चित्तपंचाशकवृत्तौ व्याख्यातं, एवंसति यदि पूजार्थपुष्पादिसंघट्टनेपि ईर्यापथकी प्रतिक्रमणं विधीयते, तदा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुष्पादिपूजायाः श्राद्धैरकृत्यत्वमेवावसीयेत, अतिचारजनितपापवि-शुद्ध्यर्थमेव प्रायश्चित्तविधानात्, तथाच जिणभवणबिम्बठावणजत्तापूयाई सुत्तओ विहिणा इत्यादि गाथायां द्रव्यस्तवत्वेन गृहिणां विधेयत्वेनाभिहितस्य जिनभवनादेरपि तैर्निर्मापणाप्रसंगात्, यथाहि पुष्पादिसंघट्टनमात्रेपि,प्रायश्चित्तेनस्तदाकैवकथाजिनभवनादि-निर्माणे न च ईर्यापथकीप्रतिक्रमणरूपप्रायश्चित्तेन तन्निर्मापणजात-पातकस्य शुद्धिः तावदारंभसंभारसंभवस्य तस्य चातुर्मासिकादि बृहत्प्रायश्चित्तं विना शोधयितुमशक्यत्वात्, नहि भुवोनिदाघदाहः प्रावृष्येण्यवारिवाहधारासारादृते जलघटपटलापिनिरोद्धुं पार्यते, तथा-चालंगृहमेधिनां तन्निर्मापणाय स्वापतेयव्ययेन प्रक्षालनाद्धि पंकस्य दूरादस्पर्शनं वरमितिन्यायात्, एवंच प्रायश्चित्तभिया जिनगृहाद्यवि-धानेसाध्वीतीर्थवृद्धिः श्राद्धानांच संसारवीथी भवता व्यवस्थापिता स्यात्, नचागमे जिनगृहादि निर्माणेन गृहिणां क्वचित्प्रायश्चित्तविधिः श्रद्धापुरस्सरं जिनपात्रन्यायान्तस्ववित्तनियोजनार्जितकुशलानुबन्धि-कुशललाभेनार्हद्भवनाद्यारंभप्रादुर्भविष्णुजीवविराधनाजन्यकल्मषत-तेः प्रतिबन्धात्, इत्यादि जिनधर्मप्रबोधोदयेनच लब्धभूरिसंवेगोद्-भूतरंगितात्मा, श्रीकीर्त्तिसारगणेः शिष्याणुना श्रीमदानन्दाख्य-मुनिना प्रकरणमिदं व्यरचि सोपयोगित्वादत्र लिखितः पूर्वोद्दिष्ट-विषयानामथाग्रेऽस्य यन्त्रे द्वितीयावृत्तौ लोकभाषायां अवतारो भवि-ष्यति, इति सुमनसां प्रीतयेऽस्तु मे प्रयासः॥

"स्त्रिया जिनपूजा कार्या नवा" अर्थात् स्त्रीको श्रीजिनप्रति-माकी पूजा करनी या नहीं? [उत्तर] इस विषयमें ढूँढियेंकी तरह

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शंका करनी अनुचित है क्योंकि शास्त्रोंकी संमतिसे श्रीजिनप्रतिमाकी पूजा करनी और आशातनादि होनेके कारणों से नहीं करनी यह दोनों मंतव्य मानने पड़ेंगे देखिये कि श्रीतीर्थंकरमहाराजकी प्रतिमा तीर्थंकरतुल्यमानी है इसीलिये श्रीजिनप्रतिमाकी पूजा हित सुख मोक्ष आदि फलकी हेतु है और वह श्रीजिनप्रतिमाकी पूजा श्रीज्ञाताधर्मकथा सूत्र आदि शास्त्रोंमें द्रौपदी आदिने करी लिखी है वास्ते पुरुषोंको तथा स्त्रियोंको श्रीजिनप्रतिमाकी पूजा करनी ऐसा श्रीगणधर आदि महाराजोंका उपदेश है तथा श्रीगणधर महाराजोंने जिसतरह श्रीठाणांग सूत्रआदि ग्रंथोमें (अट्ठिमांस सोणिए इत्यादि) अर्थात् हड्डी मांस रुधिरादिसें श्रीजिनवाणीकी आशातना नहीं होनेके लिये सूत्रअध्ययन (पठन पाठन) नहीं करना लिखा है इसीतरह श्रीप्रवचनसारोद्धार आदि अनेक ग्रंथोंमें (खेल इत्यादि) अर्थात् नाकसम्बधीमल इत्यादि ये तथा (लोहिय इत्यादि) अर्थात् शरीरसम्बधी (खून) रुधिरादि से श्रीजिनप्रतिमाकी आशातना नहीं करना लिखा है वास्ते कोई पुरुष व स्त्रीके शरीरद्वारा अकस्मात् (खून) रुधिरादि गिरता हैं तो आशतनादि नहीं होनेके कारणोंसे श्रीजिनप्रतिमाकी चंदनादि विलेपनद्वारा अंगपूजा नहीं करे इसीलिये श्रीमत् बृहत्खरतरगच्छनायकयुगप्रधानदादाजी श्रीजिनदत्तसूरिजी महाराजने इस दुस्सम कालमे श्रीजिनप्रतिमाकी चंदनविलेपनादिसे अंगपूजा करती तरुण स्त्रियोंको अकालवेला प्रगट हुआ ऋतुधर्म उसकी बहुत मलिनताके दोषसे याने पूजासमय ऋतुधर्मवाली हुई उस महामलिन

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तरुणस्त्रीका हाथके स्पर्शसे अतिशयवाली तथा श्रीजिनशासनकी उन्नतिकरनेवाली चमत्कारी देवाधिष्ठित श्रीमूलनायक जिन प्रतिमाकी आशातना और उसके अधिष्ठाता देवका लोप नहीं होने के लिये इस विशेष लाभको दीर्घदृष्टिसे विचारकर तरुणअवस्था वाली स्त्रीको श्रीमूलनायकजिनप्रतिमाकी चंदनादि विलेपनद्वारा केवल अंगपूजा नहीं करना उच्छूत्र पदोद्घट्टन कुलकमें लिखा है तथा विधिविचारसार कुलकमेंभी लिखा है कि—

सागारमणागारं, ठवणाकप्पं वयंति मुणिपवरा ।
तत्थ पढमं जिणाणं, महामुणीणं च पडिरूवं ॥ १ ॥

भावार्थ—साकार अनाकाररूप स्थापनाकल्प प्रवरमुनियोंने कहा है उसमें प्रथम साकार कहे हैं कि श्रीजिनके तथा महामुनिके प्रतिरूप (सदृश प्रतिमा) हो ॥ १ ॥

तं पुण सप्पडिहेरं, अप्पडिहेरं च मूलजिणबिंबं ।
पूइज्जइ पुरिसेहिं, न इत्थिआए असुइभावा ॥ २ ॥

भावार्थ—वहपुन प्रातिहार्यसहित तथा प्रातिहार्यरहित श्रीमूलनायक जिनप्रतिमाको पुरुष पूजे स्त्रीअशुचिवाली नहीं पूजे ॥ २ ॥

काले सुइभूएणं विसिठ पुप्फाइहिं विहिणाउ ।
सारत्थुइ थुतिगुरुई, जिणपूआहोइ कायव्वा ॥ ३ ॥

भावार्थ—कालवेला. ऋतुधर्मआवे वह स्त्री (शुचि) पवित्र होके विशेष श्रेष्ठ पुष्पादि (धूपदीप अक्षत नैवेद्य फल) करके

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विधिद्रव्य पूजा और सार स्तुति थुइगीत से श्रीजिनेश्वरकी भाव पूजा करती हैं ॥ ३ ॥

पुरिसेणं बुद्धिमया, सुहबुद्धिं भावओ गणिंतेणं ।
जत्तेण होइयव्वं, सुहाणुबंधप्पहाणेणं ॥ ४ ॥

भावार्थ—शुभानुबन्ध करके प्रधानबुद्धिमान् पुरुष शुभ बुद्धिको भावसे भावताहुआ पूजामें प्रयत्न वाला होय ॥

संभवइ अकाले विहु, कुसुमं महिला णं तेण देवाणं ।
पूआए अहिगारो न उहउ होइ सज्जुत्तो ॥ ५ ॥

भावार्थ—अकाल वेलाभी याने स्त्री जिनप्रतिमाकी पूजा करती हैं उससमयमेंभी उसस्त्रीको ऋतुधर्महोता है उसीलिये श्रीजिनदेवकी पूजाकरनेमें उन ऋतुधर्म आनेवाली तरुणस्त्रियोंको अधिकार युक्ति युक्त नहीं है ॥ ५ ॥

लोगुत्तम देवाणं, समच्चणे समुचिओ इहं नेउ ।
सुइगुण जिट्ठत्तणओ, लोए लोउत्तरे सूरीसेहिं ॥ ६ ॥

भावार्थ—इहां लोकोत्तम श्रीजिनदेवका (समर्चन) पूजन उसमें समुचित (शुचिगुण) पवित्र गुण ज्येष्ठपनेसे लोकमें और लोकोत्तर जिनधर्ममें (सूरीश) गणधरमहाराजोंने कहा जानना ॥६॥

न छिवंति जहा देहं, उसरणभावं जिणवरिंदाणं ।
तह तप्पडिमंपि सयं, पूअंति न जुव्वनारीओ ॥ ७ ॥

भावार्थ—जैसे अशुद्धशरीरको धारण करनेवाली ऋतुवंती स्त्री अन्य वस्तुको नहीं छूती है वैसे श्रीजिनप्रतिमाकोभी अपने हाथसे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नहीं छूती है इसीकारणसे जत्रानस्त्रियां पूजा नहीं करती हैं याने श्रीजिनप्रतिमाकी पूजा करती हुई तरुणस्त्री को अकालवेला ऋतु-धर्म रुधिरपात (खूँनका झरना) होता है उसी लिये तरुण अवस्था-वाली स्त्री श्री मूलनायक जिनबिंब (प्रतिमा) की अपनें हाथसे चंदनादि विलेपनद्वारा केवल अंगपूजा नहीं करें यह श्रीजिनदत्त-सूरिजी महाराजने लिखाहै परंतु बाल तथा वृद्ध अवस्थावाली स्त्रियोंको श्रीजिनप्रतिमाकी अंगपूजाका निषेध नहीं लिखा है और तरुणस्त्रीकोभी सर्व प्रकारसे श्रीमूलनायक जिनप्रतिमाकी पूजाका निषेध नहीं किया है क्योंकि तरुणस्त्रीको श्रीमूलनायक जिन-प्रतिमाकी सुगंधी धूप पूजा १ अक्षत पूजा २ कुसुमप्रकरपूजा ३ दीपक पूजा ४ नैवेद्य पूजा ५ फल पूजा ६ गीत पूजा ७ नाट्यादि पूजा ८ करनेके बारेमें उक्तसूरिजीने निषेध नही लिखा है केवल अंग पूजाका निषेध लिखा है सो तो श्रीपूर्वाचार्य महाराजनेभी १८ गाथा प्रमाण चैत्यवंदन उसकी टीकामें तरुण स्त्रियोंको श्रीमूलनायक जिनप्रतिमाके चरणआदि अंगको स्पर्शकरना निषेधलिखा है क्योंकि इसकालमें श्रीसिद्धाचलजी आदि तीर्थ परभी श्रीमूलनायक जिनप्रतिमाकी चंदन विलेपनादिसे अंगपूजा करती हुई कई स्त्रियों को अकालवेला अकस्मात् महत्पाप बंधनरूप महामलिन ऋतु धर्म आजाता है। यहबात बहुतलोगोंको मालूम है तो उक्त उचित कथन को कौन बुद्धिमान सर्वथा अनुचित कहेगा? देखिये श्रावक भीमसीमाणकने सर्वलोकोंके हितके लिये छपाकर प्रसिद्धकीहुई "पुष्पवती विचार" नामकी पुस्तकमें लिखा है कि—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आ जगतमां समस्त प्राणीमात्रने त्राणभूत शरणभूत आभव तथा परभवमां हितकारी सुखकारी कल्याणकारीने मंगलकारी एवां त्रण तत्व छे तेनां नाम कहे एक तो देव श्रीअरिहंतजी बीजु गुरु सुसाधु तथा त्रीजो धर्म ते केवली भाषित एत्रण तत्व छे तेने आराधनानुं मुख्य कारण अनाशातना छे (आशातना नहीं करनी) अने एने विराधनानुं मुख्य कारण आशातना छे ते आशातना पण विशेषें करी अशुचिपणा थकी थाय छे इत्यादि तथा समस्त अ-शुचिमां महोटी अशुचि अने समस्त आशातनाओमां शिरोमणिभूत वली सर्वपाप बंधननां कारणोमां महत् पापोपार्जन करवानुं मुख्य कारण एतो एक स्त्रियोंने जे ऋतु प्राप्त थायछे अर्थात् जे पुष्प-वती केहेवाय छे एटले स्त्रियोने अटकाव अथवा कोरे बेसवानुं थाय छे तेने लोकोक्तिमें ऋतुधर्म कहे छे ते ऋतुधर्म यथार्थपणे न पालवा विषेनुं (सर्वपाप बंधननां कारणोनां महत् पापोपार्जन करवानुं मुख्य कारण) छे इत्यादि ।

तथा आ ग्रंथमां करेला उपदेश प्रमाणें जे पुष्पवती स्त्रियो पोतें प्रवर्तशे बीजाने प्रवर्तावशे तथा प्रवर्तनारने सहाय आपशे तेने अत्यं-तलाभ थशे अने तेने परंपराए मोक्षसुखनी प्राप्ति पण अवश्य थशे—जे प्राणी आ ग्रंथमां करेला उपदेशथी विपरीत प्रवृत्ति करशे अथवा ए वातमां शंका कांक्षा करशे ते प्राणीनी लक्ष्मी तथा बुद्धिनो आभवमां नाश थशे अने सम्यक्त्व तो तेमां होयज क्यांथी अर्थात् नजहोय तेना घरना अधिष्ठापक देवो तेने मुकी जशे अने ते जीव मिथ्या दृष्टि अनंत संसारी दुराचारी तथा कदाग्रही जाणनो केमके एम

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करवा थकी देवगुरु तथा धर्मनी महोटी आशातना थाय छे ते वात आ ग्रंथ वांचवा थकी विवेकी जनोना ध्यानमां तरत आवशे ।

इत्यादि लिखकर तपगच्छवालोंकी बनाई हुई ७० गाथाकी ऋतुवंतीस्त्रीकी सज्झाय और १८ गाथाकी छोतीभास तथा अंचल गच्छवालोंकी करी हुई ३३ गाथाकी सूतककी सज्झाय तथा ऋतुवंती स्त्रीके अधिकार संबंधी सिद्धांतोक्त ६ गाथाओं यह चार ग्रंथभेले छपवाये हैं उनमें विशेषतासे ऋतुवंती स्त्रीको दूसरे वस्त्र आदि नहीं छूने तथा पुस्तक श्रीजिन प्रतिमाको नहीं छूना पूजादर्शन इत्यादि बहुत कृत्योंका निषेध लिखा है, और अनेक दोष दुःखदंड लिखें हैं देखिये उस पुष्पवतीविचार नामकी पुस्तकमें तपगच्छवालोंकी करी हुइ सज्झाय लिखा है कि—ऋतुवंती नारियो परिहरे रे, बीजे वस्त्रे न अडके, सांजे रात्रे नारी मतफरो रे, मतबेसजो तडके ॥ १ ॥ मतभालवी नारमालनीरे, छांडवा धर्म ठाम, प्रभुदर्शन पूजासद्गुरु रे, वांदवातजो नाम ॥ २ ॥ पडिक्कमणुं पोषह सामाय करे, देववंदनमाला, जलसंघनें रथजातरारे, दर्शनदोषटाला ॥ ३ ॥ रास वखाण धर्म कथारे, व्रतपच्चक्खाणमेलो, स्तवन सज्झाय रास गहुंलीरे, धर्मशास्त्रमखेलो ॥ ४ ॥ लखणुं लखे नहीं हाथशुंरे, न करे धर्मचर्चा, धूपदीवो गोत्रजारणारे, नहिं पूजा ने अर्चा ॥ ५ ॥ संघ जिमण प्रभावनारे, हाथे देजो मलेजो, बलिदान पूजा प्रतिष्ठानुंरे, मतरांधीने देजो, ॥ ६ ॥ पडिलामे नहिं साधु साधवीरे, वस्त्र पात्र अन्नपान, रांक ब्राह्मणने हाथे आपे नहिं रे, दाण लोटने दान ॥ १२ ॥ ऋतुवंती हाथे जलभरीरे,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

देरासरजो आवे, समकितबीजपामे नहिं रे, फलनारकीना पावे, ॥ २५ ॥ ऋतुवंती यात्राए चालतां रे, मतबेसजोगाडे, संघतीर्थ फरस्यां थकारे, पडशो पाताल खाडे ॥ २९ ॥ दर्शन पूजादिनसात मेरे, जिनभक्ति करवी, व्रतपच्चरकाण वखाण सुणोरे पुण्यपालखी भरवी, ॥ ३१ ॥ वेदपुरान कुरानमांरे, श्रीसिद्धान्तमां भाख्युं, ऋतुवंतीदोषघणोकह्योरे, पंचांगे पणदाख्युं ॥ ५० ॥ पहेले दाहाडे चंडालिणी कहीरे, ब्रह्मघातक बीजे, धोबण त्रीजे चोथे दिवसेरे, शुद्धनारी वंदीजे ॥ ५१ ॥ ऋतुवंतीनुं मुख देखतां रे, एक आंबिलदोष, बातडी करतां रागनीरे, पांच आंबिलदोष ॥ ५७ ॥ ऋतुवंती आसने बेसतांरे, सात आंबिल साचा, छट्ठबार तास भाणे जम्यारे, नवगढ होये काचा ॥ ५८ ॥ ऋतुवंती नारीने आभड्यांरे, छट्ठनुं पाप लागे, वस्तु देतां लेतां अट्ठमनोरे, कहो केम दोष भागे ॥ ५९ ॥ खाधुं भोजनतेनारी हाथनुंरे, भवलाखनो पाप, भोग जोग नवलाखनोरे, वीर बोले जबाब ॥ ६० ॥ ॥ ऋतुवंती खातां भोजन वध्धुंरे ढोरनें लावी नांखे, भवबार भुंडा करवा पडेरे, चंद्रशास्त्रनें साखे, ॥ ६२ ॥ रजस्वला वाहणे समुद्रमांरे बेसतां वाहण डोले, भांगेकां लागे तोफानमांरे, मालवामेंका बोले ॥ ६३ ॥ लाख भव जाण अजाण मांरे, लघुवड भव आठ, भव लाखने बाणु घातमांरे, एम शास्त्रानो पाठ ॥६४॥ कमलाराणी प्रभुवांदतांरे, बारलाख भवकीधा, मालण फूल अटकावमांरे, लाख भवफल लीधां ॥ ६५ ॥

इसीतरह पुष्पवतीविचार नामक पुस्तकमें छपी हुइ छोतीभासमेंभी लिखा है कि–छोती मूर्ति स्त्रीधर्मिणी जाणो, तेहनो भय

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

घणो आणोरे, जेहनो दोष दीसें निजनयणे, वली कह्यो जिनवयणेरे ॥ छो० १॥ दीठे अंध होय नेंत्र रोगी, षंढ होये संभोगीरे, गंधे अन्नादिका कश्मल थाये, पापडी पडी धावलायरे ॥ छो०२॥ बेडी बूडे जेहने संगें, जावारंग उरंगेरे, स्नानजलेंवेलवृक्ष सुकाये, फलफूल नविथायेरे, ॥छो०३॥ एम जाणी बीजे घरे राखो, तेहशुं भाषमभासोरे, वस्तुवानी आभडवानदीजे, दूरथकांज रहीजेरे ॥ छो०४॥ एमन राखेजेनर निजगोरी, तेहपापरथधोरीरे, प्रेमनरहे जे नारीप्रसारी ते पामेदुःखभारीरे ॥ छो० ५ ॥ शाकिनी जे कुटुंबने खाये, नरकमांहे तेजायरे, दुःखदेखे ते त्यां अतिघणा, छेदादिकवधबंधतणांरे, छो० ६॥ सापिणी वाघणी रीछणी सिंहणीं, श्यालिणी सुणी होई कागणीरे, अशुद्धयोनिमां पछीदुःखपामे, भवोभवपातकठामेरे ॥ छो० ७॥ पुष्पवती विचार नामक पुस्तकमें अंचलगछवालोंकी करी हुई सूतककी सज्झाय है उसमेंभी लिखा है कि–जिनपडिमा अंगपूजासार, नकरे ऋतुवंती जेनार, एमचर्चेरी ग्रंथमां हे विचार, ए परमारथ जाणो सार ॥ पुष्पविचार नामकी पुस्तकके पत्र २२ तथा २३ में लिखा है कि–अथरजस्वला (ऋतुवंती) स्त्री अधिकारनी सिद्धान्तोक्त गाथा लिखतें हैं,—

जापुप्फपवहं जाणीऊण, नहुसंकाकरेइ नियचित्ते, छिव्वइअ भंडगाइ, तथ्थय दोसाबहु हुंति ॥ १॥ व्याख्या– जे ऋतुधर्मवाली स्त्री जाणी करीने पोताना चित्तने विषे शंकाय नहिं हांडलादिक ठामने आभडे त्यां तेने घणा महोटा दोष लागे ॥ १ ॥ लछीनासइदूरं, रोगायं तह वहंति अणुवरयं, गि-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हदेवयमुचंति, तं गेहं जे न वज्जंति ॥२॥ व्याख्या तेनी लक्ष्मी दूरनाशी जाय तथा रोग आतंक विषम अनिवारक थाय घरना अधिष्ठायिक देव तेनुं घरमुकी जावे जे ऋतुधर्मथी आशातना नहिं वर्जे तेनेपूर्वोक्तवानां थाय ॥ २ ॥ जइकहविअणाभोगे, पुरिसे वियछिव्वइ नियमहिलाए, णाहायरस होइसुद्धि, इयभणियं सव्वलोएसु ॥ ३ ॥ व्याख्या–जो कदाचित् अजाणतो थको कोई पुरुष पोतानी ऋतुधर्मवाली स्त्रीने स्पर्श करे तो स्नानकर्यां शुद्धि थाय एवात सर्वलोकमांहे कहेली छे ॥ ३ ॥ विहिजिणभवणे गमणं, घरपडिमापूअणं च सज्झायं, पुप्फवइ इत्थीणं, पडिसिद्धं पूव्वसूरीहिं ॥ ४ ॥ विधिजिनभवनविषे जावुं घरमां जिनप्रतिमानी पूजा करवी अने स्वाध्याय करवो एटलावानां ऋतुधर्मवाली स्त्रीने पूर्वसूरियेँ निषेध्या छे. ॥ ४ ॥ आलोअणानपडइ, पुप्फवइ, जं तवं करे नियमा, नविअ सुत्तं अन्नं, तागुणइ तिहिं दिवसेहिं ॥ ५ ॥ ऋतुधर्मवाली स्त्री त्रण दिवस सुधी गुरुपासेंथी आलोयण लेवाने अर्थे पोतानुं पाप प्रकाशे नहिं वली तपस्या न करे नियम करे नहिं सूत्रगुणे भणे नहिं वली अन्यपण कोई भाषण न करे ॥ ५ ॥ लोएलोउत्तरिए एवं विहदंसणं समुद्दिट्ठं, जो भणइ नत्थि दोसा, सिद्धान्तविराहगोसोउ ॥ ६ ॥ लोकमांहे तथालोकोत्तर एटले जिनशासनमांहे एवी रीते ऋतुवंती स्त्री हांडलादिकठामने जिनप्रतिमाने आभडे त्यां तेने घणा महोटा दोष लागे ए कह्युं जे कहे छे के एमां दोष नथी ते सिद्धान्तना विराधक जाणवा ॥ ६ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तपगछाधिराज भट्टारकश्रीहीरविजयसूरिप्रसादीकृत हीरप्रश्नोत्तर ग्रंथमेंभी लिखा है कि–जिनगृहे निशायां नाट्यादिकं विधेयं नवा जिनगृहे निशायां नाट्यादिविधेर्निषेधोज्ञायते यत उक्तं रात्रौननं-दिर्नबलिः प्रतिष्ठा, न स्त्रीप्रवेशो न च लास्यलीला इत्यादि किंचक्कापितीर्थादौ तत्क्रियमाणं दृश्यते तत्तुकारणिकमिति बोध्यम् व्याख्या–श्रीजिनमंदिरमें रात्रिको नाटकपूजादि भक्ति करनी वा नहिं ? उत्तर–श्रीजिनमंदिरमें रात्रिको नाटक पूजादि भक्तिकरना यह विधि निषेध है, क्योंकि शास्त्रोंमें कहा है कि श्रीजिनमंदिरमें रात्रिमें नंदिनिषेध बली पूजा तथा प्रतिष्ठा निषेधश्री-जिनमंदिरमें रात्रिको स्त्रियोंका प्रवेश निषेध नाटक पूजा भक्तिरा-त्रिको निषेध है, कोई तीर्थादिमें वहकरनेमें आता हुवा देखते हैं, सो तो कारणिक है ऐसा जानना औरभी लिखा है कि श्राद्धनां रात्रौ जिनालये आरात्रिकोत्तारणं युक्तं नवा श्राद्धानां जिनालये रात्रौ आरात्रिकोत्तारणं कारणे सति युक्तिम-न्नान्यथा व्याख्या–श्रावकोंको रात्रिमें श्रीजिनमंदिरमें आरति पूजा करनी युक्त है वा नहिं ? उत्तर श्रावकोंको श्रीजिनमंदिरमें रात्रिमें आरति पूजा करनी कारण होतो युक्त है, अन्यथा रात्रिकों श्रीजिनमंदिरमें आरती पूजा करनी युक्त नहिं है तथा–कायोत्सर्ग-स्थितजिनप्रतिमानां चरणादि परिधापनं युक्तं नवा ? जिनप्रति-मानां चरणादि परिधापनं तु सांप्रत व्यवहारेण न युक्तियुक्तं प्रतिभाति ॥ व्याख्या–कायोत्सर्गस्थितश्रीजिनप्रतिमाके चरणादि अंगको वस्त्र पहराने रूप पूजा युक्त है वा नहिं ? उत्तर श्री-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिनप्रतिमाके चरण आदि अंगको वस्त्र पहरानेरूप पूजा वर्त्तमान कालके व्यवहारसें युक्तियुक्त नहिं भासती है–यह श्रीजिनप्रतिमाकी वस्त्रपूजाका निषेध तथा वर्त्तमानकालमें श्रीजिनप्रतिमाकी चंदनविलेपनादिसें अंगपूजा करती हुई बहुत तरुणस्त्रियोंको ऋतुधर्म होता है इसी अभिप्रायसें उन तरुणस्त्रियोंको श्रीमूलनायक जिनप्रतिमाकी केवल चंदनविलेपनादिसें अंगपूजाका निषेध आशातना और अधिष्ठायकदेवका लोप दुःकर्मबंध इत्यादि नहिं होनेके लिये उपर्युक्त महानुभावोंके वचन उचित विदित होतें हैं, सोतपोटमतके पक्षावलंबित द्वेषभावके दुराग्रहको त्यागकरस्वपरहितके लिये सत्यस्वीकार करें, अन्यथा निम्नलिखित प्रश्नोंके उत्तर आशातना नहो इत्यादि शास्त्रप्रमाण संमत सत्य प्रकाशित करें—

१ प्रश्न–स्त्रीके ऋतुधर्मद्वारा श्रीजिनप्रतिमाकी महाआशातना होती है, उससे वह स्त्री विराधक भावको प्राप्तहोकर संसारमें अनेक दुःख युक्तभवभ्रमणकरती है, इसीलिये अत्यंत भ्रष्टताके विकारको धारण करनेवाली ऋतुवंती स्त्रीको श्रीजिनप्रतिमाकी अंगपूजा दर्शनादि नहिं करना मानते हो तो इस वर्त्तमान विषमकालमें श्रीजिनप्रतिमाकी चंदनविलेपनादिसें अंगपूजा करती हुई कई तरुण स्त्रियोंके अत्यंत भ्रष्टमहामलिन ऋतुधर्म होता है, उससें उसप्रतिमाधिष्ठायक देवका लोप और महाआशातना दुःकर्मबंध इत्यादि होता है, वास्ते उन तरुण स्त्रियोंको श्रीमूलनायक जिनप्रतिमाकी चंदन विलेपनादिसे अंगपूजा नहिं करना क्यों नहिं मानते हो?

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२ प्रश्न–पुरुष तथा स्त्री श्रीजिनप्रतिमाकी अंगपूजा करें परन्तु आशातनादि कारणोंसे कोई पुरुष वा काई स्त्री श्रीजिनप्रतिमाकी अंगपूजा नहिं करें एसा तपगच्छवालोंका मंतव्य वा उपदेशहै या नहिं?

३ प्रश्न–इसदुषमकालमें तरुणस्त्रीको कभी १० या १५ दिनमें कभी २० दिनेमें और कभी २५ दिनमें इसतरह अनियमसे बेटेम अकसात् ऋतुधर्म होता है इससे श्रीजिनप्रतिमाकी अंगपूजाकरनेमें भी अत्यंत महामलिन ऋतुधर्म द्वारा श्रीजिनप्रतिमाकी महाआशातनाहि होति हैं सो नहिं होनेकेलिये कितनेदिन पहिले और कितने दिन पीछे उस तरुणस्त्रीको श्रीजिनप्रतिमाकी अंगपूजानहिंकरना बतलाते हो?

४ प्रश्न–तरुण स्त्रियां जानतीहै, कि हमको पाँचदशदिनपहिले वा पीछे बेटेम अकसात् ऋतुधर्महोताहै, और वहअत्यंतभ्रष्टताका भराहुआ होताहै, उससें श्रीजिनप्रतिमाकीमहाआशातना अधिष्ठायकदेवकालोप और दुष्कर्मबंधहोताहै, तो फिर अपने शरीरकी व्यवस्थाजानकर भी श्रीजिनप्रतिमाकी अंगपूजाकरती हुई अत्यंत भ्रष्ट महामलिन ऋतुधर्मसे महाआशातनादि दुष्कर्मबंध क्यों करती हैं?

५ प्रश्न–श्रीसिद्धाचलजीतीर्थपर आशातनारूप लालनने अपनी पूजा करवाई सो यह नहिं होना चाहिये इत्यादि भावसे कितने लोगोंने श्रीसंघको बहुतआग्रहदिखलायातो उसपरमपवित्र श्रीसिद्धाचलजीतीर्थपर श्रीमूलनायकजिनप्रतिमाजीकीचंदन विलेपनादि-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करे अंगपूजाकरतीहुई बहुततरुणस्त्रियोंके अत्यंत भ्रष्ट महामलिन-ऋतुधर्मद्वारा महाआशातनादि दुष्कर्मबंधहोताहैं, यह महाआशात-नादिकतो अवश्य नहिंहोनीचाहिये, इसकेप्रबंधमें स्वपरहितके लिये आप उचित आग्रह क्यों नहिं दिखलातेहैं?

६ प्रश्न—श्रीजिनप्रतिमाजीकि थूकसें आशातना नहिं होनेके लिये मुखे मुखकोष बांधकर श्रावक श्राविका पूजाकरतेंहैं, इसी तरह श्रीजैनशास्त्रकी थूकसें आशातना नहिंहोनेंकेलिये आपके महान्पूर्वज साधु साध्वीओंने मुखे मुहपत्तिकांनमेंलगाके व्याख्यान करनेकी गुरुपरंपरासें चलीआई समाचारीको उत्थापी या नहिं किंतु कितनेकमुनिनामधारकोने श्रीजैनशास्त्रकी आशा-तना करनेके लिये उत्थापीहै, उससे यहलोकपूर्वजोंकी उक्त समाचारिसे विरुद्धहैं या नहिं? जेसे कि एक वस्तुकाविरुद्ध प्ररूपक मिथ्यात्वीहोवे तो फिर अनेकवस्तुकाविरुद्धप्ररूपक पुरुष क्यौं नहिं होवे,

७ प्रश्न–तीरथनी आशातना नवि करिये, इस पूजाकी ढालमें पंडित श्रीवीरविजयजीने लिखा है, कि आशातना करतां थकां धन हाणी, काया वली रोगेभराणी, इत्यादि तो श्रीसिद्धाचलजीतीर्थपर केई तरुणस्त्रियोंको ऋतुधर्मसंबंधी महामलीनरुधिरद्वारा श्रीजिन-प्रतिमाजीकी अंगपूजामें आशातना अनुचित है या नहिं?

८ प्रश्न–श्रीदेवगुरु धर्मको आराधनेका मुख्यकारण आशा-तना नहिं करना है, और उनको विराधनेका मुख्यकारणआशा-तना है, इसलिये इस दुःषम कालमें बहुततरुणस्त्रियोंको अकाल

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वेला अत्यंत भ्रष्ट महामलीन ऋतुधर्मद्वारा श्रीजिनराजकी प्रतिमाकी अंगपूजामें महाआशातनासें विराधनाकरनी उचित है कि अंग पूजा नहिं करनेरूप आशातनाके अभावसें आराधना करनी उचित है इन आठ प्रश्नोंके आठ उत्तर सप्रमाण पूर्वोद्दिष्टविषयको नहिं माननेवाले सत्यप्रकाशित करें, इत्यलंविस्तरेण, नमःतीर्थाय,

॥ जिनाणाविरुद्ध शास्त्राणाविरुद्ध सुविहितक्रमागत परंपराविरुद्ध देशआचरणालक्षणविरुद्ध सर्व आचरणा लक्षणविरुद्ध सुविहित गछोंका तथा आचार्योंका सत्यप्ररूपक आचार्योंका अवर्णवाद करे, अशुद्ध प्ररूपक का पक्षकरे, और अपनी अथवा अपने पूर्वजोंकी प्रमादसें, छद्मस्थपणेसें वा रागद्वेषसें भया हठाग्रह उससें भइ भूलकों कबूल न करे छतिशक्तिसें न सुधारे, वह गछ वा वह पुरुष आराधक या विराधक है और निश्चय व्यवहारसहित इस लोकपर लोकके आराधक युगप्रधानोंकी शुद्धसमाचारी वा गछव्यवस्था दिखलातें हैं, तथाहि--

सामायारिं पवक्खामि, सवदुक्खविमोक्खणिं, जंचरित्ताणं निग्गंथा, तिन्ना संसारसागरं ॥ १ ॥ पढमाआवस्सियानामं, विइयाय निसीहिया, आपुच्छणायतइया, चउच्छीपडिपुच्छणा ॥ २ ॥ पंचमाछंदणानामं, इच्छाकारो छट्ठओ, सत्तमो मिच्छकारोय, तहकारोय अट्ठमो ॥ ३ ॥ अब्भूठाणं नवमं, दसमा उवसंपया, एसाद संगासाहूणं, सामायारी पवेइया ॥ ४ ॥ गमणे आवस्सियं कुज्जा, ठाणेकुज्जानिसीहियं, आपुच्छणा सयंकरणे, परकरणे पडिपुच्छणा ॥ ५ ॥ छंदणा दवजाएणं, इच्छाकारोयसारणे, मिच्छाकारोय

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निंदाए, तहक्कारो पडिस्सुए ॥ ६ ॥ अभ्भूट्ठाणं गुरुपूया, अत्थणे उवसंपया, एवंदुपंचसंजुत्ता, सामायारीपवेइया ॥ ७ ॥ पुव्विल्लंमि चउभ्भागे, आइच्चंमि समुट्ठिए, भंडयं पडिलेहित्ता, वंदित्ताय तओगुरुं ॥ ८ ॥ पुच्छिज्जा पंजलीउडो, किंकायव्वं मए इहं, इत्थंनिउइउं भंते, वेयावच्चे व सिज्झाए ॥ ९ ॥ वेयावच्चे निउत्तेणं, कायव्वमगिलायओ, सज्झाएवा निउत्तेणं, सव्वदुक्खविमोक्खणे ॥ १० ॥ दिवसस्सचउरो भाए, कुज्जाभिक्खू विउक्खणो, तओ उत्तरगुणेकुज्जा, दिणभागेसु चउसुवि ॥ ११ ॥ पढमंपोरिसिसज्झायं, बीइयंझाणंझियायइ, तईयाएभिक्खायरिअं, पुणोचउत्थीएसज्झायं ॥१२॥ आसाढेमासे दुपया, पोसेमासे चउप्पया, चित्तासोएसु मासेसु, तिपया हवइ पोरिसी ॥ १३ ॥ अंगुलंसत्तरत्तेणं, पक्खेणयदुरंगुलं, वड्ढए हायएवावि, मासेणय चउरंगुलं ॥ १४ ॥ आसाढबहुलपक्खे, भद्दिवए कत्तिएय पोसेय, फग्गुण वइसाहेसुय, नायव्वाओमरत्ताओ ॥ १५ ॥ जेट्ठामूले आसाढे सावणे, च्छहिं अंगुलेहिंपडिलेहा, अट्ठहिं बिइयतीयंमि, तइए दसअट्ठहिंचउत्थे ॥ १६ ॥ रत्तिंपिचउरो भाए, भिक्खूकुज्जा वियक्खणो, तत्तोउत्तरगुणेकुज्जा, राइभागेसुचउसुवि ॥ १७ ॥ पढमंपोरिसिसज्झायं, विइयंझाणं झियायइ, तइयाए निद्दमोक्खंतु, चउत्थी भुज्जोविसज्झायं ॥ १८ ॥ जंनेइ जयारत्तिं, नक्खत्तं तंमिनहचउभ्भाए ॥ संपत्ते विरमेज्जा, सज्झायं पओसकालंमि ॥ १९ ॥ तम्मेवय नक्खत्ते, गयणचउभ्भाय सावसेसंमि, वेरत्तियंपिकालं, पडिलेहित्ता मुणीकुज्जा ॥ २० ॥ पुव्विल्लंमि चउभ्भागे, पडिलेहित्ताण भंडगं गुरुं, वंदित्तु सज्झायं, कुज्जा दुक्खविमो-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्खणं ॥ २१ ॥ पोरिसीए चउभ्भागे, वंदित्ताण तओगुरुं, अप्पडि-क्कमित्ताकालस्स, भायणं पडिलेहए ॥ २२ ॥ मुहपत्तिं पडिलेहित्ता, पडिलेहेज्जगुच्छयं, गुच्छगलइयंगुलिओ, वत्थाइंपडिलेहए ॥ २३ ॥ उड्ढंथिरं अतुरियं, पुव्वंता वत्थमेव पडिलेहे, तोबिइयं पप्फोडे, तइयंचपुणो पमज्जेज्जा ॥ २४ ॥ अणच्चाविवं आवलियं, अणाणुबंधिं अमोसलिंचेव, छप्पुरिमा नवखोडा पाणीपाणिविसोहणं ॥ २५ ॥ आरभडासम्मद्दा, वज्जेयव्वाय मोसली तईया, पप्फोडणा चउत्थी, विक्खित्ता वेइया छट्ठा ॥ २६ ॥ पसिढिल पलंब लोला, एगा मोसा अणेगरूवधुणा, कुणइ पमाणि पमायं, संकिए गणणोवयं कुज्जा ॥ २७ ॥ अणूणाइरित्त पडीलेहा, अविवच्चासा तहेवय, पढमंपयं पसत्थं, सेसाणिउ अप्पसत्थाणी ॥ २८ ॥ पडिलेहणं कुणंतो, मिहोकहं कुणइ जणवयकहंवा, देइपच्चक्खाणं, वाएइ सयं पडिच्छइवा ॥ २९ ॥ पुढवी आऊक्काए, तेऊवाऊ वणस्सइ तसाणं, पडिलेहणा पमत्तो, छण्हंपि विराहओहोइ ॥ ३० ॥ पुढवी आऊकाए, तेऊवाऊ वणस्सइतसाणं, पडिलेहणा आउत्तो, छण्हंपिआराहओहोइ ॥३१॥ तइयाए पोरिसिए, भत्तपाणं गवेसए, छण्हमन्नयरागम्मि, कारणम्मि समुट्ठिए॥ ३२ ॥ वेयण वेयावच्चे इरियट्ठाएय संजमट्ठाए, तहपाणवत्तियाए छट्ठं पुण धम्मचिंताए ॥ ३३ ॥ निग्गंथो धिइमंतो, निग्गंथीवि नकरेज्जछहिंचेव, ठाणेहिंतु इमेहिं, अणइक्कमणया सेहोइ ॥ ३४ ॥ आयंके उवसग्गे, तितिक्खया बंभचेरगुत्तीसु, पाणिदया तवहेउं, सरीरवोच्छेयणट्ठाए ॥ ३५ ॥ अवसेसं भंडगं गिज्झा, चक्खूसा पडिलेहए, परमद्धजोअणाओ, विहारं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विहरए मुणी ॥ ३६ ॥ चउत्थीए पोरिसीए, निक्खिवित्ताणं भायणं, सज्झायंतओकुज्जा, सवभावविभावणं ॥ ३७ ॥ पोरिसीए चउब्भाए, वंदित्ताणतओगुरुं, पडिक्कमित्ताकालस्स, सेज्जं तु पडिलेहए ॥ ३८ ॥ पासवणुच्चारभूमिंच, पडिलेहिज्ज जयं जई, काउस्सग्गं तओ कुज्जा, सवदुक्खविमोक्खणं ॥ ३९ ॥ देवसियंच अईयारं, चिंतेज्ज अणुपुव्वसो, नाणंमिदंसणंमि, चरित्तंमि तहेवय ॥ ४० ॥ पारिय काउस्सग्गो, वंदित्ताण तओगुरुं, देवसियंतु अईयारं, आलोइज्ज जहक्कमं ॥ ४१ ॥ पडिक्कमित्तानिस्सल्लो, वंदित्ताण तओगुरुं, काउस्सग्गं तओकुज्जा, सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥४२॥ पारियकाउस्सग्गो वंदित्ताण तओगुरुं, थुइमंगलंच काउं, कालं संपडिलेहए ॥४३॥ पढमं पोरिसिसज्झायं, बिइयं ज्झाणंझियायई, तईयाए निद्दमोक्खंतु, सज्झायं तु चउत्थीए ॥ ४४ ॥ पोरिसीए चउत्थीए, कालंतु पडिलेहिया, सज्झायंतु तओकुज्जा, अबोहंतो असंजए ॥ ४५ ॥ पोरिसीए चउब्भाए, वंदिऊण तओ गुरुं, पडिक्कमित्ताकालस्स, कालं तु पडिलेहए ॥ ४६ ॥ आगएकायवुस्सग्गे, सव्वदुक्खविमोक्खणे, काउस्सग्गं तओकुज्जा, सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥ ४७ ॥ राईयंच अईयारं, चिंतेज्ज अणुपुव्वसो, नाणंमि दंसणमी चरित्तंमितवंमिय ॥ ४८ ॥ पारिय काउस्सग्गो, वंदित्ताण तओ गुरुं, राईयंतु अईयारं, आलोएज्ज जहक्कमं ॥ ४९ ॥ पडिक्कमित्तु निसल्लो, वंदित्ताण तओ गुरुं, काउस्सग्गं तओ कुज्जा, सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥ ५० ॥ किं तवं पडिवज्जामि, एवंतत्थविचिंतए, काउस्सग्गंतु पारित्ता, वंदईय तओगुरुं ॥ ५१ ॥ पारिय काउस्सग्गो, वंदित्ताण

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तओगुरुं, तवं संपडिवज्जित्ता, करिज्ज सिद्धाणसंथवं ॥ ५२ ॥ एसा सामायारी, समासेण वियाहिया, जंचरित्ता बहूजीवा, तिन्नासंसार-सागरं त्तिबेमि ॥ ५३ ॥ इइ उत्तराज्झयणस्स छत्रीसइमं साहूसामायारी णामं अज्झयणं संमत्तं ॥

नमोसुयस्स ॥ नमिऊण महावीरं, तिअसिंदनमंसिअं महाभागं, गच्छायारं किंची, उद्धरिमो सुअसमुद्दाओ ॥ १ ॥ गाथाच्छंदः ॥ अत्थेगे गोअमापाणी, जेउम्मग्गपइट्ठिए, गच्छंमि संवसित्ताणं, भमई भवपरंपरं ॥ २ ॥ विषमाक्षरेति गाथाछंदः ॥ जामद्धजामदिण परंक, मासं संवच्छरं पित्रा, सम्मग्गपट्ठिएगच्छे, संवसमाणस्सगोअमा ॥ ३ ॥ लीलाअलसमाणस्स, निरुच्छाहस्सवीमणं, पिरकविरकाइ अण्णेसिं, महाणुभागाण साहूणं ॥ ४ ॥ उज्जमं सव्वथामेसु, घोरवीरतवाइअं, लजंसंकं अइक्कम्म, तस्स विरिअं समुच्छले ॥ ५ ॥ वि० ॥ वीरिएणंतुजीवस्स, समुच्छलिएणगोअमा, जम्मंतरकएपावे, पाणी मुहुत्तेणनिद्दहे ॥६॥ विष० ॥ तम्हानिउणं निहालेउं, गच्छंसम्मग्गपट्ठिअं, वसिज्ज तत्थआजम्मं, गोअमासंजएमुणी ॥७॥ विष० ॥ मेढी आलंबणं खंभं, दिट्ठीजाणं सुउत्तमं (उत्तिमं) सूरी जं होइगच्छस्स, तम्हातंतु परिरकए ॥ ८ ॥ अनु० ॥ भयवंकेहिं, लिंगेहिं,सूरिंउम्मग्गपट्ठिअं,विआणिज्जा छउमत्थे, मुणी तं मे निसामय ॥ ९ ॥ अनु० ॥ सच्छन्दयारिंदुस्सीलं, आरंभेसुपवत्तयं, पीढयाइ पडिबद्धं, आउक्कायविहिंसगं ॥ १० ॥ अनु० ॥ मूलुत्तरगुणब्भट्ठं। समायारी विराहयं, अदिन्नालोअणं निचं, निचं विगहपरायणं ॥ ११ ॥ विष० ॥ छत्तीसगुणसमन्नागएण, तेणवि अवस्स

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कायव्वा, परसरिकया विसोही, सुट्ठुवि ववहारकुशलेण ॥ १२ ॥ गा० ॥ जह सुकुसलोवि विज्झो, अन्नस्सकहेइ अत्तणोवाहिं, विजुवए संमुच्चा, पच्छासो कम्ममायरइ ॥ १३ ॥ गा० ॥ देसंखित्तंतु जाणित्ता, वत्थंपत्तं उवस्सयं, संगहे साहुवग्गंच, सुत्तत्थंचनिहालइ ॥ १४ ॥ अनु० ॥ संगहोवग्गहं विहिणा, नकरेइ अ जो गणी, समणं समणिंतु दिरिकत्ता, समायारिं न गाहए ॥ १५ ॥ विष० ॥ बालाणं जोउ सीसाणं, जीहाए उवलिंपए, न सम्ममग्गं गाहेइ, सोसूरीजाणवेरिओ ॥१६॥ अनु० ॥ जीहाए विलिहंतो, नभद्दओ सारणा जहिंनत्थि, दंडेणवि ताडंतो, सभद्दओसारणा जत्थ ॥ १७॥ गा० ॥ सीसोवि वेरिओसोउ, जोगुरुं नवि बोहए, पमायमइराघत्थंसमायारीविराहयं ॥१८॥ अनु० ॥ तुम्हारिसावि मुणिवर, पमाय, वसगा हवंति जइपुरिसा, तेणन्नोकोअम्हं, आलंवणं हुज्जसंसारे ॥ १९ ॥ गा० ॥ नाणंमि दंसणंमिअ, चरणंमिअ तिसुवि समयसारेसु चोएइ जोठवेउं, गणमप्पाणंच सोअ गणी ॥२०॥ गा० ॥ पिंडं उवहिं सिज्जं, उग्गम उप्पायणेसणा सुद्धं, चारित्तरस्कणट्ठा, सोहिंतो होइसचरित्ती ॥२१॥ गा० ॥ अपरिस्साविसम्मं, समपासीचेवहोइ कज्जेसु, सोरक्कइ चक्खुंपिव, सबालवुड्ढाउलंगच्छं ॥ २२ ॥ गा० सीआवेइ विहारं, सुहसीलगुणेहिंजो अबुद्धीओ, सोनवरि लिंगधारी, संजमजोएण निस्सारो ॥ २३ ॥ गा० ॥ कुलगाम नगर रज्जं, पयहिअ जोतेसुकुणइ हु ममत्तं, सोनवरि लिंगधारी, संजमजोएण निस्सारो ॥२४॥ गा० ॥ विहिणा जो उ चोएइ, सुत्तंअत्थंचगाहइ, सोधन्नो सोअ पुण्णोअ, स वंधू मुरककदायगो, ॥२५॥ अनु० ॥ सएव भव्वसत्ताणं,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चक्खू भूए विआहिए, दंसेइजोजिणुद्दिट्ठं, अणुट्ठाणं जहट्ठिअं, ॥२६॥ अनु० ॥ तित्थयरसमोसूरी, सम्मं जो जिणमयं पयासेइ, आणं अइक्क-मंतो, सो काउरिसो न पुण सप्पुरिसो ॥२७॥ गा० ॥ भट्ठायारोसूरि, भट्ठायाराणुविरकओ सूरी, उम्मग्गट्ठिओसूरी, तिन्निविमग्गं पाणा-संति ॥२८॥ गा० ॥ उम्मग्गट्ठिए सम्मग्गनासए, जोउसेवएसूरिं, निय-मेणं सोगोयम, अप्पंपाडेइसंसारे ॥२९॥ गा० ॥ उम्मग्गट्ठिओ इक्कोवि, नासए भव्वसत्तसंघाए, तंमग्गमणुसरंतं, जहकुत्तारो नरोहोइ ॥३०॥ गा० ॥ उम्मग्गमग्गसंपट्ठिआण, साहूणगोयमानूणं, संसारोय अणंतो, होइ यसम्मग्गनासीणं ॥३१॥ गा० ॥ सुद्धंसुसाहुमग्गं, कहमाणोठ-वेइतइयपरकंमि, अप्पाणंइयरोपुण, गिहत्थधम्माओ चुकत्ति ॥३२॥ गा० ॥ जइ विनसक्कंकाउं, सम्मंजिणभासियं अणुट्ठाणं, तोसम्मंभा-सिज्जा, इहभणियंखीणरागेहिं ॥३३॥ गा० ॥ ओसन्नोवि विहारे, कम्मं सोहेइ सुलहबोहिय, चरणकरणं विसुद्धं, उववूहिंतो परूविंतो ॥ ३४ ॥ गाथा ॥ सम्मग्गमग्गसंपट्ठिआणं, साहूणकुणइवच्छल्लं, ओसहभेस-ज्जेहिय, सयमन्नेणंतु कारेइ ॥ ३५ ॥ गा० ॥ भूयाअत्थि भविस्संति, केइ तेलुक्कनमियकमजुअला, जेसिं परहियकरणिक्क, बद्धलरकाणवो-लिहिकालो ॥ ३६ ॥ गीतिच्छंदः ॥ तीआणागयकाले, केईहोहिंति गोयमासूरि, जेसिंनामगहणेवि, होइनियमेण पच्छित्तं ॥३७॥ गा० ॥ जओ, सइरी भवंति अणविरकयाइ, जहभिच्चवाहणालोए, पडिपुच्छा हिं चोअण, तम्हाउगुरूसयाभयइ ॥३८॥ गा० ॥ जोप्पमायदोसेणं, आलसेण तहेवय, सीसवग्गं न चोएइ, तेण आणाविराहिया ॥३९॥ अनु० ॥ संखेवेणं मए सोम, वन्नियं गुरुलरकणं, गच्छस्सलरकणंधीर,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संखेवेणं निसामय ॥ ४० ॥ गा० ॥ इइ आयरियसरूवनिरूवणाहि-गारो पढमो संमतो ॥

गीअत्थे जेसुसंविग्गे, अणालस्सी दढव्वए, अरकलियचरित्तेस-ययं, रागदोस विवज्जिए ॥४१॥ विष० ॥ निट्ठविय अट्ठमयट्ठाणे, सोसियकसाए जियंदिए, विहरिज्जातेण सद्धिंतु, छउमत्थेणविकेवली ॥ ४२ ॥ विष० ॥ जे अणहीयपरमत्थ, गोयमासंजएभवे, तह्मा तेविवज्जिज्ञा, दुग्गइपंथदायगे ॥ ४३ ॥ विष० ॥ गीअत्थस्स वयणेणं, विसंहालाहलंपिवे, निव्विगप्पोअ भक्खिज्ञा, तरकणे जं समुद्दवे ॥४४॥ अनु० ॥ परमत्थओ विसंनोतं, अमयरसायणंखुतं, निव्विग्घं जं न तं मारे, मओवि अमयस्समो ॥ ४५ ॥ विष० ॥ अगीअत्थ-स्स वयणेणं, अमिअंपिनघुंटए, जेणनोतं भवे अमयं, जंअगीयत्थदे-सियं ॥ ४६ ॥ विष० ॥ परमत्थओ न तं अमयं, विसंहालाहलंखुतं, नोतेण अजरामरोहुज्झा, तरकणा निहणंवए ॥ ४७ ॥ विषमा० ॥ अगीयत्थकुसीलेहिं, संगं तिविहेण वोसिरे, मुरकमग्गस्सिमे विग्घे, पहंमितेणगे जहा ॥ ४८ ॥ विष० ॥ पज्जलियं हुअवहंदट्ठुं निस्संको तत्थपविसिउं, अत्ताणं निद्दहिज्जाहि, नोकुसीलस्स अल्लि (दिन्नु) ए' ॥४९॥ विष० ॥ पज्जलंति जत्थधगधगस्स, गुरुणावि चोइएसीसा, रागदोसेणवि अणुसएण, तं गोयमनगच्छं ॥ ५० ॥ गा० ॥ गच्छोमहाणुभावो, तत्थवसंताण निज्ञराविउला, सारणवा-रण चोअण, माई हिं नदोसपडिवत्ती, ॥ ५१ ॥ गा० ॥ गुरुणोछंद-णुवत्ती, सुविणीए जिअपरीसहेधीरे, नविथद्धे नविलुद्धे, नवि गार-विए विगहसीले ॥५२॥ गा० ॥ खंतेदंतेगुत्ते, मुत्तेवेरग्गमग्गमल्लीणे,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दसविहसामायारी, आवस्सग संजमुज्जुत्ते ॥५३॥ गा० ॥ खरफरुस-कक्कसाए, अणिट्ठ दुट्ठाइ णिट्ठुरगिराए, निब्भच्छण निद्धाडण, माईहिं जेनपउस्संति ॥ ५४ ॥ गा० ॥ जेअन अकित्तिजणए, नाजसजणए-नाकज्जकारीअ, नपवयणुड्डाहकरे, कंठग्गयपाणसेसेवि ॥ ५५ ॥ गा० ॥ गुरुणा कज्जमकज्जे, खरकक्कसदुट्ठनिट्ठुरगिराए, भणिएतह-त्तिसीसा, भणंति तं गोयमा गच्छं ॥ ५६ ॥ गाथाछंदः ॥ दूरुज्झिय पत्ताइसु, ममत्तए निप्पिहेसरीरेवि, जायमजायाहारे, (जत्तयमत्ताहारे) बायालीसेसणाकुशले ॥५७॥ गा० ॥ तंपि न रूवरसत्थं, नयवन्नत्थं न चेव दप्पत्थं, संजमभरवहणत्थं, अक्खोवंगं वहणत्थं ॥५८॥ गा० ॥ वेअण वेआवच्चे, इरिअट्ठाएअ संजमट्ठाए, तहपाणवत्तिआए, छट्ठंपुण धम्मचिंताए ॥५९॥ गा० ॥ जत्थयजिट्ठकणिट्ठो, जाणिज्जइ जिट्ठव-यणबहुमाणो, दिवसेणवि जो जिट्ठो, नयहीलिज्जइ स गोअमागच्छो ॥६०॥ गीतिः ॥ जत्थयअज्जाकप्पो, पाणच्चाएविरोरदुब्भिक्खे, नय-परिभुंजइ सहसा, गोअमगच्छंतयं भणिअं ॥ ६१ ॥ गा० ॥ जत्थय-अज्जाहिंसमं, थेरावि न उल्लवंति गयदसणा, नयझायंतित्थीणं, अंगोवंगाइंतंगच्छं ॥ ६२ ॥ गा० ॥ वज्जेह अप्पमत्ता, अज्जासंसग्गिअ-ग्गिविससरिसं, अज्जाणु चरोसाहू, लहइअकित्तिं खु अचिरेण ॥६३॥ गा० ॥ थेरस्स तवस्सिस्सव, बहुस्सुअस्सव पमाणभूअस्स, अज्जासं सग्गिए, जणजंपणयं हविज्जाहि ॥६४॥ गा० ॥ किंपुणतरुणो अव-हुस्सुओअ, नय विहुविगिट्ठतवचरणो, अज्जासंसग्गीए, जणजंप-णयं न पाविज्जा ॥ ६५ ॥ गा० ॥ जइवि सयं थिरचित्तो, तहावि संसग्गिलद्धपसराए, अग्गिसमीवेवघयं, विलिज्जचित्तं खु अज्जाए

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ ६६ ॥ गा० ॥ सवत्थइत्थीवग्गंमि, अप्पमत्तोसया अवी-सत्थो, नित्थरइबंभचेरं, तविवरीओ न नित्थरइ ॥ ६७ ॥ गा० ॥ सवत्थेसु विमुत्तो, साहूसवत्थहोइ अप्पवसो, सोहोइ अणप्पवसो, अज्ञाणं अणुचरंतोउ ॥ ६८ ॥ गा० ॥ खेलपडिअमप्पाणं, नतरइ जहमच्छिआविमोएउं, अज्ञाणुचरोसाहू, नतरइअप्पंविमोएउं ॥६९॥ गा० ॥ साहुस्सनत्थिलोए, अज्ञासरिसाहुबंधणे उवमा, धम्मेण सह ठवंतो, नयसरिसोजाण असिलेसो ॥७०॥ गा० ॥ वायामित्तेण विजत्थ, भट्ठचरिअस्स निग्गहं विहिणा, बहुलद्धिजुअस्सावी, कीरइ गुरुणा तयंगच्छं ॥ ७१ ॥ गा० ॥ जत्थय संनिहिउक्कड, आहडमाईण नामगहणेवि, पूईकम्मा भीआ, आउत्ताकप्पतिप्पेसु ॥ ७२ ॥ गा० ॥ मउए निहुअसहावे, हासदवविवज्जिए विगह मुक्के, असमंजसमकरंते, गोअरभूमट्ठ विहरंति ॥ ७३ ॥ गा० ॥ मुणिणं नाणाभिग्गह, दुक्करपच्छित्त मणुचरंताणं, जायइ चित्तच-मक्कं, देविंदाणंपि तंगच्छं ॥ ७४ ॥ गा० ॥ पुढविदगअगणि मारुअ, वाउवणस्सइतसाणविविहाणं, मरणंतेवि नपीडा, कीरइम-णसातयंगच्छं ॥ ७५ ॥ गाथा ॥ खज्जूरीपत्तमुंजेण, जोपमज्जे उव-स्सयं, नोदयातस्स जीवेसु, सम्मंजाणाहि गोअमा ॥ ७६ ॥ अनु० ॥ जत्थयबाहिरपाणिअ, बिंदूमित्तंपि गिम्हमाईसु, तण्हासोसिअपाणा, मरणे वि मुणि न गिह्णंति ॥ ७७ ॥ गा० ॥ इच्छिज्जइजत्थसया, बीअपएणाविफासुअंउदयं, आगमविहिणा निउणं, गोअमगच्छं तयं भणिअं ॥७८॥ गा०॥ जत्थयसूलविसूइअ, अण्णयरेवावि चित्तमायंके, उप्पण्णे जलणुज्ञालणाइ, न कीरइमुणितयं गच्छं ॥७९॥ गीतिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बीअपएणं सारूविगाइ, सङ्काइमाइएहिंच, कारिंती जयणाए, गोअम-
गच्छंतयंभणिअं ॥८०॥ गा० ॥ पुप्फाणंबीआणं, तयमाईणं च विवि-
हदवाणं, संघट्टणपरिआवण, जत्थनकुज्जातयंगच्छं ॥ ८१ ॥ गा० ॥
हासंखेडाकंदप्प, नाहिअवायं नकीरए जत्थ, धावण डेवणलंघण,
ममकारावण्ण उच्चरणं ॥८२॥ गाथा ॥ जत्थित्थीकरफरिसं, अंतरि-
अंकारणेवि उप्पन्ने, दिट्ठीविसदित्तग्गी, विसंव वज्जिज्जएगच्छे ॥८३॥
गा० ॥ बालाए वुड्ढाए, नत्तुअ दुहिआइ अहव भइणीए, नयकीरइ तणु-
फरिसं, गोअमगच्छंतयं भणिअं ॥८४॥ गा० ॥ जत्थित्थीकर फरिसं,
लिंगी अरिहावि सयमविकरिज्जा, तंनिच्छयओ गोअम, जाणिज्जामूल-
गुण भट्ठं ॥८५॥ गा० ॥ कीरइ बीअपएणं, सुत्तमभणिअं नजत्थवि-
हिणाउ, उप्पण्णे पुणकज्जे, दिक्खाआयंकमाईए, ॥८६॥ गा० ॥ मूल-
गुणेहिं विमुक्कं, बहुगुणकलिअंपि लद्धिसंपन्नं, उत्तमकुलेवि जायं, विद्धा
डिज्जइ तयंगच्छं ॥८७॥ गा० ॥ जत्थहिरण्णसुवण्णे, धणधन्ने कंस तंब
फलिहाणं, सयणाण आसणाणय, झुसिराणं चेव परिभोगो ॥ ८८ ॥
गा० ॥ जत्थय वारडिआणं, तेकूडिआणंच तहयपरिभोगो, मुत्तुंसुक्किल्ल-
वत्थं, कामेरातत्थगच्छंमि ॥८९॥ गा० ॥ जत्थहिरण्णसुवण्णं, हत्थेण
पराणगंपि नो छिप्पे, कारणसमप्पिअंपिहु, निमिसखणद्धंपि तं गच्छं
॥९०॥ गा०॥ जत्थय अज्जालद्धं, पडिग्गहमाई वि विविह मुवगरणं, प-
रिभुंज्जइ साहूहिं, तंगोअम केरिसंगच्छं ॥९१॥ गा०॥ अइदुल्लहभेसज्जं,
बलबुद्धिविवड्ढणंपि पुट्ठिकरं, अज्जालद्धं भुंजइ, कामेरातत्थ गच्छंमि
॥९२॥ गा० ॥ एगो एगित्थिएसद्धिं, जत्थ चिट्ठिज्जगोअमा, संज-
ईए विसेसेणं, निम्मेरंतंतु भासिमो ॥ ९३ ॥ अनु० ॥ दड्ढचारित्तं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुत्तुं, आइअंमइहरंच गुणरासिं, इक्कोअज्झावेई, तमणायारं नसंगच्छं ॥९४॥ गा० ॥ घणगज्जिअ हयकुहए, विज्जूदुग्गिज्झगूढहिअयाओ, अज्जा अवारिआओ, इत्थीरज्जं न तं गच्छं ॥ ९५ ॥ गा० ॥ जत्थ समुद्देसकाले, साहूणं मंडलीइ अज्जाओ, गोअम ठवंतिपाए, इत्थीरज्जं न तंगच्छं ॥ ९६ ॥ गा० ॥ जत्थमुणीणकसाया, जगडिज्जंतावि परकसाएहिं, नेच्छंतिसमुट्ठेउं, सुनिविट्ठो पंगुलोचेव ॥ ९७ ॥ गा० ॥ धम्मंतरायभीए, भीए संसारगब्भवसहीणं, न उईरंति कसाए मुणी,मुणीणंतयंगच्छं ॥ ९८ ॥ गा० ॥ कारणमकारणेणं अहकहवि मुणीणउट्ठहि कसाए, उदएवि जत्थ रुंभहि, खामिज्जहि जत्थ तंगच्छं ॥ ९९ ॥ गा० ॥ सीलतवदाणभावण, चउविहधम्मंतरायभयभीए, जत्थ बहूगीयत्थे, गोअम गच्छं तयं भणियं ॥ १०० ॥ गा० ॥ जत्थय गोयम पंचण्ह, कहविसूणाण इक्कमविहुज्जा, तंगच्छं तिविहेणं, वोसिरिअ वइज्ज अन्नत्थ ॥१०१॥ गा० ॥ सूणारंभपवत्तं, गच्छंवेसु-ज्जलं न सेविज्जा, जंचारित्तगुणेहिंतु, उज्जलंतंतु सेविज्जा ॥ १०२ ॥ गा० ॥ जत्थयमुणिणोकयविक्कयाइं, कुव्वंति संजमब्भट्ठा, तंगच्छं गु-णसायर, विसंव दूरं परिहरिज्जा ॥ १०३ ॥ गा० ॥ आरंभेसुपसत्ता, सिद्धंतपरम्मुहा विसयगिद्धा, मुत्तुं मुणिणो गोअम, वसिज्ज मज्झे सुवि-हिआणं ॥ १०४ ॥ गा० ॥ तम्हासम्मंनिहालेउं, गच्छं सम्मग्गप-ट्ठिअं, वसिज्जापक्ख मासंवा, जावजीवंतु गोअमा ॥ १०५ ॥ अनु० ॥ खुड्डोवा अहवा सेहो, जत्थरक्खेउवस्सयं, तरुणोवाजत्थएगागी, कामेरातत्थभासिमो ॥ १०६ ॥ विष० ॥ इइबीओ साहूसरूवनिरूवणा हिगारो सम्मत्तो ॥

जत्थयएगाखुड्डी, एगातरुणीउ रक्खएवसहिं, गोअमतत्थविहारे,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कासुद्धिबंभचेरस्स ॥१०७॥ गा० ॥ जत्थय उवस्सयाओ, बाहिंगच्छे-दुहत्थमित्तंपि, एगारत्तिसमणी, कामेरातत्थगच्छस्स ॥१०८॥ गा० ॥ जत्थयएगासमणी, एगोसमणोअ जंपएसोम, निअबंधुणाविसद्धिं, तंगच्छं गच्छगुणहीणं ॥१०९॥ गा० ॥ जत्थजयार मयारं, समणी जंपइ गिहत्थपच्चरकं, पच्चरकंसंसारे, अज्झापरिकवइ अप्पाणं ॥११०॥ गा० ॥ जत्थयगिहत्थभासाहिं, भासए अज्जिआ सुरुट्ठावि, तं गच्छं गुणसायर, समणगुणविवज्जिअंजाण ॥ १११ ॥ गा० ॥ गणिगोअम-जाउच्चिअं, सेअंवत्थ विवज्जिउं, सेवए चित्तरूवाणि, नसा अज्जा-वियाहिया ॥ ११२ ॥ विषमा० ॥ सीवणंतुन्नणं भरणं, गिहत्थाणं तु जाकरे, तिल्ल उवट्टणंवावि, अप्पणोअ परस्सय ॥११३॥ विषमा०॥ गच्छइ सविलासगई, सयणीअंतूलिअंसविब्वोअं, उवट्टेइ सरीरं, सिणा-णमाईणि जाकुणइ ॥ ११४ ॥ गा० ॥ गेहेसु गिहत्थाणं, गंतूणक-हाकहेइकाहीआ, तरुणाइ अहिवडंते, अणुजाणे साइपडिणीआ ॥ ११५ ॥ गा० ॥ वुड्ढाणं तरुणाणं, रत्तिं अज्जाकहेइजाधम्मं, साग-णीणिगुणसायर, पडिणीआहोइ गच्छस्स ॥ ११६ ॥ गा० ॥ जत्थ-यसमणीणमसंखडाइं, गच्छंमि नेव जायंति, तंगच्छंगच्छवरं, गिहत्थ भासाउ नो जत्थ ॥ ११७ ॥ गा० ॥ जोजत्तोवाजाओ, नालोअइ दिवसपरिकअंवावि, सच्छंदासमणीओ, मयहरिआए न ठायंति ॥ ११८ ॥ गा० ॥ विंटलिआणि पउंजंति, गिलाणसेहीणनेव(य)ते-प्पंति, अणागाढे आगाढं, करंति आगाढि अणागाढं ॥ ११९ ॥ गा० ॥ अजयणाएपकुव्वंति, पाहुणगाण अवच्छला, चित्तलियाणि अ सेवंति, चित्तारयहरणेतहा ॥१२०॥ विष० ॥ गइविब्भमाइएहिं,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आगार विगारतह पगासंति, जहवुड्ढाणविमोहो,समुईरइ किंतु तरुणाणं ॥ १२१ ॥ गा० ॥ बहुसो उच्छोलिंती, मुहनयणे हत्थपायकरकाओ, गिण्हेइ रागमण्डल, सोइंदिअतहयकवड्डे ॥ १२२ ॥ गा० ॥ जत्थ-यथेरीतरुणी, थेरीतरुणीअ अंतरेसुअइ, गोअमतंगच्छवरं, वरनाण-चरित्तआहारं ॥ १२३ ॥ गा० ॥ धोअंतिकंठिआओ, पोअंती तहय दिंति पोत्ताणि, गिहिकज्ज चिंतगाओ, नहु अज्जागोअमाताओ ॥ १२४ ॥ गा० ॥ खरघोडाइट्ठाणे, वयंतितेवावितत्थवच्चंति, वेस-त्थीसंसग्गी, उवस्सयाओसमीवंमि ॥ १२५ ॥ गा० ॥ छकाय-मुक्कजोगा, धम्मकहा विगह पेसण गिहीणं, गिहिनिस्सिज्जं वाहिंति, संथवं तहकरंतीओ ॥ १२६ ॥ गा० ॥ समा सीसपडिच्छीणं, चोअ-णासु अणालसा, गणिणीगुणसंपन्ना, पसत्थ पुरिसाणुगा ॥ १२७॥ अनुष्टुप्०॥ संविग्गा भीअपरिसाय, उग्गदंडायकारणे, सज्झायज्झाण जुत्ताय, संगहेअ विसारया ॥ १२८ ॥ विषमा० गा० ॥ जत्थुत्तर पडिउत्तर, वडिआ अज्जाउ साहुणासद्धिं, पलवंति सुरुट्ठावि, गोयम-किंतेणगच्छेण ॥ १२९ ॥ गा० ॥ जत्थयगच्छे गोयम, उप्पण्णे कारणंमि अज्जाओ, गणिणी पिट्ठिठिआओ, भासंती मउअसद्देणं ॥ १३० ॥ गा० ॥ माऊएदुहिआए, सुएहाए अहव भइणिमाईणं, जत्थन अज्जा अक्खइ, गुत्तिविभेअं तयंगच्छं ॥ १३१ ॥ गा० ॥ दंसणाइआरकुणई, चरित्तनासं जणेइ मिच्छत्तं, दुण्हविवग्गाणज्जा, विहारभेअं करेमाणी ॥ १३२ ॥ गा० ॥ तम्मूलंसंसारं, जणेइ अज्जा-वि गोअमानूणं, तम्हाधम्मुवएसं, मुत्तुं अन्नंन भासिज्जा ॥ १३३ ॥ गा० ॥ मासे मासेउजाअज्जा, एगसित्थेणपारए, कलहे गिहत्थेभा-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साहिं, सव्वंतीइ निरत्थयं ॥ १३४ ॥ वि० ॥ इइसाहुणीसरूव निरूवणाहिगारोतइओ संमत्तो॥महा निसीह कप्पाओ, ववहाराओ तहेवय, साहूसाहूणी अट्ठाए, गच्छायारं समुद्धरिअं ॥ १३५ ॥ वि०॥ पढंतुसाहूणो एयं, असज्झायं विवज्झिउं,उत्तमंसुय निस्संदं, गच्छायारं सुनुत्तमं ॥ १३६ ॥ अनुष्टु० ॥ गच्छायारं सुणित्ताणं, पढित्ताभिक्खु भिक्खुणी, कुणंतु जंजहा भणिअं, इच्छंताहिअमप्पणो, त्तिबेमि, ॥ १३७ ॥ विषमाक्षरेति गाथा च्छंदः ॥ इइगच्छायारपइन्नसुयं सिरिपुव्वधरविरइअं सम्मत्तं ॥

अथ श्रीसुविहितगच्छपरम्परायाश्च आक्षेपपरिहारौ ॥

अत्राह कश्चित् तपोटमताश्रितः खरतरगच्छपट्टावल्याः कल्पितम्, तत्रास्ति प्रतिविधानम् किंचित्संप्रदायागतं प्राचीनं सप्रमाणं सन्तीति ब्रूमहे, नवांगविवरणपंचाशकादिविवरणान्त्यप्रशस्तिषु प्रगटतया दर्शितम्, तच्च मया प्रागेव लिखितमतो पुनर्न लेख्यमिति, तथायत्रालये नियन्त्रिता पंचलिंगीप्रकरणवृत्तिः संदेहदोलावलीप्रकरणवृत्तिः चैत्यवंदनकुलकवृत्तिः इत्यादिग्रन्थेषु आद्याः प्रस्तावनाः प्रान्त्याः प्रशस्तयश्च द्रष्टव्याः। इहतु ग्रंथगौरवान्न लिखिताः ताः ततोऽवसेयाः, अपरंच हरिभद्राष्टक आत्मभ्रमोच्छेदनभानुः पर्यूषणानिर्णयः प्रश्नोत्तरमंजरीः प्रश्नोत्तरविचारादिभाषाग्रन्थाः यंत्रमुद्रिताः विलोकनीयाः, भवभीरुतया समग्दृष्ट्या च मध्यस्थधिया, नचाग्रहेण कुपक्षाग्रहेण च, प्रयोजनं बुद्धेः फलं तत्त्वविचारणं च इत्यादि, श्लोकनीत्या कः खलु गच्छः प्राचीनतमः का च खलु प्राचीनतमा पट्टपरम्परा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्फुटा भविष्यति, उपर्युक्तग्रन्थानां सारभावार्थस्त्विदम्, सौधर्मामुनिपतिप्रगट, वीरजिनेश्वरपाट, मिथ्यामततमहरणकुं, भव्यदिखावणवाट ॥ २ ॥ सुस्थितसुप्रतिबद्धगुरु, सूरिमंत्रकोजाप, कोटिकीयोजव ध्यानधर, कोटिकगच्छसुथाप ॥ ३ ॥ दशपूर्वी श्रुतकेवली, भयेवज्रधरस्वाम, तादिनते गुरुगच्छको, वज्रशाखभयोनाम ॥ ४ ॥ चंद्रसूरी भये चंद्रसम, अतिहिबुद्धिनिधान, चंद्रकुली सबजगतमें, पसर्योबहु विज्ञान ॥ ५ ॥ वर्द्धमानके पाटपर, सूरिजिनेश्वर भाश, चैत्यवासिकूं जीतकर, सुविहितपक्षप्रकाश ॥ ६ ॥ अणहिलपुरपाटणसभा, लोकमिले तिहांलक्ष, खरतरबिरुद सुधानिधि, दुर्लभराजसमक्ष ॥ ७ ॥ अभयदेवसूरिभये, नवअंगटीकाकार, थंभणपासप्रगटकर, कुष्टमिटावणहार ॥ ८ ॥ श्रीजिनवल्लभसूरिगुरु, रचना शास्त्र अनेक, प्रतिबोधे श्रावकबहुत, ताके पट्टविशेष ॥ ९ ॥ हुंबड श्रावक वागडी, अढारेहज़ार, जैनदयाधर्मी किये, वरतै जयजयकार ॥ १० ॥ दादा नाम विख्यातजस, सुरनरसेवकजास, दत्तसूरिगुरु पूजतां, आनंद हर्षउल्लास ॥ ११ ॥ दिल्लिमें पतसाहनें, हुकम उठायासीस, मणिधारी जिनचंदगुरु, पूजो विसवावीस ॥ १२ ॥ ताके पट्टपरम्परा, श्रीजिनकुशलसूरिंद, अकबरकुं परचा दीआ, दादा श्रीजिनचंद ॥ १३ ॥ यह संक्षिप्तसुविहितगच्छपदावली लिखि है ॥ अथ संस्कृतपद्येन सा पुनर्वदति, नमः श्रीवर्द्धमानाय, श्रीमते चसुधर्म्मणे, सर्वानुयोगवृद्धेभ्यो, वाण्यै सर्वविदस्तथा ॥ १ ॥ अज्ञानतिमिरान्धानां, ज्ञानांजनशलाकया, नेत्रमुन्मीलितं येन, तस्मै श्रीगुरवेनमः ॥ २ ॥ सूरिमुद्योतनं वन्दे, वर्द्धमानं जिनेश्वरं, जिन-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चंद्रं प्रभुं भक्त्या, भयदेवमहं स्तुवे ॥ ३ ॥ श्रीजिनवल्लभ जिनदत्त-सूरि जिनचंद्र जिनपतियतींद्राः, लक्ष्मीर्जिनेश्वरगुरुः कुर्वन्तु सुखानि संघस्य ॥ ४ ॥ वन्दे जिनप्रबोधं, जिनचन्द्रयतीश्वरं च जिनकुशलं, जिनपद्मसूरि जिनलब्धि जिनचंद्र जिनोदया जज्ञुः ॥५॥ जिनराजं जिनभद्रं, जिनचंद्रं जिनसमुद्रसूरिवरं, सूरिं श्रीजिनहंसं, जिनमाणिक्यं च वन्देऽहं ॥ ६ ॥ आकार्य गुर्जरदिशोवरलाभपुर्यां, श्रीसाहिना गुरुगुणान्निपुणान्निरीक्ष्य, सन्मानिता युगवरप्रवरावदाता, जातावशीकृतसुरा जिनचन्द्रपूज्याः ॥ ७ ॥ तत्पट्टे जिनसिंहसूरिसुगुरुर्जातस्ततोधीमतां, मान्यः श्रीजिनराजसूरिमुनिपस्तत्पट्टसूर्योपमः, श्रीमच्छ्रीजिनरत्नसूरिगणभृत् श्रीजैनचन्द्रस्ततः, पूज्यः श्रीजिनसौख्यसूरिरभवद्विद्यावतामुत्तमः ॥ ८ ॥ तत्पट्टोदयशैलभास्करनिभस्तेजस्विनामग्रणीः श्रीमच्छ्रीजिनभक्तिसूरिसुगुरुर्जज्ञे गणाधीश्वरः, तत्पदांबुजसेविनो युगवराः सद्भूतयोगीश्वरा जाता श्रीजिनलाभसूरिगुरवः प्रज्ञागुणानुत्तराः ॥ ९ ॥ संवद्वेदहुताशनाष्टवसुधासंख्ये शुभे चाश्विने, द्वादश्युत्तरवासरेऽसितगते श्रीमड्डुडाख्ये पुरे, यैराप्तं पदमुत्तमंगुणगुरुश्रीसद्गुरोर्वाक्यतस्ते स्युः श्रीजिनचन्द्रसूरिगुरवः संघस्य कामप्रदाः ॥ १० ॥ श्रीसूरते श्रीजिनचन्द्रसूरिभिः, प्रदत्तपट्टाजितसर्वसूरिभिः, गुणान्वितारंजितभूरिसूरयो, जाताश्च ते श्रीजिनहर्षसूरयः ॥ ११ ॥ संवन्नेत्रनिधानसिद्धिवसुधासंख्येसुलग्नोदये, सप्तम्यां सहमासके गुरुयुतौ पक्षे सिते येन वै, श्रीमद्विक्रमपत्तनेगुणनिधौ प्राप्तं पदं चोत्तमं, जीयाच्छ्रीजिनपूर्वगोयतिपतिः सौभाग्यसूरिर्गुरुः ॥ १२ ॥ अब्दे शैलधरांकरूपनिधने मासे सिते फाल्गुने, ऐशान्यां

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुरुवासरे गुणनिधौ देशे च श्रीविक्रमे, षड्त्रिंशद्गुणराजिते वरपदे स्थाप्यो हि योगीश्वरैः, जीव्याच्छ्रीजिनहंससूरिसुगुरुर्मान्यः सदा वाग्मिनां ।। १३ ।। संवत्सायकतिस्रअंकवसुधासंख्ये सुलग्नोदये, धार्मिण्यां तपमासकेशनियुते दुर्गे च श्रीविक्रमे, श्रीमच्छ्रीजिनहंससूरिसुगुरोर्प्राप्तं पदं वाक्यतस्तेऽमी श्रीजिनचंद्रसूरिगुरवो नन्दतु भट्टारकाः ।। १४ ।। रसशरनिधिचन्द्रे विक्रमाब्दे सुमासे, असितशशिसुघस्रे कार्तिके पंचमीशे, सुगुणमुनिपवर्यः, शर्मकृन्नित्यचर्यः, जयतु जिनसनाथः कीर्तिसूरीश्वरः सः, ।।१५।। वर्षे वर्षगुहास्यनन्दवसुधासंख्ये शुभे मासके, माघे कृष्णसुघस्रपंचमीदिने प्राप्तं पदं चोत्तमं, श्रीखरतरगणनायकः सुविहितानुष्ठानचर्यावरः, श्रीमज्जिनचारित्रसूरिः सुगुरुर्धीमान्सदा नन्दतु ।। १६ ।। षड्त्रिंशद्गुणरत्ननीरनिलयः श्रीशंखवालान्वयः, प्रस्फुल्लामलनीरसंभवगणाव्याकोसहंसोपमा, क्षोणिनायकनम्रकर्मदलना दीपाख्यसाध्वंगजाः, शर्मःश्रेणिकरा जयन्तु जगति श्रीकीर्तिरत्नाव्हया ।। १७ ।। श्रीमज्जिनकृपाचन्द्रसूरे जगति यशसा ते धवलिते, पयः पारावारं करिवरमभौमं कुलिशभृत्, कपर्दीकैलाशं सुरवरः सुधां च मृगयते, कलानाथं राहुः कमलभवनोहंसमधुना ।। १८ ।। अब्धिर्लब्धिकदंबकस्य तिलकोनिःशेषसूर्यावलेरापीडः प्रतिबोधनैपुण्यवतामग्रेसरोवाग्मिनां दृष्टान्तो गुरुभक्तिशालिमनसां मौलिस्तपःश्रीजुषां, सर्वाश्चर्यमयो महिष्टसमयः श्रीगौतमः ।स्तान्मुदे ।। १९ ।। वन्दामिभद्दबाहूं, पाईणं चरमसयलसुयनाणिं, सुत्तस्सकारगमिसिं, दसाणुकप्पेयववहारे।।२०।।अस्या भावार्थो यथा—
१ श्रीमहावीरस्वामी ७२ वर्षायुः, उससमय १–२ निन्हवहूवा, २ सु-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धर्मस्वामी शतायुः २० वर्षैः सिद्धः, ३ जंबूस्वामी ८० वर्षायुः ६४ वर्षैः सिद्धः, ४ प्रभवस्वामी १०५ वर्षायुः ७५ वर्षैः स्वर्गं गतः, ५ शय्यँभवसूरिः सर्वायुः ६२,९८ वर्षैः स्वर्गं गतः, ६ यशोभद्रसूरिः ८६ वर्षायुः १४८ वर्षैः स्वर्गगतः–७ संभूतिविजयसूरिः ९० वर्षायुः१५६ वर्षैः स्वर्गं गतः ८ भद्रबाहूस्वामी वर्षायुः ७६,१७० वर्षैः स्वर्गगतः ९ स्थूलभद्रस्वामी ९९ वर्षायु २१९ वर्षैः, स्वर्गगताः इणकेसमय ३ तीसरोनिन्हवहूवो, १० आर्यमहागिरिः शतायुः इणुकेसमय ४ चोथो निन्हवहूवो ५ मोनिन्हवहूवो, ११ आर्यसुहस्तिसूरिः शतायुः २६५ वर्षैः स्वर्गगतः, १२ श्रीसुस्थितसूरिः श्रीसुप्रतिबद्धसूरिः कोटिकगणो जातः, १३ इन्द्र. दिन्नसूरिः, १४ श्रीदिन्नसूरिः, १५ श्रीसिंहगिरिः ४७० वर्षे विक्रमादित्यहूवो, १६ श्रीवज्रस्वामी ८८ वर्षायुः ५८४ वर्षैः दिवं गतः, इससमय ६ छट्ठोनिन्हवहूवो, १७ श्रीवज्रसेनसूरिः, १८ श्री चंद्रसूरिः चंद्रकुलं जातं, ५८४ वर्षे ७ मोनिन्हवहूवो, १९ श्रीसमंत भद्रसूरिः ६०९ वर्षे दिगम्बरोत्पत्तिः, २० श्रीदेवसूरिः, २१ श्रीप्रद्यो तनसूरिः २२ श्रीमानदेवसूरिः शांतिस्तवकर्त्ता, २३ श्रीमानतुंगसूरिः भक्तामरकर्त्ता, २४ श्रीवीरसूरिः ९८० वर्षे देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमणः, ९९३ वर्षे कालिकाचार्यजीनें (४) चोथ री संवत्सरी करी, जिनभद्र गणिक्षमाश्रमणशीलांकाचार्य श्रीहरिभद्रसूरिजीहूवा, २५ श्रीजयदेवसूरिः, २६ श्रीदेवानंदसूरि, २७ श्रीविक्रमसूरिः २८ श्रीनरसिंहसूरिः, २९ श्रीसमुद्रसूरिः, ३० श्रीमानदेवसूरिः, ३१ श्रीविबुधप्रभसूरिः, ३२ श्रीजयानन्दसूरिः, ३३ श्रीरविप्रभसूरिः, ३४ श्रीयशोभद्रसूरिः अपरनाम यशोदेवसूरि एसाभी देखनेमें आवे है, ३५ श्रीवि-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मलचन्द्रसूरिः, ३६ श्रीदेवसूरिः अपरनाम श्रीदेवचंद्रसूरिः एसाभी देखनेमें आवे है, ३७ श्रीनेमिचंद्रसूरिः ३८ श्रीउद्योतनसूरिः, ३९ श्रीवर्धमानसूरिः, संवत १०८० आबूजीमें विमलवसही प्रतिष्ठी, ४० श्रीजिनेश्वरसूरिः खरतर विरुद उसवक्त कमलाहूवा, ४१ श्रीजिनचंद्रसूरिः, ४२ अभयदेवसूरिः, नवांगवृत्तिकर्त्ता, ४३ जिन-वल्लभसूरिः संवत् ११६७ पाट मधुकर खरतर, गणभेद १, ४४ जिनदत्तसूरिः संवत् ११६९ पाट रुद्रपल्लीयखरतरगणभेद २, ४५ जिनचंद्रसूरिः मणियाला संवत् १२११ पाट, इणोकेसमयमें आंच लिया १२१३, ४६ श्रीजिनपतिसूरिः संवत् १२२३ पाट, १२७७ स्वर्गगताः, १२८५ तपाहूवा, ४७ श्रीजिनेश्वरसूरिः १२७८ पाट, लघुखरतर. ३ संवत् १३३१ में, ४८ जिनप्रबोधसूरिः १३३१ पाट, ४९ श्रीजिनचंद्रसूरिः संवत् १३४१, ५० श्रीजिनकुशलसूरिः संवत् १३७७ पाट संवत् १३८९ स्वर्ग, ५१ जिनपद्मसूरिः १३८९ पाट संवत् १४०० वैशाखसुदि १४ दिवंगतः, ५२ जिनलब्धिसूरिः संवत् १४०० पाट, संवत् १४०६ दिवंगतः, ५३ जिनचंद्रसूरिः १४०६ पाट १४१५ दिवंगतः, ५४ जिनोदयसूरिः १४१५ पाट १४२२ बेगडखरतर ४, ५५ श्रीजिनराजसूरिः संवत् १४३२ पाटबेठा संवत् १४७४ पीपलियाखरतर ५, ५६ श्रीजिनभद्रसूरिः १४७५ पाट, ५७ जिनचंद्रसूरिः १५१४ पाट, इणुंके समय १५२४ लोंका-हुवा, रेवडीयागच्छहूवो, ५८ जिनसमुद्रसूरिः संवत् १५३० पाट १५५५ स्वर्ग, ५९ जिनहंससूरिः संवत् १५५५ पाट १५८२ स्वर्ग मुहताकर्मसी पाटमहोच्छवकीधौ, १५६४ बडाआचारजिया ६, ६०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिनमाणिक्यसूरिः १५८२ पाट १६१२ स्वर्ग, पायचंदिया, ६१ जिनचंद्रसूरिः संवत् १६१२ पाट १६७० स्वर्ग क्रिया उद्धार कियो कर्मचंदरी वारमें, १६२१ भावहर्षीया खरतर ७, ६२ श्रीजिनसिंहसूरिः १६७० पाट १६७४ स्वर्ग, ६३ श्रीजिनराजसूरिः १६७४ पाट १६९९ स्वर्ग १६८६ छोटाआचारजिया ८, १७०० में रंगविजया ९, तन्मध्ये श्रीसारीया खरतर १०, ६४ श्रीजिनरत्नसूरिः १६९९ पाट १७११ स्वर्ग ६५ श्रीजिनचंद्रसूरिः १७११ पाट १७६३ स्वर्ग ६६ श्रीजिनसुक्खसूरिः १७६३, १७८० रिणीमध्ये दिवंगतः, ६७ श्रीजिनभक्तिसूरिः १७८० पाट १८०४ कच्छमांडवीमध्ये स्वर्ग ६८ श्रीजिनलाभसूरिः १८०४ पाट १८३४ स्वर्ग ६९ श्रीजिनचंद्रसूरिः १८३४ पाठ १८५६ सुरते सर्ग ७० श्रीजिनहर्षसूरिः १८५६, पाट १८९२ स्वर्ग ७१ श्रीजिनसौभाग्यसूरिः १८९२ पाट १९१७ स्वर्ग मंडोवरिया खरतर १८९२ मेहूवा, ११, ७२ श्रीजिनहंससूरिः १९१७ फागुणवदि ११ पाट १९३५ में स्वर्ग, ७३ श्रीजिनचंद्रसूरिः १९३५ मा. व० ११, ७४ श्रीजिनकीर्त्तिसूरिः १९५६ का. व. ५ पाट १९६७ स्वर्ग ७५ श्रीजिनचारित्रसूरिः १९६७ मा. व. ५ पाट, श्रीबृहत्खरतरगच्छे श्रीजिनकीर्त्तिरत्नसूरिशाखायां वर्त्तमानविजयराज्ये जं० यु० प्र० भ० श्रीमज्जिनकृपाचंद्रसूरिः स्वस्तिविचरतें हैं इदानींतनीये श्रीमोहनचरिते द्वितीयसर्गेपि इत्थमेव न्यगादि तद्यथा तदा खरतरे गच्छेऽभवन् प्राभाविकास्तु ये, रेखावन्त इमेऽभूवंस्तेषु विद्याप्रभावतः ॥ ३८ ॥ श्रुतं शमाय मंत्रादि विज्ञानं विघ्नशान्तये, वचोयदीयं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बोधाय धन्यास्ते यतयो भुवि ॥ ३९ ॥ शासनाधीश भगवन्महावीराद्यथागमत्, संतान एषां तत्प्रासंगिकं किंचिदिहोच्यते ॥ ४० ॥ महावीरात्सुधर्मार्य जंबूश्रीप्रभवादयः, आचार्याः क्रमशोऽभूवन् नवत्रिंशत्सुसंयताः ॥ ४१ ॥ चत्वारिंशास्ततोऽभूवन्सूरयः-श्रीजिनेश्वराः, आणहिल्लं पत्तनं ते विहरन्तः समागमन् ॥ ४२ ॥ धर्मोद्योतं कृतं तत्र, श्रीजिनेश्वरसूरिभिः, वीक्ष्य भीमनृपः सद्यः प्रससाद महामनाः ॥४३॥ प्रतिवादिमतोत्साद एतेखरतरा इति, तेभ्यः खरतरेत्याख्यं बिरुदं प्रददौ नृपः ॥ ४४ ॥ गगनेभव्योमचन्द्रमित (१०८०) विक्रमसंसदि ॥ अलभन्तनृपादेतद् बिरुदं श्रीजिनेश्वराः ॥ ४५ ॥ शासने वर्धमानस्य, कुलं चान्द्रं पुरातनम्, तस्मादारभ्य लोकेऽस्मिन्नाम्नोत्खरतराभिधाम् ॥ ४६ ॥ तत्पट्टे जिनचन्द्राख्या अभवन्सूरयस्ततः ॥ संवेगरंगशालादिग्रन्थरत्नविधायकाः ॥ ४७ ॥ सूरयोऽभयदेवाख्यास्तेषां पट्टेऽतिविश्रुताः, नवांगीवृत्तिकर्त्तारोऽभूवंस्तीर्थप्रभावकाः ॥ ४८ ॥ ततस्तेषां पट्ट आसन्, सूरयो जिनवल्लभाः, संघपट्टादिकर्त्तारो भव्यबोधविशारदाः ॥ ४९ ॥ तेषां पट्टे जज्ञिरेऽथ जिनदत्तादयोऽमलाः, सूरयः संयममिताः शासनोन्नतिकारकाः ॥ ५० ॥ प्रादुरासन्नेकषष्टितमे पट्टेऽथ संवदि, नेत्रेन्दुरसभूमाने (१६१२) जिनचन्द्राख्यसूरयः ॥ ५१ ॥ लुप्तप्रायमथाचारं साधूनां संप्रधार्य ते, संविग्नैः साधुभिः सार्धं क्रियोद्धारं व्यधुः स्वयम् ॥५२॥ पत्तनेऽथाणहिल्लाख्ये, कंचिदुत्सूत्रवादिनं, ते तत्त्वयुक्त्या निर्जित्य, विशदं यश आसदन् ॥५३॥ अथ लोहपुरे गत्वाऽकबराख्यं महीपतिम्, वाचोयुक्त्या विविधया बोधयामासुरन्वहम् ॥ ५४ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रतिबुद्धः स तेभ्योऽदाद्युगंधरपदं वरम्, अमारीपटहोद्घोषं, पर्वसु प्रत्यपद्यत ॥ ५५ ॥ तेषु स्वर्गप्रयातेषु, जज्ञिरे पट्टधारकाः, जिनसिंहाभिधास्तेऽपि, वितेनुः शासनोन्नतिम् ॥ ५६ ॥ पट्टे तेषामराजन्त जिनराजाख्यसूरयः, जिनरत्नाभिधानास्तत्पट्टे सूरिवरा बभुः ॥ ५७ ॥ पंचषष्टितमे पट्टे सत्तमा जज्ञिरे ततः, सूरयो जिनचन्द्रास्ते, स्वनामानुगुणं व्यधुः ॥ ५८ ॥ पट्टे रसर्तुप्रमिते जिनादिसुखसूरयः, रेजिरे शुद्धयशसा, धवलीकृतदिङ्मुखाः ॥ ५९ ॥ रसर्षिमितपट्टेऽथ, जिनाद्या भक्तिसूरयः, आसन्भव्यमनोऽम्भोधि प्रबोधे भानुसंनिभाः ॥६०॥ जिनादिसुखसूरीणां कर्मचन्द्राभिधः परे, विनेया नयभंगीषु, निपुणा अभवन्भुवि ॥ ६१ ॥ तेषामीश्वरदासाख्याः शिष्या आसन्सतां मताः, तद्विनेया वृद्धिचन्द्रा नयनीतिविशारदाः ॥ ६२ ॥ तच्छिष्या लालचन्द्राख्या अभवन्नतिविश्रुताः, जिनभाषिततत्त्वार्थज्ञातारोऽमलबुद्धयः ॥ ६३ ॥ तेषां विनेया अभवन्रूपचन्द्रा महाधियः, प्रायः शातोत्पादके ते पुरे नागपुरेऽवसन् ॥ ६४ ॥ नभोमुनिमिते पट्टे जिन हर्षाख्यसूरयः, अलंचक्रू रूपचन्द्रास्तत्पार्श्वेव्रतमाददुः ॥ ६५ ॥ एवंवीराद्रूपचन्द्रसंतानउपवर्णितः, इत्यादि समाधानम् ॥ हे हंसराघवादयो पूर्वदर्शितपट्टपरम्परायां कुत्राप्यस्ति हीनाधिकं कल्पितत्वं प्रतिभाषते, ततोद्गीर्यतां नहि तर्हि सिद्धान्तसमाचारीनाम्नि यन्त्रमुद्रितपुस्तके द्वेषाद्दृष्टिरागेण वा कलुषितान्तःकरणेनच येनमिथ्योपहास्योल्लेखं कृतवान्, तस्य श्रीसंघाग्रे सम्यगालोचनेन मिथ्यादुष्कृतं च दत्वा इहलोके परत्रलोके च निर्मलात्मभाजः भवेयुः, इत्यलं पल्लवितेन

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खरतरगच्छरीविगत जाणवी.

खरतरगच्छ
सं० १०८० प्रथमभांणसो जियो-गच्छ
सं० ११६७ मधुकरखरतरगच्छ १
सं० १२०४ रुद्रपल्लीय गच्छ शाखा २
सं० १३३१ लघुखरतरगच्छ ३
सं० १४१५ पींपलीया गच्छ ४
सं० १४२२ वेगड खरतर गच्छ ५
सं० १५६० वडाआचारजिया-गच्छ ६
सं० १५६४ आचार्यसागरचंद्र ७
सं० १६२१ भावहर्ष गच्छ ८
सं० १६८७ लघुआचारियगच्छ ९
सं० १७०० रंगविजयगच्छ १०
सं० १८९२ मंडोरिय खरतर गच्छ ११

यह ११ खरतरगच्छकी शाखाओं हैं और एकमूलशाखा है इस-तरेबारे भेदरूपतपभानुकी तरह सत्यप्ररूपणा एकसमाचारीरूपी ती-क्षण किरणोंकरके कर्मेंधनोको जलाणेमें समर्थ होनेसें एकगच्छहि कहा जावे हैं, इस दिनकर भेदरूप एकगच्छमें अविच्छिन्न गुरु-संप्रदायागत सुद्धसिद्धान्त सत्यप्ररूपणा एकसमाचारीवगेरे सद्गुण अभीतक अखंडपणे एक रूपसें चले आरहे हैं, और सिरफ भिन्न-नाम, पट्टावली मात्रकाहि भेद है, सो निज निज शाखाओंके प्रादु-र्भावसमेसें है अर्वागसें नहिं है और जिनवल्लभसूरिजी जिनदत्तसू-रिजीपर्यंत सर्वखरतरगच्छीय शाखाओं कि एकहि पट्टावली है और पूर्वोक्त पट्टावली मूलशाखाकी है इस खरतरगच्छमे वडेवडे प्रभाविक युगप्रधान आचार्य हूवेहैं और होवेगा जिसमे श्रुत प्रभावक तो एसे हुवे हैं कि अपूर्व सरसप्रधान विद्वत्ताके गमसें भरे हुवे,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सर्व अन्यगच्छीय शास्त्ररचयिता आचार्योंकी अपेक्षासें तो हेमाचार्य-मलयगिर्यादिके सिवाय बहुतसे शास्त्रप्राये खरतराचार्योंके रचेहूवे संभवे है, और इस पंचमआरेमें बहुत जैनधर्मप्रभावक आचार्य हूवे हैं औरभी होगा परन्तु इस वर्तमान कालमें जैनश्वेतांबरजाति ३ वा ४ देखनेमे स्थोकबन्ध आवे हैं और इनके सिवाय प्रायें विशेष श्वेताम्बर जैनजातिबहुव्यापक सर्वत्र नहिं दिखतीहै, १ श्रीमाल २ ओसवाल ३ पोरवाल ४ हुंबड इन जातियोंके सिवाय श्वेताम्बर धर्ममे प्रवृत्ति करती हुई विशेष करके नहिं देखतें हैं परन्तु अग्रोहा नगरकों श्रीलोहित्याचार्यने प्रतिबोधा, अग्रवाल भये और श्रीजय-पुरराजकी सीमाके एकपरगणेमे श्रीसिद्धसेनाचार्यने ८६ गामोंको प्रतिबोधे, खंडेलवाल भये, और वघेराके राजादिलोक श्रीजिनवल्लभ-सूरिजीसें प्रतिबोध पाकर जैन भये सोवघेरवाल उपजाति बावडी भये, श्रीमानतुंगाचार्यके प्रतिबोधसें भूपति सिंहराजा जैनधर्म-धारक भया उसका हूंबड गौत्र भया यह जातियें प्रायें श्वेताम्बरा-चार्योंकी प्रतिबोधी भइ संभवेहै निश्चयसें तो तत्वज्ञानीजाणे, और इन जातियोमें उभयधर्म मंन्तव्यताहै अर्थात् १ श्वेताम्बर २ दिगंबर यह दोनो धर्मकों मानतें हैं और महाजनवंशमुक्तावलीमें लिखतें हैं कि इस जैनधर्मके लाखोंश्रावकबनानेवाले पडते कालमें उद्योतकारी, प्रथम सवालाख घर १ लाख ८४ हजार राजपूतोंके महाजनवंशके १८ गोत्र थापनेवाले, श्रीपार्श्वनाथस्वामीके छठे पाट-धारी श्रीरत्नप्रभसूरिः भये वादपर गोत्र हजारो घर महाजन बना-नेवाले, श्रीमहावीरस्वामीसें ४३ में पट्टधारी श्रीजिनवल्लभसूरिः,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एकलाख तीसहजार घर कुटंब राजपूतवगैरेकों महाजन बनानेवाले, दादागुरुदेव श्रीजिनदत्तसूरिः, हज्जारों घर महाजन बनाने वाले, मणिधारी श्रीजिनचन्द्रसूरिः, ५० हज्जार श्रावकबनानेवाले श्रीजिनकुशलसूरिः १२०० साधुवोंके परिवारसें विचरनेवाले, इत्यादि फिर गुजरात देशमें लाखों घर जैनधर्मो श्रावक बनानेवाले, हेमचंद्रसूरिः, नागेन्द्र पूर्णतलगच्छीय श्रीहेमाचार्य, और छुटकर गोत्रकई २ औरभी अल्पसंख्यासें और आचार्योनें बनायेहैं, इत्यादि विशेषस्वरूप यथा अवसरमें लिखेंगें, और पूर्वोक्त श्वेताम्बर जैन जातियोंके प्रथमव्यवस्थापक श्रीगौतमस्वामी ततः चतुरदशपूर्वधराचार्य श्रीरत्नप्रभसूरिः ततः दशपूर्वधराचार्य सिद्धसेनाचार्य मानतुंगाचार्य हरिभद्राचार्य वगेरे भये इनोनें प्रथम जिनवचन समर्थन करनेके लिये जैन श्वेताम्बरकोंमकोंस्थापी वाद श्रीखरतराचार्योनें तथा अन्यगच्छीय आचार्योने वृद्धिकरी जिसमें विशेष जैनश्वेताम्बरकोमके संरक्षक तथा विशेषतर वृद्धिकरनेवाले युगप्रधानपदवीभूषित श्रीजिनवल्लभसूरिजी श्रीजिनदत्तसूरिजी भये अनेक राजा महाराजा मंत्री महामंत्री बडेबडे राजपूतोंको प्रतिबोधदेकर श्वेताम्बर जैनकौमकी विशेष वृद्धि करनेवाले होते भये और एकंदर जैनकोमका संरक्षण तथा विशेषवृद्धिका कारण जादेतर खरतर आचार्योसें भया है यह स्वरूप यथा अवसरमे लिखेगें और इन उपरोक्त महाभाग्यशाली महान् पुरुषका प्रभाव किसीएक भाषाकविने दर्शाया है सो यह है, सदगुरुजीथे सांभलो, श्रीजिनदत्तसूरीसहो, सेवकने सांनिधकरो, पूरोमनह जगीसहो ॥ १ ॥ दोलतदोहो दादाजी संप-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्तिदो, दोलतदोगुरु महारा, थांहरा विरुद् अनेकहो, तो सेव्यां संकट टले, एहीजदादाताहरी टेकहो, दोल० १, जीती चोसठ योगिणी, वसकीया बावनवीरहो, संघमांहें थेसाधीया, पंचनदी पंचपीरहो दो० २, पडिक्कमणांमाहें बीजली, वलियवली झबकायहो, थे मंत्री राखीतिका, तूठीवरदेजायहो, ४, दो०, उच्छत्र करतां उच्चमें, मूओ मुंगलरो पूतहो, जापकरी जीवाडीयो, संघमाहें राख्यो दादे सूतहो ॥ ५ ॥ दोल०, वडनगररे ब्राह्मणें, देहरेधरी मृतगायहो, पंचपरमेष्ठिविद्याबले, पिसुनलगायापायहो ॥ ६ ॥ दो०, विक्रमपुर व्यापीमरी, थेदूरकीया सहु दुःखहो, परवारपिणपोते कीयो, सहुने दीयो सुखहो ॥ ७ ॥ दो० ॥ अंबडहाथे अक्षरे, थे प्रगट्याततखेवहो, युगप्रधानजगतुंजयो, आखे अंबिका देवी हो ॥ ८ ॥ दो०, थांभोवज्रविदारीने, पोथीपरगट कीधहो, विद्या सुवर्णअक्षरे, उज्जेणी माहें लीधहो ॥ ९ ॥ दो०, इमविरुदघणा छे ताहरा, कहितांनावेपारहो, भागसंजोगे दादो भेटीयो, अडवडीयां आधारहो ॥ १० ॥ दो०, हु छुं सेवक ताहरो, थे आपोधन रिद्धहो, भुवनकीरति सुपसाउले, लाभउदेसुखसिद्धहो ॥ ११ ॥ दो०, इति गुरुदेवस्तुतिः, इत्यादि अनेक प्रकारका महाप्रभाव दुनियामे प्रसिद्ध है जो पुरुष गुरुभक्त आस्तिक है और कृतघ्नी नहिं है उसके लिये यह वात हैं और अबीभी कल्पवृक्षकी तरहफलदेतें हैं और इन महापुरुषके विषयमें प्राचीन शास्त्रकार इसतरह गुणसमूह वर्णन करतें हैं, तथाहि—इहहि सकल प्रामाणिक लौकिक प्रकृष्टाचार

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विचार चातुरी विशिष्टाः शिष्टाः क्वचिदभीष्टकार्ये प्रवर्त्तमानाः, समस्तसमीहितवितरणविहित सुरकारस्कराहंकारतिरस्कारस्वाभीष्ट-देवतानमस्कारपुरस्कारमेव प्रवर्त्तन्ते, अतः समस्तयोगिनीचक्रदेव देवताव्रातविहितशासनाः, नानाप्रभावनाप्रभावित श्रीजिनशासनाः, महर्द्धिकनागदेवश्रावकसमाराधितश्रीअंबिकालिखित श्रीजिनदत्तसूरियुगप्रधानेत्यक्षरवाचनमार्जनसमुपार्जित युगप्रधानपदसत्यताप्रधानाः, अकलातिशायिप्रगुणगुणगणमणिखनयः, सकलशिष्ट चूडामणयः प्रबोधितान्यगच्छीयाऽतुच्छभूरिसूरयः श्रीजिनदत्तसूरयः, इत्यादि ॥ १ ॥ सकल प्रामाणिकेति, प्रमाणं विदन्त्यधीयते वा प्रामाणिकाः, न्यायादेरिकण्, इत्यनेन सूत्रेणेकण् प्रत्ययः, प्रमाण-शास्त्रविद इत्यर्थः, एवं लोकव्यवहारवेदिनो लौकिकाः प्रामाणिकाश्च लौकिकाश्चेति द्वन्द्वस्तेषां यः प्रकृष्टाचारविचारस्तस्य चातुरीचातुर्यं-तया विशिष्टाः, २ समस्तसमीहितेति, समस्तसमीहितानां वितरणेन दानेन विहितः कृतः सुरकारस्करस्य कल्पवृक्षस्य तिरस्कारोऽभिभवो येन एवंविधश्चासौ योऽभीष्टदेवतानमस्कारश्च तस्य पुरस्करणं यस्यां प्रवृत्ताविति क्रियाविशेषणं, ३ महर्द्धिक नागदेवश्रावकेण समाराधिताचासौ श्रीअम्बिका च तया लिखितानि च यानि श्रीजिनदत्त-सूरियुगप्रधानेति अक्षराणि च तेषां वाचनमार्जने ताभ्यां समुपार्जिता या युगप्रधानपदस्य सत्यता तया प्रधाना इति विग्रहः, अत्रायं वृद्ध-संप्रदायो नागदेवाभिधः श्राद्धः श्रीनेमिनाथनिनंसया श्रीउज्जयन्तं गतः सन् युगप्रधानगुरुं जिज्ञासुः सप्तभिरुपवासैरम्बिकादेवीमारा-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धयामास, तदीयसत्त्वावष्टम्भतस्तु सती श्रीअम्बिकातत्करे युगप्रधान-नामाक्षराणि लिलेख, प्रोचे च य एतानि अक्षराणि वाचयित्वोत्पुंसयिष्यति स युगप्रधानो ज्ञेय इति, ततश्च नागदेवः प्रतिपुरं प्रतिग्रामं सूरीणां स्वपाणिपत्रं दर्शयन् प्राप्तः श्रीअणहिल्लपत्तननामपत्तनं, गतश्च श्रीजिनदत्तसूरिवराणां पवित्रायां वसतौ, दर्शितः पाणिः श्रीजिनदत्तसूरीणां, श्रीपूज्यैरपि वासक्षेपं विधाय श्रीजिनदत्तसूरिर्युगप्रधान इत्यक्षराणि वाचयित्वोत्पुंसितानि, ततो नागदेवेन समुत्पन्ननिश्चयेन श्रीजिनदत्तसूरिर्गुरुत्वेनांगीकृत इति, ४ सकलातिशायीति, सकलाः समस्त अतिशायिन उत्कृष्टाः, प्रगुणाः प्रधाना ये गुणगणास्ते एव मणयस्तेषां खानयः, एवं श्रीजिनकुशलसूरिविषयेपि तथाहि—श्रीशत्रुंजयक्षितिधरशिखरशेखरानुकार श्रीमन्मानतुंगविहार शृंगारहार प्रकार श्रीयुगादिजिनेश्वर भास्वरबिम्ब प्रमुखार्हद्बिम्बकदम्बक प्रतिष्ठाविधानसंपन्नसमुच्छलन्मरालपक्षवलक्षकीर्त्तिकुसुमोत्तंसितदिग्वधूत्तमांगाः, त्रिभुवनजनसुभगंभावुकानेकप्रविवेकज्ञानदर्शनचारित्रौदार्यसौदर्यस्थैर्यधैर्यगाम्भीर्यार्जवाद्यगण्य वरेण्यगुणगणान्वितरत्नराशिशृंगारितांगा निरन्तरानवद्यत्रैविद्याभ्यास विलासविशदायमानापमानमनीषाप्रकर्षतिरस्कृतभूरिसूरयः श्रीजिनकुशलसूरयः इत्यादि अनेक प्रभाव प्राचीन प्राचीनतर शास्त्रोंमे देखनेमे आरहाहै ऐसे महाप्रभाविकयुगप्रधान श्रीमज्जिनदत्तसूरीश्वरका स्वल्पबुद्धि अनुसार किंचित् चरित्र लेश इस छट्ठे सर्गमे कहाहै अब आगे ७ में सर्गमें देशना पूर्वक विशेष गोत्राधिकार कहेनेमें आवेगा, इति श्री-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

युगप्रधानश्रीमज्जिनदत्तसूरिचरिते सावशेषे प्रसंगवशतो विविधार्थ-स्वरूपवर्णनो नाम षष्ठः सर्गः परिपूर्त्तिभावमगमत्समाप्तश्चायं षष्ठः सर्गः श्रीखरतरगच्छे श्रीमज्जिन–कीर्त्तिरत्नसूरिशाखायां तत्परम्परायां च क्रमात् श्रीमज्जिनकृपाचन्द्रसूरीश्वरसंशोधितेऽस्मिन्सर्गे परिपूर्त्तिभावमगमत् शिष्य पं. आनंदमुनिसंगृहीततद्भ्रात्रा उ० जयसागरगणिसंयोजित श्रीजिनदत्तसूरिचरिते नानासंग्रह षष्ठः सर्गः समाप्तः।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ अथ सप्तमः सर्गः ॥

श्रीजिनकुशलसूरिजीसद्गुरुभ्योनमः, श्रीगौडीपार्श्वनाथप्रसादात् शिवततिर्भवतु,—अर्हतोज्ञानभाजः सुरवरमहिताः सिद्धिसौधस्थसिद्धाः पंचाचारप्रवीणाः प्रगुणगणधराः पाठकाश्चागमानां, लोके लोकेशवंद्याः सकलयतिवराः साधुधर्माभिलीनाः, पंचाप्येते सदाप्ताः विदधतु कुशलं विघ्ननाशं विधाय ॥ १ ॥

श्रीवीरं क्षीरसिन्धूदकविमलगुणं मन्मथारिप्रघातं, श्रीपार्श्वं विघ्ननाशनविधौ विस्फुरत् कान्तिधारं, सानन्दं चेन्द्रभूत्यादृतवचनरसं दत्तदृकर्णबोधं, वन्देहं भूरिभक्त्या त्रिभुवनमहितं वाङ्मनः काययोगैः ॥ २ ॥ श्रीजिनवल्लभ जिनदत्तसूरि जिनचंद्र जिनपति यतींद्राः लक्ष्मीजिनेश्वरगुरुः कुर्व्वन्तु सुखानि संघस्य ॥ ४ ॥ वन्देजिनप्रबोधं जिनचन्द्रयतीश्वरं च जिनकुशलं जिनपद्मसूरि जिनलब्धि जिनचंद्र जिनोदया जज्ञुः ॥ ५ ॥ जिनराजं जिनभद्रं, जिनचन्द्रं जिनसमुद्रसूरिवरं, सूरिं श्रीजिनहंसं, जिनमाणिक्यंच वन्देहं ॥ ६ ॥ षट्त्रिंशद्गुणरत्ननीरनिलयः श्रीशंखवालान्वयः प्रस्फुल्लामलनीर संभवगुणाव्याकोसहंसोपमाः, क्षोणीनायकनम्रकर्मदलना दीपारव्यसाध्वंगजाः शर्मः श्रेणिकराः जयन्तु जगति श्रीकीर्त्तिरत्नाह्वयाः ॥ ७ ॥ करहयनिधिचंद्रे विक्रमाब्दे सुमासे, ससितगुरुसुघस्त्रे पौषके पूर्णिमायां, सुगुण मुनिपवर्यः शर्मकान्नित्यचर्यः जयतु जिनसनाथः कीर्तिसूरीश्वरः सः ॥ ८ ॥ वर्षेवरकराश्वनंदवसुधासंख्ये शुभे मासके, पौषे शुक्ल सुघस्त्रपूर्णिमदिने प्राप्तं पदं चोत्तमं, श्री खरतरगणनायकः

१२ दत्तसूरि०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुविहितानुष्ठानचर्यावरः श्रीमज्जिनकृपाचन्द्रसूरिः सुगुरुर्धीमान् सदानन्दतु ॥ ९ ॥ ऊपरोक्त श्लोकोंके नाम क्रमके अनुसार ही मणियाला श्रीजिनचन्द्रसूरिजी आदि युगप्रधान शासन प्रभावक महाप्रभावशाली आचार्य महाराजोंका संक्षिप्त किंचित् चरित्र इस सप्तमसर्गमें कहेनेमे आवे है, और ६ सर्गके अंतमे क्रमप्राप्त युगप्रधान श्रीमज्जिनदत्तसूरीश्वर महाराजकी देशना प्रतिबोध गोत्र स्थापनादि विषय अगले सर्गमें कहनेमे आवेगा, ऐसी सूचना करी होनेपर और क्रमप्राप्त इसी विषयका अवसर होनेपर भी ग्रन्थ गौरवादि भयसें इस विषयकों पृथक् हि लिखना उचित मानकर इहांपर नहिं लिखा है, और अलगहि यथा अवसर लिखेगें, और गोत्रस्थापनादि विषयकों शीघ्रतासें हि देखने की उत्कंठा होय तो श्री जैनसंप्रदाय शिक्षा अथवा महाजनवंश मुक्तावली आदि ग्रन्थ छपे हुवे तइयार हैं, उनकों आद्योपान्त सम्यक्तया मननचिंतन पूर्वकहि पढकर देखो जिस्सें अछीतरे गोत्रोत्पत्ति वगेरा स्वरूप मालूम होसकेगा और सर्वस्वसिद्धान्त परसिद्धान्त पारंगामी सच्चारित्र चूडामणिः मूलोत्तरगुण अप्रतिपाति आसन्न सिद्धिसुख एकावतारी कृतशासनसेवा शासनशृंगारहारशासन शोभाकारक, चतुरविधसंघवृद्धिकारक, श्रीवीरशासन श्रीसुधर्मास्वाम्यादि पदपरम्परा अलंकृत करणेवाले, श्रीतीर्थंकरकल्प अखंडित सदेव मनुष्योंमें आज्ञा प्रवर्त्तानेवाले, अंबाप्रदत्त युगप्रधानपदधारक, एकलाखतीसहजार घरकुंटुंब प्रतिबोधक जंगम युगप्रधान भट्टारक चतुरविध श्रीसंघनायक ज्येष्ठ दादासाहेब श्रीमज्जिनदत्तसूरिजी महाराज साहेब जयकी श्रीमज्जिन-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वल्लभसूरिजी युगप्रधान महाराज साहेबके पट्टऊपर विराजमान भये, तब जगतमें हर्ष उत्पन्न भया सर्वत्र, और चतुरविध श्रीसंघ विशेष खुशीभया थका विशेष धर्मध्यान करणेमें रक्तभया, स्फुरायमाण युगप्रधानमंत्र तथा युगप्रधान लब्धिकों प्राप्त होके, निरवद्य महा विद्याओंका स्मरणकिया, और विशेष शासनोन्नति चतुरविध श्रीसंघका रक्षण और श्रीसंघकी विशेष वृद्धि होनेके लिये, विशेषतः श्रीसूरिमंत्र और ह्रींकार महामंत्रका जाप किया, तब सर्व सम्यक् दृष्टि देव देवीयोंके मनमें अकस्मात् आनंद याने हर्ष उत्पन्न भया, और श्रीजैनधर्मके विरोधी मिथ्या दृष्टि देवदेवीयोंके मनमें अकस्मात् क्षोभ याने भयउत्पन्न भया, और भि केइक अशुभ चिन्ह उत्पन्न हूवे, और इस भारतके मध्यखंडमें सर्व मिथ्यात्वीलोकोंका मुख म्लानभया, और धर्मप्राप्ति और श्रीसंघहर्षित भये, वाद निरवद्य महाविद्याओं करके संयुक्त, श्रुत धर्मादि सर्वगुणसंपन्न, सम्यक् दृष्टिदेव देवीयों करके सेवित है चरणकमल जिणोंके ऐसे भगवान श्रीमज्जिनदत्तसूरीश्वरजी श्रीचितोडनगरसें चतुरविध संघसें परिवरे हूवे, और श्रीदेवभद्रादि १३ आचार्योंकरके सहित पूर्वदिशा क्रमसें शुभ चंद्रादिवल आनेपर सर्वत्र भव्यकमलोंको प्रतिबोधनेके लिये विहार किया पूर्वदिशा संबंधि देशोमें, वाद दक्षिणदिशा संबंधि देशोमें वाद पश्चिमदिशा संबंधि देशोमें वाद उत्तरदिशा संबंधि देशोमें सर्वत्र अस्खलितपणें विचरते भये, और पूर्वानुपूर्वीसें अनेक मध्यभारत खंडीय साधु विहार योग्य देशोमें वहुतवार श्रेष्ठलाभ जानके विहार करते भये, और इसतरे अनेकदेशोमे ४२ वर्ष पर्यंत

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विहार करके चतुरविध श्रीसंघकी वृद्धिरूप बहुतसा लाभ प्राप्त होकर अपने आत्माको कृतकृत्य मानते भये, और इसतरे अनेक लक्ष संख्यक श्रावक सम्यक्त्वधारी और देश विरतिकों धारनेवाले भये, और इसीतरे अनेक लक्षसंख्यक सम्यक्त्वधारी और देश विरति धारी श्राविकायें भइ, हज्जारोहि संख्यावाले साधु भये, और हज्जारोंहि संख्यावाली श्रेष्ठ साधवीयें भई, और अनेक आचार्य उपाध्याय प्रवर्त्तक स्थविर गणावच्छेक गणिवगेरा पदस्थ भये और आचार्या उपाध्याया महत्तरा गणावच्छेदिनी प्रवर्त्तिनी गणणी स्थविरादि पदधरा साधवीयें भई, और चार निकायके अनेक देव देवीयां सेवक भये, और सेंकडो वा हज्जारों घर वा कुंटुंबोंवाले अनेक राजा महाराजा गणनायक दंडनायकादिकोंको और महर्द्धिक चार वर्णवाले मनुष्योंको भव्य सिद्धान्तानुसार देशनाओं करके अनेक तात्कालिक चमत्कारों करके ओसवालादि श्रीजैन जातिकी और खरतर संघकी वृद्धि करते भये, और अनेक मूलगोत्र, उप गोत्र शाखा अट(ड)कादि करके श्रीजैनजातिकों अलंकृतकरी, और इसतरे युगप्रधान लब्धिके उदयसें इस भारतवर्षमें जैनजातिके ऊपर महान् उपगार करके, श्रीवीरशासनकी प्रभावना करके और धर्म जिज्ञासुक अनेक भव्योंको धर्ममे स्थिर करके और राशलसाह और देल्हणदेवी पिता और माता है जिनोंके, और अपने पदको प्रभावन करनेवाले और मणिमंडित भालस्थल जिनोका और देवोपा-सित चरण कमल जिनोंके, और धरणेन्द्र पद्मावतीसें वरकों प्राप्त होनेवाले, महान् प्रभावक और छोटे दादाजीके नामसें प्रसिद्धिपाने-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

युगप्रधान

मणिमंडित भालस्थल श्रीमज्जिनचंद्रसूरीश्वरजी महाराज

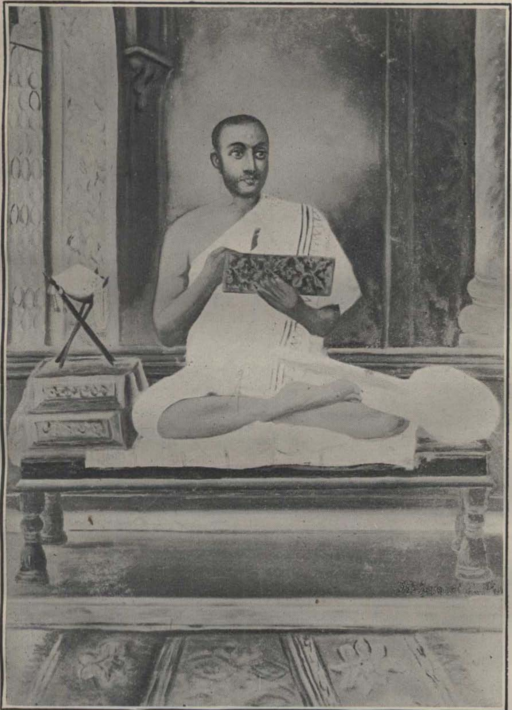

जन्म संवत्	दीक्षा संवत्	आचार्यपद संवत्	स्वर्ग संवत्
११९१.	१२०६.	१२११.	१२२३.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाले ऐसे श्रीमज्जिनचन्द्रसूरिजीको अपने हाथसें महा महोत्सवके साथमे श्रीसूरिमंत्र देकर आचार्य पदमे स्थापितकरके और ४२ वर्ष २ मास २० दिनपर्यन्त सर्व युगप्रधानपद भोगवके और सर्व श्रीसंघकों धर्म शिक्षा देके धर्ममे स्थिर करके अपना स्वर्ग स्थान अजमेर जाणके विहार क्रमसें श्रीअजमेर नगर श्रीमज्जिनदत्तसूरिजी पधारे, और अपना आयु अल्प जाणके सर्व श्रीसंघके साथ और सर्व जीवोंके साथ शुद्धभावसें खामणादिक करके, सर्वायु ७९ वर्ष कापालके समाधिसें स्वर्ग गये,, ॥ + ॥ तत्पट्टे ४५ मा, श्रीजिनचन्द्रसूरिः भए, पिता साहरासलक माता देल्हणदेवी तिसके पुत्र संवत ११९१ मिति भाद्रवासुद ८ के दिन जन्म, सं० ११९९ दीक्षा संवत १२११ वैशाखसुदि ५ के रोज विक्रमपुरके विषे रासल कृत नंदीमहोत्सव सहित श्रीजिनदत्तसूरिजीनें आप अपने स्वहस्तसैं सूरिमंत्र देकर अपने पट्ट ऊपर आचार्य पदमें स्थापन कीये, ऐसे श्रीजिनचन्द्रसूरिजी नरमणि मंडित भालस्थल खोडीया क्षेत्रपाल सेवित भए, अथ अन्यदा श्रीगुरूमहाराज गुर्जरदेश प्रति जातेथके, श्रीमालगोत्री मदनपाल श्रीचन्द्रादिकके आग्रह करके दिल्लीनगर गए, उहां बादशाहकों अनेक चमत्कार देखाके अपना भक्तिवंत किया, अरु बहुतसा धर्मका उद्योत किया, पीछे एकदा गुरुमहाराज अपनी अंत अवस्था जाणके मदनपालकों कहाकि हमारे मस्तकमें मणि है, तिसकों अग्निसंस्कार समयमें दूधसें भराभया पात्र रखके तुम ग्रहण करना, मार्गमें विश्राम लेनेंके वास्ते रथीकों रखना नहीं मुहवत्ती जलाना नही ऐसा कहके महाराज सर्व आयु ३२ वरसको पालके संवत्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१२२३ भाद्रवा वदि १४ चतुर्दशीके रोज अणशण करके स्वर्ग गए, तदा सर्व श्रावक मिलके अग्निसंस्कार करनेवास्ते जाते थके भरबजारमें माणकचोकतक आए, तब कोई कार्यकरके पहली कहा गुरूमहाराजकावचन भूलके विश्रामके वास्ते रथीकों नीचे रखदीनी मणिग्रहण करनेंके वास्ते, दुग्धकापात्रभी न रखा, परंतु तहां एक विद्यावान् योगी मणिग्रहण करनेंकी इच्छासें दुग्धपात्र भरके एकांत बेठ गया पीछे फेर बहोत यत्न करके रथीकों उठानें लगे-तोभी रथी ऊठी नहिं, तब सर्व नगरके विषेवातफेली अनुक्रमसें बादशाहनें भी सुनी तब बादशाह आप आके बहोत उठानेंका उ-पाय करा, परंतु रथी उहांसें उठी नहिं, तब बादसाह बोला कि सत्य है यहदेव, ये जैनका सेवडा जीताभी चमत्कारीथा, और मुवांभी चमत्कारी हूवा, इसका स्थान इहां ही होवो, तब श्राव-कोंनें तहांहिज अग्निसंस्कार करा, तिस अवसरमें गुरुके मस्तकसें मणि फडाक शब्द करके योगीने दुग्धपात्र रक्खाथा, सो मणी दुग्धपात्रमें पडी, योगी उसकों ग्रहण करके अपनें ठिकानें गया, तब मदनपालनें कहाकि गुरूमहाराज पहले मेरेसें कहा था, परमें जलदीके सबबसें भूल गया, तब सर्व साधु श्रावकोंने तिसकों ओलंभा दिया, अरुउसी ठिकानें श्रीजिनचन्द्रसूरीजीकी छतरी बनवाई बादशाह प्रमुख सर्वलोकोंनें बहोत बहुमानकरा, सर्व लोक जात देनें लगे, तिस ठिकाणे की अभीतक यात्रियोंसें पूजा होती है, इसमाफक प्रभावीक श्रीगुरूमहाराज भए, इहांसेति चतुर्थ पाटके विषे अतिशयवंत श्रीजिनचंद्रसूरि नाम देणा, ऐसा पद्मावतीनें वर-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जन्म संवत् ११९१. दीक्षा संवत् १२०६. आचार्यपद संवत् १२११. स्वर्ग संवत् १२२३.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दिया, ॥ ४५ ॥ इनोंके समयमें श्रीदेवचन्द्रसूरीका शिष्य तीनक्रोड ग्रंथकाकर्त्ता कलिकालमें सर्वज्ञविरुद्धारक पाटणका कुमारपाल-राजाकों प्रतिबोधक श्रीहेमाचार्यजी भए संवत्, ११६६ सूरिपद संवत् १२२९ देवलोक, इनोंका विशेष अधिकार कुमारपालचरि-त्रसें जाणना और मणियाला श्रीजिनचन्द्रसूरिजीका विशेषवृतान्त गणधरसार्धशतकबृहद्वृत्ति प्राचीन हस्तलिखितपट्टावलीसें या संप्र-दायसें जाणना तत्पदे ४६ मा युगप्रधानपदधारक श्रीजिन-पतिसूरिजी भए, तिके मालू गोत्रीय साह यशोवर्द्धन पिता, सूहव देवी माता, संवत् १२०५ चैत्र वद ८ के दिन मूल नक्षत्रे जन्म हूवा, संवत् १२१८ फागुणवदि ८ के दिन दिल्ली नगरके विषे दीक्षा संवत् १२२३ से कार्तिक सुदि १३ त्रयोशीके दिन श्रीजयदेवाचार्यें आचार्य पदमें स्थापन किये पीछे विहार करते श्रीजिनपतिसूरिजी एकदा बब्बर नामापत्तनके विषे गए, तहां ३६ छत्तीस वादियोंकुं जीतके बहोत जिनशासनकी प्रभावनाकरी, तथा फेर एकदा आसा-पुरमें श्रीमालीज्ञाति हाजी साहनें मंदिर बनवाया, उसकी प्रति-ष्ठाके अवसरमें मणिग्रहण करनेंवाला योगीनें जिनप्रतिमाकों स्तंभन करदी, तब चिंता सहित श्रीजिनपतिसूरिजीनें अपनें गुरूकों आरा-धनकिया, तब श्रीजिनचन्द्रसूरिजी महाराज प्रगट होके वासचूर्ण दिया, पीछे प्रभातसमय गुरू उन प्रतिमा ऊपर वासचूर्ण डाला तिस करके प्रतिमा जलदी ऊठगई, तबयोगी प्रसन्नभयाथका मणिकों पीछी देदीवी, श्रीगुरूमहाराजकी बहोत महिमा फैली, तथा और एकदा श्रीगुरूमहाराज, अजमेर नगरमें चतुर्मासी रहें,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तब उहांके रहनेंवाले रामदेवादिक श्रावकोंके अगाडी खेडेगाम-वासी छाजेड गोत्री मंत्रीउद्धरण साहकी प्रसंसाकरे, एकदा राम-देव श्रावक मंत्रीउद्धरणसें जाके मिले, तब तिस मंत्रीनें रामदेव प्रतें बहोत आदर सहित अपनें घरलाके विधिसें भोजनकराकै भक्ति-करी, तिस अवसरमे मंत्रवीकीस्त्री देव मंदिरमें देववंदन करनें वास्ते चली जब साडा कंचूकी अनेक वस्त्रसें भरी छावडीयां साथमें ग्रहण करी, तब रामदेवनें पूछा किसवास्ते इतना वस्त्र ग्रहणकीए हैं, तब सेवक लोक कहते भए, कि यह वस्त्र साधर्मिक स्त्रीयोंको देनेकेवास्ते हमेंसां लेजाते हैं, तब रामदेव कहनेंलगा कि श्रीजिनप-तिसूरिजी महाराज जो तुमारी प्रशंसा करी सो योग्य है, कि जिसके घरमे ऐसे धर्मकार्य होतें हैं, अथ एकदाऊधरण मंत्रवीनें नागपुरमें देवघरकराया, तबबिंब प्रतिष्ठानिमित्त मंत्रवीनें अपना कुलगुरुकों बुलवाए, परंकोई कारण करके मुहूर्त्त उपर न आए और ऊधरण की स्त्री खरतर गच्छके श्रावककी पुत्री थी, तिसनें मंत्रवीके कुलगुरु प्रतें हीनाचारी मानके शुद्धसंवेग रंगधारी श्रीजिनपतिसू-रिजी महाराजकों बुलवाए आचार्य मुहूर्त्तके ऊपर उहां आए, तब उनोंके पास सेती प्रतिष्ठा करवाई, ऊधरण मंत्री कुटुंब सहित खर-तर श्रावक होगए, तिस मंत्रवीके कुलधर नामें पुत्र भया जिसनें बाहडमेर नगरमें उंचा तोरण सहित मंदिर बनवाया, तथा फेर मरोट नगरमें रहनेंवाले श्रीनेमिचंद्र भंडारीनें परिक्षा करके शुद्ध संवेगवंत श्रीगुरूप्रतें जानके चारित्रकी इछा करता थका अंबड नामें अपणा पुत्र गुरूमहाराजके भेट करा, इस माफक श्रीजिनपति-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सूरिजी सर्वायु ७२ बहोत्तरवरसको पालके संवत् १२७७ पाल्हणपुर नगरमें स्वर्गगये ॥ ४६ ॥

इनोंके समयमें संवत् १२१३ अंचल मतहूवा, संवत् १२२६ सार्धपूनमी या मत हूवा, संवत् १२५० आगमिया मत हूवा, संवत् १२८५ चित्रवाल गच्छके चैत्यवासी श्रीजगच्चंद्राचार्यजीसें तपानामगच्छ प्रचलित भया, श्रीजिनपतिसूरिजीके पट्टे ४७ मा श्रीजिनेश्वरसूरिजी भए, तिणोंका संवत् १२४५ मार्गशिर सुदि एकादशीके दिन भरणीनक्षत्रमें जन्मः तथा मरोट नगरके भंडारी श्रीनेमिचंद्र पिता लक्ष्मीमाता, अंबड ऐसा मूलनाम, संवत् १२५५ खेड नगरके विषे दीक्षादेके वीरप्रभनाम दिया फेर संवत् १२७८ माघ सुदि छट्ठके दिन जालोर नगरमें मालूगोत्रीसाह खीमसीनें १२ बारे हजार रुपये खरचके करके नंदी महोत्सव करा, सर्व देवाचार्यनें सूरिमंत्रकरके पद स्थापना करी, इस माफक श्रीजिनेश्वर सूरिजी संवत् १३३१ आसोजवदि ६ छठके दिन अणशण करके स्वर्गगए, इनोंके वारेमें संवत् १३३१ जिनसिंहसूरिजीसें लघू खरतर शाखा निकली, यह तीसरा गच्छ भेद भया ॥ ४७ ॥

श्रीजिनेश्वरसूरिजीके पट्टे ४८ मा श्रीजिनप्रबोधसूरिजी भए, साह श्रीचंदपिता, सिरियादेवीमाता, तिनके पुत्र संवत् १२५५ जन्म, पर्वत ऐसा मूलनाम, संवत् १२९६ फागुनवदि ५ पंचमीके दिन हस्त नक्षत्रमें थिराद नगरके विषे दीक्षा ग्रहण करी, प्रबोधमूर्ति ऐसा दीक्षाका नाम भया, अनुक्रमे वाचक पद प्राप्त भए, संवत् १३३१ आसोज वदि पंचमीके दिन संक्षेप करके पाट महोच्छव

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भया, पीछै संवत १३३१ फागुण वदि ८ अष्टमीके दिन विस्तार करके स्वाति नक्षत्रमें जालोर वसणेंवाले माल्हू गोत्रीय साह खीमसीनें २५ हज्जार रुपया खरचके पाट महोच्छव करा, इसमाफक युगप्रधान पद् पालके, श्रीजिनप्रबोधसूरिजी निर्मल चारित्र आराधन करके संवत् १३४१ में स्वर्गगए ॥ ४८ ॥

तत्पट्टे ४९ मा श्रीजिनचंद्रसूरिजी भए ॥ तिके समियाणा गाममें रहनेंवाले छाजेड गोत्रीय मंत्रीदेवराज पिता, कमलादेवी माता, खंभराय मूलनाम संवत् १३२६ मिगशिर सुदि ४ चोथकुं जन्म संवत् १३३४ जालोर नगर विषे दीक्षा संवत् १३४१ वैशाख सुदि ३ तीज सोमवारके दिन माल्हूगोत्रीय साह खीमसीनें १२ बारे हज्जार रुपया खरचकरके महोच्छव करा इसमाफक गुरुमहाराज अनेक देशोंमें विचरते थके बहोत राजस्थानमें मान्यनीक भए जिसमें मुख्य दिल्लीके बादशाह, तथा चीतोडगढका राजा, जेसलमेरका राजा, मंडोरका राजा, यह मोटे ४ राजा तो महाराजके परमभक्त भए, महाराजके धर्मोपदेशमें अपणें अपणें राज्यादिकमें जीव दयादिक धर्म उन्नती करी, सर्व राजादिक खरतर गच्छकों राजगच्छ कहेनें लगे, बादशाहनें जीवदयापाळा तथा तीर्थोंका फुरमाणभी अपनी अपनी मोहर छापका लिखके दीया, सो आजतक खरतरगच्छके प्राचीन भंडारोंमें है, ऐसे गुरूमहाराज कलिकाल सर्वज्ञ केवली विरुद धारक विख्यात अनेकवादीयांकों जीतनेंवाले जिनशासनोन्नतिकरनेंवाले श्रीजिनचंद्रसूरिजी संवत् १३७६ कुसुमाणग्राममें स्वर्गगए, तिसवखतमें खरतरगच्छकों राजगच्छविरुद मिला,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

युगप्रधान
श्रीमज्जिनकुशलसूरीश्वरजी महाराज.

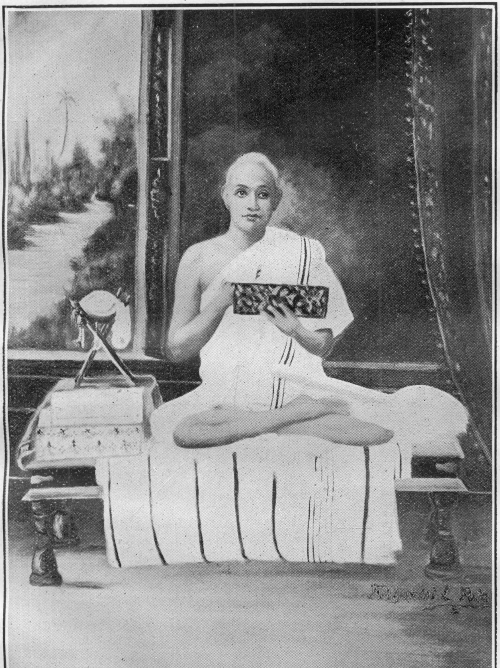

जन्म संवत्	दीक्षा संवत्	आचार्यपद संवत	स्वर्ग संवत्
१३३०.	१३४७.	१३७७.	१३८९.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रथम श्रीमज्जिनदत्तसूरीश्वरजीसें राजगच्छ उत्पन्न भयाथा, और बादमें युगप्रधानविरुद्धारक श्रीमज्जिनचन्द्रसूरिजीको भी राजगच्छ विरुद मिला था ऐसे महा प्रभावीक ४९ मा श्रीजिनचंद्रसूरिजी भए ॥ ४९ ॥

॥ अथ श्रीजिनकुशलसूरिणां चरित्रम् ॥

तत्रादौ श्रीसूरिनामस्मरणमंगलाचरणम् यथा–कुशल अंग उछरंग कुशल बिणजे व्यापारे, कुशलदेव देहरे, कुशल घन राजदुवारे, पुन्यपसाये कुशल कुशल श्रीसंघ भणीजे, बाहण आवे कुशल, कुशल घरघर गाईजे, श्रीजिनचन्द्रसूरि पहु पट्टधर, नाममंत्र अरतिटले श्रीजिन कुशलसूरि पाय पूजतां, नवनिधान लक्ष्मीमिले ॥ १ ॥ तत्पट्टे ५० मा श्रीजिनकुशलसूरिजी महाराज भए, तिणोंकासंक्षिप्त चरित्र इसप्रमाणे है, इसी जंबूदीप भरत क्षेत्रके मध्य खंडमें मरुस्थल नामें देश है, कैसाहे वहदेश कि सर्वऋद्धि समृद्धि आदिगुणों करके युक्त, स्वचक्र परचक्रादि भय करके वर्जित और सर्व हरखकी कारण वस्तुयें विद्यमान है जिसदेशमें, ऐसा मरुधर नामक देश है, तिसदेशमें सर्वधन संपदादिक गुणोंकरके युक्त, और जहांपर आये हूवे देशवासी नगरवासी लोक हरखित होते हैं, ऐसा समियाणा नामकवर गामथा, तिस समियाणा नामकवर गामके विषे दमितारि नामका राजा राजपालताथा, उसीवरग्रामके विषे महर्द्धिक सर्वसंपदा समन्वित अखंड प्रतापी शूरवीर विक्रान्त अखंड आज्ञा ऐश्वर्य करके युक्त, छाजेहड गोत्रमें मंत्रीके गुणोंकरके संयुक्त जिल्हागरनामें वरमंत्री

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रहता था, तिसके सर्व शुभलक्षण संपन्नाविनीता पतिभक्ता श्रेष्ठवंशमे है उत्पत्ती जिसकी एसी और शीलादि प्रधान गुणोंको धारन करनेवाली श्रीमती जयतश्री नामें प्रधान स्त्री है, इनदोनों स्त्री भरतारनें एकदा श्रीजिनचंद्रसूरिजी विहारक्रमसें विचरते हुवे वहांपर पधारे तब सर्वलोक वांदणेकों गये अपनी अपनी ऋद्धिका विस्तार करके, वादमे सर्व आइ हुई परषदाकों प्रधान धर्म देशनाद, वादमे यथा शक्ति व्रत पच्चखाणादिक ग्रहण किये, वादमे, स्त्री सहित मंत्रीनेंभी सम्यक्त सहित श्रावक धर्म शुद्ध मनसें ग्रहण किया, वादमंत्री वगेरा सर्व लोक जिस दिशासें आये थे, उसी दिशामें पीच्छे गये, वाददिल्ली चितोड अजमेर मंडोवर इन ४ महाराजाओं करके सेवित है चरण कमल जिनोंके ऐसे युगप्रधान श्रीमज्जिनचंद्रसूरिजी महाराज भव्योको उपगार करनेके लिये अन्यत्र विहारकर गये, वाद समियाणा गामवासी यथा शक्तिव्रतादिक ग्रहण करणेवाले सर्वलोक अपनी अपनी प्रतिज्ञा माफक सुखेसमाधे धर्म ध्यान करते हूवे रहे है, और मंत्री भी समाधिसें धर्मध्यान करता हूवा रहे है, इससमें एकदा कोइ पुन्यवान जीव देवलोकसें चवके जयतश्रीकी कुक्षीरूप सरोवरमे राजहंसकीतरह आकर उत्पन्न भया तब जयतश्री आधीरात्रिके समे अपने वास भवनमे सेजऊपर कुछ सोती कुछ जागतीहुइ, इन्द्रध्वज देखके जगी ओरशीघ्र ऊठी, ऊठकरके, जहांपर जिल्हागर मंत्री सोताहै वहां आके जिल्हागर मंत्रीको कोमल वाणीसें जगावे जगाके पूर्वोक्त महास्वप्न सुणावे वादमे महास्वप्नका अर्थ और फल पूछे वादमें जिल्हागर मंत्री महास्वप्नका

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अर्थ और फल विचारे वाद जिल्हागर मंत्री अपनें स्वभाविक बुद्धि विज्ञानके अनुसार उस महास्वप्नका अर्थ और फल विचारके, अर्थ और फल अछीतरे ग्रहण करके, श्रीजिल्हागर मंत्री कोमल वाणीसें इसतरे बोलाकि हे प्रिये यह स्वप्न तेने बहुतहि अछा देखाहै, हे प्रिये यह महास्वप्नहै, धन धान्य मंगल कल्याण निरुपद्रव आरोग्य तुष्टि पुष्टि दीर्घआयु वगेरा करनेवाला है, और हे प्रिये इस महास्वप्नके प्रभावसें अर्थादिकका लाभहोगा, और हे प्रिये इस स्वप्नके प्रभावसें लक्षण व्यंजनादि युक्त, और हीन नहिं परिपूर्ण पांच इन्द्रियरूप शरीरवाला और चंद्रके जैसा सोम्य आकरावाला और सूर्यके जैसा तेजस्वी कमनीय प्यारादर्शन जिसका और प्रधान रूपवाला ऐसा नवमहिना साढीसातदिन ऊपर होनेपर सुकुमालादिगुणविशिष्ट हे प्रिये तें पुत्रकों जनमेगी, और वह पुत्र जब बाल भावको छोडेगा, तब विज्ञानमात्र देखनेसें हि जानेगा, सर्व विद्याकलामें निपुण होगा, याने कुशल होगा, और जब यौवन अवस्था प्राप्त होगा, तब शूरवीर विक्रान्त होगा, और परकीय भूमीको खिंचकर अपणे वशमे करेगा, और विरोधिराजा वगेरा शत्रुंओंको जीतकर अपणे वशमे करेगा, और दानादि ४ प्रकार करके परिपूर्ण होगा, और त्यागी भोगी शूरवीर होगा, और राजाओंका राजा अर्थात् मंडलीक राजा होगा, अथवा भावितात्मा अणगार होगा, अर्थात् युगप्रधानके गुणोंको धारण करनेवाला युगप्रधान आचार्य होगा, या, सदृश होवेगा, इत्यादि स्वप्नार्थ फल श्रवणकरके हरखके वसमें जिसके शरीरमे सर्व रोमराजी विकसित भइ, और नेत्रमुखभी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विकसित भये, और मेघकीधारासें सिंचाहूआ जैसाकदंब वृक्षका पुष्प फूले वैसा सर्वशरीर विकस्वरमान भया जिसका और हृदय मनभी अछे हूवे जिसके ऐसीवह श्रीमती जयतश्री विनयपूर्वक हाथजोडके मस्तकमे अंजली बांधके, श्रीमान् जिल्हागर मंत्रीके प्रति इसतरह बोली के हे स्वामिन् यह अर्थ जो आपनें इस स्वप्नका मेरेको कहासो मेरे इष्ट है वांछित है विशेषकरके वांछित है और ईप्सित प्रतीप्सित है हे स्वामिन् इस अर्थमें किसी तरहका शंसय नहिं है, यह अर्थ सत्य है निसंदेह है जिसकारणसें आप कहो हो जिस हेतु युक्तिकरके आप कहो हो उसीतरेमें भी यहही अर्थ विचारुं हूं इसलिये आपका और मेरा विचार एकहि हूवा है इसलिये यह अर्थ सत्य है निसंदेह है इसतरे कहेके अछीतरह स्वप्नार्थ विनयपूर्वक ग्रहणकरे स्वप्नार्थ ग्रहणकरके, वाजयतश्री जिल्हागर मंत्रीके पाससें आज्ञापाकर अस्खलितगतिसें चलती भई कहांभी मार्गमें आधार बिलंब विश्रामादिककरके रहित राजहंसणीके सदृश प्रधान गतिसें चलती हुई जहांपर अपणा घर वासभवन सेज है, वहां आवे वहां आके इसतरे बोली, यह मेरा महामंगलीक महास्वप्न है, और कोई पाप स्वप्नोंकरके मत हणिजो, एसा कहके स्वप्नजागरण करे, सपरिवार आपजागे सेवक सखिजनोंको जगावे, और उत्तम प्रधान मंगलीक धार्मिक श्रेष्ठ मनोहर कथाप्रबंध करके, स्वप्नजागरण करती हुई रहै, वाद प्रभातसमय और सूर्यका वर्णन मंत्रीका वर्णन नगरकी सोभा करणा स्वप्नलक्षण पाठकको बुलाणा और स्वप्नार्थ फलश्रवण वगेरा करणा यथायोग्य सत्कार सन्मानपूर्वक

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रीतिदान देके विसर्जन करणा वाद गर्भपोसण दोहदादि अधिकार यावत जन्माधिकार वधाईदेणा दासित्वका दूरकरणा वाद नगरकी सोभा करणा वगेरा पुत्रजन्मयोग्य दसदिनपर्यंत कुलस्थिति क्रमागत मर्यादा करे, वाद सूतक निकालके भोजनादि सर्व सामग्री तइयार करवाके यथायोग्य भोजनादि कराके तांबूलादि वस्तू देके सबका सत्कार सन्मानकरके सर्व कुंटुंबादिक लोकोंके समक्ष नामस्थापन अवसरमे बालकके माता पिता जयतश्री और जिल्हागर मंत्री अभिप्राय मनोरथादिक कहके, इसतरे कहे कुसलचंदुत्ति होउकुमारे नामेणं इत्यादि, अहो लोको इस हमारे वालकका नाम कुशलचंद्र कुमार ऐसा होवो, इसतरे बालकनाम कुशलचंद्र करके स्थापे, वाद सबहि लोक उस बालकको कुशलचंद्र इसनामसें बोलावे, वाद कुशलचंद्र कुंमरकी प्रतिपालना सर्वकलादिकका ग्रहण यावत् यौवन अवस्थाकी प्राप्तिपर्यंत देशकालादिके अनुमानमे स्वप्नका प्रभाव और वर्णननका अधिकार उत्क्षिप्तअध्ययनगत मेघकुमार चरित्रके सदृश पूर्वोक्त अधिकार भावनकरणा, इसीतरह आगेभी धर्माचार्य श्रीजिनचंद्रसूरिजीका आगमन और वर्धापन, दानदेणा वाद राजा मंत्री समियाणा गामसंबंधि परषदका निकलना और श्रीकुशलचंद्र कुंमरका निकलना और धर्मदेशना प्रतिबोधादिस्वरूप यावतचारित्र प्राप्ति और चरित्रविषयि गुरुदत्तशिक्षण यावत श्रुतादि अभ्यासके लिये श्रुतधर गीतार्थोंको समर्पण यावत गीतार्थत्वपणेंकी प्राप्तिपर्यंत मेघकुमारवत् भावना करणा, वाद क्रमशः यथाविधि गणिआदिपद और युवराजपदको प्राप्तहोकर सर्वगच्छ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धर्मकिंचिंताकरणेंमे समर्थभये, अर्थात् सर्वधार्मिक क्रियामें प्रवर्त्तन प्रवर्त्तावनके अधिकारी भये, और उत्सर्ग अपवाद स्वसमय-परसमय सम्यग्विधिवादके श्रीगुरुमुख गृहीत वाचनासें यथार्थ अधिकारी भये, वाद आचार्यपदकों प्राप्तहोकर विशेष वीरशासन जैनधर्मकी प्रभावना और कालिकसूरिवत् करके सद्गतिको प्राप्त भये, वाद परचा पूरक जिसतरह भये और संक्षिप्त जन्मादिसंबंध इसतरह दृष्टिगोचर होवे है, तथाहि–श्रीजिनकुशसूरिः महाशासन प्रभावक हूवे, तिणोंका जन्मनगर समियाणा, गोत्रछाजेहड, पिता जिल्हागर मंत्री, माता जयतश्री, संवत् १३३० मे जन्म, संवत् १३४७ दीक्षा, संवत् १३७७, जेष्ठवदि एकादशीके दिन श्रीराजेंद्राचार्यै सूरिमंत्र देके, आचार्यपदमें स्थापे, तब पाटणके वसणेंवाले साहतेजपाल वस्तपालनें नंदीमहोच्छव करा, २४०० चोवीससैं साधु साधवी भणी, ७०० सातसैं वेषधारी जैनपंडितादिकको वस्त्रादिक दीया, तथा तिस अवसरमे दिल्लीनगरके रहनेंवाले महतीयाण गोत्रीय, विजयसिंह श्रावक उहां आके वहोत द्रव्य खरचकरके नंदी महोच्छवकरा, तथा संवत् १३८० साह तेजपाल वस्तपालनें निकाला संघके साथ सेत्रुंजेतीर्थ गए, गुरू महाराज मानतुंगनामें खरतर वसीके मंदिरमें २७ सत्तावीस अंगुलप्रमाणें श्रीअदिनाथ बिंबकी प्रतिष्ठाकरी, तथा भीमपल्हिनगरमें भुवनपालनें वनवाया ७२ बहोत्तर जिनालय मंडित श्रीवीरस्वामीके मंदिरकी प्रतिष्ठा करी तथा जेशलमेरनगरके किल्लेमें, जसधवलनें मंदिर वनवाया श्रीचिंतामणि पार्श्वनाथस्वामीजी लोद्रवपुरमें वि. सं. २ के प्रतिष्ठित थे उनकुं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मंदिरमे स्थापे मंदिरकी प्रतिष्ठा करी, तथा जालोरनगरमें श्रीपार्श्वनाथजीकी प्रतिष्ठा करी, तथा आगरानगररहनेवाले श्रीसंघके आग्रहसें साथ होके, श्रीसेत्रुंजयकी यात्राकरके आषाढ वदि ७ सप्तमीके दिन पाटणनगरमें पधारे तथा श्रीगुरुमहाराजके १२०० बारसैं साधु संप्रदायमें भए. १०५ एकसो पांच साधवीयोंका संप्रदाय भया, तथा श्रीगुरुमहाराज श्रीविनयप्रभादिक शिष्योंको उपाध्यायपददीया, जिस विनयप्रभ उपाध्यायनें निर्धनभया अपनें भाईकों संपत्तिकेवास्ते मंत्रगर्भित श्रीगौतमरासवीरजिनेसरचरणकमलकमलाकयवासोयहबनायके दिया, तिसके गुणनेंसें अपना भाई धनवंत भया, इसमाफक बहोतश्रावक प्रतिबोधक चैत्यवंदनकुलकवृत्यादि अनेक शास्त्रोंके कर्त्ता, परमजिनधर्मप्रभावक, श्रीजिनकुशलसूरिजी संवत् १३८९ फागुणवदि अमावसके रोज, देराउर नगरमें ८ आठदिनतक अणशण करके स्वर्गप्राप्तभए, वह अभीतक दादोजी ऐसे नाम करके सर्व जगत्रमें प्रसिद्धहैं, प्रतिनगरमें गुरुमहाराजके चरणकमल पूजीज रहेहैं, सोमव्रतीपूनमकों प्रथम दर्शन दिया श्रीसंघकों, तिसकारणसें सोमवार पूनमकों विशेषकरके दर्शन पूजन होवेहै ॥ अथ अन्तिम मंगलाचरणम्—कुशलबडो संसार, कुशल सज्जन घर चाहै, कुशले मङ्गलमाल, लछिघर कुशलै आवे, कुशले घन वरसन्त, कुशल धन धन्न सुवन्नो, कुशले घोडा थट्ट, कुशल पहिरीये सुवन्नो, ऐरिसोनाम सदगुरुतणो, कुशले जगर ली यामणो, भट्टारक श्रीजिनकुशलसूरि नाम ग्रहणें करी, घरघर होत वधामणो ॥ २ ॥ इति श्रीजिनकुशलसूरिणां चरित्रं समाप्तं ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ श्रीपार्श्वयक्षादि सुरसेवित श्रीज्ञानसारजी कृत् श्रीजिनकुशल-सूरीणां प्राचीना अष्टप्रकारी पूजा लिख्यते ॥ तथाहि ॥ * ॥ सकलगुणगरिष्ठान् सत्तपोभिर्वरिष्ठान्, शमदमयमयुष्टांश्चारुचारित्रनिष्ठान्, निखिल जगति पीठे दर्शितात्मप्रभावान्, मुनिपकुशलसूरीन् स्थापयाम्यत्रपीठे ॥१॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिनकुशलसूरि गुरो अत्रावतरावतर स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिनकुशलसूरि अत्र तिष्ठ ठः ठः स्वाहाः इति प्रतिष्ठापनम् ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिनकुशलसूरि गुरो अत्र मम सन्निहितो भव वषट् इति संनिधिकरणम्" ॥ ३ ॥

अथ अष्टप्रकारी पूजा लिख्यते ॥

॥ * ॥ दूहा—गंगाजल निर्मुलवलि, तीर्थोदक भरपूर, कलशभरी गुरु चरणपर, ढाले तस दुखदूर ॥ १ ॥ ढाल देशी सूरती महीनांनी ॥ गंगाजल अति निरमल अमल सुकमलें पूर, खीरो दधि वरदधि ज्यौं उज्जल जलभरपूर, तेह उदकवलि तीर्थं नीरभरि कलश सनूर, गुरुचरणे जे ढालेटाले दुकृतदूर ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिनकुशलसूरिगुरुचरणकमलेभ्यः जलं निर्वपामिते स्वाहा ॥ इति जलपूजा ॥ अथ चंदनपूजा ॥ दूहा—बावन्ना चंदन अगर; घस केसर घनसार, चरचै जे गुरु चरणनें, पामें जयजयकार ॥ १ ॥ ढाल—मलयागर तिम अगरचंदनवलि केसरसार, कस्तूरी अतिगंधे पूरी घस घनसार, कुशलसूरिगुरुचरणे चरचै चढते भाव, सकलरोग तनसोगहरे वलि जडताभाव ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिनकुशलसूरि गुरुचरणकमलेभ्यः चंदनं निर्वपामि ते स्वाहा ॥ २ ॥ इति चंदनपूजा ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ पुष्पपूजा ॥ दूहा–केतकिचंपकफूलथी, पूजे जे गुरुपाय, तसुजसस्नरउदैहुवे, अपजसतिमिर नसाय ॥ १ ॥ ढाल चंपक केतकि मरुवो दमन सेवंती फूल, जाई जूई मोगरो मालती तेम उड्डल, कमल गुलाब चंबेली बेली परमल पूर, गुरुचरणेंजे ढोवे होवे जसज्युं सूर ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँश्रीँ श्रीजिनकुशलसूरि गुरुचरणकमलेभ्यः पुष्पं निर्व्वपामिते स्वाहा इति पुष्पपूजा ॥

अथ अक्षतपूजा ॥ दूहा–उज्जलज्यों शशि अकविण, खंडित नहीं विशाल, अक्षत गुरु चरणें ठवे, तसु घर मंगलमाल ॥ १ ॥ ढाल–सरल सुगंधिततंदुलउज्जल जल उत्पन्न, ज्युंवर मोती आभा हुंती उज्वलवन्न, जलधोई ससमोई सोई अक्षतनव्य, स्वस्तिक कुशल वधावे पावे मंगल भव्य ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँश्रीँ श्रीजिनकुशलसूरिगुरुचरणकमलेभ्यः अक्षतं निर्व्वपामिते स्वाहा ॥ इति अक्षतपूजा ॥

अथ दीपकपूजा ॥ दूहा-कंचनमणिमयरत्ननी, दीवीकरघृतपूर, वाती मौली सूत धर, करो प्रदीपसुनूर ॥ १ ॥ ढाल–कंचनघटित जटित मति नानाविधनवरत्न, दीवी अतिकारीगरकीवी अधिके यत्न, घृतपूरी ससनूरी मौली वाती जोय, दीपकरे गुरु आगे ज्योतउद्योती होय ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँश्रीँ श्रीजिनकुशलसूरिगुरुचरणकमलेभ्यः दीपं निर्व्वपामिते स्वाहाः ॥ इतिदीपकपूजा । अथ धूपपूजा लिख्यते ॥ बावन्नाचंदन अगर, सेल्लारस घनसार, धूपे जे गुरु धूपथी, तसघर रिधविसतार ॥१॥ ढाल–अगर चंदन सेल्लारस छाडछडीलो मेल, कपूर काचरी वलि घनसारे मृगमदभेल, धूप अडंग करी गुरु

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धूपे चढते चित्त, ते नरवित्तसुमारगपामेंनवनवनित्त ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिनकुशलसूरिगुरुचरणकमलेभ्यः धूपं निर्व्वपामिते स्वाहा ॥ इति धूपपूजा ॥ अथ नैवेद्यपूजा ॥ दूहा—सालदालपकवानघन, व्यंजन नवनवभांत, नेवजगुरु आगल ठवे, क्षुधादोषउपसांत ॥ १ ॥ ढाल–पेडा मगद सेवइया लाडूमोतीचूर, खाजा ताजालापसी दोठानें घृतपूर, पिस्ता दाख बिदाम छुहारा पिंड खजूर, गुरुचरणे जेढोवे भोगलहै भरपूर ॥२॥ ॐह्री ँश्री श्रीजिनकुशलसूरिगुरुचरणकमलेभ्यः नैवद्यं निर्व्वपामिते स्वाहा ॥ इति नैवद्यपूजा ॥ अथ फलपूजा लिख्यते ॥ दूहा–श्रीफल शीताफल सदा, फलपूंगीफल लेय, ढोवे जे गुरुचरणपर, तसुउत्तम फलदेय ॥ १ ॥ ढाल–श्रीफल शीताफल नारंगी दाडम दाख, खरबूजा तरबूज जंभेरी पाकी साख, करुणा कवला केला नींबू फनस सफार, गुरुचरणें फलढोई फलपामें श्रीकार ॥ २ ॥ ॐह्री ँश्री श्रीजिनकुशलसूरिगुरुचरणकमलेभ्यः फलं निर्व्वपामिते स्वाहा ॥ इति फलपूजा ॥ ८ ॥ अथ अर्घपूजा लिख्यते ॥ अथ कलश दूहा—इम जिनकुशलसूरिंदनें पूजे अष्ट प्रकार, तसुघरनवनिधिसंपजे, पुत्रादिकपरिवार ॥ १ ॥ भट्टारकखरतरगच्छे, श्रीजिनलाभसूरिंद रत्न, राजमुनिभमरपर, सेवेपद अरविंद ॥ २ ॥ तासुचरणरजकणसमोज्ञानसारबुद्धिमंद, श्रीसद्गुरुपूजारची, सोधोकविजनवृंद ॥ ३ ॥ इति श्रीज्ञानसारजीउर्फलघुआनंदघनजीकृत् श्रीजिनकुशलसूरीश्वरसुगुरूणां अष्टप्रकारीपूजासमाप्ता, श्रीरस्तु ॥ अथ लघुअष्टप्रकारीपूजा लिख्यते ॥ सुरनदीजलनिर्मलधारया, प्रबलदुष्कृत-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दाघनिवारया, सकलमंगलवांछितदायकौ, कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे ॥१॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिनकुशलसूरिः चरणकमलेभ्यो जलं यजामहे स्वाहा अथ चंदनपूजा ॥ मलयचंदनकेसर वारिणा, निखिलजाड्यरुजातपहारिणा, सकलमंगल वांछितदायकौ, कुशलसूरिगुरोश्चरणौ- यजे ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिनकुशलसूरिः गुरुः चरणकमलेभ्यः चंदनं यजामहे स्वाहा ॥

अथ पुष्पपूजा ॥ कमलकेतकिचंपकपुष्पकैः, परिमलाहृतषट्पदवृंदकैः, सकलमंगलवांछितदायकौ कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिनकुशलसूरिगुरुचरणकमलेभ्यः पुष्पं यजामहे स्वाहा अथ अक्षतपूजा ॥ सरलतंदुलकैरितनिर्मलैः, प्रवरमौक्तिकपुंजवदुज्ज्वलैः, सकल मंगलवांछितदायकौ, कुशलसूरिगुरोचरणौ यजे ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिनकुशलसूरिगुरुचरणकमलेभ्योऽक्षतं यजामहे स्वाहा ॥ अथ नैवद्यपूजा ॥ बहुविधैश्चरुभिर्वटकैर्यकैः, प्रवरमोदकपुंजसुखज्ञकैः सकलमंगलवांछितदायकौ, कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिनकुशलसूरिगुरुचरणकमलेभ्यो नैवद्यं यजामहे स्वाहा ॥ अथ दीपकपूजा ॥ अतिसुदीप्तमयैः खलुदीपकैः,विमल कंचनभाजनसंस्थितैः, सकल मंगल वांछितदायकौ, कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिनकुशलसूरिगुरुचरणकमलेभ्यो दीपं यजामहे स्वाहा ॥ अथ धूपपूजा लिख्यते ॥ अगरचंदनधूपदशांगजैः, प्रसरिताखिलदिक्षुसुधूम्रकैः, सकल मंगलवांछितदायकौ, कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे ॥७॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिनकुशलसूरिगुरुचरणकमलेभ्यो धूपं यजामहे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वाहा ॥ अथफलपूजालिख्यते ॥ पनशमोचसदाफलकर्कटैः, सु-सुखदैः किल श्रीफलचिर्भटैः, सकलमंगलवांछितदायकौ, कुशल-सूरिगुरोश्चरणौ यजे ॥८॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरुचरणक-मलेभ्यो फलं यजामहे स्वाहा ॥ अथ अर्घपूजालिख्यते ॥ जलसुगंधप्र-सूनसुतंदुलैः, श्चरुप्रदीपकधूपफलादिभिः, सकलमंगलवांछितदायकौ, कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे ॥९॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरुच-रणकमलेभ्योऽर्घं यजामहे स्वाहा ॥ इतिश्रीभट्टारकश्रीजिनकुशलसूरी-श्वराणां लघु अष्टप्रकारीपूजा श्रीनारायणजीबावाजी रचिता समाप्ता ॥

॥ अथ सद्गुरूणां आरती लिख्यते ॥ पहली आरती दादाजीकी कीजे, दुखदोहगसब दूर हरीजे, जयजय सद्गुरु आरतीकीजे, श्री-जिनकुशलसूरिसमरीजे, जयजयस०, ॥ १ ॥ बीजीबीजपडंतीधारी, भयवारण तूंही सुखकारी, जयजयस०, ॥२॥ तीजीपरचा पूरकतेरी, दूरहरो सबदुर्मतिमेरी, जयजयस० ३ ॥ चौथीसुगलपूतजियदायक, सुरवरहुकमधरेज्युं पायक, जयजयस०, ४ ॥ पांचमी पांचनदीजिण तारी, संघसकलनौ संकटवारी, जयजयस०, ५ ॥ छट्ठीथांभोवज्र-विदारी, विद्यापोथीपरगटकारी, जयजयस०, ६ ॥ सातमी चौसठ जोगण साधी, सूरिमंत्र सुरनें आराधी, जयजयस०, ७ ॥ इणविधसात आरती किजे, मनवंछित संपति फल लीजे, जयजयस०, ८ ॥ जिन-लाभ खरतर गणधारी, सद्गुरुचरणकमल बलिहारी, जयजयस० ॥ ९ ॥ इति श्रीदादाजीकी आरती संपूर्णा ॥

और श्रीजिनकुशल सूरिजी महाराजका चरित्र ऊपर दियाहै और बडास्तवन छोटास्तवन संस्कृत प्राकृत स्तौत्रादिक सेंकडो वा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हजारों बनेहुवे मौजूदहै, जिसमेंभी उत्पत्ति सासनसेवा चमत्कार वगेरा स्वरूपगर्भित बहुतसें वडेबडे स्तवनादिक मौजूदहै, परंतु इहांपर ग्रन्थकी गौरवताके भयसें नहिं दिये गयेहैं और श्रीजिनदत्तसूरिजीका श्रीजिनचन्द्रसूरिका श्रीजिनकुशलसूरिजीका भवचक्रबोधक यह बीजाक्षर संप्रदायसें उपलब्ध हुवेहैं तथाहि—ह स म जू स म स म म सि ॥ एयाइं जिणदत्तस्स, ह म स म सि ॥ एयाइं जिणचंद्रस्स, क म जू स म उ ना म सि एयाइं जिणकुसलस्स" इण अक्षरोंकी विस्तारपूर्वक भावना महान्‌विद्वान् सत्संप्रदायिगीतार्थोंके आधीनहै, इसलिये मेने अपनी मन्दबुद्धि अनुसार नहिं करीहै और दादासाहिबकी चरणस्थापना जैनसमाज और हिंदुवोंकी वसतीमें होवे इसमें क्या आश्चर्यहै, परंतु गांजीखां कमालखांकाडेराहै, वहांपर जैनसमाज और हिंदुवोंकी बहोत कम वसतीहै, मुसलमीनोंकी जादा वसतीहै, तथापि मानतें पूजतेंहै, और खूनकरकेभी दादावाडीमें यदि कोइ इनसान चलाजावे तो, वह मुसलमीनलोक उसका खून माफ करदेतें हैं, इसतरह मुसलमीनलोक जिणोंका सरणा पालतेंहैं, जैनसमाज और हिंदुमाने पूजेसरणपाले इसमेक्या आश्चर्यहै और श्रीजिनदत्तसूरिजी तथा श्रीजिनचंद्रसूरिजी तथा अकबर प्रतिबोधक श्रीजिनचंद्रसूरिजीका चवन गर्भाधान-शुभस्वप्नप्रदर्शन गर्भपोषणादि सर्व अधिकार श्रीजिनकुलशसूरिजीके करीब करीब सदृशहि जाणलेना, और ग्रन्थ बढजानेके भयसें इहांपरजादा नहिं लिखाहै, और इसके सिवाय जो चरित्राधिकार विशेषतामें होगा, उसीका अनुसरण किया जायगा, वाचकवर्गकों

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इसमे कुछ काठिन्यता पडनेका संभवहै, सो क्षमा वगसेगें, और विशेषतामें इतनी सूचना देकर प्रस्तुतार्थका अनुसरण करतेंहै तत्पट्टे ५१ मा श्रीजिनपद्मसूरिजीभए' तिके छाजेहडवंशभूषणसंवत् १३८१ का जन्म संवत् १३८९ ज्येष्ठ सुदि ६ छठके रोज श्रीदेरा-उर नगरमें साह हरपालनें नंदीमहोत्सव करा, तब आठमें वरसमें तरुणप्रभआचार्येंसूरिमंत्रदीया, अथ एकदा श्रीगुरुमहाराज बाहड-मेरनगरमें श्रीमहावीरस्वामीके मंदिरमें देववन्दनकरनेंवास्ते गए तहां जिनमंदिरको दरवाजो छोटो प्रतिमावडी देखके, पंजाब-देशके रहनेंवालेथे, इसवास्ते उसदेशकी भाषाकरके कहा, बूहानंढा, यानें दरवजाछोटा, वसहीवड्डी याने प्रतिमावडी, अंदरक्यूं माणित्ति यानें भीतर कैसै माई, ऐसेप्रगट बालभाव वचनसुणके, श्रीगुरु-महाराजके पासमें रहे, विवेकसमुद्रोपाध्यायने कहा किमौनकरो, ततो-व्याख्यानस्थितिप्रवर्त्तावते उन उपाध्यायकेसाथ श्रीगुरुमहाराज गुर्जरदेशमें आए, तहां पाटणकेपास सरस्वती नदीकेतटपर रातवासी रहे परंतु उसवखतमें गुरुमहाराजकों ऐसी चिंता उत्पन्नभईके सवेरे संघके अगाडी इसभाषाकरके किसतरे व्याख्यान करुंगा, ऐसी चिंता-करते जितने रहें हैं उतनें तो श्रीगुरुमहाराजके पुन्यसें आकर्षितभई ऐसी अर्द्धरात्रिके समयमें सरस्वती नदीकी अधिष्ठायिका सरस्वतीदेवी प्रगटहोके, ऐसा वरदिया, अहो स्वामी प्रभातसमयमें आप श्रीसंघके आगे जो कुछ कहोगे, उससें सकलसंघ प्रसन्नहोगा, वाद प्रभातसम-यमें संघके अगाडी गुरुमहाराज अपणी इछासें अर्हंतोभगवंत इन्द्र-महिताः सिद्धाश्चसिद्धिस्थिता, आचार्या जिनशासनोन्नतिकरः पूज्या

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपाध्यायकाः ॥ श्रीसिद्धान्तसुपाठका मुनिवराः रत्नत्रयाराधकाः पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥१॥ यह नवीन काव्य बनाके उपदेशदिया, तबसमस्त जैनसंघ श्रीगुरुमहाराजको व्याख्यान-सुनकरके बहोत प्रसन्नभए तिहां गुरुमहाराजकों बालधवलकूर्चालसरस्वती विरुद संघनेदीया, अन्यथा प्रथम पूर्वाचार्यरचित श्लोकका प्रायेंकरके मंगलाचरण व्याख्यान करतेथे, तथाहि सकलकुशलवल्ली पुष्करावर्त्तमेघो दुरिततिमिरभानुः कल्पवृक्षोपमानं भवजलनिधिपोतः सर्वसंपत्तिहेतुः स भवतु सततं वः श्रेयसे पार्श्वदेवः, बादमें ऊपरोक्त श्लोकसें मंगलाचरण व्याख्यानका रिवाजभया। इसमाफक श्रीवीरशासन प्रभावक श्रीजिनपद्मसूरिजी संवत् १४०० वैशाख शुदि १४ चवदशके रोज अणसण आराधना पूर्वक समाधिसें कालधर्म प्राप्त होकर पाटण नगरमें स्वर्गगए ॥५१॥ तत्पट्टे ५२ मा श्रीजिनलब्धिसूरिजीभए, पाटण नगरके वसनेंवाले, नवलखा गोत्रीय, साहईश्वरदासनें नंदीमहोत्सवकरा, तरुणप्रभाचार्यें सूरिमंत्रदिया, अनुक्रमें गुरुमहाराज सर्व सिद्धान्तसिरोमणि, अष्टविधान साधकभए, तिके संवत् १४०६ नागपुर नगरमें स्वर्ग गए ॥ ५२ ॥ तत्पट्टे ५३ मा श्रीजिनचन्द्रसूरिजिभए, तिकेसंवत् १४०६ माघसुदि १० दशमीके रोज नागपुरनिवासी श्रीमालसाह हाथीनें नंदीमहोत्सवसहितपदस्थापनाकरी, तरुणप्रभाचार्यें सूरिमंत्रदिया, ऐसे श्रीजिनचन्द्रसूरिजी संवत् १४१५ आषाढवदि १३ त्रयोदशीके रोज स्तंभनतीर्थविषे स्वर्ग गए ॥ ५३ ॥ तत्पट्टे ५४ मा श्रीजिनोदयसूरिजी भए, तिके पाल्हनपुर वसनेंवाले, माल्हूगोत्रीय, साहरूंदपालपिता,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धारलदेवीमाता, संवत् १३७५ जन्म, समरो ऐसामूलनाम, संवत् १४१५ आषाढसुदि २ दूजके दिन, स्तंभनतीर्थके विषे लूणीया गोत्रीय साहजेशलकृत् नंदीमहोत्सव करके श्रीतरुणप्रभाचार्यें पद-स्थापनाकरी, तहां स्तंभनतीर्थके विषे श्रीअजितनाथजीके मंदिरकी प्रतिष्ठाकरी, तथा शत्रुंजयकी यात्राकरके उहां पांच प्रतिष्ठाकरी, इसमाफक धार्मिककृत्योंको उपदेशद्वारा साधते हुवे, सम्यक्साध्वा-चारको पालते हुवे, और पांचतिथिमें निरंतर उपवास करनेंवाले भये, फेर १२ बारे गामकेविषे अमारिपडहवजडानेंवाले २८ अट्ठावीस साधुवोंके परवारकरके, अनेकदेशोंमें विहारकरके, श्रीजिनो-दयसूरिजी संवत् १४३२ भादवावदि ११ एकादशीके रोज अणशण आराधना पूर्वकसमाधिसें पाटणनगरमें स्वर्ग गए ॥ तिनोंके बारे संवत् १४२२ के शालमें वेगडखरतरशाखानिकली ॥ ५४ ॥ श्रीजिनोदयसूरिके पट्टे ५५ मा श्रीजिनराजसूरिजीभए, तिके संवत् १४३२ फागुण वदि ६ छट्ठके दिन, पाटणनगमें साह धरणनें नंदी महोत्सवकिया सूरिपदकों प्राप्तभए, तब गुरुमहाराज सवालक्ष प्रमाणे न्यायग्रन्थ पढे, और सर्वसिद्धान्तके पारंगामी भए, ऐसेगुरु-महाराज संवत् १४६१ देवलवाडानगरमें स्वर्ग गए ॥ ५५ ॥ तत्पट्टे ५६ मा श्रीजिनभद्रसूरिजी युगप्रधानभए, तत्प्रबंधो यथा, प्रथम संवत् १४६१ श्रीसागरचंद्राचार्यें, श्रीजिनराजसूरिजीके पट्टे श्रीजि-नवर्द्धनसूरिजीकों स्थापनकीएथे, तिके एकदा जेशलमेरगढमें श्रीचिंतामणिपार्श्वनाथजीके पासमेंरही क्षेत्रपालकीमूर्त्ति देखके स्वामीसेवक का बराबर बेठना अयुक्तहै, एसा विचारकरके क्षेत्रपालकी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूर्त्तिकों उठायके दरवजेकेपास स्थापनकरी, तब क्रोधायमानभया, क्षेत्रपाल पीछाउहांहि बैठा तब आचार्य तीन दिनकेवाद वाहिर स्थिरकीया तीनप्रभूकी मूर्त्तियां स्थिरकरी बावनदेहरिकी १४७३ के साल प्रतिष्ठाकरी वाद क्षेत्रपाल जहांतहां गुरुमहाराजका चतुर्थव्रत भंगपणा दिखलाने लगा, इसीतरे एकदा गुरुमहाराजचित्रकूटविषे गए, उहांवि देवतानें वैसी तरहसें करा, तब सर्व श्रावक चतुर्थव्रतका भंग जाणके यहपूज्यपदके योग्य नहिंहै, ऐसा विचार करा क्रमसेंवर्द्ध-नसूरिजीव्यन्तर प्रयोगसें ग्रथलीभूत भए पिप्पलक ग्राममें जाके रहै, कितनेक शिष्यपासमें रहै, तब सागरचन्द्राचार्य प्रमुखसमस्तसाधु-वर्ग एकत्र होके, गछकी स्थिति रखणेंवास्ते, नवीन आचार्य स्थापना करना, ऐसाविचार करा, तब नवीन गोरानाम क्षेत्रपालकों आरा-धनकरके, और सर्वदेशके खरतरगच्छीयसंघकी अनुमतिहस्ताक्षर मंगवाके सर्वसाधुमंडली एकट्ठीकरके भाणसोल ग्राम आए, तिहां श्रीजिनराजसूरिजीनें एक अपणें शिष्यको वाचक शीलचंद्र गणिके-पास पढणेंकेवास्ते रक्खाथा सो समस्तशास्त्रका पारगामीभया, भण-सालीगोत्रीय, भादोमूलनाम, संवत् १४६१ दीक्षाग्रहणकरी, अनुक्रमे पचवीस वर्षकेभए, तब तिनकों योग्यजाणके श्रीसागरचं-द्राचार्ये सातभकाराक्षरमिलायके संवत् १४७५ माघसुदि १५ पूर्णमासीके दिन, भणशाली नाल्हासाहनें सवालक्ष रुपये खरचके नंदी महोत्सवसहितसूरिपदमें स्थापन किये, सातभकार लिखे है १ भाणसोल नगर, २ भणशालिक गोत्रीय, ३ भादोनाम, ४ भरणी नक्षत्र, ५ भद्राकरण, ६ भट्टारकपद, ७ जिनभद्रसूरि, ॥ इसमाफक

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१ जैसलमेरादि नगरोमें अनेक ज्ञान भंडारकर्त्ता, २ भंडारीगोत्रनाडोल नगरमें १४७८ में प्रतिबोध कर्त्ता, ३ भद्रादि प्रतिमाओंके ज्ञाता, ४ भद्रकरणहार, इग्यारे भकारभि होतें हैं, इसमाफक बडे प्रभावीक श्रीजिनभद्रसूरिजी विचरतेथके, आबूजी, शत्रुंजयजी, गिरनारजी, शंखेसरजी, जेशलमेर प्रमुखठिकाणोंके विषेबिंबस्थापना तथा नवीनबिंबोंकी तथा नवीनचैत्योंकी प्रतिष्ठा तथा तीर्थयात्रादिकरते भए, ठिकाणें ठिकाणें पुस्तकोंके भंडार स्थापनकिये, इत्यादि अनेक तरेसें सम्यक्दर्शनादि तथा दानादि ४ प्रकारके धर्मकी वृद्धिकरते भए, इसतरे श्रीवीरशासनकी चिरकालतक प्रभावनाकरके अंतमे सर्वायु ६९ वर्षका पालके, अणशण आराधना पूर्वक संवत् १५१४ मिगशरवदि ९ नवमीकेदिन कुंभलमेरु नगरमें समाधिसें काल धर्मपायके देवलोकको प्राप्त भए, इनोकेवारे संवत् १४७४ श्रीजिनवर्द्धनसूरिजीसें, पिप्पलक खरतरशाखा निकली, यह पांचमागछभेदभया, ॥ ५६ ॥ उससमय श्रीजिनकीर्त्तिरत्नसूरिजी महाप्रभावकस्थविरभए, वह संखवालगोत्रीय, साहदीपचंद्रपिता, देवलदेवी माता, डेलाऐसा मूलनाम, वाद १४ बरसकी उंवरमें जानसजके पाणी ग्रहणको जाते मार्गमें खीमस्थलमें जान उतरीथी उहां खेजडीका वृक्षथा तब कोइ ठाकुर बोला इस समीके ऊपरसे वरछी निकाले उसकुं मेरी पुत्री देउं तब एक डेलेका सेवक उठके बरछी खेजडी ऊपरसे निकाली उसीवक्त जो ताकत लगी उस्से प्राण निकलगया डेलेने विचारा स्त्रीके वास्ते इसका प्राणगया स्त्रीका पाणिग्रहण अनर्थको हेतुहै वाद सद्गुरुके वचनसे प्रति-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बोधपायके, श्रीनेमिनाथस्वामी राजीमतिके समान सर्वऋद्धि आदिकका त्यागकरके, आबालशुद्ध ब्रह्मचर्यपणेंमेंहि संवत् १४६३ में श्रीजिनवर्द्धनसूरिजीके हाथसें, आषाढवदि (११) इग्यारसको दीक्षा ग्रहण करी उत्कृष्ट ज्ञान गर्भित त्याग वैराग्य करके, उत्कृष्ट भावसें संजमतपादिकसें कर्मोंकी निरजरा करते ऐसे एकादश (११) अंगादिकके ज्ञाता भए, तिसवखते श्रीजिनराजसूरिजीके पट्ट उपर दोय आचार्य कारणपर भये, यह वृत्तान्त श्रीजिनभद्रसूरिजीके संबंधसें जाणना, संवत् १४७० गणिपूर्वक वाचकपदप्राप्त भए, संवत् १४८० में उपाध्याय पद प्राप्त भए, उससमय आप श्रीनगर महेवामे विराजमानाथे, तब श्रीजिनवर्द्धनसूरिजी, तथा श्रीजिनभद्रसूरिजी इण दोनुं पूज्योंका पत्र आया कि उसमे श्रीजिनवर्द्धनसूरिजीने लिखा तुम हमारे पास मालवे चित्रकूट, पिप्पलीये आवो ओर श्रीजिनभद्रसूरिजीने लिखा मारवाड जेशलमेर आवो, इसतरे दोनुं पत्रोंका मतलब जाणके, आपश्रीके मनमें विचार उत्पन्न भया, जिससें अपनें कुलगोत्रके संसारीयोंको बुलायके पूछा ओर श्रीसंघसेंविपूछा, कि इससमय श्रीखरतरगच्छमें दोय आचार्य हूवेहैं, दोनुं पूज्यों नें अपणें पास बुलाणेके लिये पत्र भेजाहै, वहपत्र हमकों एकहि वखतमें मिलें हैं, इसलिये हमकों पहिले किसतरफजाना ठीक है, तब आपश्रीको श्रीसंघने तथा महाराजके संसारिक पक्षवालोंनें कहा, आप बहुश्रुत गीतार्थहैं, इसलिये आपहि विचारके, देखों कि उदय किसतरफ है, आपश्रीने उपयोग देके, विचारके कहा, उदयतो नवीन आचार्य श्रीजिनभद्रसूरिजीका है, इनकी सेवामें रहेगा सो-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विशेष उदय पावेगा, श्रीजिनवर्द्धनसूरिजीके तरफ रहेगा उसकाविशेष उदय नहिं है, यह सुनकर श्रीसंघादिक वृद्धलोक बोले कि हे भगवन् ऐसा है तो आपश्री, श्रीजिनभद्रसूरिजीके पास जेसलमेर जावों, वादमे जेसलमेर श्रीजिनभद्रसूरिजीकेपासगए, तब श्रीजिनभद्रसूरिजी महाराजनें योग्य जाणके संवत् १४९७ में अपणें हाथसें सूरिपद दिया, उसीवक्त श्रीसंभवनाथजीके मंदिरकी प्रतिष्ठा तथा ज्ञानभंडारभया वादमें श्रीजिनकीर्त्तिरत्नसूरिजी इस नामसें प्रसिद्ध भए,

बहुत वर्ष तक शुद्धचारित्र पालके, अनेक जीवोंको प्रतिबोध देके, धर्ममें स्थिरकरके याने सम्यक्त्वादिधर्म अनेक प्राणियोंको ग्रहण कराके, अपणें आत्माको उत्कृष्टपणें संयम तपादिकसें भावनकरते हूवे, अंतसमे अणशण आराधनापूर्वक संवत् १५२५ केसालमें नगरमहेवामे वैशाख शुद्धि पंचमीको समाधिसें कालधर्म प्राप्त होकर, ईशानदेव लोकमें महर्द्धिक देवपणें उत्पन्नहूए, अर्थात् स्वर्गगए, देवलोकसें चवके मुक्ति जानेका संभव है, इसलिए महा प्रभावीक आचार्य हूवे हैं, श्रीखरतर गच्छमें इन समर्थ आचार्य श्रीके नामसें शाखा हालमेभि प्रसिद्ध है, इन आचार्य श्रीका जन्म संवत् चवदेसै उगणपचास १४४९ की सालका है, सर्वायु ७६ वर्षका है, यह आचार्य श्रीदेवलोकगये वाद हालतक अपणें भक्तोंका मनोरथ पूर्ण करतें हैं, मूलचरण स्थापना वीरमपुर नगर महेवामें है और वीकानेर जेसलमेर जोधपुर थाणा सुरत आबु खंभायत राजनगरादि अनेक स्थले चरण स्थापना है, इनोंका विशेष हालवडे चरित्रसें जाणना, ग्रन्थगौरवभयादस्माभिरिह न लिखितमिति, पूर्वोक्त

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भावगर्भित उदाहरण तरीके एकगुरुगुणस्तुतिदीजावे है, तथाहि श्रीजिनकीरतिरतनसूरि वंदीये, मूलमहेवे थान, संयमीयां सिरसेहरो शंखवाल कुलभांण, ॥१॥ श्री०कीर, संवत् चवदे ऊपरे, उगुणपचा सैजास, जनमथयोदीपाघरे, देवलदे उल्लास, श्री० की० ॥ ॥२॥ डेल्ह कुंमर हिवनेमज्युं, मुकी निजघरवास, तेसट्ठे संयमलीयो, श्री० जिनवर्द्धनसूरिपास, ॥३॥ श्री० की०॥ वाचक पदवीसित्तरे, असीये पाठकसार, आचारिज सत्ताणमें जेसलमेर मझार, श्रीजिनकी०॥, ॥४॥ सुरनरकिंन्नरकामिनी, गुणगावे सुविसाल, साधुगुणे करिसोभता, हारविचे जिमलाल,श्रीजिनकी० ॥५॥ पगला अरबुदगिरिभला, योधपुरे जयकार, राजनगर राजेसदा, थुंभ सकल सुखकार, श्रीजिनकी०, ॥६॥ अमीयभरे भललोयणें, तुं मुझदेदीदार, पाठक ललित कीरतिकहै, दिन प्रति जय जयकार, श्रीजिनकीरतिरतनसूरिवंदीये, ॥ ७ ॥ इति श्रीजिनकीरतिरतनसूरिस्तुति इत्यादि उत्पत्ति भक्तिभाव गुणवरणनादि नवनवभावगर्भित नवनवरागादियुक्त अनेक कविरचित अनेक स्तवनादिक है, सो अलगहि संग्रहकरके सज्जनोंके करकमलोंमे सादर उपस्थित करदीया जावेगा ५७ तदनंतर तत्पट्टपरंपरायां क्रमात् श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरिजी भए है तिके गामचामूकेवासी, बाँफणागोत्रीय, साहमेघरथ पिता, अमरादेवी माता, संवत् १९१३ का जन्म, संवत् १९३६ में दीक्षा, संवत् १९७२ पोषशुदि १५ के दिन हिन्दनिवासी समस्तजैनसंघने नंदीमहोत्सवादि आचार्यपदोत्सव किया, श्रीजिनचारित्रसूरिजीनें सूरिमंत्र देके, पदस्थापना करी, मोहमयी पत्तनमें, फेर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१९७२ का चोमासाभी श्रीसंघके विशेष आग्रहसें लालबाग ममाईमें करा, वादमें ममाईसें सुविहित विहारसैं कौंकण लाट गुर्जर मालव मेदपाट गोडादि देशोंमे विचरतेभए, बुहारी सुरत बडोदा रतलाम ईन्दौर मनसोर उदयपुर इत्यादि नगरोंमें चतुर्मास करके श्रीवीरशासनोन्नति करते हूवे क्रमसें मरुधरादि देशोंमें सुखसें विचरतें हैं, इनोंका विशेष अधिकार बृहत्चरित्रकी प्रस्तावनाकी ८ मी पृष्टसें जाणना ॥५६॥ ॥५७मा श्रीजिनभद्रसूरिजीके पाटऊपर श्रीजिनचन्द्रसूरिजीभए, तिके जेशलमेरवासी, चम्मगोत्रीय साह-वछराज पिता वाल्हादेवी माता, संवत् १४४७ जन्म, संवत् १४९२ दीक्षा, संवत् १५१४ वैशाखवदि २ द्वितीयाके दिन कुंभलमेरु रहेवासी कूकड चोपडागोत्रीय साह समरसिंहनें नंदीमहोछव किया, श्रीजिनकीर्त्तिरत्नसूरिजीनें पद स्थापना करी, वादमें विचरतेथके, अर्बुदाचल ऊपर नवफणापार्श्वनाथजीकी प्रतिष्ठाकारक, श्रीधर्मरत्नसूरिजी, गुणरत्नसूरिजी प्रमुख अनेक मंडलाचार्य पदस्थापक श्रीजिनचंद्रसूरिजी विक्रम संवत् १५३० जेशलमेर नगरमें देवलोककों प्राप्तभए, ॥ ५७ ॥ इनोंके वारेवि संवत् १५०८ अहमदाबादमें लोंके लेखकनें जिनप्रतिमा उत्थापनकरी, वहलोका जिनप्रतिमा उत्थापनादि अनेक उत्सूत्रप्ररूपणा कारक, और गुरुपरंपरा तथा परंपरागतवेष, और परंपरागत शुद्धदेश-सर्व-रूप-आचरणा, परंपरागत शुद्ध सर्वसिद्धान्ताधिकारादिकका त्यागकर सर्व सिद्धान्तोंका अनादरकर सर्वसिंद्धान्तोंकी पंचांगीका त्यागकर, मनमानेसूत्रोंको प्रमाणकर, श्रीपार्श्वचंद्रसें सूत्रोंका

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बार्थ प्राप्तहोकर, अनेक संप्रदायागत सत्यार्थवार्तोंका त्यागकर, कषायवससें गृहस्थके लिंगको प्रमाणकर, उसीमे रहकर किंचित् मनमाने सूत्रोंके, मनमानेटबार्थका आधारलेकर एकान्त जिनाज्ञा विरुद्ध अर्थका प्ररूपक कुत्सितपुरुष श्वेताम्बर जैनशासनमें उत्पन्न-भया, वाद संवत् १५२४ अथवा ३१ में लुंपकमत प्रचलितभया, यह लुंपकमत स्वछंदाचारी ४५ पुरुषोंनें मिलकर प्रथम प्रचलितकराहै, इसलुंपकमतकी यहशब्दव्युत्पत्तिहै, लुंपति श्रीजिनप्रतिमादि सत्यार्थं, इति लुंपकः, इत्यादि सत्यार्थ शब्दव्युत्पत्ति इसमतकीहै इसतरे लुंपकमत उत्पन्नहोकर प्रचलितभया, इनमें स्वयंबुद्धाभिमानको धारण करके, मनोकल्पित प्रथम वेषधारक संवत् १५३३ में भानाथा भूणा रिषिभया, इनकी उत्पत्ति ऐसीहै, अहमदावादमें दशा श्रीमाली-लोंकानामें एकलेखकथा, सो जतियांके पुस्तकां लिखताथा, एकदा तपगछका ज्ञानजी जतिके पुस्तकलिखी, जिसमें बहुतहि खोट रहगई, तब ज्ञानजी कुछकठोर वचनबोले, जबलोंका लडनें लगा, तब धक्कादेके लोंकाकों निकाल दिया, पीछे वहलोंका नींबडी जायके राजकारभारी लखमसी नामक वाणियेंके सामनें कूका, तब लखमसीनें हकीकत पूछी, लोंकेनें कहा, सच्चाधर्म कहेता तपा जतियांने मार्थो,तब लख-मसी बोला इहांतुंथारो मतचलाव, में तेरा पक्षहुं सुनकर लोंकाखुसी हुवा, और अपणें मनमें रागद्वेषके प्रभावसें सोचनेलगा, अहोतीर्थंकर गणधर सामान्यकेवली श्रुतकेवली वगेरेका तो आज अभावहै, तो फेर इनजतिआदिकके पराधीन रहकर आजीविका करनेमें मुझको क्या सुखहै, इसलिये में स्वतंत्र होकर अपणी मरजी प्रमाणें धर्मप्ररू-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पणा करुंगा, तो स्वतंत्र और सुखी होवुंगा यह लखमसी राजकारभारी मेरे सहायहै, में वाणियाहूं इसलिये मेरा जाति वगेरामे भी बहुतसा संबंध प्रसंगादिकहै, जतिआदिक तो मूर्त्तिपूजन मंदिरादिक बनानेमें और द्रव्य खरचकरणेंमे धर्म कहेहै, परन्तुमें इनके विरुद्ध-धर्म कहुंगा, तो साधारणस्थितिवाले दुखीदरिद्री गरीब वगेरे सर्व लोक मेंरा कहाहुवा धर्म मानेगा, इसलिये जति आदिकके पराधीनताका जो लेखकपणेंका कार्य आजसें हि छोडकर स्वतंत्र धर्मोपदेशकरणाहि ठीक है, परन्तुमें तो पढाहि नहिं शास्त्र तो संस्कृत प्राकृतादिक भाषामे है, इसलिये सरलस्वभावी किसी विद्वानका आश्रय लेकर यह अपणा मनोरथ पूर्ण करुंगा इत्यादि विचार करके वाद लोंका लखमसी राजकारभारीसें बोलाकि आप अपणी जबानपर पक्के रहोगे तो में आपको सच्चाधर्म कहुंगा, और बोला कि में मेरा लेखकपणेंका धंधा आजहिसें छोडदेता हुं, आपकों सच्चाधर्मबतलानेंके लिये, शास्त्रदेखकर तपास करताहूं वादमें आपको सच्चाधर्म कहूंगा, ऐसा कहकर अपणें ठिकाणें चलागया, और जाकर लोंकानें विचार कराके, में राजकारभारीको जबानदेकर आयाहूं, इसलिये मुझे यह कार्य करनाहि पडेगा, अन्यथा शिक्षाहोजावेगा, और झूठा ठेरुंगा इसलिये अबतो अपणा वचन पालनाहि ठीकहै, यह विचार कर अपणा मनोरथ पूर्ण करणेंके लिये घरसें निकला और घूमता हुवा एक सरल स्वभावीतपगच्छीय यति पार्श्वचंद्र नामक विद्वान्से मिला, और उसकी कुछ अभिलाषापूर्वक सेवा करने लगा, वादमें कितनेक दिन सेवा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करतां हुवे, तब एक दिनके समय वह पार्श्वचन्द्रयति उसलोंके वणियेंकी कुछ अभिलाषापूर्वक सेवा जाणकर पंडितपार्श्वचन्द्रयति लोंकासें इसतरे बोला, हे लेखक तें मेरी इतनी सेवा किसवास्ते करता है, तब दुष्ट अध्यवसायि लोंका वाणिया मायावृत्तिसें बोला कि, हे गुरो मेरेको प्राकृत भाषा संस्कृत भाषादिकका बोध नहिं है, और सामान्य लोक भाषाका मेरेको बोध है, इसलिये आप मेरेको सूत्रोंका बालावबोध याने सूत्रोंका अक्षरार्थटबा बनादेवो, जिसकरके में सुबोधहोजावुंगा वादमें आपको श्रीपूजबनादेवुंगा, और में आपका खास वजीर होजावुंगा, वादमें आप और में दोनोंजने स्वतंत्र और श्रीपूजोंकी तरह आडंबर बनाकर अपणेंभि पूजे माने जावेगें, लोकमें, इसलिये आप विद्वान् हैं मेरेको सूत्रोंका टबार्थ लिखदेवे, यह मेरा अभिप्राय है, इसतरेका मायावी लोंके लेखक वाणियका वचन सुनकर उसकी सेवासें हर्षित होकर, और आगे पीछे नफे नुकसाणका तो विचार किया नहिं, और लोभमें आयके पंडित पार्श्वचन्द्रयतिनें लोंकेको सूत्रोंपर वृत्ति अनुसार टबार्थ लिख-दिया, वादमे वह सूत्रोंका टबार्थ स्वतंत्र लिखलिया, इसतरे सूत्रोंका टबार्थ हाथ आनेपर लोंकाके पगमें जोर आगया, अर्थात् बलिष्ठहो गया, वादमें पंडित पार्श्वचंद्रयतिकों भी धोखादेकर, सूत्रादिकका टबार्थ लेकर, लोंका लेखक लखमसी राजकारभारीकेपास नीं-बडी चलागया, पंडितपार्श्वचन्द्रयतितो उभयतरफसें भ्रष्टभया, वादमें लखमसीके सहायसें धर्मकहना सरुकिया परन्तु जब काल प्रभावसें श्रद्धाहीन धनहीन हुवे जीवोंको जाणकर, और बहुत

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लोकोंको कृपणदरिद्री होतेहुवे जाणके, उनोको अपणा मत ग्रहण करार्णेके लिये, सिद्धान्तसम्मत श्रीजिनमंदिर, श्रीजिनप्रतिमादिकका उत्थापनकिया, मनमें आयेसो ग्रन्थमाने, बत्तीस सूत्रोंको सच्चा मान्या, परन्तु उनमें पंचांगी प्रमाणका तथा श्रीजिनप्रतिमा पूजनका अधिकारोंकों झूठा मान्या, इससें मनोमत्ति हूवा, २५ वर्ष गृहस्थपणें लुंपकमतकी प्ररूपणा करी, पीछे लोंकेके उपदेशसें एक भाणा नामकवाणियेके बेटेनें अपणें आपहि मनोकल्पित वेषधारण किया, उसका भूणारिषि नामहूवा, पीछे परिवारवधतां इस लुंपक मतमें तीनगादी हुई, नागोरी, गुजराति, उत्तरादि, इत्यादि लुंपकमतकी इससमय शाखा बहुतहै, इसका विशेषनिर्णय साम्प्रदायिक गुरुमुखसें जाणना, और लुंपक लेखकके पहिलेका मिलायाहूवा, सत्तावीसपाट इसतरे है १ श्रीवीरगौतमसुधर्म, २ जंबु, ३ प्रभव, ४ सय्यंभव, ५ यशोभद्र, ६ संभूतिविजय, ७ भद्रबाहू, ८ स्थूलीभद्र, ९ महागिरि, १० सुहस्ति, ११ सुप्रतिबुद्ध, १२ इन्द्रदिन्न, १३ आर्यदिन्न, १४वयर, १५ वज्रसेन, १६ आर्यरोह, १७ पूसगिरि, १८ फल्गुमित्र, १९ धरणीधर, २० शिवभूति, २१ आर्यभद्र, २२ आर्यनक्षत्र, २३ आर्यरक्षित, २४ आर्यनाग, २५ जेहिल, विष्णु, २६ सढील, २७ देवर्द्धिगणि, लोंका लेखकके पीछेकी उत्सूत्रपरंपरा इसतरह है, १ भाणारिषि, २ भीदारिषि, ३ न्युनारिषि, ४ भीमारिषि, ५ जगमालरिषि, ६ सरवारिषि, ७ रूपरिषि, ८ जीवारिषि, ९ कुंवरजीरिषि, १० श्रीमल्लजीरिषि, ११ रत्नसिंहरिषि, १२ केशवरिषि, १३ शिवरिषि, १४ संघराजरिषि, १५ सुखमलरिषि, १६ भागचन्द्र, १७ वालचन्द्र,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१८ माणेकचन्द्र, १९ मूलचन्द्र, २० जगतचन्द्र, २१ रत्नचन्द्र, २२ नृपचंद्र, इसतरे कुंवरजीके पक्षकी परंपराहै गुजराति छोटे पक्षकी परंपरा इसतरेहै, जीवाजी, १ वरसिंगजी २ यशवंतजी ३ रूपसंगजी ४ दामोदरजी ५ कर्मसिंहजी ६ केशवजी ७ तेजसिंहजी ८ कहानजी ९ तुलसीदासजी १० जगरूपजी ११ जगजीवनजी १२ मेघराजजी १३ सोमचंद १४ हरखचंद १५ जयचंद १६ कल्याणचंद १७ खूबचंद १८ इसतरे गुजराति लोंकोंकी परंपराहै कुंवरजीको पक्ष, गादी जामनगर कहै है, और केशवजी पक्षके पूज खूबचंद्रजीकी गादी वडोदरा, और धनराजजी पक्षके वजेराजजी पूजकी गादी जैतारण अजमेर है, इत्यादि लुंपक मतकी परंपरा है, और इसमतकी विशेषसमीक्षा परिशिष्टाधिकारमें करेंगें सो वहांसे जाणलेना, इहांपर विशेष लिखनेका अवसर नहोनेसें विराम करतें हैं, इति संक्षिप्त लुंपकमतोत्पत्तिः स्वरूपं च परिकथितमिति ॥ नमोस्तु भगवते श्रीवर्द्धमानाय, ५८ श्रीजिनचन्द्रसूरिजीके पाट ऊपर, श्रीजिनसमुद्रसूरिजी युगप्रधान भए, तिके वाहडमेरनिवासी, पारख गोत्रीय देकोसाह पिता, देवलदेवी माता, संवत् १५०६ जन्म, संवत् १५२१ दीक्षा, संवत् १५३० माघ सुदि १३ तेरसके दिन जेशलमेरकेवासी संघपति सोनपालनें नंदी महोच्छव किया, श्रीजिनचन्द्रसूरिजीनें स्वहस्तसें पद स्थापना करी, फेर विहार करते हूवे, सिंधुदेसगए, वहां पंचनंदी सेलयपर्वतवासी खोडीया क्षेत्रपाल सोमयक्ष माणिभद्रादि साधक भये, और देशकालानुमाने परम चारित्रवंत, ऐसे श्रीजिनसमुद्रसूरिजी विक्रमार्क संवत् १५५५ में

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अणशण आराधना करके, समाधिपूर्वक अहमदावादनगरमें देवलोक गए, ५८ ॥ ५९ मा श्रीजिनसमुद्रसूरिजीके पाठ ऊपर, श्रीजिनहंससूरिजी भए, तिके सेत्रावा नगर वासी, चोपडा गोत्रीय, साहमेघराज पिता, कमलदेवी माता, संवत् १५२४ जन्म, संवत् १५५६ वैशाख सुदि ३ के दिन रोहिणी नक्षत्रे श्रीवीकानेर नगरमें करमसी मंत्रीश्वरें लक्षद्रव्य खरचकरके, आचार्य पदका उच्छव किया, तथा भांडासरजीके मंदिरकेपास, श्रीनमिनाथजीका बिम्ब चैत्यकी प्रतिष्ठा कराई, पीछे एकदा आगरा नगरमें रहनेंवाले सं० डुंगरसीजी, मेघराजजी, सोमदत्त प्रमुख संघनें बहुत आग्रह करके, वीनती भेजके महाराजकों बुलाया, तब श्रीगुरुमहाराजभी वहांगए, तब वादशाहें हाथी घोडा पालखी वाजित्र चामरादि आडंबर करके सहित श्रीगुरुमहाराजका प्रवेशमहोच्छवकरा, तिहां संघनें गुरुभक्ति संघभक्त्यादिकमें दोय लाख रुपिया खरच करा, पीछे फेर कोई चुगलखोरके चुगली करनेंसें वादसाहनें फेर गुरु महाराजकों बुलवाए, धवलपुरमें रखे, तब देवसहायसें गुरुमहाराज बादशाहके चित्तकों चमत्कारवताके प्रसन्नकरके, ५०० पांचसो केदीयोंको छोडायके, अमारिपटह वजवायके, उपासरे आए, तब समस्तसंघ बहुत हर्षित भया, फेर गुरुमहाराज अतिशय सौभाग्यधारक, तीन नगरके विषे तीन प्रतिष्ठाकारक, अनेक संघपतिप्रमुखपदस्थापक, पाटणनगरमें तीनदिनका अणशण आराधना करके समाधिसें संवत् १५८२ सीमें स्वर्गगए, तिस वखतमें संवत् १५६४ वर्षे मरुदेशके विषे आचार्य शान्तिसागरसें बृहद् आचार्यखरतरशाखा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निकली, यह छट्टागछभेदभया, तथा इनोंहिके वखतमें, संवत्१५६२ कडुआमत हूवा, संवत् १५७० में लुंकामतसें, अर्थात् श्रीरूपऋषिके परिवारसें निकलके बीजा नामक वेषधरनें बीजामत निकाला, पहिला लुंका हूवा दूसरा यह हूवा, तब लोक इसमतको बीजामत कहने लगे, लुंकेनें श्रीजिनप्रतिमाका मानना पूजना उत्थापनकरा, इसबीजामतिनें श्रीजिनप्रतिमाका पूजना मानना शरु किया, प्रतिष्ठा वगेरे दिगंबर जैसी करणे लगा इतना विशेषहै, संवत् १५७२ नागोरीतपाशाखा-मेसें निकलके, पण्डितपार्श्वचन्द्रजीयतिनें अपनें नामसें पार्श्वचन्द्र मत निकाला, इसका स्वरूप इसतरेहै, तथाहि श्रीमान् साधुरत्नसूरिजीके अंतेवासी प्रथम पंडितावस्थामें यतिपणें देशाटणकररहेथे, तिससमें मायावीलोंका पंडितपार्श्वचंदजीसें आकर मिला और बहुतहि भाव भक्तिसेवा इनोंकी करने लगा बादमें जो वृत्तान्त हूवा सो लुंपक मताधिकारमें लिखाहै, इसलिये यहांपर नहिं लिखाहै, बादमें पंडि-तपार्श्वचन्द्रजीनें सोचा कि कसूरतो अपनें हाथसें हूवाहै, अब चलो गुरुजीकेपास अरज करें, यह विचारके श्रीसाधुरत्नसूरिजीकेपास आकर अरजकरी कि, मेने यह टबार्थसूत्रोंपर कराहै, कैसाहै दिखलाया, तब सूरिबोले कि तेंने बनायासो टीकानुसार होनेसें ठीकहै, परन्तु आगे पीछेके परिणामको विचारा नहिं, यहटबार्थ प्रथम वार तेंने लिखाहै, अब इसको प्रसिद्ध नहिं करना, ऐसा कहकर बादमें कुछ मनमें विचार करके, उपाध्यायपददेके, अपणेंपास रक्खे परन्तु दगा न सगा किसीका इसलिये कितनेक काल बाद लुंपकमतकी सुलसुलाट भई, तब तपास करतां पंडितपार्श्वचंद्रकृत् टबाके आधारसें

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इसलुंपक मतका उत्थान हूवाहै, वादमें गछाधिपतिने श्रीसाधुरत्नसूरि ऊपर समाचार लिखे तब श्रीसाधुरत्नसूरिजीनें श्रीपार्श्वचन्द्रजीसें नाराज होकर जब उपालंभदिया, तब श्रीसाधुरत्नसूरिजीके समीपसें कुछ मानसिक विचारकर निकला निकलके पृथक् विचरणें लगा तिस अवसरमें प्रायश्चित्त निमित्त विशेष गछपति और गुरुनें दबाणकरा, मारवाड जोधपुरका शरणालिया, वादमें इनोंको गुरु और गछपतिनें अपनें गछबाहिर करदिया तब किसीने इनोंका संग्रह नहि किया, वादमें खरतरगछवालोंनें स्वाभाविक दयालुतासैं सहायताकरी, वादमें फेर इनोंके दो शिष्यगुप्तपणें भणके पढणेंके निमित्त दक्षणदेशमें गए, वहांपर भाग्यसंयोगसें खरतरगछाचार्य उसदेशमें विचरते हूवे मिले, उनोंकेपास गुप्तपणें रहै, न्यायव्याकरणादिक पढलिखकर हूसियार हूवे, जब अपणें देशमें आणेके लिये तइयार हूवे, तब आचार्यश्रीनें पुन्यप्रकृति विनयादिक गुणदेखकर महिरवान होकर सूरिमंत्र दिया, वादमें विनयपूर्वक आचार्यमहाराजको नमस्कारकर अपनें देशकों चले, मार्गमें मांडवगढ आया वहांपर महामहोछव पूर्वक प्रसिद्धमे सूरिपदारूढ हूवे, वादमें अपनें गुरुकेपासमें आकर मिले, प्रथम श्रीपार्श्वचन्द्रजीको सूरिपदमें स्थापे, वादमें वन्दनाकरी, १ श्रीपार्श्व चन्द्रसूरि श्रीविजयदेवसूरि ब्रह्मसूरि इत्यादि परंपरा चली, और वृद्धतो ऐसा कहेहै कि श्रीपार्श्वचंद्रजीको गच्छबाहिरकिये तब बीकानेर आकर पंचायति श्रीचिंतामणजीके मंदिरमें दर्शनकरते हूवे खरतरगच्छाधिपति श्रीसूरिजीके चरणका सरणालिया इत्यादि स्वरूप देखकर परमदयालु आचार्यश्रीबोले कि तुमारी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्या इच्छा है सोकहो तब श्रीपार्श्वचन्द्रजीने कहा हे परमदयालो आपका हाथ और वासक्षेप मेरे मस्तकपर होना चाहिये, वादमें उसीतरे करदिया, तब श्रीपार्श्वचन्द्रसूरि हूवे, इसलिये परंपरागत उपगार निमित्त श्रीवीकानेरमें पायचन्द्रिया वडेउपासरेके अनुयायि रहे है, अर्थात् वडेउपासरेवाला करेसो मंजूर होवे है, और नहिं, हालमेंभी पायचन्दियांकी मूलगादी वीकानेरही है, मन्तव्य प्ररूपणा समाचारी वगेराका फेरफारकरा वहस्वरूप इहां नहिं लिखा, ग्रंथगौरवके भयसें, विशेष वृद्धानुग सम्प्रदायादिकसें जाणना, इति पार्श्वचन्द्रमूलमतोत्पत्तिः तत्त्वं पुनः तत्त्वविदो विदन्ति, वा केवलिनः मयातु साम्प्रदायात् यथा ज्ञातम् तथा लिखितम्, ५९ ॥ तत्पट्टे ६० मा श्रीजिनमाणिक्यसूरिजी भए, तिके कूकड चोपडा गोत्रीय, साहजीवराजपिता, पद्मादेवी माता, संवत् १५४९ जन्म, संवत् १५६० दीक्षा, संवत् १५८२ भाद्रवावदि ९ नवमीके दिन साहदेवराजनें नंदीमहोच्छव किया, श्रीजिनहंस-सूरिजीयें अपणें हाथ करके पदस्थापना करी, फेर गुर्जरदेश सिंधु-देशादिकमें विहारकारक, पंचनदी साधक, श्रीजिनमाणिक्यसूरिजी कितनेक वर्षतक जेशलमेर रहे, तिहांमुनि कितनेक शिथलाचारी होगए, प्रतिमा उत्थापकका मत बहोत फेला तब वीकानेरकेवासी वच्छावत संग्रामसिंह मंत्रीनें गच्छस्थिति रखणें वास्ते, श्रीगुरुमहा-राजकों बुलवाए, तब भावसें क्रियोद्धार करके, श्रीगुरुमहाराजने विचारा कि पहले देराउर नगरमें श्रीजिनकुशलसूरिजी महाराजकी यात्रा करके पीछे सर्वपरिग्रहत्यागके विचरुंगा, इसवास्ते गुरुमहा-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राज यात्राके वास्ते देराउर गए, तिहां गुरुदर्शनकरके जेशलमेर पीछा आते वखतमें गुरुमहाराजको मार्गमें जलाभावसें तृषापरिषह बोहोत उत्पन्न भया, परन्तु जल रातको मिला नहिं लिया, उसी ठिकाणें तृषापरिषह अछीतरे सहके अणशणआराधना करकेः सुकृतकी अनुमोदना दुष्कृतकी निंदा करते हुवे, सर्व संबर चारित्र तपादिकका ध्यान करते हूवे, परमसमता समाधिपूर्वक शुभध्यान-ध्याते हूवे श्रीगुरुमहाराज संवत् १६१२ आषाढसुदि पंचमीके दिनकालधर्म प्राप्त होकर स्वर्ग गए, ॥ ६० ॥ इति श्रीमज्जिनकीर्त्ति-रत्नसूरिशाखायां तत्परम्परायां च क्रमात्, श्रीमज्जिनकीर्त्तिसूरि ऊर्फे श्रीमज्जिनकृपाचन्द्रसूरिशिष्यपंडितशिरोमणि श्रीमदानंदमुनिसंकलिते लोकभाषोपनिबद्धेच, तल्लघुगुरुभ्रातृउपाध्याय श्रीजयसागरग-णिना संस्कारिते युगप्रधान श्रीमज्जिनदत्तसूरिचरिते श्रीमज्जिनचन्द्र-सूर्यादिश्रीमज्जिनमाणिक्यसूरिपर्यवसानश्रीमज्जिनदत्तसूरिसन्तानप्रासं-गिकमतादिस्वरूपवर्णनो नामसप्तमः सर्गः ॥

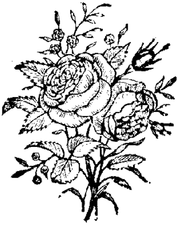

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

युगप्रधान
श्रीमज्जिनचंद्रसूरीश्वरजी महाराज (चोथा).

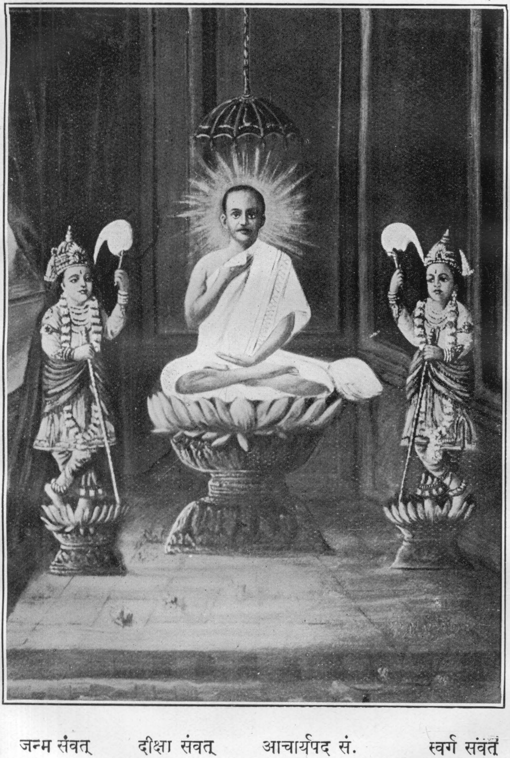

जन्म संवत्	दीक्षा संवत्	आचार्यपद सं.	स्वर्ग संवत्
१५९५.	१६०४	१६१२.	१६७०.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ अथाष्टमः सर्गः ॥

नमोऽस्तु भगवते श्रीपार्श्वनाथाय समस्तविघ्नव्यूहान्धकारहरणतर्णये नमोऽस्तु भगवते श्रीवर्द्धमानाय स्पर्द्धमानायकर्मणा । तज्जयावाप्तमोक्षाय, सच्चिदानंदरूपाय श्रीसिद्धाय नमः ॥ आकार्यगुर्ज्जरदिशोवरलाभपुर्व्यां श्रीसाहिना गुरुगुणान्निपुणान्निरीक्ष । सन्मानिता युगवरप्रवरावदाता जाता वशीकृतसुरा जिनचन्द्रपूज्याः ॥ १ ॥ अथ तत्पट्टे ६१ मायुगप्रधानपदभृत्, अकब्बर असुरत्राणप्रतिबोधक, चतुर्थदादासाहेब नाम प्रसिद्धिभाक्, श्रीमज्जिनचन्द्रसूरिजी हुए, तिणों का संक्षिप्त चरित्रलेश इस माफकहै, तिके वडली गामवासी रीहड गोत्रीय, साहश्रीवंतपिता, सिरियादेवीमाता, संवत १५९५ का जन्म, संवत् १६०४ दीक्षा, संवत् १६१२ भादवासुदि ९ नवमीके दिन जेशलमेर नगरमें राउल मालदेवकारित नंदीमहोछव करके सूरिपदमे प्राप्तभए, तिसहीज रात्रिके विषे श्रीजिनमाणिक्य सूरिजी प्रगटहोके सेवाकी पोथीमें रहा आम्नायसहित सूरिमंत्रपत्र श्रीजिन चन्द्र सूरिजीकों दिया, फेरसंयम तपादिकके विषे विशेष उद्यम करना इत्यादि कहकर अदृश्यभये, फेरश्रीजिन चन्द्रसूरिजी अत्यंत संवेगरंगमें वासितचित्तभयेथके, गच्छकेविषे शिथिलपणादेखके, सर्व परिग्रहका त्याग करके, वछावत मंत्रिसंग्रामसिंहकापुत्र श्रीकर्मचन्द्र मंत्रिके आग्रहकरके, वीकानेर नगरमें गए, तिहां प्राचीन उपाश्रयकों यतिलोकोंकरके रोकाभयादेखके मंत्रीश्वरनें अपणी अश्वशाला महाराजको उतरणेंकों दीवी, ओरभी बहुत गुरुकी भक्ति-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करी, गुरुमहाराज तिहां क्रियोद्धारकरके सुविहित साधुमार्ग अंगीकारकरा, अपणेंसमान साध्वाचार पालनेवाले गुणवान १६ साधुवोंके साथ विहारकरतेहुवे, ठिकाणें ठिकाणें प्रतिमा उत्थापक मतकाखंडनकरतेहुवे, अपणी सिद्धान्तीय समाचारीकों दृढकरतेहूवे अस्खलितविहार सर्वत्र करतेहूवे, अखंडित आज्ञासहित अनुक्रमसें विचरतेहूवे गुर्जरदेशमें गए, तिहां अहमदाबाद नगरमें, मतिराकाकडी खडबुजादिक फलका व्यापारकरके आजीवका कारताहूवा, मिथ्याधर्मनिष्ठ पोरवाल कुलोत्पन्न सिवाजी (सदा) सोमजीनामें दोनूं भाईयोंके एक नवीन वस्त्र ऊपर वासक्षेपकरा और कहा फलादि व्यापार वस्तु ऊपर इसवस्त्रको ढकना, इसी तरेकरा, अनर्गलऋद्धिसमृद्धिवाले भये, विशेष गुरुमुखसें जाणना, वादमें प्रतिबोधदेके सर्व कुटुंब सहितमहर्द्धिक श्रावककिये, पोरवालज्ञातीय महाधनवंत श्रावकभये, पोरवालवंश प्रतिबोधक उपकेशगछीय स्वयंप्रभसूरि वादमें यशोभद्रसूरिवगेरा बहुतसें सुविहित खरतराचार्योंनें पोरवालवंशकीवृद्धि करीहै, आखरसंवतसोलेसें तक पोरवालवनायेगयेहैं, इसलिये पोरवाल एक गछके नहिंहै, उपकेशगच्छ, खरतरतपा आंचलादि अनेक समाचारीवालेहैं, इसलिये प्रस्तुत पोरवालजातिय श्रावक खरतरसमाचारीकारक—भये, फेरजिणोंनें संघनिकालने पूर्वक श्रीसेत्रुंजयकी यात्राकरके सर्वदेशोंके जैन श्रावकोंको एकैकमहोर, एकैक थालकी लहांणी दीनी इत्यादि बहुतसा विशेषचरित्रहै, सोछपाहूवागणधर सार्धशतकान्तर गत श्रीचारित्रसिंहगणि उद्धृत प्रकरण वृत्तिके भाषान्तरसें जाणना तथा पाटण

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

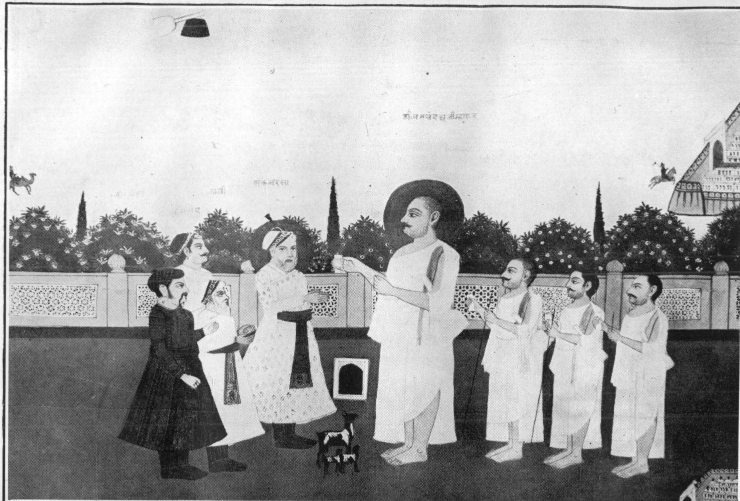

अकबर सलेम प्रतिबोधक **श्रीमज्जिनचंद्रसूरीश्वरजी महाराज (चोथा).**

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चित्र परिचय.

जंगम युगप्रधान भट्टारक श्रीजिनचंद्रसूरीश्वरजी शिष्योंसहित अकबरके निमंत्रण को स्वीकार कर संवत् १६५१ में लाहोर पधारे. मिलनका दृश्य अपूर्व और चमत्कारिक घटनाओंसे पूर्ण था.

(१) गुरुमहाराज शाहीदरबार में प्रवेश करते हैं. बादशाह स्वागतार्थ सन्मुख आता है और बधाकर (स्वागत) पूर्वक निश्चयानुसार बैठने की प्रार्थना करता है. किन्तु गुरुमहाराज कहते हैं यहांपर जीव हैं इसलिये बैठना नियम विरुद्ध है. बादशाहने कहा कितने जीव हैं. गुरुमहाराजने कहा ३ जीव हैं. काजी प्रसन्न हो गुद्दामें से जीव निकालता है किंतु तीनही निकलते हैं. कारण सगर्भा बकरी थी. अतः भूमिके संसर्ग से दो बच्चे होगये थे.

(२) काजीने ईर्षा से गुरुमहाराज का मानभंग करने के लिये मंत्रबल से अपनी टोपी आकाश में उड़ाई. गुरुमहाराजने रजोहरणसे ताड़ित कराते हुवे पुनः काजी के सिरपर रखादी. यह चमत्कारिक दृश्य देख अकबर मंत्रमुग्धसा होगया.

(३) आहार के लिये परिभ्रमण करते हुवे गुरुमहाराज के एक शिष्य की एक गृहस्थ के यहां राज्यकर्मचारी मुल्लाजी (मौलवी) से भेट होगई. उसके तिथि पूछनेपर अमावस्या थी किन्तु मतिभ्रम के कारण पूर्णिमा कह दी. पश्चात आके गुरुमहाराज से साद्योपांत हाल कहा. गुरुमहाराजने एक गृहस्थ से स्वर्णथाल मंगवाया और मंत्रितकर आकाश में उड़ा दिया. चन्द्रवत् प्रकाश देख बादशाहने बारा बारा कोसतक सवार दौड़ाये किन्तु सर्वत्र प्रकाश ही प्रकाश देख बादशाह को खबर दी. सुनकर बादशाह अत्यंत प्रसन्न हुवा और गुरुमहाराजपर विशेष श्रद्धाभक्ति रखने लगा.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नगरमें एकदा धर्मसागरपरपक्षिने लोकोंके आगै ऐसा कहाकि श्रीअभयदेव सूरिजी नवांगवृत्तिकार श्रीखरतरगच्छमें नहिं हुवा तब गुरु पाटण पधारके चोरासी गच्छीय सर्व आचार्य उपाध्याय-साधुवगेरेके समक्ष परपक्षियोंका पराजयकीया तब सर्वोने नवांग-वृत्तिकारक जयतिहुअण पंचाशकादि प्रकरण कर्त्ता श्रीअभयदेव सूरिजीखरतर गच्छमें भया ऐसा अंगीकार किया सर्वोने सहियां-करी और धर्मसागरके वनाये भये कुमतिकुद्दालादिग्रंथ अशुद्ध ठहराये, और श्रीफलोधिपार्श्वनाथजीके मंदिरमें परपक्षियोने (तप-गच्छीयोने) दरवज्जेपर ताला दिया तब आचार्यश्रीने मंत्रबलसे ताला उघाड दियाथा वाद एकदा मंत्री कर्मचंदके मुखसें श्रीगुरु माहा-राजकी प्रशंसा और महत्त्वपणा सुनके पातसाहने दर्शन करणेकों बोलाये वीनति कराइ तव श्रीगुरुवर्य लाहोरनगर पधारे अक-ब्बरको प्रतिबोधके सबदेशोंमें फुरमाण भेजाके पर्युषणादि अठाहि योंमे अमारि पालनकराया तथा खंभाततीर्थके पास समुद्रमे १ वरस पर्यंत मच्छोंकों अभय दान दिराया, और श्रीगुरु माहाराजका अतिशय देखके पातसाहने युगप्रधान पद दिया, याने इसवक्त जैनमें ऐसे आचार्ययुगप्रधान और नहिंसंभवे इसलिये यहयुगप्रधा-नहैइति उसी अवसरमेंहि श्रीअकब्बर पादसाहके आग्रहसैं श्रीगुरुने श्रीजिनसिंह सूरिजीकुं अपणे हाथसै आचार्यपद दीया तब अत्यंत प्रमुदित होके मंत्री कर्मचंदने बहोत द्रव्यखरचके महोत्सव करा उसमे नवगाव नवहाथी पांचसै घोडा ५०० और भूषण वस्त्रादि याचकोकों दिये इस प्रकारसे सवाक्रोड द्रव्य खरचके श्रीखरतर-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गच्छका बहुत महिमाउद्योत कीया तथा सं० १६५२ में श्रीगुरु महाराजने पंचनदी साधी उहांपांचपर मानभद्रयक्ष खोडियाखेत्र वालवगेरे देवोंको स्वाधीनकीये भूमंडलपर विचरते भव्यउपगार करते एकदा सं० १६६२में श्रीसलेमपातशाहनें श्रीगुरु माहाराजको विशेष गुणवान सुणके वोलाके अपणे सेवाकरता हुवा गुरुकुं विशेष आग्रहकरके रक्खे वाद गुर्जरदेशमें विहारकीया तब एकतप-गच्छीय यतिको अपनीस्त्रीके साथस्नेहकी एकांतमें वार्ताकरणावगेरें अनाचार देखके नाराजहोके कहा मेरे सब देशोमें जितने दर्शनि है उनुंकुं स्त्रीयांदेदेवो स्त्रीको नलेवे उसकुं देशसे बाहिर करणा तब डरे भये षटमतके सन्याशी वगेरे केइक समुद्रकुं उल्लंघके द्वीपांतरे गये केइ भूमीघरमें छिपके रहै कितनेक जहां तहां रहै वहां आप-त्तिपाइ तब श्रीजिन चंद्रसूरिजीमाहाराज पाटणसै विहारकर आगरा नगर आये बादसाह श्रीगुरुका दरसण करनेकों बहुत आदरसे बोलाए तब श्रीगुरुने बहोत चमत्कार बताके पहले जो दरसनियोंके वास्ते आज्ञादीथी वहहुकम पीच्छा फिरवादिया सर्वत्र फुरमाणा भेज-वाके यतिवगेरेको अपणे अपणे ठिकाणे पोहचाये सत्कार बादसा-हने करा इस प्रकारसै श्रीजिनशासनकी बहुत प्रकारसे उन्नतिक-रके विचरते भये, और श्रीगुरुके समयराज (सकलचंद) १ महि-मराज २ धर्मनिधान ३ रत्ननिधान ४ ज्ञानविमल ५ ये पांच पांडव जैसे इनोकों आदिलेके पच्चाणवें ९५ शिष्य भये.

ऐसे महाप्रभाविक युगप्रधानश्रीजिनचन्द्रसूरिजी महाराज, सर्वायु ७५ पचत्तर वर्षको पालकरके, अणशण आराधन पूर्वक

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समाधिसें कालधर्म प्राप्त होकर, संवत् १६७० आसोजवदि २ दूजकेदिन बेनातटमें (बीलाडामे) स्वर्ग प्राप्त भए, तिस वखतमें संवत् १६२१ भावहर्ष उपाध्यायसें भावहर्षीय खरतर शाखा निकली, यह सातमा गच्छ भेद भया, फेर इणोंके समय लुंपक श्रीजीवराजर्षिपूजका शिष्यकों कोइकारणसें लुंपकमतसें बाहिरकिया, तब तपागच्छीय श्रीविजयदानसूरिका वासक्षेपलेकर शिष्यभया, धर्मसागर इसनामसें प्रसिद्ध भया, वादमें परिश्रमादिकयोगसें संस्कृत प्राकृत पढके विद्वान भया, तब योग्यसमजके श्रीविजयदानसूरिजीनें वाचकपदस्थ किया, श्रीधर्मसागरगणि इसनामसें प्रसिद्धहोके, अलगस्वतंत्रविहार धर्मदेशनादिक करणेंलगे, इसतरे प्रवृत्तिकरतांथकां निशंकनिर्भयहोणेंसें जमालिआदिकके जैसा उत्सूत्रप्ररूपणाकरणे लगा उसका कारण ऐसा प्रथमभी लुंपकमतमें जबथा तब उहांबि जिद्दकरता हुवा एकान्त हठवादकदाग्रहकी प्रकृतिसै लुंपक सम्प्रदायसें बाहिरकीयाथा जाणाजावेहै वाद तपाविरुदालंकृत श्रीचित्रवालगच्छकी सम्प्रदाय मिली, तबतो बंदरथा और विच्छू खाया ऐसा भया, वाद क्रमसै श्रीगुरुकीकृपासे पदस्थादिकउच्चावस्थाकों प्राप्त होके, पूर्वकी स्वाभाविकप्रकृतिका क्रमक्रमसै असरभया उसलिये उत्सूत्रादिकका व्यसनभया, इसकारणसें श्रीविजयदानसूरिजीके, और परगच्छादिकके अप्रीतिके भाजन होगये, और प्रथम बहुतवार मिच्छामिदुक्कड आलोयणा प्रायश्चित्त देतेरहे, ऐसे करतां जब उत्सूत्रकंदकुद्दाल, कुमतिकंदकुद्दाल, नामें नवीन ग्रन्थबनाया, इसतरे बहुत प्रकारसें धर्मसागरका मदोद्धतपणा उस्सें

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फेलति हूइ उत्सूत्र प्ररूपणादिकविशेषपरिणति जाणके मरुभूमिमेंरहे हूवे युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरिजी विहारक्रमसें विचरते हूवे गुर्जर देश अणहिल्लपुरपाटण नगरमें पधारे, तब पूर्वोक्त प्रकारसें, धर्मसागरगणिका दियाहूवा, कूडाकलंक, उत्सूत्रादिकदोष देखके, सभासमक्ष शास्त्रार्थ धर्मसागरगणिसें किया, और उसको शास्त्रार्थमें जीता, निर्णयार्थ अन्तिमसभामे धर्मसागरकों बुलाया, तब आया नहिं, जब धर्मसागर निर्णयार्थ अंतिम सभामें नहिं आया, तब सर्व गच्छवासी और मतवासीयोंनें, सहीकरीकि शास्त्रदेखतां श्रीजिनचन्द्रसूरिजीका कहेनासत्यहै, और उ० धर्मसागरगणिकाकहेना झूठाहै, इसतरे निर्णयहूवा सहीपट्टक समाचारीशतकग्रन्थमें और जेशलमेरादिज्ञानभंडारोंमे हाल मोजूदहै, वादमें इसतरेका निर्णयहूवा देखके, तपगच्छाधीश श्रीविजयदानसूरिजीयें पण अपणें गच्छकी सुस्थितप्ररूपणादिक मर्यादा रखणेंकेवास्ते, उत्सूत्रकंदकुद्दाल कुमतिकंदकुद्दालादिकग्रन्थ जलशरण किये, और विजयदानसूरिजीनें उत्सूत्रवादी निन्हवजाणके, धर्मसागरकों अपणें गच्छबाहिरकिया, प्रथम बहुतवेर नर्म गर्म होके, खानगी आचार्यश्रीनें इनकों समजायाथा, परन्तु नहिं माना, और उद्धताईसें उत्सूत्रादि प्रवृत्ति करते रहे, जिस्का आखिरमें यह परिणाम आया, कि गच्छबाहिर होनापडा, और तीनपीढीतक गच्छबाहिररहै, अर्थात् विजयदान सूरिजी १ विजयहीरसूरिजी २ विजयसेनसूरि ३ तक गच्छ बाहिर रहै, फेरखरतरगच्छमे प्रवेश करणेंकेलिये, नर्माइवगेरा उपाय बहुतसे किये, परन्तु खरतरगच्छवालोंनें अपनें गच्छमे लिया नहिं,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जब किसी गच्छवासीयोंनें उनका संग्रह नहिं किया, तब सर्व गच्छमतवासीयोंके ऊपर विशेषतः नाराज होकर, खंडननिमित्त प्रच्छन्नपणें, प्रवचनपरीक्षा, अपरनाम कुपक्षकोशिकादित्य, कल्पकिरणावली, सर्वज्ञसिद्धिशतकादिक ग्रन्थ बनाये, और लिखवाकर प्रच्छन्नपणेंरखे, और धीरेधीरे जीर्ण ग्रन्थोंकी भान्तिसें ज्ञान भंडारोमें प्रवेश करादिया तब तपगच्छनायक श्रीविजयदानसूरि आदिकनें उत्सूत्र निषेधकरणेके लिये सातबोल, नवबोल १२ बोल, १३ बोलादिक करके, सुस्थित गच्छमर्यादा करी, अर्थात् धर्मसागरादिकके बनाये हूवे ग्रन्थोंसें उद्धृतार्थ ग्रन्थोंकरके हमारे गच्छकी मर्यादा न बिगडे, समाचारी प्ररूपणा वगेरा स्थिति बराबर साक्षर प्रमाणसें बनीरहे, जिनाज्ञावत् सर्वगच्छोंके साथ संपवनारहै, कभी किसीके साथ विरोध या विरोधका बीज न उत्पन्न होवे, सरलता पूर्वक सदाकाल धर्म आराधाजावे, इसतरहकी दीर्घदृष्टिसें ऊपरकहे बोलोंका फुरमाण किया, और इसतरहकी गच्छ व्यवस्था करके निश्चिंतभये, यह मर्यादा श्रीविजयसेनसूरिजीतक खास करके रही, बादमें श्रीविजयसेनसूरिजीके पट्टधर शिष्य श्रीविजयदेवसूरिजीनें निन्हवधर्मसागरजीका पक्ष ग्रहणकिया, गुरुआज्ञालोपक भये, मामा भाणेंजके संबन्धसें, तिसकारणसें एकहि तपागच्छके आणन्दसूर, देवसूर, सागर, वह तीन टूकडे होगये, और अव्यवस्थित प्ररूपणादिक गच्छमर्यादा भई और तपोटमतकी विशेष उत्पत्ति भई, वड, चित्रवाल तपागच्छका शुद्ध प्ररूपणादिक गच्छ मर्यादा आगमानुसार गुरुपरंपरायातमार्ग नष्टप्राय भया, और तपोटमति-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यांकी कालप्रभावसें विशेषवृद्धिभइ, और इससमयभी तपा-गच्छकी तो विशेष प्रवृत्ति नहिं देखीजावेहै, किन्तु तपोटमतियांकी वा ऋषिमतियांकी विशेष प्रवृत्ति वा वृद्धि देखीजावेहै, यह कालहीका विशेषतासें प्रभाव समजाजावेहै, जिनाज्ञानुकूल शुद्ध प्ररूपक गच्छ-वासी मुनितो अल्पहिहै, अविच्छिन्नसम्प्रदाय तथा तपगछके शुद्ध प्ररूपक पुरुषोंके लिखित इतिहासादिकसें स्पष्ट मालूम होवेहै, कि तत्कालाश्रित तपागच्छवासीयोंके और देवसूर धर्मसागरा-श्रिततपोटमतियोंके वा ऋषिमतियोंके परस्पर प्ररूपणा, सिद्धान्तीय समाचारीमे वा आचरित समाचार्यादिकमें बहुतहि भेदहै इसके साक्षिक श्रीयशोविजयोपाध्यायसंग्रहीत धर्मसागराश्रित आ-गमविरुद्धअष्टोत्तरशतबोलसंग्रह १ खरतरतपाआगमाचरणाश्रित षष्टिबोलसंग्रह २ श्रीरत्नचन्द्रगणिसंग्रहीत कुमतिविषाहिजांगुलि ३ श्रीसोहम्मकुलरत्नपट्टावलिरास श्रीदीपविजयकविरचितहै ४ श्रीदर्शनविजयकविरचित श्रीविजयतिलकसूरिरास ५ सागर विजयका त्रिखवाद ६ उपाधिमतसज्झाय वगेरा अनेक ग्रन्थ इस-विषयके साखीहैं, और इसका तत्वार्थ ये है किश्रीविजयतिलक सूरि-जीतत्पट्टे श्रीविजयआनन्दसूरिजीसें तपागच्छकी संप्रदाय चालुरहि, वर्त्तमानमे यह खास तपागच्छकी संप्रदायतो अल्पहि देखिजावेहै, और धर्मसागरका प्ररूपणादिक पक्षग्रहणकरणेंसें तथा गुर्वाज्ञा लोपणेसें, गच्छकी मर्यादा भंगकरणेंसें, श्रीधर्मसागराश्रित श्रीविज-यदेवसूरिसें, नवीन तपोटमत उत्पन्न भया, इसमतकी प्ररूपणादिक पहिले देखायाहिहै, इसमतके अनेक नामहै, तपोटमत, ऋषिमत उ-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

षिष्ट चांडालिकमत, तपोष्ट्रिकमत, उपाधिमत, गुर्वाज्ञालोपक, गच्छ-मर्यादालोपक, उत्सूत्रमत, दैवसूरमत, सागरमत इत्यादि अनेक नामहै यहमत संवत् १६०० आसरेमें उत्पन्नहूवाहै, इसमतके उत्पादक प्रथम धर्मसागरजी भये बाद देवसूरिजीसहायकभयेहै, इसमतकेसाथ सिद्धान्तीय पूर्वसूरिप्रणीत पंचांगी अनुसारिविधिप्ररूपक खरतरोंका सदाही विषमवाद देखाजावे है, और पंचमआरारूप दुःखमाकालके प्रभावसें ढुंढकतेरेपंथी तपोटवगेरोंकी इसमे जादा तर प्रवृत्ति देखिजावेहै, शुद्धप्ररूपक सुविहित गच्छवासी मुनितो अल्प देखेजावेंहैं, आगमाचरणा शुद्ध प्ररूपक सुविहित गच्छवासी सबहिमुनियोंके साथ खरतर गच्छ खरतर मुनियोंका किसीतरेका विसंवाद विरोध भाव वगेरा जराभी नहिंहै, तो श्रीउद्योतन सूरिजीके शिष्य सर्वदेवसूरिजी, या पद्मचन्द्रसूरिजीके संतानीय तपागच्छीय मुनियोंके साथ क्या असमंजस होनेका संभवहै, अपितु कदापि नहिं, परन्तुसत्भावकोंतो सत् पणें कहणाहि होवेहै, असत्प्ररूपणातो करि जावेनहिं, यदि कदाचित् छद्मस्थपणेंसें होभीजावेतो आगमाचरणादिक पुष्ट प्रमाणोंसें भिन्नभिन्न गच्छके सुविहित गीतार्थोंके द्वारा अक्षर प्रमाण अर्थादिक तपासकर मिटाणा चाहेतो मिटभीजावे, परन्तु ममत्वभावसें या पक्षपातसें उसीवातको पकडके रक्खे खींचाकरेतो सदाही विसंवादादिक रहेणेंका संभवहै, उणोंके कर्मगतिके प्रभावसें, ऐसा होणा ज्ञानिमहाराज देखाहै तो होवे उसका क्या कियाजावे और देखोकि श्रीविजयतिलकसूरिजीके रासके आदिमें निरीक्षण तथा राससार दियाहै, जिसमें उत्सूत्रप्ररूपणा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अपवादादिकका बहुतसा बचाव कियाहै, गुर्वाज्ञालोप, गच्छमर्यादा भंगादिककाभी बचाव कियाहै, परन्तु ऐसे कुत्सितपुरुषोंका अपवाद उत्सूत्रप्ररूपणादिकका ढकणा. या पक्षपात करणा क्याबुद्धिमान् आत्महितैषीका कामहै, अपितु कदापि नहिं, और विजयप्रशस्तिसारादिकमें लेखकने जो खंडण दियाहै प्रायें मिथ्याहीहै, कारणके पूर्वोक्त कुत्सित पुरुषोंने तथातदाश्रितपुरुषोंनें श्रीमान् विजयदानसूरिजी, श्रीमान् विजयहीरसूरिजी श्रीमान् विजयसेन सूरिजीके नामसें या गुणवर्णन या चरित्रवर्णन या उत्सूत्रआगमाचरणाविरुद्ध पक्षपोषणके मिससें, यामहिमावर्णन, या पक्षपात स्थित्यादिक पोषणेके लिये, उण महान् पुरुषोंका नाम शास्त्रसंशोधन रचनास्वीकारजीर्णोंधृतादिमिसके द्वारा अपना पक्ष याने व्यसन पोषण कियाहै, अर्थात्, प्रश्नोत्तर वृत्ति प्रकरण चरित्र काव्य रास बोलादिक नवीनबनायेगये, और अपनी तथा नवीन बनायेहुवे ग्रन्थोंकी प्रमाणिकता प्रतिष्ठा प्राप्तकरनेकेलिये, उनमहान् पुरुषोंके परोक्षकालमें या विद्यमानकालमें यथासंभव संवत्सरादि युक्तकर श्रीविजयदानसूरिजी श्रीविजयहीरसूरिजी श्रीविजयसेनसूरिजी आज्ञांकितनाम शास्त्रसंशोधन रचना स्वीकारजीर्णग्रंथोद्धृतादि विशेषण देके, प्रच्छन्न याने गुप्तपणें संग्रहकरके, रख्खे और मायावृत्तिसें धीरे धीरे सर्वत्र जीर्णज्ञानभंडारादिकमें उत्सूत्रमतपोषक ग्रन्थादिकका प्रचार करदिया बादमें कालपायके पुष्ट होगये, और पूर्वोक्त प्रकारके ग्रन्थोंका आधार लेके, फिर विशेषपणें उत्सूत्र प्ररूपणादिक करनेलगे, तबसें निषेधविधानरूपविचार खरतरतपोटमतियांका स

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दाहीके लिये होगया, सो अभीतक चालुहै, बडाहि खेदजनकहैकि, नजाणें इस महान् कदाग्रहका कब अंत आवेगा यहतो ज्ञानी महाराजहिजाणेहै और तपागच्छकी आगमाचरणायुक्त शुद्ध समाचारीकों अस्तव्यस्तकरनेवाले खासतपोटमतिहिहै, और इस समय उनहि तपोटमतियोंने खास तपागच्छके नामका ठेका लेरक्खाहै, और असली खरतरतपांका कोइ विरोध नहींहै, संवत् तेरेसैमें श्राद्ध विधिकर्त्तानें आंचलके देखादेखीसें सामायिक विधिमें प्रथम इरियावही लिखदीवीहै वादमें संवत् १६१३में धर्मसागरआश्रित अनेक विषमवाद प्ररूपणा भइहै, जैसेकि अभयदेवसूरि नवांगवृत्ति कर्त्ता खरतरगच्छमे नहिं हूवे १ पर्वतिथी घटेवधे नहिं २ अधिक मासकी गिणती नहिं ३ अधिक मासमे पर्यूषण पर्व हूवे नहिं ४ चतुर्दशीका क्षय होणेसें १३ का क्षय करणा ५ पर्वतिथीकी वृद्धि होणेसे पहली ६० घडी तिथीको छोडके। दूसरीमें व्रत पच्चक्खाण उपवासादिकरणा ६ पर्व तिथीकी वृद्धि होणेसें आसपासकी तिथी, अपर्वतिथी, दोकरणा ७ पर्वतिथी का क्षय होणेसें पहिलेकी अपर्व तिथीका क्षय करणा ८ तरुणस्त्री मूलबिंबकी पूजाकरे अच्छेरा कल्याणक नहिं ९ गर्भापहार गर्भसंक्रमण कल्याणक नहिं १० सामायिकमें प्रथम इरियावही करणा ११ इरियावही करके प्रतिदिन सामायिककापारणा १२ अपर्वतिथीमें पौषधचतुर्विध समायिक सहित होवे १३ पौषधमें पांचवार देववंदन करणा १४ तिविहार पच्चक्खाणमें कच्चा जलपानकरण १५ सांगरीकादि विदल नहिं १६ आचाम्लमें दोद्रव्यकी संख्या नहिं, लवणादि अनेक द्रव्योंका

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ग्रहण होवे ऐसी प्ररूपणा १७ दुविहार एकाशणो होवे नहिं १८ दुविहारका पच्चक्खाण करके कच्चे जल सिवाय अनेकस्वादिमद्र-व्योंका रात्रिमें विनाकारण ग्रहणकरणा १९ केवलीके शरीरसें जीवहिंसा होवे नहिं २० आंबिलका पच्चक्खाणकरके छासादिकका ग्रहण करणा २१ निवीका पच्चक्खाण करके उत्कृष्ट निवीआयतोंका ग्रहणकरणा २२ दुर्लभराजसभासमक्ष १०८० आसरेमें अणहि-ल्लपाटणमें श्रीजिनेश्वरसूरिजीको खरतर बिरुद नहिं मिला २३, १२०४ मे खरतर हूवे २४ इत्यादि आगमाचरणाश्रित अनेक प्रकारका विसंवाद उत्सूत्रप्ररूपणासें भयाहै कहांतक लिखें, इस वि-षयका उत्थान उत्सूत्रबोलादिककी सूचना संख्या प्रथमहि करीहै असलीतपगच्छकी संप्रदायतो प्राये नष्टप्रायहि देखी जावेहै, यानें अल्पसंभवैं और खरतरविरुदधारक संप्रदायका तथा तपाविरु-दधारक संप्रदायका आपसमें शास्त्रोंकी एकसम्मति परम स्नेहाहिं देखाजावेहै इसीतरे शेष रहे मूल संप्रदायतो इसीतरे संभवेहै जेसैकि एक सामायिक विषयि दृष्टान्त है श्राद्ध दिनकृत्य वृत्ति १८०००में श्रीमद्देवेन्द्रसूरिजी, योगशास्त्र स्वोपज्ञवृत्ति १२००० में श्रीमद्-हेमचन्द्रसूरिजी नवपद प्रकरण वृत्तिमें श्रीमद्देवगुप्तसूरिजी नवांग-वृत्तिकर्त्ता श्रीअभयदेवसूरिजी पंचाशक वृत्तिमे, धर्मविधिप्रकरण वृत्तिमें श्रीमद्यशोदेवसूरिजी वगेरा भिन्न भिन्न गच्छोद्भवाचार्य महाराजसामायिक उच्चखांके वादमे इरियावही करणाकहेहै, इसी-तरे मूलसिद्धान्तभी है, इसलिये सबहीकी एकसम्मत्ति देखीजावे है एक गुरु एकसमाचारी एकशद्दस सिद्धान्तमन्तव्यता एक संवत्सरी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

होनेपर हि एक्यता कहिजावेहै एकशद्धस प्ररूपणादि होनेपर क्या विसंवादका कारणहै, सो मालूम होना चाहिये और मैत्री मध्यस्थ भावनामें होकर कहताहूं सत्संप्रदायपूर्वक सत्यासत्यका विचार करणा चाहिये गच्छादिककी अशुद्ध प्रवृत्ति प्ररूपणा कदाग्रहका त्यागकर, गच्छोंकी मर्यादा शुद्धाचरणा करणी चाहिये, यहहि गच्छोंकी भक्ति बहुमानकहेलाता है, इसीतरे करणा यह खास गच्छवासीयोंका कर्त्तव्यहै, इसीतरे करणेवाले श्रीउद्योतन सूरिजीके संतानीय चतुरशीतिगच्छोंके गुणविशिष्ट शुद्ध प्ररूपक सबहि गच्छवासी आचार्यमहाराजोंको मेरा नमस्कारहै, परन्तु अशुद्ध प्ररूपणा करनेवाले और अशुद्ध प्ररूपणाकों सर्वत्र फेलाणेवाले तपोटमतियांसें तो सदाही दूर रहेणा श्रेयकारीहै, इत्याशास्त्रहे और इसविषयमें बोलादिकभी इसतरे है, गृहस्थ प्रतिष्ठितचैत्य वांदवा योग्यनहिं १ कदाच साधु प्रतिष्ठित चैत्य होय तो वांदीशकाय २ पचाश वर्ष पहिलां पंन्यासपद आपवो नहिं ३ पट्टधराचार्यनी आज्ञामां चतुर्विधसंघ रहे ४ पट्टधराचार्यनी आज्ञाविना कोईभी विशेष धर्मकृत्य थइ शके नहिं ५ गीतार्थाचार्य विना चउकरणी अथवा अष्टकरणी भवालोयणादिक देइ शके नहिं ६ प्रतिष्ठा अंजनशलाकादिक आचार्यकरे ७ सिद्धान्ताध्ययन योगोपधान प्रायश्चित्तादिक आचार्यादि गीतार्थकरावे ८ मिथ्यादृष्टि गृहस्थ श्रमणोपाशक संन्यास्यादिकथी भणवो नहिं ९ स्वस्ववर्गमां स्त्रीपुरुषे धर्म देशनाकरवी १० अविनीत विगईप्रतिबद्धउत्कटकषायी अगीतार्थादिकनें गच्छनो भार या संघाडानो भार आपवो नहिं ११ आगमाचरणा-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विरुद्ध प्ररूपकनें गच्छबाहिर करवो १२ सूर्यास्तपच्छी जिनमंदिर मां जावो नहिं १३ चतुर्विध श्रीसंघनी सभामां मुख्यपट्टधराचार्य धर्मदेशना करे १४ सूर्यास्तपच्छी साधुने उपासरेमां स्त्रीयें प्रवेशकरवो नहिं १५ सूर्यास्त पच्छी साधवीनें उपासरेमां पुरुषें प्रवेशकरवो नहिं १६ वधारे गृहस्थनो परिचय करवो नहिं १७ मिथ्यादृष्टि-गृहस्थ संन्यासी पार्श्वस्थादिकथी परिचय करवो नहिं १८ पचाश दिवसे संवत्सरी प्रतिक्रमण करवो १९ श्रीवीरनो गर्भापहार कल्याणकरूप मानवो २० अछेरो कल्याणकरूप न होवे एम कहेवो नहिं २१ आवश्यकमते सामायिकउचर्यां पछी इरियावही कही छे ते मानवी सही छे २२ पर पक्षीनें माठुं लागे एवो वचन बोलवो नहिं २३ पर पक्षी पर पक्षना स्तवनस्तुत्यादिक कहे तो ना कहेवी नहिं २४ आगमाचरणाविरुद्ध प्ररूपणा करवी नहिं २५ चउरासीगछमां आगमाचरणा अनुसार प्ररूपणानो निषेध करवो नहिं २६ तपाखरतरना प्ररूपणामां सिद्धान्ताधारे भेद कहेवो नहिं मानवो नहिं २७ आगम, सर्व आचरणा, देश आचरणा, अविछिन्न संप्रदाय, अविछिन्न संप्रदायसें आगतसकलसिद्धान्त पंचांगी सहित सर्व गछवासी प्रमाण करेहै तेहने विसंवादी कहेवा नहिं २८ गछनी गुरुनी सिद्धान्त सम्मत मर्यादा भंग करवी नहिं २९ उत्सूत्रकंदकुद्दालादिक जलसरण कियाहै अप्रमाणभूत अर्थ जे कोइ पोताना रचेला ग्रन्थमां लावसे तेहने गछनायक मोटो ठबको आपसे ते ग्रन्थ अप्रमाणभूत मानवामां आवसे, गीतार्थ गछ नायकने शोधवाथी पछी गछमां ते ग्रन्थनी भणवा भणावानी प्रवृत्ति करवी ३० संविग्न भव-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भीरु ब्रह्मचर्यनिष्ठ शुद्ध प्ररूपकनें गीतार्थादिकनें गछादिकनो भार आपवो ३१ इत्यादिक अनेक शास्त्राधारे गछमर्यादा संरक्षक बोल परंपरा देखीजावेहै, इसलिये शास्त्राधारे खरतरतपा गछका विरोध नहिं संभवेंहै, यह तोतपोटमत का विसंवाद संभवेहै, इसलिये खरतरतपा परमस्नेही आपसमे संभवेहै, यहांपर कोइ कहेता हैं, कि जैसा आगम आचरणा संबंधि तपोट लुंपक ढुंढक–बाईस टोला तेरापंथी वगेराका विसंवाद है, इसीतरे उपकेशगछ वडगछ चित्रवालगछ नागेन्द्रगछतपागछ वगेरेका खरतर गछके साथ प्ररूपणादिविसंवाद विरोधादिक कुछनकुछ किसीतरेका जरूरहि होना चाहिये अन्यथा अलग अलग गछोंका होना कैसा संभवे, तो फेरतपोटमत वा ऋषिमतियांकाहि विरोधविसंवादादिकहै, उद्योतन सूरि संतानीय मूलगछ तत्सप्रदायका नहिं, यह कैसा संभवे, सत्यम्, हे देवानुप्रिय यह अनुपासित गुरुका वचनहै, अथवा यथार्थ अज्ञात सिद्धान्तार्थ रहस्यहैं उनोंका यह कहेनाहै, औरोंका नहिं, क्युंकि इस विषयकी सूचनाऊपरहि करीहै भिन्नभिन्न गछोंका नाम और पाठ परंपरा होणेसें केवल नाममात्रहि भेदहै, परमार्थसें तो किसी तरेका भेद नहिंहै, और शास्त्रधार वगेरासेंभि कोइ भेद मालुम नहिं होवेहै, इसलिये हमारे श्रीउद्योतनसूरिजीके संप्रदायियोंका आपसमें प्रायें किसीतरेका विरोध विसंवाद ईर्षा मत्सर उत्सूत्र प्ररूपणाहीनाधिक प्ररूपणादि भेद नहिंहै, तो हमारे आपसमें भेदादिकका कारणहि कौनसाहै, सो बतलावें, जिस्सें हमारे आपसमें विरोध विसंवादादिक होवे, और हमनेश्रीसुधर्मोद्योतनसूरि-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संबंधि सर्वगछविषयिएक्यतापरकसामायिकका दृष्टान्त प्रथम दियाहिहै, इसीतरे शेष विषयमेभी समजलेना चाहिये इसीतरे होनेसें सर्व दुरगुणोंका अभाव और धर्महानिका नाश, वृद्धिकासमयहै सर्वगछोंकी एक्यता होणेसें श्रीवीरशासनोन्नति अनेक प्राणियोंको प्रतिबोध समय होवे, सबहि एक्यतासें परमस्नेहका समय देखाजावेहै, और सबहि सत्यहै सबहिजिनाज्ञाके आराधकहैं, इसीतरे वर्त्तना कल्याणकारीहै, और किसी एकादि व्यक्तिगत ईर्षादि विकारसें आगम आचरणाविरुद्ध उत्सूत्रादि दोषोंका गच्छनायकादि स्वीकार नहिं करे वह गछ दूषित न होवे, उसगच्छकों ईर्षादिकसें दूषित कहे वही दूषितहै, और आगम आचरणादि पुष्टप्रमाणाक्षर देखाणे पर वा उपलब्ध होनेपर स्वीकार न करे वहही सदोषहै, उसका पक्षकरे वहभि सदोषहै, परन्तु गच्छादि दूषित नहिं, पुष्टप्रमाणाक्षरादिकसें सत्यप्ररूपणादिक कों दूषित कहे वह सदोषहै 'जेसे तपोटादि' ऐसे और स्पष्टपुष्टससंबन्धपूर्वक प्रमाणाक्षर सहित सत्यवक्ता दूषित नहिं, और इसीतरे चोरासी वगेरेका कहेणा प्रमाण होवेहै' और मूलसूत्र निर्युक्ति टीका भाष्य चूर्णी, अविछिन्न गुरुपरम्परा, और श्रुतवेष प्ररूपणादि आये हूवे प्रमाणभूत होवेहैं, इसमर्यादासें विपरीत प्रमाण न होवे, और इहांपर विवेचन बहुतसा संभवेहै, तथापि फिर देखाजावेगा, और इहांपर तपोटादिवावदूक कहेहै, कि अहो सत्यपक्षका समुदाय कितनाहै देखो, और हमारा समुदाय कितना बडाहै फेर इसपक्षकों छोडदेवें तो यह सबहि तुमारा होजावें तो फेर व्यर्थ इतना सत्यका क्यों आग्रह करेहैं उत्तर इसीतरेहै

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तावकीनं वचनं कुर्मः उत नु तीर्थंकृतां,
यदनायतनं सूत्रे, भणितं तद्ब्रूमहे नियतं ॥ १ ॥
उत्सूत्रभाषणात् पुनरनन्तसंसारकारणात् बहुशः
किं लोके न त्वग्रोगिणो भवेत्, प्रचुरमक्षिकासंगः ॥ २॥

अर्थ—हम तुमारा वचन अंगीकारकरें या श्रीतीर्थंकरोंका वचन अंगीकारकरें, अनायतनादि शब्दोंका जोअर्थ सूत्रमें कहाहै वोहि अर्थ निश्चय पूर्वक कहेंगे, उत्सूत्र भाषण करणेंसें अनेकवार अनन्तसंसार परिभ्रमण करणाहोवेहै, लोकमे क्या चर्मरोगी पुरुषोंके बहुतमाखीयोंका संग कल्याणकारी होवेहै, नहिं रोगवृद्धिकाहि कारण होवेहै२

मैवं मंस्था बहुपरिकरोजनो जगति पूज्यतां याति,
येन बहुतनययुक्ताऽपि शूकरी गूथमश्नाति ॥ १ ॥

अर्थ—इसतरे नहिं मानना चाहियेके बहुत परिवारवाला पुरुषही जगतमें पूजने योग्यहोवे और पूजा जावेहै, कारणके घणे बच्चांवाली भुंडणी शूवरणी विष्टाहि भक्षण करेहै ॥ १ ॥ तपोटादिमतीयोकों यह वचन कानमें कडवा और दुःखदाई लगे, तोवि विचारके भले इसीतरे होवे परन्तु गुरुजनने तो सत्यहि कहेणा चाहिये, तथाहि

रूसउ वा परोमा वा विसंवा परियत्तउ,
भासिअव्वाहि जा भासा, सपक्खगुणकारिया॥१॥

अर्थ—दूसरो कोइ (परपक्षी वा स्वपक्षी) नाराज होवे, अथवा न होवे अथवा विषरूप होवे तो पण अबाधित भाषा बोलणी चाहिये औरने वा भाषा स्वपक्ष याने अपणेंपक्षकीतो गुणकारीहि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

होवे, इसतरे सिद्धान्तानुसारी वचन होणेसें कितनेक विवेकी प्राणियोंकोतो अवश्य रुचिकरहि होवेगा, इत्यादि संक्षिप्त प्रकारेण तपोट मतं निरूपतम् प्रसंगतः ॥ ६१ ॥

तत्पट्टे जिनसिंहसूरिसुगुरुर्जातस्ततो धीमतां ।
मान्यः श्रीजिनराजसूरिमुनिपस्तत्पट्टसूर्योपमः ॥
श्रीमच्छ्रीजिनरत्नसूरिगणभृत् श्रीजैनचन्द्रस्ततः ।
पूज्यः श्रीजिनसौख्यसूरिरभवद्विद्यावतामुत्तमः ॥ ८ ॥

श्रीजिनचन्द्रसूरिपट्टे ६२ मा श्रीजिनसिंहसूरिजी भय, तिके गणधर चोपडा गोत्रीय, साह चांपसी पिता, चतुरंगी देवी माता, संवत् १६१५ मिगशरसुदि १५ पूर्णमासीकेदिन खेतासर गाममें जन्म, मानसिंह मूलनाम, संवत् १६२३ मिगशरवदि ५ पंचमीके दिन वीकानेरमें दीक्षा, १६४० माघ सुदि ५ पंचमीके दिन जेशलमेरमें वाचक पद संवत् १६४९फागुण सुदि २ दूजके दिन लाहोर नगरमें, वीकानेर रहनेंवाला वछावत मंत्रीश्वर कर्मचन्द्रनें सवाक्रोड द्रव्य खरचके वादसाहके विशेष आग्रहसै श्रीजिनचंदसूरिजीनेपदप्रदानकीया-उस आचार्य पदका उछव किया, संवत् १६७०, वेनातट (वीलाडा भावी) में विशेष विधिसै सूरिपद, संवत् १६७४, पोषवदि १३ तेरसके दिन मेडता नगरमें स्वर्ग गए ॥६२॥ तत्पट्टे६३ मा श्रीजिनराज सूरिजी भए, तिके बोथरा गोत्रीय साह धर्मसीपिता, धारलदेवी माता, संवत् १६४७, वैशाख सुदि ७ सातमके दिन जन्म, संवत् १६५६, मिगशिर सुदि ३ तीजके दिन वीकानरमें दीक्षा, राजसमुद्र दीक्षाकानाम, संवत्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१६६० आसाउलि पुरमें श्रीजिनचन्द्रसूरियें वाचकपद दीया, संवत् १६७४, फागुण सुदि ७ सातमके दिन मेडता नगरमें चोपडा गोत्रीय, साह आसकरणनें महोछवकिया, सूरिपदकों प्राप्त भए, श्रीजिनराजसूरि नाम हुवा, फेर श्रीजिनराजसूरिजी, लोद्रवपुर पत्तनके विषे श्रीजेशलमेरनिवासी, भणशालीथारूसाहनें जीर्णोद्धार कराया श्रीचिंतामणि पार्श्वनाथ वगेरे प्रतिमा ओर ६ चैत्यकी १६७५ मिगसर सुदि १२ को ओर १६९३ मे प्रतिष्ठा करी, तथा संवत् १६७५, गुजराती वैशाख सुदि १३ त्रयोदशी शुक्रवारके दिन श्रीराजनगरनिवासी पोरवालज्ञातीय संघपति सदा सोमजीका पुत्र रूपजीका परंपरागतनें बनवाया, श्रीशत्रुंजय ऊपर चतुर्मुखदेवालयमें श्रीऋषभादि चोमुखजिनकों आदिलेके (५०१) पांचसे एक प्रतिमाकी प्रतिष्ठा करी, तथा फेर भानुवड ग्रामके विषे साह चांपसीका बनाया हुवा देवघरमंडन अमृतश्रावी अमीझरा श्रीपार्श्वनाथ प्रमुख ८० अशीति बिंबोकी प्रतिष्ठा करी, तथा मेडता नगरमें गणधर चोपडा गोत्रीय संघपति श्रीआशकरण साहनें करवाया श्रीशान्तिनाथस्वामीके चैत्यकी प्रतिष्ठा करी, एकदा राजनरमे व्याख्यान वांचते थे तब जेसलमेरमे थाहरुसाभणसाली-कालकरके देवहोके वांदणेकों आया अदृश्यरूपसै, आचार्यने धर्मलाभ दिया इसतरेसें राजनगरादि अनेक नगरोंके विषे श्रीजिनचैत्योंकी प्रतिष्ठा करी, इसमाफक श्रीजिनशासनोन्नतिकारक, अंबिकाप्रदत्तवरधारक, युगवरपदभृत् तथा घंघाणी नगरमें चिरकालकी जमीनमें रही प्रतिमाकों प्रसस्तीका अक्षर देखके प्रगटकारक, इत्यादि अनेक प्रकारसें सद्धर्मोद्योतकर्त्ता, महाप्रतापी, समस्ततर्क, व्याकरण, छंद,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अलंकार, कोश, काव्यादिक, विविध शास्त्रपारीण, नैषधकाव्यपर, जैनराजीटीका प्रमुख, अनेक ग्रन्थरचना करणेवाले, श्रीबृहत् खरतरगच्छनायक श्रीजिनराजसूरि संवत् १६९९ आषाढ सुदि ९ नवमीके दिन पाटणमें स्वर्ग गए ॥ इनोंकेवारे संवत् १६८६, जिनसागर सूरिसें लघु आचार्य खरतरशाखा निकली, यह ८ मा गच्छभेद भया, ६३ तत्पट्टे ६४ मा श्रीजिनरत्नसूरिजी भए, तिके सेरूणा गाम निवासी लूणीया गोत्रीय, साह तिलोकसी पिता, तारादेवी माता, रूपचन्द्र मूलनाम, निर्मलवैराग्यप्राप्तहोकर मातासहित दीक्षा ग्रहणकरी, फेर संवत् १६९९ आषाढ सुदि ७ सातमके दिन श्रीजिनराजसूरिजी महाराजनें स्वहस्तसें सूरिमंत्रदिया, सूरिपद प्राप्त होकर, फेर उत्कृष्ट शुद्ध चारित्र पात्र चूडामणि युगवर भये, और श्रीजिनरत्नसूरिजी संवत् १७११ श्रावण बदि ७ सातमके दिन आगरा नगरमें स्वर्ग गए ॥ ६४ ॥ संवत् १७०० में उपाध्याय श्रीरंगविजय गणिसें, रंगविजयखरतर शाखा निकली, यह ९ मा गच्छ भेदभया, फेर तिस वखतमें इसीहि शाखामांयसें, श्रीसारउपाध्यायसें, श्रीसारीय खरतरशाखा निकली, यह १० मा गच्छभेद भया ॥ तत्पट्टे ६५ मा श्रीजिनचन्द्रसूरिजी भए, तिके गणधरचोपडा गोत्रीय, साह सहसकरण पिता, सुपियारदेवी माता, हेमराज मूलनाम, हर्षलाभ दीक्षानाम, संवत् १७११ भाद्रवा सुदि १० दशमीके दिन, श्रीराजनगरमें, नाहटा गोत्रीय साह जयमल्ल तेजसी, माता–कस्तूरबाईनें आचार्य पदका महोछव किया, पीछे श्रीगुरुमहाराज योधपुरवासी साह मनोहरदासनें निकाला संघके साथ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीशत्रुंजयकी यात्राकरी, तथा मंडोवर नगरमें संघपति साह मनोहरदासनें बनवाया, चैत्य शृंगार श्रीऋषभादि २४ चौवीस बिंबोंकी प्रतिष्ठा करी, इसमाफक अनेक देशोंमें विहारकरनेंवाले, सर्वसिद्धान्तपारगामी युगवरसम श्रीजिनचन्द्रसूरिजी अणशण आराधना समाधिपूर्वक शुभध्यानसें संवत् १७६३, श्रीसूरत बंदरमें स्वर्ग गए ॥ * ॥ इनोंकेवारे लुंपक मतके अन्दरसें ढुंढक मत प्रचलित भया, इस मूर्तिउत्थापक द्रव्य भाव श्रीजिनपूजाका द्वेषी उत्सूत्र प्ररूपक मतकी किंचित्संक्षिप्त उत्पत्तिदर्शाताहूं, सूरत नगरमें एक वोहरा वीरजी नामें दशाश्रीमाली भया, उसके फूलां नामें बालविधवा बेटीथी, उसनें लवजी नामें एक पुत्रकों गोदलिया, सोलुंपकोंके उपासरे पढनेंकों जाताथा, लुंपकोंकी संगतसें वैराग्य पायके वजरंगजीलोंकेपासे दिक्षालीवी, दो वर्षपीछे गुरुकों कहनें लगाकि शास्त्रमुजब आचार क्युं नहिं पालतेहो, गुरूबोले इस कालमें उत्कृष्ट दया नहिं होवेहै, तब लवजी बोला तुम भ्रष्टाचारीहो में तुमरा मत छोडके जुदी दिक्षा लेसुं, एसा कहके दोजति भूणाजी, सुखजीकों, लेकरतीनजणां आपही भेषधारणकिया, मुंहआडी मुंहपत्तीबांधी, इनका नवीन मत देखकेकोई घरमें उतरण नदिया, तब बहुतदिन ग्रामनगरके वाहिर स्मशानकी शालामे या गाम नगरमें टूटे फूटे ढुंढमकानमें रहे इससें ढुंढिया नाम हुवा, उनोंने मत चलानें बावत बहुत कष्टकिया, तब बुगलेके माफक ऊपरकी छुंछा फूंफां देखके घणां लुंपकपक्षी गुजराती वणियामाननें लगे, क्युंकिं अग्यानी लोक ऊपरकी फुंफा देखते हैं, जिसमें गुजराती

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रायें हठग्राही ऐसे होतें हैं, कि जिसका पक्ष करतें हैं, जो वात पकडलेतें हैं, सो मुसकिसलसें छोडतें हैं, एसा जैनतत्वादर्शमें, पीताम्बरी मुनी आत्मारामजी लिखतें हैं, ये ढुंढकमतकी उत्पत्ति कही, इसीतरे संवत् १८१५, बादमें ढुंढकोंमेसें रुगनाथजीका शिष्य भीषमजी प्रमुख ढुंढियोने मिलके जोधपुरमें तेरेपंथी मत निकाला, सो इनकों उत्थापके आपका फिरका जमानें लगे, इसमेसें फेर १४ पंथी निकला, इत्यादि मनोमती मंदिरका प्रतिमाका तथा शास्त्रक उत्थापक मत हूवा, ॥ ६५ ॥ * ॥ तत्पट्टे ६६ मा श्रीजिनसुक्ख सूरिजी भए, तिके फोगपत्तननिवासी साहलेचा वोहरा गोत्रीय, साहरूपसीपिता, सुरूपामाता संवत् १७३९, मिगसरसुदि १५ पूर्णमासीके दिन जन्म, संवत् १७५१ माघ सुदि ५ पंचमीके दिन पुण्यपालसर गाममें दीक्षा, सुखकीर्त्तिदीक्षा नाम, संवत् १७६३ आषाढ सुदि ११ एकादशीके दिन सूरतबंदरमें रहवासी चोपडा गोत्रीय, पारख सामीदासनें इग्यारे ११००० हज़ार रुपिया खरच करके आचार्यपदमहोच्छव करा, फेर एकदा गोगाबन्दरके विषे, नवखंडापार्श्वनाथ स्वामीकी यात्राकों करके, श्रीगुरुमहाराजसंघके साथ स्तंभनकतीर्थ जानेंके वास्ते जिहाज ऊपर चढे, तब मार्गमें समुद्रके मध्यभागमें जिहाजके नीचेका पाटिया टूट गया, तिहां जलसें जिहाज भरा हूवा देखके, गुरुमहाराजनें इष्टदेवका सरण किया, तब दादाजी श्रीजिनकुशलसूरिजी महाराजके सहाय करके, अकस्मात नवीन जिहाज प्रगट होनेंसें समुद्रकापार पहुंचे, बाद जिहाज अदृश्य होगया, फेर स्तंभनापार्श्वनाथ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वामीकी तथा श्रीशत्रुंजयप्रमुखकी यात्रा करी, सकल शास्त्रपारंगामी, अनेक वादीयोंकों जीतनेंवाले, श्रीगुरूमहाराज तीनदिन अणशण करके आराधना समाधिपूर्वक संवत् १७८०, जेष्ठवदि १० दशमीके दिन युगप्रधानपदभृत् श्रीमज्जिनसुक्खसूरिजी श्रीरिणीनगरमें स्वर्गकों प्राप्तभए, उसी रात्रिमें देवतावोंने अदृश्य बाजित्रबजाया, उसनगरके राजादिक सर्वलोक वाजित्रध्वनि करके आश्चर्यवंतभये ॥ ५५ ॥ ॥ * ॥

तत्पट्टोदयशैलभास्करनिभस्तेजस्विनामग्रणीः
श्रीमच्छ्रीजिनभक्तिसूरिसुगुरुर्जज्ञे गणाधीश्वरः ।
तत्पादांबुजसेविनो युगवराः सद्भूतयोगीश्वरा,
जाताः श्रीजिनलाभसूरिसुगुरवः प्रज्ञा गुणानुत्तराः॥१॥

तत्पट्टे ६७ मा श्रीजिनभक्तिसूरिजी भए, तिके इन्द्रपालसरग्राम निवासी सेठगोत्रीय साह हरिचन्द्रपिता, हरिसुखदेवी माता, संवत् १७७०, जेष्ठसुदि २ द्वितीया दिनजन्म, भीमराज मूलनाम, १७७९ माघसुदि ७ सप्तमीकूं दीक्षा, भक्तिक्षेम दीक्षानाम, संवत् १७८०, जेष्ठवदि ३ तृतीयादिन, रिणीपुरमें श्रीसंघकृतमहोत्सवसें, आचार्यपदकों प्राप्त भए, फेर नाना देशमें विहार करनेंवाले, सादडीनामा नगर विषे हस्तिचालनादि प्रकारकरके, प्रतिपक्षीयोंकों जीतके, विजयलक्ष्मीकों धारनेंवाले, सर्वसिद्धान्तपारगामी, श्रीसिद्धाचलादि सकलमहातीर्थयात्रा करी, श्रीगूढानगरके विषे श्रीअजितजिनचैत्यप्रतिष्ठाकरी, महातेजस्वी, सकलविद्वज्जनसिरोमणि, श्रीराजसोम उपाध्याय, श्रीरामविजय उपाध्याय, श्रीक्षमाप्रमोद

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपाध्यायादि संसेवितचरणकमल, ऐसे श्रीजिनभक्तिसूरिजी कच्छदेशमंडन श्रीमांडवी बंदरके विषे संवत् १८०४ जेष्ठ सुदि ४ चोथके दिन स्वर्गगए, उस रात्रिमें अग्निसंस्कार भूमिके विषे देवतानें दीपमाला करी, ऐसे प्रभावीक गुरुमहाराज भए ॥ ६७ ॥ तत्पट्टे ६८ मा श्रीजिनलाभसूरिजी भए, तिके वीकानेरके रहनेवाले, वोथरागोत्रीय, साहपचायणदास पिता, पद्मादेवी माता, संवत् १७७४, श्रावण सुदि ५ पंचमीके दिन, वायेउ गामके विषे जन्म, लालचन्द्र मूलनाम, संवत् १७८९, जेष्ठ सुदि ६ छट्ठके दिन जेशलमेरमें दीक्षा, लक्ष्मीलाभ दीक्षानाम, संवत् १८०४, जेष्ठ सुदि ५ पंचमीके दिन श्रीकच्छमांडवीबंदरमें छाजेडगोत्रीय,साह भोजराजकृत नंदीमहोच्छव करके पदस्थापनभये, फेर जेशलमेर वीकानेर आदि अनेक नगरोंके विषे विहार करते हुवे संवत्१८१८ में जेठ वदि ५ ने ७५ साधुसहित श्रीगोडीपार्श्वनाथ यात्रा करी, तथा धूलेवा यात्रा करी, वाद सं० १८२१ फाल्गन शुक्क प्रतिपदाको ८५ मुनि साथ श्रीअर्बुदाचल यात्रा करी वाद घाणेराव सादडी नामके दो नगरमें चोपडा वखतसाहादिकृत महोत्सवसै आके उपद्रवकरणेको मिले परपक्षियोकों स्वज्ञानादि बलसै पराजय करके विजय वादित्रवजवायै तदनंतर उसी देशमें श्रीराणकपुरादि पंचतीर्थीकी यात्रा करके वेनातट मेदनीतटरूप नगर जयपुर उदयपुरादि नगरोंमें विहार करते सं० १८२५ वैशाख पौर्णमासीकों ८८ साधुसाथ श्रीधूलेवागढमंडन श्रीऋषभदेवजीकेसरियानाथजीकी यात्रा करी वाद पान्थिका साचोर राधनपुरादिकमें विहार

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करते श्रीसंखेश्वरपार्श्वनाथस्वामीकी यात्राकरके सेठ गुलाबचंद सेठ भाइदाशादि श्रीसंघके आग्रहसै श्रीगुरुमहाराजसूरत बंदरगए, तिहां संवत् १८२७ वैशाख सुदि १२ द्वादशीके दिन, आदि गोत्रीयसाह-नेमीदासपुत्र, भाईदासनें बनवाया, नवीन चैत्यमंडन श्रीशीतलनाथ, सहसफणा पार्श्वनाथ, श्रीगोडी पार्श्वनाथ, आदि १८१, बिंबोकी प्रतिष्ठाकरी, तथा संवत् १८२८, वैशाख सुदि १२ द्वादशीके दिन, उसीहि देवघरमें श्रीमहावीरादि ८२ बयांसी बिंबोकी प्रतिष्ठाकरी, प्रतिष्ठा तथा संघभक्तिमें ३६००० छत्तीसहजार रुपिया खरच करा, सीतलवाडी नामका उपासरा भाइदास नेमीदासने बनवाया उसमे श्रीआचार्य चौमासा रहै वह धर्मका मकान बृहत्खरतरगच्छीय उपास्रय प्रसिद्ध भया ॥ ६८ ॥ बाद श्रीमुनिसुव्रत स्वामीकी यात्रा वास्ते भरुछ आये उहां रात्रिमें रेवा (नर्मदा)के तटपर रहे योगिनीने जलवृष्टिका उपद्रव कीया तब सर्व सथवाडा व्याकुल भया स्वइष्टदेवस्मरणपूर्वक निराकुल कीया ततः राजनगर भावनगरादिकमें विहार करते गोगाबंदर पधारे श्रीनवखंडापार्श्वनाथ स्वामीकी यात्रा करके पादलिप्तपुर (पालीताणा) पधारे सं० १८३० माघवदि ५ ने ७५ मुनियोंके साथ श्रीशत्रुंजयतीर्थराजकी यात्रा करी उहांसे जुनेगड आये सं० १८३० फा० शु० ९ मी की १०५ साधुवोंके साथ श्रीगिरनार मंडन नेमिराथस्वामीकी यात्रा करके वेरावल पाटण मांगरोल बलेच पोरबंदर नवानगरादिकमे विचरते कछदेश मांडवीबंदरमे श्रीगुरुचरण कमलोंकुं वांदके क्रमसै भद्रेसरयात्रा करी तथा रापुरमे श्रीचिंतामणि पार्श्वेशकी यात्रा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर सं० १८३३ चैत्र वदि २ द्वितीयाको श्रीगोडीपार्श्वनाथकी यात्रा करी ऐसे परमसोम्यता सोभाग्यादि सद्गुणश्रेणिधारक महोपकारी पं० क्षमाकल्याणादिमुनिगणसंसेवितचरणकमलजिणुंका तप संजमसै भावित आत्माजिणोंकां भव्योका उपकारक ऐसे श्रीजिनलाभसूरीश्वरजी महाराज सं० १८३४ आश्विन वदि दशमीको गुडा नगरमे स्वर्ग गये ॥ ६८ ॥

संवद्वेदहुताशनाष्टवसुधासंख्ये शुभे चाश्विने,
द्वादश्युत्तरवासरेऽसितगते श्रीमद्गुढाख्ये पुरे, ।
यैराप्तं पदमुत्तमं गुणगुरु श्रीसद्गुरोर्वाक्यत-
स्ते स्युः श्रीजिनचंद्रसूरिगुरवः संघस्य कामप्रदाः ॥१०॥

तत्पट्टे ६९मा श्रीजिनचन्द्रसूरिजी भए, तिके वीकानेरवासी बछावत मुहता, रूपचन्द्रपिता, केशरदेवी माता, संवत् १८०९ कल्याणसर गाममें जन्म, अनूपचन्द्र मूलनाम, संवत् १८२२ मंडोवरने दीक्षा, उदयसार दीक्षा नाम, संवत् १८३४ आसोजवदि १३ त्रयोदशीके दिन, शुभ लग्नमें, गूढा नगरके विषे, कूकडचोपडा गोत्रीय, दोसीलख्का साहनें महोछव करा, सूरिपदमें प्राप्त हुवे, ऐसे ६९ मा श्रीजिनचंद्रसूरिजी परमसौभाग्यधारि सकलजगत् मनोहारि सर्व सिद्धांतका अध्ययनकीया त्रिभुवनविक्षातकीर्ति ऐसे फेर अयोध्या, चन्द्रावती, पाडलिपुर, चंपा, मुर्शिदाबाद, समेतशिखर, पावापुरी, राजगृह, मिथिला, क्षत्रियकुंडग्राम, काकंदी, हस्तिनागपुर, आदितीर्थोंकी यात्रा करी, क्रमसें लखणेऊ आए, उहां प्रतिमा उत्थापककामत बढनेंसें, राजा बछराजनें आग्रहके

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साथ वीनतिकरके रक्खा, चोमासा करवाया, तब उहां बहुतसा प्रतिमा उत्थापक मत खंडन किया, तब बहुत लोक सद्धर्मानुयायी हुवे, बहुतश्वेताम्बर जैन धर्मकी वृद्धि और प्रशंसा भइ, फेर तिस नगरके नजीक उद्यानमें राजा वछराजकों उपदेश देकर, श्रीजिन कुशलसूरिजी महाराजका थुंभ बनवाया सं० १८५२ में श्रीसिद्धाचलजीकी यात्रा करी उहां परपक्षियोंने उपद्रवकीया सो सांतिकरके यात्रा करते विचरते गुर्जरसै मालव देशमें विचरके द‍्क्षणमे विचरे उहांसें विहार करके सर्वतीर्थोंकी यात्रा करते, दक्षिणदेशमें श्रीअंतरिक्षपार्श्वनाथकी यात्राकर, सुरत पधारे उहां श्रीजिनचन्द्रसूरिजी सूरत बंदरमें, संवत् १८५६ जेठ सुदि ३ तीजकों स्वर्ग गए ॥६९॥

श्रीसूरते श्रीजिनचन्द्रसूरिभिः
प्रदत्तपट्टाजितसर्वसूरिभिः ।
गुणान्वितारंजितभूरिसूरयो
जाताश्च ते श्रीजिनहर्षसूरयः ॥ ११ ॥

तत्पट्टे ७० मा श्रीजिनहर्ष सूरिभए, तिके बालेवा गामवासी, मीठडिया वोहरा गोत्रीय, साहतिलोकचंद्र पिता, तारादेवी माता, हीरचंद्र मूलनाम, संवत् १८४१ आउ गाममे दीक्षा, हितरंग दीक्षानाम, संवत् १८५६ जेठ सुदि १५ पूर्णमासीके दिन, श्रीसूरत बंदरमें श्रीसंघका किया उच्छव सहित सूरिपदमें प्राप्त भए, तब तिसी नगरमें, श्रीसंघें श्रीअजितनाथ स्वामीका चैत्य बिंबोकी प्रतिष्ठा कराई, तथा संवत् १८६० अक्षयतृतीयाके दिन देवी कोटके श्रीसंघनें बनवाया मंदरमें १५० बिंबोंकी प्रतिष्ठा करी,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तथा संवत् १८६६ चैत्र सुदि १५ पूर्णमासीके दिन, गडिया संघपति राजाराम, लूणीया साह श्रीतिलोकचंदनें. निकाला संघ सवालक्ष श्रावक, ११०० इग्यारेसें साधुवोंके साथ, श्रीसिद्धाचलजी गिरनारजीकी यात्रा करी, फेर गुरूमहाराज अनेक देशोंमें विचरते संवत् १८७० शम्मेतशिखरतीर्थराजकी यात्रा करी, फेर संवत् १८ ५ श्रीसंघके साथ शिखरजीकी यात्रा करी, फेर दक्षिणदेशमें अंतरीकपार्श्वनाथ, मगशी पार्श्वनाथ, धूलेवागढ, इत्यादि तीर्थोंकी यात्रा करते, संवत् १८८७ आषाढ सुदि १० दशमीके दिन, श्री-वीकानेर नगरमें, श्रीसींमंधर स्वामीके मंदिरमें (२५) पचवीस बिंबकी प्रतिष्ठा करी, संवत् १८८९ माघ सुदि १० दशमीके दिन श्रीवीकानेर नगरमें, सेठिया गोत्र साह अमीचंदनें वनवाया सहरके वाहिर श्रीगोडीपारसनाथजीके पासमें सम्मेतशिखरगिरी भाव विराजित सांवलिया पार्श्वनाथजीके मंदिरकी प्रतिष्ठा करी, तिस अवसरमें, जेशलमेर निवासी, वाँफणा साहश्री बादरमलजी जोरावरमलजी, परिवार सहित जानलेके वीकानेर नगरमें चंदनमलजीका विवाहार्थ आये उहां महामहोत्सवसें गुरूमहाराजकों वंदना नमस्कार किया, सातक्षेत्रमें बहुत द्रव्य खरच किया तव श्रीगुरुवर्य जिनहर्षसूरिजीनेने संघनिकालके यात्राका उपदेश दिया, फेर गुरूमहाराज श्रीसंघके साथ श्रीसिद्धाचलजीकी यात्राकरनेंके विचारसें वीकानेरसै विहारकर मंडोवर नगरमें चोमासा रहे, उहां संवत् १८९२ कार्त्तिक वदि ९ के रोज, चारप्रहरका अणशण करके, देवलोक गए ॥ ७० ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संवन्नेत्रनिधानसिद्धिवसुधासंख्ये सुलग्नोदये,
सप्तम्यां सहमासके गुरुयुतौ पक्षे सिते येन वै, ।
श्रीमद्विक्रमपत्तने गुणनिधौ प्राप्तं पदं चोत्तमं,
जीव्यात् श्रीजिनपूर्वगोयतिपतिः सौभाग्यसूरिर्गुरुः ॥

इस समय मंडोरिया खरतर शाखाभिन्न भई, इसमें श्रीजिन-महेन्द्रसूरिजी, महाराज हुवे, वादमें तत्पट्टे श्रीजिनमुक्तिसूरिः तत्पट्टे श्रीजिनचन्द्रसूरिः हूए यह ११ मा गछभेद भया इसतरे मूल कोटिकगछ खरतर विरुद कल्पवृक्षकी इग्यारे शाखा भई श्रीजिन-हर्ष सूरिजीके पाट ऊपर ७१ मा श्रीजिनसौभाग्यसूरिजी भए, तिके मारवाडमें, वाईसेरडा गामवासी, कोठारी गोत्रीय, साह श्री-कर्मचन्द्र पिता, करुणादेवी माता, विक्रम संवत् १८६२ जन्म, सुरतराम मूलनाम, संवत् १८७७ सींधिया दोलतरावके लष्करमें दिक्षा ग्रहण करी, सौभाग्यविशाल दीक्षा नाम, संवत् १८९२ मि-गशर सुदि ७ सातमकों गुरुवार शुभ लग्नमें श्रीवीकानेर नगरमें आ-चार्य पदकों प्राप्त भए, खजानची साह लालचंद सालमसिंह बहुत द्रव्य खरचके नंदीमहोच्छव किया, जब श्रीजिनसौभाग्यसूरिजी ऐसा नाम स्थापन करा, इन महाराजनें आचार्यपदकों प्राप्त होतेही जावज्जीव एकलठाणा करना, प्यादल विहार करना सरुकिया यानि पालखी परभिनहीवेठतेथे और परिग्रहकात्याग अंतरंगसैथा और बहोतसा असमंजस उदभट व्यवहार पंचप्रमादशिथलतापणा छोडके, आत्म-कल्याण निमित्त कठिन आचार धारण किया, और अखंड ब्रह्मचर्य दयाकों धारण करते हूवे, आरंभादिकके त्याग करके शुद्ध प्ररूपक

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुगुरु बिचरते भये, इनोंका महात्मगुण देखके, वीकानेरका राजाधिराज श्रीरत्नसिंहजी तथा सिरदारसिंहजी महाराज प्रमुख बहुतसें भक्तिरागकों धारण करनेवाले भये सेवा करते थे तथा द्रव्य भाव सामग्रीसें चरणकमलोंकों पूजन करनेवाले भए, और क्रमसें सर्व गाम नगरोंमे विहार करते हूवे, मुर्शिदाबाद अजीमगंजनगरमें आए, उहां श्रीसंघके आग्रहसें चोमासे किये, श्रीनेमिनाथ स्वामीके मंदिरमें बिंबप्रतिष्ठा करी, फेर उहांसें दूगडबाबू प्रतापसिंहजी प्रमुख संघकी प्रेरणासें विहार करते कलकत्ते गए, जब बाबू प्रतापसिंहजीनें महाराजकों दर्शन करानें निमित्त कातीमहोच्छवसें अधिक, श्रीधर्मनाथस्वामीका समोसरण निकालके दादावाडी लेगए, उहां तीनदिन उच्छव रहा फेर सहरमें आए, धर्मका बहुतसा उद्योत हूवा, उहां कितनेक दिन रहकर, फेर मुर्शिदाबाद बालूचर आए, उहां दूगड बाबू इन्द्रचंदजीकों सिद्धगिरिजाके निनाणों यात्रा करनेका उपदेश दिया, तब इन्द्रचन्दजी पिण तत्काल संघनिकालके छहरी पालते थके गुरूमहाराजके साथ हूए, उहांसें बिहार करते चंपापुरी गए, उहां वीकानेरके संघनें बनवाया भया, श्रीजिनमंदिरकी बडे उच्छवके साथ प्रतिष्ठा करी, फेर उहांसें बिहारकरके, शिखरजी पावापुरी राजग्रही बनारस प्रमुख सर्व तीर्थोंकी यात्रा करते हुए, जयपुर, कृष्णगढ, अजमेर, पाली गोढवालकी पंचतीर्थी मोटी तथा छोटी, आबूजी, केसरियानाथजी संखेश्वरापार्श्वनाथ, तारंगा, गिरनारजी प्रमुख यात्रा करते हूवे, संवत् १९०२ आषाढ मासमें श्रीसिद्धगिरीगए, उहां चौमासा रहके बाद चोमासा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करके निन्नाणों यात्रा करी, फेर गोगा, भावनगर, अहमदाबाद, वगेरेमे यात्रा करके, वीकानेरका राजा श्रीरत्नसिंहजी महाराज प्रमुखने अमरचंद सुराणा २०० सवार वगेरे भेजके वीनति कराइ तव सर्व संघके आग्रहसें, संवत् १९०२ मिति फागण वद ७ के दिन वीकानेर आये. संवत् १९०४ मिति माघ सुद १० के दिन श्रीसंघका वनाया भया, श्रीसुपार्श्वनाथ स्वामीके मंदिरकी प्रतिष्ठा करी, संवत् १९०५ वैशाख सुद ५ के दिन श्रीचिंतामणजीके मंदिरमें श्रीजिनबिंबोकी प्रतिष्ठा करी, संवत् १९०६ मिगशर सुद १३ के दिन मंडोवर नगरमें खरतरगच्छ अधिष्ठायक गोरानाम क्षेत्रपालकों प्रसन्न किया, फेर संवत् १९१४ आषाढ सुद १ दिन श्रीवीकानेर नगरमें बिंब प्रतिष्ठा करी, संवत् १९१६ मिति वैशाख वद ६ के दिन नालगाम दादावाडीमें संघका बनाया नवीन मंदिरकी तथा जिनबिंबोकी प्रतिष्ठा करी सुरतगढ प्रतिष्ठा करणेको जाते मार्गमें गेरसर गांवमे अग्निका उपद्रव सांत किया इत्यादि बहुतकालतक श्रीवीरशासनकी प्रभावनाकारक परमोपगारी धर्मोद्योत कारक आचार्य गुणधारक ४५ आगमवीकानेरमे व्याख्यानमें वांच तेथेचंदपन्नत्ती सूरपन्नत्ती वांचताथा तब द्रव्यका वरसात भया ऐसे श्रीजिनसौभाग्यसूरिः संवत् १९१७ माघ सुदि ३ रात्रिकों ४ प्रहरतक अणशण आराधना पूर्वक समाधिसें कालधर्म प्राप्त होकर, श्रीवीकानेर नगरमें देवलोककों प्राप्त भए ॥ ७१ ॥

अब्दे शैलधरांकरूपनिधने मासे सिते फाल्गुने,
ऐशान्यां गुरुवासरे गुणनिधौ देशे च श्रीविक्रमे,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

षट्त्रिंशतगुणराजिते वरपदे स्थाप्यो हि योगीश्वरैः,
जीव्याच्छ्रीजिनहंससूरि सुगुरुर्मान्यःसदा वाग्मिनाम्॥

श्रीजिन सौभाग्यसूरिजीके पाटऊपर ७२ मा श्रीजिन हंससूरिजी भए, तिके कुजटी गामवासीय गोताणी गोत्र, साह मनसुख पिता, जयादेवी माता, संवत् १९०० जन्म; हिंमतराम जन्म नाम, संवत् १९१७ फागुण वदि ५ पंचमीके दिन वीकानेर नगरमें दीक्षा लीनी, चोपडा कोठारी, गेवरचंदजीने दीक्षा महोच्छव करा, हितवल्लभदीक्षा नाम भया, संवत् १९१७ फागुण वदि ११ एकादशीके दिन आचार्य पदकों प्राप्त भये, तब वच्छावत अमरचन्दजी तथा झालरापाटणनिवासी, छाजेड भूरामलजी, तथा गोलच्छा ग्यानचंदादिकनें बहुत द्रव्य खरच करके, नंदी महोच्छव किया, तथा वीकानेरका महाराज श्रीसिरदारसिंहजीनें गुरुमहाराजका दरशण किया, गजनेरादिकमें गुरूमहाराजकी तथा सर्व साधुमंडलीकी बहुत भक्ति करी, फेर वीकानेरका सत्तावीससें गाम नगरोंमें, तथा देशणोंक, आगरा मिरजापुर, आदि नगर देशोंमें विहार करते मुर्शिदाबाद गए, उहां संवत् १९२४ मिति फागुण वद ४ चोथके दिन दूगड प्रतापचंदजीका पुत्र रायबहादुर लक्ष्मीपतिसिंह, धनपतिसिंहका कराया भया, श्रीऋषभ देव १ श्रीवासुपूज्य २ श्रीनेमिनाथ ३ श्रीमहावीर ४ ये चार महाराजका चरणपादुका श्रीसम्मेतशिखरजी पर्वतके ऊपर जूदा जूदा चार ठिकाणें प्रतिष्ठा करके, स्थापन किये, संवत् १९२६ मिति फागुण सुद ७ सातमके दिन, अजीम गंजका समस्त संघका बनाया हूवा रामबागमें श्री-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अष्टापद्जीका मंदिर, तथा जिनबिंबोकी प्रतिष्ठा करी, श्रीसंघनें बहुत खरच करके अठाई महोच्छव किया फेर क्रमसें दिल्ली, रिणी, राजगढ, चूरू इत्यादि क्षेत्रोंमें विहारकरते संवत् १९२९ मिति जेठ वद् ९ नवमीके दीन वीकानेर नगरमें गए, संवत् १९३१ मिति जेठ सुद् १० दशमीके दिन, माणकचोकमें उपाध्याय श्रीलक्ष्मी प्रधानजी गणीके उपदेशसें बनवाया हुवा नवीन श्रीकुंथुनाथ स्वामीका मंदिरकी प्रतिष्ठा करी, संवत् १९३२ श्रीचिंतामणजीके मंदिरमें संघका किया उच्छवके साथ श्रीजिनबिंबोंकी प्रतिष्ठा करी, इत्यादि अनेक धर्मकृत्य करनेंवाले सोम्यगुणधारक श्रीजिनहंससूरिजी संवत् १९३५ मितिकार्तिक वद् १२ बारसकेदिन चारप्रहरका अणशण आराधना करके समाधिमें कालधर्म प्राप्त होकर स्वर्ग गए ॥ ७२ ॥

संवत्सायकतिस्रअंकवसुधासंख्ये सुलग्नोदये
धार्मिण्यां तपमासके शनियुते दुर्गे च श्रीविक्रमे ॥
श्रीमच्छ्रीजिनहंससूरिसुगुरोः प्राप्तं पदं वाक्यत-
स्तेऽमी श्रीजिनचन्द्रसूरिगुरवो नन्दन्तु भट्टारकाः॥१४॥

तत्पट्टे ७३ मा श्रीजिनचन्द्रसूरिजी भए, तिके गोलछा गोत्रीय, संवत् १९३५ मिति माघसुद ११ के दिन आचार्यपद प्राप्तहोकर विचरते भए, बहुतसा धर्मका उद्योत किया और सौम्यगुणधारी बहोतखेत्रोमे विहार करनेवाला भया, संवत् १९५६ कातिवदि ५ कों अणशण आराधना करके समाधिसें कालधर्म प्राप्त होकर स्वर्ग गए ॥ ७३ ॥ इनोंकेसमे श्रीकीर्त्तिसारजी सं० १९३६ आ-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

षाढ शुदि १० को दीक्षित होते भये, और श्रीगुरुमहाराजके पारतंत्र्यमे रहकर विनय विवेक परिश्रमादिक योग्यतासें क्रमसें सर्व सिद्धान्त पारंगामी भये, तब गुर्वादिकके परोक्ष होनेपर सर्वकी आज्ञा लेकर त्याग वृत्ति धारण करते भये, क्रिया उद्धार किया और निर्मल चारित्र पालते भये, क्रमसें विचरते हूवे ममाई गए, चोमासा किया, तब चतुर्विधसंघके आग्रहसें श्रीजिनचारित्रसूरिजी आचार्यैं सूरिमंत्रदेके सूरिपदमें स्थापे, तब श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरिः, ऐसा नाम भया, अपरनाम श्रीजिनकीर्त्तिसूरिः ऐसाभि हैं, और इनोंका चरित्रलेश श्रीजिनदत्तसूरिजीके चरित्रकी प्रस्तावनामें दीया है सो वहांसें जाणलेना, इसतरे साम्नाय शुद्ध प्ररूपक निर्मल संयमी शासनप्रभावक जं। यु। प्र। भ। श्रीमज्जिनकृपाचन्द्रसूरिजी सोम्यगुणधारी वर्त्तमान कालमें विद्यमानपणें सुहस्तिपणें संयमतपसें आत्मा भावन करते हूवे विचरतें हैं सो चतुर्विध श्रीसंघ इन आचार्य महाराजकी आज्ञामें प्रवर्त्ति करता हूत्रा सदा जयवन्ता वर्त्तो, सदा कल्याण पावो, श्रीजिनचंदसूरिजीके पट्टपर ७४ मा श्रीजिनकीर्त्तिसूरि भये एतेषां वर्णनवृत्तो यथा

रसशरनिधिचन्द्रे विक्रमाब्दे सुमासे।
असितशशिसुघस्त्रे कार्त्तिके पंचमीशे ॥
सुगुणमुनिपवर्यः शर्मकृन्नित्यचर्यः।
जयतु जिनसनाथः कीर्त्तिसूरीश्वरः सः ॥ १५ ॥

वै जोधपुरनिवासी भणसालिमुहता पन्नालाल पिता नाजुदे माता सं. १९३१ जन्म केसरिचंद मूलनाम दीक्षा सं. १९५६

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

काति वदि ५ वीकानेर श्रीसंघकृत महोत्सवसें नंदीविधिपूर्वक आचार्यपद प्राप्त भये वाद मारवाड पूरव दक्षिणवगेरे देशोमें विचरे श्रीसिखरजी वगेरे यात्रा करी प्रतिष्ठावगेरे कितने शुभकार्य किये वाद सं. १९६७ कातिवदि अमावस्या दीवालिके दिन ३६ वर्षका आयु पालके समाधिसै परोक्ष भये सद्गति प्राप्त भये ७४ श्रीजिनकीर्त्ति सूरिजीके पट्टपर ७५ मा श्रीजिनचारित्रसूरिजी विद्यमान हैं

वर्षे वर्षगुहास्यनन्दवसुधासंख्ये शुभे मासके ।
माघे कृष्णसुघस्रपंचमिदिने प्राप्तं पदं चोत्तमं ॥
श्रीखरतरगणनायकः सुविहितानुष्ठानचर्यावरः ।
श्रीमज्जिनचारित्रसूरिः सुगुरुर्धीमान् सदा नन्दतु॥१६॥

वै मारवाड देशमें माडपुराग्राम निवासी बाजेडगोत्रीयसाह पाबुदान पिता सोनादे माता सं. १९४२ वै० शु. ८ जन्म मूल नाम चूनिलाल दीक्षा बीकानेरमें सं. १९६२ वैशाख शु. ३ दीक्षा नाम चारित्रसुंदर शास्त्रअभ्याश जैनसिद्धांत व्याकरणतर्क काव्यकोश मंत्र-शास्त्र वगेरेका करके प्रगुण भये सं. १९६७ माघ कृष्ण ५ बीकानेर संघकृत नंदीमहोत्सवसै आचार्यपद प्राप्त भये देशविदेशमे विहार-करते चतुर्मास किये सिखरजी वगेरे तीर्थयात्रा करी मालवधरामे विचरे वदनावर गंगधार कोटा वगेरेमें श्रीगुरुमूर्त्तिचरणवगेरेकी प्रतिष्ठा करी कोंकणमें मुंबईपत्तनमें विचरे आचार्यपद प्रदान-कीया श्रीसिद्धाचलजी यात्रा वगेरे धर्मक्रिया करते विचरते है सांत गांभिर्यादिगुण विशेषभूषित मकसूदावाद कलकता वगेरेमे व्या-ख्यानवाचस्पति प्रमुख बिरुद प्राप्तकीया ऐसे सूरिवर विचरते

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चिरंजीवी रहो गुणयुक्तव्यक्ति दुर्लभ होवे इस ऊपरान्त ११ शाखाकी पट्टावली, उपकेस गच्छ पट्टावली, वडगच्छ तपागच्छादि पट्टावली, पं. श्रीसत्यविजयजी वंशावली, उ. श्रीयशोविजयजी पं. श्रीमणिविजयजीकास्वरूप, विमलसागरादि तपाशाखा पट्टावली, माणिभद्र क्षेत्रपालादि उत्पत्ति स्वरूप, श्रीआनन्दघनजी श्रीदेवचन्द्रजी प्रेमचन्द्रजी चिदानन्दजी वगेरेका स्वरूप, श्रीजिनप्रभसूरिजी, श्रीजिनकीर्त्तिरत्नसूरिजी, श्रीज्ञानसारजी, श्रीक्षमाकल्याणजी वगेरेका स्वरूप, श्रीराजसागरजी ऋद्धिसागरादि स्वरूप, श्रीमोहनलालजी, मयाचन्दजी, शिवजीरामजी चिदानंदजी, श्रीकीर्त्तिसारजी वगेरेका स्वरूप, श्रीकर्मचन्द्रडोसी, श्रीकर्मचन्द्रमंत्री विशेषचरित्रस्वरूप, देशनादिस्वरूप अनागतकाल भाविभाव स्वरूप, पर्यन्तविषय इसग्रन्थमें देखाने योग्य है, ऐतिहासिकादिक प्रसंगसें, परन्तु तथाविधसामग्रीके अभावसें, और इस ग्रन्थके प्रेरकवर्गकी आतुरताके सबबसें, केवल एकहि प्रतिका आधारमिला, विशेष आधार नहिं मिला, और विहारका समयथा, इसलिये अनियत समयहोनेसें, विशेष प्रयत्न नहि हूवा, विशेष विस्तार ऊपरोक्त विषयका विवेचन नहिं करसके, अब सामग्री मिलनेपर यथा शक्ति परिश्रमादिक करेंगें, एसी भावना है, और इस ग्रन्थके लिखनेमे कालक्षेप जादा हूवासो प्रेरकवर्ग क्षमां करेंगें, और परिपूर्ण विषय इस ग्रन्थमें एक साथ नहिं लिखा गया, भिन्नभिन्न विषयपर अलगहिं परिशिष्टाधिकारमें लिखेंगे, ऐसा दर्शाया है, इसकाभि प्रेरकवर्ग क्षमा करें, अल्पसमयमें परिपूर्णविषयसहित पूर्णग्रन्थ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नहिं लिखसके, और यह ग्रन्थ खंड खंड करके पूर्णताकों प्रसन्नताकों प्राप्त भया, सो प्रेरकवर्ग क्षमा करेंगें,

नमः श्रीवर्धमानाय, श्रीमते च सुधर्मणे ।
सर्वानुयोगवृद्धेभ्यो, वाण्यै सर्वविदस्तथा ॥ १ ॥
अज्ञानतिमिरांधानां, ज्ञानांजनशलाकया ।
नेत्रमुन्मीलितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ २ ॥
षट्त्रिंशत् गुणरत्ननीरनिलयः श्रीशंखवालान्वयः ।
प्रस्फुल्लामलनीरसंभवगणाव्याकोशहंसोपमाः ॥
क्षोणीनायकनम्रकमर्दलनादीपाख्यसाध्वंगजाः ।
शर्म श्रेणिकरा जयन्तु जगति श्रीकीर्त्तिरत्नाह्वयाः १७
अब्धिर्लब्धिकदंबकस्य तिलको निःशेषसूर्यावले-
रापीडः प्रतिबोधनैपुणवतामग्रेसरो वाग्मिनां ॥
दृष्टान्तो गुरुभक्तिशालिमनसां मौलिस्तपःश्रीजुषां ।
सर्वाश्चर्यमयो महिष्ठसमयः श्रीगौतमः स्तान्मुदे ॥१८॥

दासानुदासा इव सर्वदेवा ।
यदीयपादाब्जतले लुठन्ति ॥
मरुस्थलीकल्पतरुः स जीयात् ।
युगप्रधानो जिनदत्तसूरिः ॥ १ ॥
चिंतामणिः कल्पतरुर्वराकः ।
कुर्वन्ति भव्याः किमुकामगव्या ॥
प्रसीदतः श्रीजिनदत्तसूरेः ।
सर्वे पदाहस्ति पदे प्रविष्टाः ॥ २ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नो योगी नच योगिनी नच नराधीशश्च, नो शाकिनी
नो वेत्तालपिशाचराक्षसगणा नो रोगशोकौ भयं ॥
नो मारी नच विग्रहप्रभृतयः प्रीत्या प्रणत्युच्चकैः ।
यस्ते श्रीजिनदत्तसूरिगुरवो नामाक्षरं ध्यायति ॥ ३॥

सिद्धान्तसिंधुर्जगदेकबन्धुः ।
युगप्रधानप्रभुतां दधानाः ॥
कल्याणकोटीः प्रगटीकरोतु ।
सूरीश्वरः श्रीजिनभद्रसूरिः ॥ ४ ॥

मंगलं भगवान् वीर , मंगलं गौतमप्रभुः ।
मंगलं थूलिभद्राद्या, जैनो धर्मोऽस्तु मंगलं ॥ ५ ॥
उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः ।
मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ६ ॥
सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् ।
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ ७ ॥

एवं समग्रतया संक्षिप्तप्रकारेण श्रीवर्धमानजिनपति मुख्य-शिष्ययुगप्रधानपदभृत् श्रीइन्द्रभूति श्रीसुधर्मादि युगप्रधानसूरीणां शेषसूरीणां च मुख्यपट्टधरतयाऽद्यावधिपर्यन्त यथामतिः प्रभुभक्त्या वंशो व्यावर्णितो मया शिवायते सन्तु, प्रथमोदये २० द्वितीयोदये २३ तृतीयोदये १५ एवं समभवन् समग्रतया युगप्रधान सूरयः अष्टपंचाशदिति, जिनचन्द्र जिनपत्यादि अष्टसप्तमे, जिनचन्द्र जिनसिंहादि मुनि अष्टमे, एवं भवंति अष्टपंचाशदिति, एवं श्रीसुधर्म वंशोऽविछिन्नरीत्यादर्शितः, अथान्तिम मंगलाचरणम्, तीन

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तत्वकों नमनकर, सेवुं सद्गुरु पाय ॥ देवी भगवती सानिधे, वचन अमृतरसथाय ॥ १ ॥ चौरासीलक्षजोनिमें, जे रह्या जीव अनन्त, ॥ मोहमिथ्यात्वमें पड्या, पायो दुःख नही अन्त ॥ २ ॥ परमदेव परमातमा, चिदानन्द गुणचंग ॥ भव्यजीवके हितभणी, भेद कह्या सहु अंग ॥ ३ ॥ गणधर गौतमआदिसहु, रचियां अंग अनूप ॥ त्रिकरणहूं प्रणमुं सदा, ज्ञानआतम गुण भूप ॥ ४ ॥ आचारज उवज्ञायमुनि, भगवन वचन उपेत ॥ भाष्यटीका निर्युक्तिकर, प्रगट किया संकेत ॥ ५ ॥ भगवतीसूत्रमांहें कह्या, आगमना पंचअंग ॥ सरधेजेभविप्राणिया, पामें नित उछरंग ॥ ६ ॥ जयवंतावरतो सदा, सहु जगपंडवज्ञान ॥ पिणउपगारी भव्यकों, ए श्रुत ज्ञानप्रधान ॥ ७ ॥ दुष्टकर्म संयोगसें, चितबैठे नहीं ज्ञान, पिणजाणुं सुरतरुसमो, एहीजधर्मप्रधान ॥ ८ ॥ प्रबल भाग्यसंयोगसें, पारशदरसण पाय । पारश फरस्यां लोह सहु, गुण कंचन समथाय ॥९॥ पारस प्रभुके नामसें, सहु संकट मिट जाय, ईति उपद्रव भय टले, श्रीजयगुण प्रगटाय ॥ १० ॥ जिनदरसण मुझमनवस्यो, जे प्रगटे चित आय ॥ कर्म शत्रुदलजीपके, शिवरमणी वरुं जाय ॥ ११ ॥ शिवपुर जोवा कारणें, समकित दृढ हेत ॥ बालअज्ञ श्रीजयभणी, श्रीपितामह गुणदेत ॥ १२ ॥ जबलगमेरुअडिग्ग हैं, जबलग शशिअर सूर । तबलग यह पुस्तकसदा, रहजो गुण भरपूर ॥ १३ ॥ पोथीप्यारी प्राणथी, गलेहियाकोहार ॥ बहुत यतनकर राखज्यो, पोथीसेतीप्यार ॥ ऐसी हमारी आशा सफलकरज्योसही ॥ १४ ॥ अथ लेखकः संक्षिप्तरीत्या स्वकुलं दर्शयति, हिवकहीमाहरोकुल-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रकासुं, अहो भवियण तुमसुणो ॥ गुरुगच्छकोटिक चन्द्रकुल अव वज्रशाखा चितभणो ॥ गुणगण जिनेसर सूरिगुज्जर विरुदपायो गुण करी ॥ सोजयउ खरतरगच्छ आणंद प्रगटसहु भविहितधरी १ ॥ गुरु गच्छ खरतर तेजदीपे विक्रमपुर सोहेसही ॥ जिनकीर्त्तिरत्न-सूरीसरक्रमे पदकीर्त्तिसूरी जिनमही ॥ गणधार जयानन्द पाठक सागरमन उल्लासए ॥ बहु परिश्रमे संग्रह कियो सद्गुरु चरित्र विस्तारए २ ॥ सोधो विबुधवर मनह उल्लासए, मालव इन्द्रपुरे बलि सुरत खासए रहीचोमासो हुवो प्रकाशए, चरित्रगुरुदेवनो मनहविलासए ३ ॥ शोधयन्तु धीधनाः मयि कृपां विधाय ॥ यत्किं-चिदस्मिन् ग्रन्थे जिनवचोविरुद्धं गदितं मया मतिमोहतः तत् मिथ्या दुष्कृतं मेऽस्तु, बुद्धिमान्द्यादसंप्रदायादसदूहनादिह यत् विरुद्धं लिखितं मया तत् मिथ्या दुष्कृतं मेऽस्तु, इति श्रीकीर्त्तिरत्नसूरिशा-खायां तत्परम्परायां क्रमात्समुत्पन्नेन, जं. यु. प्र. भ. श्रीमज्जिन-कृपाचन्द्रसूरीश्वराणां प्रधानशिष्येण विद्वच्छिरोमणिना श्रीमदान-न्दमुनिना संकलिते लोकभाषोपनिबद्धे, तत् लघुभ्रात्रा उ. जयमुनि-गणिना संस्कारिते युगप्रधान श्रीमज्जिनदत्तसूरिचरिते ऐतिहासिक-संवादे युगप्रधान श्रीमज्जिनचन्दसूरि संक्षिप्तचरित्रवर्णनं तत्संतान-सिंहसूर्यादिजिनचारित्रसूरिपर्यवसानचरित्रवर्णनो नाम अष्टमः सर्गः समाप्तः ॥ समाप्तं श्रीमज्जिनदत्ताभिधान ऐतिहासिकचरितम् ॥

उत्तरार्धं समाप्तम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ अथ मंगलाष्टकं लिख्यते ॥

श्रीमन्नम्रसुरासुरेन्द्रमुकुटप्रद्योतिरत्नप्रभा, भास्वत्पादनखेन्दवः प्रवचनांभोधौ व्यवस्थायिनः। ये सर्वे जिनसिद्धसूरिसुगतास्ते पाठकाः साधवः स्तुत्या योगिजनैश्च पंचगुरवः कुर्वन्तु मे मंगलम् ॥ १ ॥ सम्यग्दर्शनबोधवृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं मुक्तिश्रीनगरायनं जिनपतेः स्वर्गापवर्गप्रदः। धर्मः सूक्तिसुधाश्च चैत्यमखिलं जैनालयं श्यालयं प्रोक्तं तत्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु मे मंगलं ॥ २ ॥ नाभेयादिजिनाधिपास्त्रिभुवने ख्याताश्चतुर्विंशतिः श्रीमंतो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश, ये विष्णुप्रतिविष्णुलांगलधराः सप्ताधिका विंशतिः। त्रैलोक्येऽभयदा स्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु मे मंगलं ॥३॥ कैलासे वृषभस्य निर्वृतिमहावीरस्य पावापुरी, चंपायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेतशैलेऽर्हतां, शेषाणामपि चोज्जयंतशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो, निर्वाणाविनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु मे मंगलं ॥४॥ ज्योतिर्व्यन्तरभुवनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिता, जंबूशाल्मलिचैत्यशाखिषु तथा वक्षाररूप्यादिषु, इक्ष्वाकारगिरौ च कुंडलनगे द्वीपे च नंदीश्वरे, शैलेये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु मे मगलं ॥ ५ ॥ यो गर्भावतरोपि जयत्यर्हतां जन्माभिषेकोत्सवे, यो जातः परिनिष्क्रमेवच भवो यः केवलज्ञानभाक्, यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमासंभावितः स्वर्गिभिः, कल्याणानि च तानि षट्पंच सततं कुर्वन्तु मे मंगलं ॥ ६ ॥ ये पंचौषधिऋद्धयः श्रुततपोऋद्धिं गताः पंच ये ये चाष्टांगमहानिमित्तकुशला येऽष्टौ विधाश्चारणाः। पंचज्ञानधराश्च येऽपि बलिनो ये बुद्धिऋद्धीश्वराः सप्तैते सक-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लाश्च ते गणभृताः कुर्वन्तु मे मंगलं ॥७॥ देव्याश्चाष्टजयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवताः श्रीतीर्थंकरमातृकाश्च जनका यक्षाश्च यक्षीश्वराः । द्वात्रिंशत्रिदशा ग्रहाः निधिसुराः दिक्कन्यकाश्चाष्टधा दिक्पालादश इत्यमी सुरगणाः कुर्वन्तु मे मंगलं ॥ ८ ॥ इत्थं श्रीजिनमंगलाष्टकमिदं कल्याणकालेऽर्हतां पूर्वाऽह्वेपि महोत्सवेपि सततं श्रीसौख्यसंपत्करं । ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च मनुजैर्द्धर्मार्थकामान्विता लक्ष्मीराश्रयते व्यपायरहिताः कुर्वन्तु मे मंगलं ॥ ९ ॥ इति मंगलाष्टकं संपूर्णम् ॥

॥ अथ द्वितीयमंगलाष्टकं लिख्यते ॥

अर्हन्तः शरणं सन्तु, सिद्धाश्च शरणं मम, शरणं जिनधर्मो मे, साधवः शरणं सदा ॥ १ ॥ नमः श्रीस्थूलिभद्राय, कृतभद्राय तायिने, शीलसन्नाहमाबिभ्रद्, यो जिगाय स्मरं रयात् ॥ २ ॥ गृहस्थस्यापि यस्यासन्, शीललीला महत्तराः, नमः सुदर्शनायास्तु, दर्शनेन कृतश्रिये ॥ ३ ॥ धन्यास्ते कृतपुण्यास्ते, मुनयो जितमन्मथाः, आजन्मनिरतीचारं, ब्रह्मचर्यं चरंति ये ॥ ४ ॥ निःसत्त्वो भूरिकर्मा हि, सर्वदाऽप्यजितेन्द्रियः, नैकाहमपि यः शक्तः, शीलमाधातुमुत्तमं ॥५॥ संसार तव निस्तारपदवी न दवीयसी, अन्तरा दुस्तरा न स्युर्यदि रे मदिरेक्षणाः ॥६॥ अनृतं साहसं माया, मूर्खत्वमतिलोभिता, अशौचं निर्दयत्वं च, स्त्रीणां दोषाः स्वभावजाः ॥७॥ या रागिणि, विरागिण्यः स्त्रियस्ताः कामयेत कः, सुधीस्तां कामयेन्मुक्तिं, या विरागिणि रागिणी ॥ ८ ॥ एवं ध्यायन् भजेन्निद्रां, स्वल्पं कालं समाधिमान्, भजेन्न मैथुनं धीमान्, धर्मपर्वसु कर्हिचित् ॥ ९ ॥ इतिरात्रौ निद्राभावे, शु-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भचिंतनम् ॥ ततो गत्वा मुनिस्थानमथवात्मनिकेतने, निजपापविशुद्ध्यर्थं, कुर्यादावश्यकं सुधीः ॥ १ ॥ रात्रिकं स्याद्दैवसिकं पाक्षिकं चातुर्मासिकम्, सांवत्सरं चेति सुधीः पंचधावश्यकं स्मृतम् ॥ २ ॥ कृतावश्यककर्मा च, स्मृतपूर्वकुलक्रमः, प्रमोदमेदुरस्वान्तः, कीर्तयेन्मंगलस्तुतिम् ॥ ३ ॥ मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमः प्रभुः, मंगलं स्थूलिभद्राद्या, जैनो धर्मोस्तु मंगलं ॥४॥ नाभेयाद्या जिनाः सर्वे, भरताद्याश्च चक्रिणः, कुर्वन्तु मंगलं सर्वे, विष्णवः प्रतिविष्णवः ॥ ५ ॥ नाभिसिद्धार्थभूपाद्या, जिनानां पितरः समे, पालिताः खंडसाम्राज्याः, जनयन्तु जयं मम ॥ ६ ॥ मरुदेवीत्रिशलाद्या, विख्याता जिनमातरः, त्रिजगज्जनितानन्दा, मंगलाय भवन्तु मे ॥ ७ ॥ श्रीपुंडरीकेन्द्रभूति, प्रमुखा गणधारिणः । श्रुतकेवलिनोऽपीह, मंगलानि दिशन्तु मे ॥ ८ ॥ ब्राह्मीचन्दनबालाद्या, महासत्यो महत्तराः। अखंडशीललीलाढ्या, यच्छन्तु मम मंगलम् ॥ ९ ॥ चक्रेश्वरी सिद्धायिका मुख्याः शासनदेवताः, सम्यग्दृशां विघ्नहरा, रचयन्तु जयश्रियम् ॥ १० ॥ कपर्दिमातंगमुख्या, यक्षा विख्यातविक्रमाः, जैनविघ्नहरा नित्यं, दिशन्तु मंगलानि मे ॥११॥ यो मंगलाष्टकमिदं, पटुधीरधीते, प्रातर्नरः, सुकृतभावितचित्तवृत्तिः । सौभाग्यभाग्यकलितो धुतसर्वविघ्नो, नित्यं स मंगलमलं लभते जगत्यां ॥ १२ ॥ इति द्वितीयमंगलाष्टकं संपूर्णम् ॥

॥ अथ अर्हणादिपंचपरमेष्ठिमहास्तोत्रं लिख्यते ॥

अरिहाण नमो पूयं, अरहंताणं रहस्स रहिआणं, पयओ परमेट्ठीणं, आरुहंताणं धुअरयाणं ॥ १ ॥ निड्डविअ अट्ठकम्मिद्धणाण, वर

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नाणदंसणधराणं मुत्ताण नमो सिद्धाणं, परमपरमिट्ठिभूयाणं ॥ २ ॥ आयारधराण नमो, पंचविहायारसुट्ठिआणं च, नाणीणायरिआणं, आयारुवएसयाण सया ॥३॥ बारसविहअपुव्वं, दिंताण सुअं नमो सुअहराणं, सययमुवज्झायाणं, सज्झायज्झाणजुत्ताणं ॥४॥ सव्वेसिं साहूणं, नमो तिगुत्ताण सव्वलोएवि, तवनियमनाणदंसणजुत्ताणं बंभयारीणं ॥ ५ ॥ एसो परमिट्ठीणं, पंचन्हवि भावओ नमुक्कारो, सव्वस्स कीरमाणो, पावस्स पणासणो होई ॥६॥ भुवणेवि मंगलाणं, मणुयासुर अमरखयरमहियाणं, सव्वेसिमिमो पढमो, होइ महामंगलं पढमं ॥७॥ चत्तारिमंगलं मे हुंतु, अरहंता तहेव सिद्धा य, साहु अ सव्वकालं, धम्मोय तिलोअमंगलो ॥ ८ ॥ चत्तारिचेव ससुरासुरस्स लोगस्स उत्तमा हुंति, अरिहंतसिद्धसाहू, धम्मो जिणदेसिअमुआरो ॥ ९ ॥ चत्तारिवि अरहंते, सिद्धसाहू तहेवधम्मं च, संसारघोररक्खस्स, भएण सरणं पवज्जामि ॥ १० ॥ अह अरहओ भगवओ, महइमहावीर बद्धमाणस्स, पणयसुरेसरसेहर, विअलिअकुसुमुच्चियकमस्स ॥ ११ ॥ जस्स वरधम्मचक्कं, दिणयरबिंबुव्व भासुरच्छायं, तेएण पज्जलंतं, गच्छइ पुरओ जिणिंदस्स ॥ १२ ॥ आयासं पायालं, सयलं महिमंडलं पयासंतं, मिच्छत्तमोहतिमिरं हरेइ तिण्हंपि लोआणं ॥१३॥ सयलमविजीअलोए, चिंतिअमित्तो करेइ सत्ताणं, रक्खं रक्खसडाइणि, पिसाय गहभूअ जक्खाणं ॥ १४ ॥ लहइ विवाएवाए, ववहारे भावओ सरंतोअ, जूएरणेअ रायं, गणेअ विजयं विसुद्धप्पा ॥ १५ ॥ पच्चूसपओसेसु, सययं भव्वो जणो सुहज्झाणो, एअं झाएमाणो, मुक्खं पइसाहगो होइ ॥ १६ ॥ वेआल रुद्दाणव,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नरिंदकोहंडि रेवईणं च, सवेसिं सत्ताणं, पुरिसो अपराजिओ होई ॥ १७ ॥ विज्जुव पज्जलंती, सवेसुवि अरकरेसु मत्ताओ, पंचनमुकार पए इक्किके उवरिमाजाव ॥ १८ ॥ ससिधवलसलिलनिम्मल, आयारसहं च वन्नियं विंदुं, जोअणसयप्पमाणं, जालासयसहस्सदिप्पंतं ॥ १९ ॥ सोलससु अक्खरेसु, इक्किकं अक्खरं जगुज्जोअं, भवसयसहस्स महणो, जंमिट्ठिओ पंचनवकारो ॥ २० ॥ जो गुणइ हुइ क्कमणो, भविओ भावेण पंचनमुक्कारं, सोगच्छइ सिवलोअं, उज्जो अंतो दसदिसाओ ॥ २१ ॥ तवनियमसंयमरहो, पंचनमोक्कारसारहि निउत्तो । नाणतुरंगमजुत्तो, नेइ फुडं परमनिवाणं ॥ २२ ॥ सुद्धप्पा सुद्धमणा, पंचसुसमिईसु संजुअतिगुत्ता, जे तम्मि रहे लग्गा, सिग्घं गच्छंति सिवलोअं ॥२३॥ थंभेई जलं जलणं, चिंतिअमित्तो वि पंचनवकारो, अरिमारिचोरराउल, घोरुवसग्गं पणासेइ ॥ २४ ॥ अट्ठेवय अट्ठसयं, अट्ठसहस्सं च (अट्ठलरकंच) अट्ठकोडीओ, रक्खंतु मे सरीरं देवासुरपणमिआ सिद्धा ॥ २५ ॥ णमो अरिहंताणं, तिलोअ पुज्जोअ संथुओ भयवं, अमरनररायमहिओ, अणाईनिहणो सिवं दिशउ ॥ २६ ॥ निट्ठविअ अट्ठकम्मो, सिवसुहभूओ निरंजणो सिद्धो, अमरनररायमहिओ, अणाइनिहणो सिवं दिशउ ॥२७॥ सवे पओस मच्छर, आहिवाहि अ पणासमुवयंति, दुगुणीकय घणुसदं सोउंपि महाधणुसहस्सं ॥ २८ ॥ इय तिहुअणप्पमाणं, सोलसपत्तंजलंत दित्तसरं, अट्ठार अट्ठवलयं, पंचनमुक्कारचक्कमिणं ॥ २९ ॥ सयलुज्जोइअ भुवणं, विद्दावि असेससत्तुसंघायं, नासिअ मिच्छत्ततमं, विअलियमोहं गयतमोहं ॥ ३० ॥ एयस्स य मज्झत्थो, सम्म-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दिट्ठी विसुद्धचारित्तो, नाणीपवयणभत्तो, गुरुजणसुस्सूसणा परमो ॥ ३१ ॥ जो पंचनमुक्कारं, परमो पुरिसो पराइभत्तीए, परियत्तेइ पइदिणं, पयओ सुद्धपओगप्पा ॥ ३२ ॥ अट्ठेवय अट्ठसयं, अट्ठसहस्सं च उभयकालंमि, अट्ठेव य कोडीओ, सो तइय भवे लहइ सिद्धिं ॥ ३३ ॥ एसो परमो मंतो, परमरहस्सं परंपरं तत्तं, नाणं परमं णेअं, शुद्धं झाणं परं झेअं ॥ ३४ ॥ एयंकवयमभेअं, खाइय मच्छंपरा भुवणरक्खा, जोईसुन्नं बिंदु, नाओतारालवोमत्तो ॥ ३५ ॥ सोलसपरमक्खरबीअ, बिंदुगब्भोजगुत्तमो जोओ, सुअबारसंगसायर, महत्थपुव्वोत्थ परमत्थो ॥३६॥ नासेई चोरसावय, विसहर जल जलणवंधणसयाइं चिंतिज्जंतोरक्खस्स, रणरायभयाइं भावेण ॥ ३७ ॥ इति अरहणादिमहास्तोत्रम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

अथ श्रीदादासाहेबकी पूजा

अथ पहली थापना स्थापन करके आह्वाहनका श्लोक पढे ।

सकलगुणगरिष्ठान् सत्तपोभिर्वरिष्ठान् ।
शमदमकजुष्टांश्चारुचारित्रनिष्ठान् ।
निखिलजगति पीठे दर्शितात्मप्रभावान् ।
मुनिपकुशलसूरीन् स्थापयाम्यत्र पीठे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिनदत्त श्रीजिनकुशल श्रीजिनचन्द्रसूरिगुरो अत्रावतरावतर स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिनदत्त अत्र तिष्ठ २ ठः ठः ठः स्वाहा इति प्रतिष्ठापनम् ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिनदत्तसूरिगुरो अत्र मम संनिहितो भव वषट् इति संनिधीकरणम् ॥ ३ ॥ अथ जलका कलश लेके स्नानकर्ता शुचि होके खडारहे ॥

अथ स्तुतिप्रारम्भः ।

दोहा–ईश्वर जग चिंतामणी, कर परमेष्ठीध्यान । गणधर पद गुण वर्णना, पूजन करो सुजान ॥ १ ॥ सौधर्मा मुनिपति प्रगट, वीर जिनेश्वर पाट । मिथ्यामततमहरणको, भव्य दिखावन वाट ॥ २ ॥ सुस्थित सुप्रतिबद्ध गुरु, सूरिमंत्रको जाप । कोटि कियो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जब ध्यान धर, कोटिकगच्छ सुथाप ॥ ३ ॥ दश पूर्व्वी श्रुतकेवली, भये वज्रवर स्वाम । तादिनतें गुरुगच्छको, वज्रशाख भयो नाम ॥ ४ ॥ चंद्रसूरि भये चंद्रसम, अतिही बुद्धि निधान । चंद्रकुली सब जगतमें, पसर्यो बहुविज्ञान ॥ ५ ॥ वर्द्धमानके पाट पद, सूरि जिनेश्वरमाश । चैत्यवासिकुं जीतकर, सुविहित पक्ष प्रकाश ॥ ६ ॥ अणहिलपुर पाटणसभा, लोक मिले तिहाँ लक्ष । खरतर विरुद सुधानिधि, दुर्लभराजसमक्ष ॥ ७ ॥ अभयदेवसूरि भये, नवअंगटीकाकार । थंभणपारस प्रगटकर, कुष्ठ मिटावनहार, ॥ ८ ॥ श्रीजिनवल्लभसूरि गुरू, रचना शास्त्रअनेक । प्रतिबोधे श्रावकबहुत, ताके पट्टविशेष ॥ ९ ॥ हुंबड श्रावक वाघडी-अट्ठारे हज़ार, जैन दयाधर्मी किये, वरते जैजैकार ॥ १० ॥ दादा नाम विख्यात जस, सुर नर सेवक जास । दत्तसूरि गुरु पूजतां, आनंद हर्ष उल्लास ॥ ११ ॥ दिल्लीमें पतसाहने, हुकम उठाया शीस । मणिधारी जिनचंद गुरु, पूजो बिसवाबीस ॥ १२ ॥ ताके पट्ट परंपरा, श्रीजिनकुशलसूरिंद । अकबरकुं परचा दिया, दादा श्रीजिनचंद ॥ १३ ॥ ऐसे दादाच्यारकूं, पूजो चित्त लगाय । जल चंदन कुसुमादि कर, ध्वज सौगंध चढाय ॥ १४ ॥

चाल दादा चिरंजीवो ए दशी ॥

गुरुराजतणी कर पूजन भवि सुखकर मिलसी लब्धि धणी एआं-कणी गुरु दत्तसूरिंद जग सुखकारी, गुरु सेवकने सानिधकारी, गुरु चरणकमलनी बलिहारी गुरु० ॥ १ ॥ संवत इग्यारे बारशशी, बत्तीसे जनम्यां शुभ दिवसी, श्रावककुल हुंबडनें हुलसी ॥ गु० ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥२॥ जसु बाछिगसा पितुनाम भणे, बाहड़ दे माता हर्ष घणे, इक-तालीसे दीक्षापभणे ॥ गु० ॥ ३ ॥ गुणहतरे वल्लभ पाटधरी, गुरु मायाबीजनो जापकरी, गुरु जगमें प्रगट्या तरणतरी ॥ गु० ॥ ४॥ मणिधारी जिनचंद उपकारी, जिनदत्तसूरिंदके पटधारी, भये दादा दूजा सुखकारी ॥ गु० ॥ ५ ॥ राशल पितु देल्हणदे माता, श्रीमाळगोत्र बोधन साता, दिल्ली पतसाह सुगुण गाता ॥ गु० ॥ ॥६॥ जसु चौथे पाट उद्योतकरी, जिन कुशलसूरिंद अतिहर्षभरी तेरेसे तीसे जनमधरी ॥ गु० ॥ ७ ॥ जसु जिल्हा जनक जगत्र जियो, वर जैतसिरी शुभ स्वपन लियो, गुरु छाजेडगोत्र उद्धार कियो ॥ गु० ॥८॥ घन सेंतालीसे दीक्षा धरी, जिन चंद्रसूरीश्वर पाटवरी, गुणहतरे सूरिमंत्र जापकरी ॥ गु० ॥ ९ ॥ सेवामें बावनवीर खरा, जोगणियां चौसठ हुकम धरा, गुरु जगमें कइ उपकारकरा ॥ गु० ॥ १० ॥ माणक सूरीश्वर पद छाजे, जिनचंद्रसूरी जगमें गाजे, भये दादा चोथा सुखकाजे ॥ गु० ॥ ११ ॥ जिण चांद उगायो उजियारो, अम्मावसकी पूनमवालो, सब श्रावक मिल पूजन चालो ॥ गु० ॥ १२ ॥ जिण अकबरकूं परचा दीना, काजीकी टोपी वश कीना । बकरीका भेद कह्या तीना ॥ गु० ॥ १३ ॥ गंधोदक सुरभिकलशभरी, प्रक्षालन सद्गुरु चरण परी, या पूजन कवि ऋद्धिसार करी ॥ गु० ॥ १४ ॥

श्लोकः ।

सुरनन्दीजलनिर्मलधारकैः प्रबलदुष्कृतदाघनिवारकैः । सकल-मङ्गलवाञ्छितदायकौ कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे ॥ १ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ओँ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमगुरुदेवाय भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय श्रीजिनदत्तसूरीश्वराय मणिमण्डितभालस्थलाय श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय श्रीजिनकुशलसूरीश्वराय अकब्बर असुत्राणप्रतिबोधकाय श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय जलं निर्व्विपामिते स्वाहा ॥ १ ॥

अथ द्वितीय केशरचंदनपूजाप्रारंभः ।

दोहा—केशर चंदन मृगमदा, कर घनसार मिलाप । परचा जिनदतसूरिका, पूज्यां तूटे पाप ॥ १ ॥

चाल वीण बाजेकी.

दीनके दयाल राज सार (२) तूं ।

आंकणी । आये भरुअच्छ नगर धाम धूम धू २ बाजते निशान ठोर हर्ष रंग हूं ह० दी० ॥ १ ॥ मुसलमान मुगलपूत फौज मौजमूं । फोत मोत होगया हायकारसू हा० दी० ॥ २ ॥ सघ्र विघ्र देख आप हुक्म दीन यूं । लावो मेरे पास आस जीवदान दूं जी० ॥ ३ ॥ दी० मृतक पूत मंत्रसे उठाय दीन तूं, देखके अचंभ रंग दास खासकूं दासखासकूं ॥ ४ ॥ दी० करत सेव भावपूर तुरक राज जूं । छोडके अभक्ष्य खान हाजरी भरुं हा० ॥ ५ ॥ दी० बीज खीजके पडी प्रतिक्रमणके मूं । हाथसे उठाय पात्र ढांक दीन छू ढा० ॥ ६ ॥ दी० दामनी अमोल बोल सिद्धराज तूं । देउं वर दान छोड बंदकीन क्यूं बंधकीन क्यूं बं० ॥७॥ दत्त नाम जपत जाप करत नांह चूं । फेर मैं पहूंगी नांह छोड दीन फूं छो० दी० ॥ ८ ॥ करोगे निहाल आप पाव पलकनूं, रामऋद्धिसार दास चरण छांह लूं न० ॥ ९ ॥ श्लोक—मलयचन्दनकेशरवारिणा निखिलजाड्यरु-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जातपहारिणा । सकल० ॥ ओँ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिनदत्त० केशरचन्दनं निर्व्विपामि ते स्वाहा ॥ २ ॥

अथ तिजी पुष्पपूजा.

दोहा–चंपा चमेली मालती, मरुवा अरु मचकुंद । जो चाढे गुरुचरणपर, नित घर होय आनंद ॥ १ ॥ नींदतो गई वादीला मारी. ए चाल–राग मांड । गुरु परतिख सुरतरूरुप सुगुरुसम दूजो तो नहीं । दूजो तो नहीं रे सुमतिजन दूजो तो नहीं । गुरुप० सु० सुगुरुने पूजो तो सही । ए आंकणी । चितोडनगरी वज्रथंभमें, विद्यापोथी रहीरे सु० वि० हेजी मंत्र जंत्र विद्यासेपूरी, गुरु निजहाथग्रही गु० गुरुपर० ॥ १ ॥ पुरउज्जयिनी महाकालके, मंदिर थंभ कहिरे सुम० हेजी सिद्धसेन दिनकरको पोथी, विद्या सरब लही रे सु० वि० गुरुप० ॥ २ ॥ उज्जयिनी व्याख्यानबीचमें, श्राविका रूपग्रहीरे सु० श्रा० हेजी जोगनियां छलनेकुं आई, सबको खील दई ॥ गु० ॥ ३ ॥ दीन होय जोगणीयां चोसठ, गुरुकी दाश भइरे सु० गु० हेजी सातदिया वरदानहरषसें, पसर्यो सुयश मही प० गु० ॥ ४ ॥ पुष्पमाल गुरुगुणकी गूंथी, चाढो चित्त चही रे सु० चा० हेजी कहे रामऋद्धिसार सुयशकी, बूटी आपदई बू० गु० ॥ ५ ॥ श्लोक–कमलचम्पककेतकीपुष्पकैः परिमलाहृतषट्पदवृन्दकैः ॥ सकल० ॥ ओँ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिनदत्त० पुष्पं निर्व्विपामि ते स्वाहा ॥ ३ ॥

अथ चोथी धूपपूजा.

दोहा–धूप पूज कर सुगुरुकी, पसरे परिमल पूर । जस सुगंध जगमें बधे, चढे सबाया नूर ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राग सोरठ–कुबजाने जादू डारा ए चाल । अंबिका विरुद्ध बखाने गुरु तेरो अं० । तुमयुगप्रधान नहीं छाने गु० । ए आंकणी । गढ गिरनाररपै अंबड श्रावक, ऐसो नियम चित्त ठाने । युगप्रधान इस युगमें कोई, देखुं जन्मप्रमाणे ॥ गु० अं० ॥ १ ॥ कर उपवास तीनदिनबीते, प्रकटी अंबा ज्ञाने गु० ! प्रगट होय करमें लिखदीना, सुवरनअक्षरदाने ॥ गु० अं० ॥ २ ॥ या गुणसंयुत अक्षर बांचै, ताको युगवर जाने ॥ गु० ॥ अंबड मुलक २ में फिरता, सूरि सकल पतवाने ॥ गु० ३ ॥ आया पास तुम्हारे सद्गुरु, कर पसार दिखलाने ॥ गु० ॥ वासक्षेप उन ऊपर डाला, चेला बांच सुनाने ॥ गु० ॥ अं० ॥ ४ ॥ सर्वदेव हैं दास जिनोंके, मरुधर कल्पप्रमाणे ॥ युगप्रधान जिनदत्त सूरीश्वर, अंबड शीश झुकाने ॥ गु० ॥ ५ ॥ उद्योतनसूरीने निजहाथे, चौरासी गच्छ ठाने ॥ सो सब तुम्हरी सेवा सारे, चौरासी गछ माने ॥ गु० ॥ ६ ॥ जो मिथ्यात्वी तुमको न पूजे, सो नहीं तत्त्वपिछाने । भद्रबाहुस्वामी तुम कीर्तन, कीनी ग्रंथप्रमाणे ॥ गु० ॥ ७ ॥ युगप्रधान परिकीए गंडिका, गणधरपदवृत्ति माने । कहे रामरिद्धिशार गुरुकुं, पूजा धूपकराने ॥ गु० ॥ ८ ॥ श्लोक-अगरचन्दनधूपदशाङ्गजैः प्रसरिताखिलदिक्षु सुधूमकैः । सकलमं ४ ॐ ह्रीँ श्रीँ पर० धूपं निर्व्विपामि ते स्वाहा ॥ ४ ॥

अथ पांचमी दीपपूजा.

दोहा–दीप पूजकर सुगण नर, नितनित मंगळहोत । उजियाला जगमें जुगत, रहे अखंडित जोत ॥ १ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चाल ख्यालकी।

पूजन कीज्योजी नर नारी गुरु महाराजका हो ॥ पू० ॥ सिंधुदेशमें पंचनदीपर, साधे पांचो पीर। लोईऊपर पुरुषतिराये, ऐसे गुरु सधीर ॥ पू० ॥ १ ॥ प्रगटहोयके पांचपीरने, सात दीया वरदान। सिंधुदेशमें खरतरश्रावक, होवेगा धनवान ॥ पू० ॥ २ ॥ सिंधुदेश मुलताननगरमें बडामहोच्छव देख। अंबड और गच्छका श्रावक, गुरुसे कीना द्वेष ॥ पू० ॥ ३ ॥ अणहिलपुर पत्तनमें आवो, तो मैं जानुं सच्चा। बडे महोत्सव आवेगें तूं, निर्धन होगा कच्चा ॥ पू० ॥ ४ ॥ पत्तनबीच पधारे दादा, सनमुख निर्धन आया। गुरु वतलाया क्योंरे अंबड, अहंकारफल पाया ॥ पू० ॥ ५ ॥ मनमें कपट किया अंबडने, खरतर महिमा धारी। जहर दीया उन अशनपानमें, गुरु विधिजाणी सारी ॥ पू० ॥ ६ ॥ भणशाली मुखवर श्रावकसें, निर्विष मुद्रा मंगाई। जहर उतारा तब लोकोंमें, अंबड निंदा पाई ॥ पू० ॥ ७ ॥ मरके व्यंतर हुआ वो अंबड रजोहरण हर लीना। भणसाली व्यंतर वचनोंसे, गोत्रउतारा कीना ॥ पू० ॥ ८ ॥ सज्जहोय गुरु ओघालेके, गोत्र वचाया सारा। ऋद्धिसार महिमा सद्गुरुको, दीपकका उजियारा ॥ पू० ॥ ९ ॥ श्लोक–अतिसुदीप्तिमयैः खलु दीपकैर्विमलकांचनभाजनसंस्थितैः। सकल० ॐ ह्रीं श्रीं पर० दीपं निर्व्वपामि ते स्वाहा ॥ ५ ॥

अथ छठी अक्षतपूजा.

दोहा–अक्षतपूजा गुरुतणी, करो महाशय रंग। क्षती न होवे अंगमें, जीते रणमें जंग ॥ १ ॥ राग आसावरी–अवधू सो योगी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुरु मेरा ए चाल, रतनअमोलक पायो सुगुरु सम रतन अमोलकपायो । गुरु संकट सबही मिटायों सु० ए आंकणी । विक्रमपुरनगरी लोकनकूं, हैजारोग संतायो । बहुतउपायकिया शांतिकका, जरा फरक नहीं आयो ॥ सु० र० ॥ १ ॥ योगी जंगम ब्रह्म संन्यासी, देवी देव मनायो । फरक नहीं किनहीने कीनो, हाहाकार मचायो ॥ सु० र० ॥ २ ॥ रतन चिंतामणि सरिखो साहिब, विक्रम पुरमें आयो । जैनसंघको कष्ट दुरकर, जयजयकार वरतायो ॥ सु० र० ॥ ३ ॥ महिमा सुनमाहेश्वरि ब्राह्मण, सबही शीश नमायो । जीवतदान करो महाराजा, गुरु तब यों फुरमायो ॥ सु० र० ॥ ४ ॥ जो तुम समकित व्रतको धारो, अबही करदूं उपायो । तहत वचन कर रोग मिटायो, आनंद हर्ष बधायो ॥ सु० र० ॥५ ॥ जो कोई श्रावक व्रत नहीं धार्यो, पुत्री पुत्र चढायो ॥ साधु पांचसे दीक्षित कीना, साधवियां समुदायो ॥ सु० र० ॥ ६ ॥ मंत्र कला गुरु अतिशय धारी, ऐसो धर्म दीपायो ॥ ऋद्धिसार पर किरपा कीनी, साचो इलम बतलायो ॥ सु० र० ॥ ७ ॥

श्लोक–सरलतन्दुलकैरतिनिर्मलैः, प्रवरमौक्तिकपुंजवदुज्ज्वलैः । सकल० ओँ ह्रीँ श्रीँ प० अक्षतान् निर्व्वपामि ते स्वाहा ॥ ३ ॥

अथ सातमी नैवेद्यपूजा.

दोहा–नैवेद्य पूजा सातमी, करो भविक चित चाव । गुरुगुण अगणित कुण गिणे, गुरु भवतारण नाव ॥ १ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राग कल्याण–तेरीपूजाबनींहै रसमें ए चाल. हो गुरु किया असुरकुं वशमें, ए आंकणी. बडनगरीमें आप पधारे, सांमेला धसमसमें, ब्राह्मणलोक बडे अभिमानी, मिलकर आया सुसमें ॥ गु० ॥ १ ॥ हो गु० ॥ महिमा देख शक्या नहीं गुरुकी, भरे मिथ्याखी गुसमें । मृतक गऊ जिनमंदिर आगे, रखदी सनमुख चसमें ॥ हो० गु० ॥ २ ॥ श्रावकदेख भये आकुलता, कहे गुरुसे कसमें । चिंतादूरकरीहै संघकी, गउ उठचाली डसमेंहो ॥ गुरु० ॥ ३ ॥ मरी गऊको जीतीकीनी, लोक रह्या सब हसमें । जाके गाय पडी रुद्रालय, संघभया सब खुसमें ॥ हो गु० ॥ ४ ॥ ब्राह्मण पायपडे सब गुरुके, देख तमासा इसमें ॥ हुकम उठावेंगे शिरऊपर, तुमसंततिकी दिशमें ॥ हो गु० ॥ ५ ॥ नमस्कार है चमत्कारको, कीनी पूजा रसमें । कहे रामऋद्धिसार गुरुकी, आनंद मंगल जसमें ॥ हो० गु० ॥ ६ ॥

श्लोक–बहुविधैश्चरुभिर्वटकैर्यकैः प्रचुरसर्पिषि पक्वसुखज्जकैः । सकल० ॥ ओं ह्रीँश्रीँ प० नैवेद्यं निर्वपामिते स्वाहा ॥ ७ ॥

अथ आठमी फल पूजा.

दोहा–फलपूजासे फल मिले, प्रगटे नवे निधान । चहुदिशि कीरति विस्तरे, पूजन करो सुजान ॥ १ ॥

रथ चढ यदुनंदन आवत हैं ए चाल—चालो संघ सब पूजनको गुरु समर्थां सनमुख आवत है रे ॥ चा० गु० ए आंकणी । आनंदपुरपट्टनको राजा, गुरशोभा सुन पावत है रे ॥ चा० ॥ १ ॥ भेजा निज परधान बुलाने, नृप अरदास सुनावत है रे ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चा० लाभजान गुरू नगर पधारें ॥ भूपति आय बधावत है रे ॥ चा० ॥२॥ राजकुमरको कुष्ठ मिटायो, अचरज तुरत दिखावत है रे ॥ चा० ॥ दश हज्जार कुटुम्ब संग नृपको, श्रावकधर्म धरावत है रे ॥ चा० ॥ ३ ॥ दयामूल आज्ञा जिनवरकी, बारा व्रत उचरावत है रे ॥ चा० ॥ ऐसे चार राज समकित धर, खरतर संघ बनावत है रे ॥ चा० ॥ ४ ॥ कुष्ठ जलंधर क्षय भगंदर, कइयक लोक जिवावत है रे ॥ चा० ॥ ब्राह्मण क्षत्री अरु माहेश्वर, ओसवंश पसरावत है रे ॥ चा० ॥ ५ ॥ तीसहजार एकलक्ष श्रावक, महिमा अधिक रचावत है रे ॥ चा० ॥ कहत रामऋद्धिसार गुरुको, फलपूजा फल पावत है रे ॥ चा० ॥ ६ ॥

श्लोक–पनसमोचसदाफलकर्कटैः सुसुखदैः किल श्रीफलचिर्भटैः ॥ सकल० ॥ ओँ ह्रीँ श्रीँ प० फलं निर्वपामि ते स्वाहा ॥८॥

अथ नवमी वस्त्र अत्तर पूजा.

दोहा–वस्त्र अतरगुरु पूजना, चौवा चंदन चंपेल । दुस्मन सब सज्जन हुए, करे सुरंगा खेल ॥ १ ॥

मनडोकिमहीन वाजे हो कुंथुजिन. ए चाल—लखमी लीला पावे रे सुंदर लखमी लीला पावे । जो गुरु वस्त्र चढावें रे ॥ सुं० ॥ सुजस अतर महकावे रे ॥ सुं० ॥ दुरजन शीश नमावेरे सुं० ए आंकणी । दरिया बीच जहाज श्रावककी, डूबन खतरे आवे । साचे मन समरे सद्गुरुकुं, दुखकी टेर सुनावेरे ॥ सुं० ॥ १ ॥ बाचंताव्याख्यानसूरीश्वर, पंखीरूपेथावे । जाय समुद्रमें ज्याज तिराई, फिर पीछा जब आवेरे ॥ सुं ॥ २ ॥ पूछे संघ अच-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रजमें भरिया, गुरु सब बात सुनावेरे ॥ सुं० ॥ ऐसे दादा दत्त कुशल गुरु, परचा प्रगट दिखावेरे ॥ सुं० ॥ ३ ॥ बोथरा गूजरमल श्रावकक्षी, दादा कुशल तिरावेरे ॥ सुं० ॥ सूखसूरि गुरु समयसुंद-रकी, ज्याज अलोप दिखावे रे ॥ सुं० ॥ ४ ॥ बारासै इग्यारे दत्तसूरि, अजमेर अणसण ठावे । उपज्या सोधर्मा देवलोके, सीमं-धर फुरमावेरे ॥ सुं० ॥ ५ ॥ इकअवतारी कारज सारी, मुक्ति नगरमें जावेरे ॥ सुं० ॥ कुशल सूरि देराउर नगरे, भुवनपती सुरथावेरे ॥ सु० ॥ ६ ॥ फागणवदि अम्मावस सीधा, पूनम दरशदिखावेरे ॥ सुं० ॥ मणिधारी दिल्लीमें पूज्यां, संकट सुपने नावेरे ॥ सुं० ॥ ७ ॥ रथी उठी नहीं देख बादसा, वांही चरण पधरावे रे ॥ सुं० ॥ वस्त्र अतर पूजा सद्गुरुकी, ऋद्धिसार मन भावे रे ॥ सुं० ॥ ८ ॥

श्लोक–अखिलहीरशुभैर्नवचीरकैः प्रवरप्रावरणैः खलु गन्धतः ॥ सकल० ॥ ओँ ह्रीँ श्रीँ प० वस्त्रं चोवाचन्दनपुष्पसारं निर्वपामिते स्वाहा ॥ ९ ॥

॥ अथ दशमी ध्वजपूजा. ॥

दोहा–ध्वजपूजा गुरुराजकी, लहके पवन प्रचार । तीन लोकके शिखरपर, पहुंचे सो नर नार ॥ १ ॥

चाल–जिनगुण गावत सुरसुंदरीरे ए चाल—ध्वजपूजन कर हरख भरीरे ॥ध० ॥सज सोले शिणगार सहेल्यां, श्रीसद्गुरुके द्वार खरी रे ॥ ध०॥ अपछर रूप सुतनु सुकलीनी, ठम २ पग झणकार करीरे ॥ ध० ॥ १ ॥ गावतमंगल देत प्रदक्षिणा, धन २ आनंद आज घरीरे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ध० ॥ निर्धनको लखमी बकसावत, पुत्र विना जाके पुत्र करी रे ॥ध०॥२॥ जो जो परतिष परचा देख्या, सुनो भविक दिलबीच धरी रे ॥ ध० ॥ फतेमल्ल भडगतिया श्रावक, पहली संका जोर करीरे ॥ ध० ॥ ३ ॥ परतिख देखूं तब मै जाणुं, प्रगट्या ततखिण तरण तरीरे ॥ ध० ॥ पुष्पमाल शिर केशरटीको, अधर श्वेत पोशाककरीरे ॥ ध० ॥ ४ ॥ मांग २ वर बोले वाणी, फरक बतावो गुरु मेघझरीरे ॥ ध० ॥ फरक उगायो दोय लाख पर, तेरी महिमा नित्त हरीरे ॥ ध० ॥ ५ ॥ गैनचंद गोलेछाको तैं, परतिख दीना दरस फरीरे ॥ ध० ॥ विक्रमपुरमें थुंभ तुह्मारा, चित्र करावत सुरसुंदरीरे ॥ ध० ॥६॥ थानमल्ल लूण्यांपर किरपा, लखमी लीला सहजवरीरे । लखमीपति दुगडकी साहिब, हुंडीकी भुगतानकरीरे ॥ ध० ॥ ७ ॥ जो उपकार कस्या तै मेरा, दीनी सनमुख अमृत झरीरे ॥ ध० ॥ तेरी कृपासे सिद्धी पाई, जागे जस अरु भाग भरीरे ॥ ध० ॥ ८ ॥ भूखा भोजन तिसिया पानी, भरत हाजरी देव परीरे ॥ ध० ॥ विखम बखत पर सहाय हमारे, ऋद्धिसारकी गरज सरीरे ॥ ध० ॥ ९ ॥

श्लोक–मृदुमधुरध्वनिकिङ्किणीनादकैर्ध्वजविचित्रितविस्तृतवासकैः ॥ सकल० शिखरोपरि ध्वजां आरोपयामि स्वाहा ॥

दोहा–भट्टारक पदवी मिली, जीते वादी वृंद । कंठ विराजत सरस्वती, जगमें श्रीजिनचंद ॥ राग आसावरी–अथवा धनाश्री । पूजन जगसुखकारी सुगुरु तेरी पूजा० । तेरे चरणकमल बलिहारी ॥ सु० ॥ साह सलेम दिल्लीको बादसा, सुनके शोभ तिहा-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

री । भट्ट हरायो चरचा करके, भट्टारकपद धारी ॥ सु० ॥ १ ॥ अम्मावसकी पूनम कीनी, चंद उगायो भारी । चढके गगन करी है चरचा, सूरजसे तपधारी ॥ सु० ॥ २ ॥ चौदासे उगणीस शालमें, लखनेउ नगरमझारी । गोरा फिरंगी टोपीवाला, दिलमें यह बात विचारी ॥ सु० ॥ ३ ॥ जैनसितांबरदेव जो सच्चा, पूरे मनसा हमारी । वाणी निकसी राज्य तुह्मारा, होवेगा अधिकारी ॥ सु० ॥ ४ ॥ अंधेकी खोली आंख सूरतमें, पूजे सब नरनारी । कहां लगे गुण बरणूं मै तेरा, तूं ईश्वर जयकारी ॥ स० ॥ ५ ॥ उगणीसे संवत्सर तेपन, मगसर मासमझारी । शुकल दूज जिनचंदसूरीश्वर, खरतरगच्छ आचारी ॥ सु० ॥ ६ ॥ कुशलसूरिके निजसंतानी, क्षेमकीर्ति मनुहारी । प्रतिबोध्या जिन क्षत्री पांचसें, जानसहित अणगारी ॥ सु० ॥ ७ ॥ क्षेमधाडशाखा जब प्रगटी, जगमें आनंदकारी । धर्मशील साधूगुणपूरे, कुशलनिधान उदारी ॥ सु० ॥ ८ ॥ या पूजन करतां सुख आनंद, अन धन लखमी सारी । कहत रामऋद्धिसार गुरूकी, जय २ शब्द उचारी ॥ सु० ॥ ९ ॥ इति श्रीसमस्तदादागुरुपूजा संपूर्णा ॥

॥ अथ आरती लिख्यते ॥

जय जय गुरू देवा, आरति मंगल मेवा, आनंद सुख लेवा ॥ ज० ॥ आंकणी । इक व्रत दुय व्रत तीन चार व्रत, पंच व्रतमें सोहे ॥ गु० ॥ जगतजीव निसतारण कारण, सुर नर मन मोहे ॥ ज० ॥ १ ॥ दुःख द्रोह सब हरकर सद्गुरू, राजन प्रतिबोधे । सुत

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लखमी वर देकर, श्रावककुल सोधे ॥ ज० ॥ २ ॥ विद्यापुस्तक धर कर सद्गुरू, मुगलपूत तारे । वस कर जोगनी चौसठ, पांच पीर सारे ॥ ज० ॥ ३ ॥ बीजपडंती वारी सद्गुरू, समंदर जहाज तारी । वीर किये बस बावन, प्रगटे अवतारी ॥ ज० ॥ ४ ॥ जिनदत्त जिनचंद कुशल सूरि गुरू, खरतरगच्छ राजा । चोरासी गच्छ पूजे, मन वांछित ताजा ॥ ज० ॥ ५ ॥ मन शुद्ध आरती कष्टनिवारण, सद्गुरूकी कीजे । जो मांगे सो पावे, जगमें जस लीजे ॥ ज० ॥ ६ ॥ विक्रमपुरमें भगत तुह्मारो, मंत्र कलाधारी । नित उठ ध्यान लगावत, मनवांछित फळ पावत, राम ऋद्धिसारी ॥ ज० ॥ ७ ॥ इति पदम् ॥

"अथ शुद्धलोकोत्तरधर्मस्य स्वरूपं प्रश्नोत्तरैर्निरूप्यते यं प्राप्य सकर्माजीवाः मुच्यते ॥"

प्रश्नः—जैनधर्म कबसें प्रसिद्ध हूवा,

उत्तर—जैनधर्म अनादिकालसें प्रसिद्ध है,

प्रश्नः—जैनलोक जगत्का स्वरूप किसतरे मानते हैं,

उत्तर—द्रव्यार्थिकनयके मतसें जैनलोक जगत्का स्वरूप शाश्वता, हमेशां प्रवाहसें ऐसाही मानते हैं, अनादिकालसें भरत ऐरवत क्षेत्रापेक्ष उत्कृष्ट हीनकालमुजब चढाव उतार स्वरूप चला आता है, अपर खेत्रापेक्षसदृश चलता है, कोई इस संसारकी सृष्टिकी रचना करनेंवालेंकों जैनी लोक नहीं मानते हैं,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रश्नः—अन्यमतवाले कहतेहे, कि जैनधर्मवाले सृष्टिकर्त्ता ईश्वरकों न मानते हैं, इससें नास्तिक है, सो जैनी लोक ईश्वर मानते हैं या नहिं,

उत्तर—जो जैनधर्मकों नास्तिककहतें हैं सो नास्तिक हो सक्के हैं (क्यूंकि) सर्वमतवाले अन्य अन्य प्रमाणसें अन्य ईश्वरकृत लोकरचना कहेतें हैं, (परन्तु) सत्यप्रमाणसें कोई ईश्वरकी करी सृष्टि सिद्ध नहिं हो सक्ती है (विचारना चाहिये) लोकरचना तो एक, (और) ब्रह्मा विष्णु महेश्वरादिक, ईश्वर रचनेंवाले बहुत हुए, इससें एकेक मतसें, एकैका मत झूठा होतां, सब झूठे हुवे (और) यही बात अंतमें सिद्ध हूई, कि जगत्‌रचना अनादि है, इससें जगत्कर्त्ता ईश्वर कोई नहिं (और) जो ईश्वर नाम धारके राग, द्वेषमें, मग्न होकर रातदिन जगत् विटंबणामें फस रहे हैं, आपसमे लडरहे हैं, (तथा) अठारे दूषणों करके सहित हैं, इसमाफक, चरित्र करनेवालोंकों जैनवाले देवगतिमें मानतें हैं, (और) जो ईश्वर, अनन्त अपना आत्मगुणांमें मग्न हैं, तथा, शांतिस्वरूपधारक हैं, रागद्वेषादिक अठारे दूषणोंरहित हैं, लोकालोक त्रिकालविषयपदार्थोंकों जाणनेंवाले हैं, संसारमें आवागमनरहित, हमेंशां सिद्धिस्थानमें विराजमान हैं, ऐसा ईश्वरकों जैनधर्मवाले ईश्वर मानतें हैं,

प्रश्नः—यदि जैनधर्मवाले ईश्वर मानते हैं, सो ईश्वरके कितने नाम हैं,

उत्तर—अनंतकालमें, अनंते तीर्थंकर परमात्मगुणपायके सि-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

द्धिस्थानककों प्राप्त हुए हैं, इस अपेक्षायें तो अनंत नाम हैं, (परन्तु) सर्वके गुणकी तुल्यतापणें समुच्चय, सत्यार्थ गुणयुक्त नाम १००८ हैं, सो हजार नामको स्तौत्र, रत्नसागर प्रथमभागमें लिखा है, (फेर) समुच्चय २४ नाम जैन ईश्वरका हेमकोशादिक ग्रंथमें प्रसिद्ध हैं (यथा) अर्हन् १ जिनः २ पारगत ३ त्रिकालवित् ४ क्षीणाष्टकर्म्मा ५ परमेष्ठ्य ६ धीश्वरः ७ शंभुः ८ स्वयंभु ९ भगवान् १० जगत्प्रभु ११ स्तीर्थंकर १२ स्तीर्थकर १३ जिनेश्वरः १४ ॥१॥ स्याद्वाद्य १५ भयदः १६ सर्वाः १७ सर्वज्ञः १८ सर्वदर्शि १९ कैवलीनौ २० देवाधिदेव २१ बोधिदः २२ पुरुशोत्तम २३ वीतराग २४ आप्ता ॥ २ ॥

प्रश्नः—जैनलोक अनादि अनन्तकालमें एक ईश्वर मानतें हैं (वा) अनन्त ईश्वर मानतें हैं,

उत्तर—एकभी मानतें हैं (और) अनेक भी मानतें हैं,

प्रश्नः—एक केसें मानतें हैं,

उत्तर—रागद्वेषरहित, परमात्मगुण, अक्षयसुखसंपदा, भाव सबके तुल्य होनेसें एक ईश्वरगुणयुक्त नाम मानतें हैं,

प्रश्नः—अनेक केसें मानतें हैं,

उत्तर—द्रव्य, क्षेत्र, कालभावकी, अपेक्षायें अनन्त सिद्ध भए, इससें अनन्त ईश्वर मानतें हैं,

प्रश्नः—जैनलोक कालचक्रका स्वरूप किसतरे मानतें हैं,

उत्तर—कालचक्रका दो भेद मानतें हैं, १ अवसर्पणी काल २ उत्सर्पणी काल,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रश्नः—अवसर्पणी काल किसकों कहेतें हैं (और) इसका क्या प्रमाण है, कितना भेद है,

उत्तर—दसक्रोडाक्रोड सागरोपमको अवसर्पणी काल होता है, इसका छ हिस्सा है, अर्थात्, जिसकों जैनी छ आरे कहतें हैं इस कालके छ आरोंमें अच्छी वस्तुवोंकी दिनदिन हानी होती चली जाती हैं,

प्रश्नः—उत्सर्पिणी काल किसकों कहेतें हैं, (और) क्या स्वरूप है, कितना प्रमाण है,

उत्तर—दश क्रोडाक्रोडी सागरोपमका एक उत्सर्पिणी काल होता है इसकाभी छ आरा है, इस कालके छ हिस्सोंमें दिनदिन अच्छी वस्तुवोंकी वृद्धि होती है, (तथा) एक सागरोपममें असं· ख्याता वर्ष होता है, (जब) उत्सर्पणी काल उतरे, तब अवसर्पणी कालसरू होवे (और जब) अवसर्पणी काल उतरे तब उत्सर्पणी काल सरू होवे, ऐसें वीस क्रोडाक्रोड सागरोपम प्रमाणें एक काल-चक्र होता है, अतीतकालमें, ऐसे कालचक्र अनंते व्यतीत होगए, (और) भविष्यतमें अनंते व्यतीस होवेंगें, (इसीमाफक) अनादि अनन्त कालतक इस जगत्रकी चढाव उतार व्यवस्था चलती रही ओर रहेगी,

प्रश्नः—अवसर्पणी उत्सर्पणी कालके, ६ आरोंका क्या नाम हैं, (और) क्या स्वरूप है, कितना प्रमाण है,

उत्तर—अवसर्पणी कालमें पहला आरा, सुखमसुखमा-चारक्रोडाक्रोडसागरोपमप्रमाण होता है, (इसकालमें) भरत·

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्षेत्रकी जमीन अत्यन्त सुन्दर बहुत रमणीक सोनेंके थाल समान *बराबर थी (और) इसमें मनुष्य तथा सर्व जीव जानवर बडे* सरलस्वभावी अल्प काम क्रोध मोह राग द्वेषवाले होते थे (प्रायें) नीरोग सरीर सुंदर रूपवान होते थे, दश जातिके कल्पवृक्षोंसें, अपनें खानेंपीनें वस्त्र घरादिकका सब मनोरथ पूरण करते थें, (और) एक लडका एक लडकी दोनुंका युगल जन्मते थे (और युगल पुरुष स्त्रीरूपसें जन्मतें थे वैसाहि उनोंके आपसमे संबंध होता था, और यह युगल धर्म अनादिसें हैं, इसलिये वह जब वे युवान अवस्थाकों प्राप्त होते थे (तब) युगल जनमे हुवे, आपसमें स्त्री भरतारका संबंध करलेते थे, अर्थात् युगलियोमें साथमे जनमे हुवाका भाई बेनका संबन्ध न होणेसें, स्त्री पुरुषकाहि संबन्ध होता था, जैनमतके प्रमाणसें तीनकोस प्रमाण जिनोंका शरीर होता था (और) तीन पल्योपम प्रमाण आऊखा होता था, जिनोंके दोयसैं छपन्न पृष्ट करंडके हाड होते थे, गुण पचासदिनतक अपना पुत्रादिककी पालना करते थे, जीवहिंसा, झूठ, चोरी आदिक पापकर्म विशेष नहिं करते थे, तीसरे दिन पीछे मटरकी दाल प्रमाण आहार करते थे, कल्पवृक्षोंहीमें सोरहते थे, युगल जोडे पिणगिणतीमें, (शेष) चतुस्पाद, पक्षी, पंचेंद्रियादि सर्व जातके जीव थे, परन्तु सर्व क्षुद्र नही थे, सरलस्वभावी थे, इक्षुप्रमुख सर्व रसाल वनोंमें आपसेंही उत्पन्न होते थे, (परन्तु) मनुष्योंके भोगमें नहिं आते थे, (निकेवल) उस कालके मनुष्य कल्पवृक्षोंकें दियेहुवे फल फूलोंका आहार करते थे, वस्त्र आभूषण पहनते थे, (इत्यादि) अवसर्पणी का-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लका पहेला और उत्सर्प्पिणीका छठा आराकी समान मर्यादा कही, अब दूसरो सुखमा नामें आरो, ये तीन क्रोडाक्रोड सागरोपम प्रमाणका था, इसमें मनुष्यतिर्यंचका दो पल्योपमका आऊखा, (और) दो कोशका शरीर था, बोरप्रमाणें दोदिन पीछे आहार करे, १२८ पांसली थी, (और) ६४ दिनपर्यन्त अपना पुत्र युगलकी पालना करे, कल्पवृक्ष सब प्रकारका मनोरथ पूरण करे, अन्तमें मरके देवगति जावे, (यह) अवसर्पणी कालका दूसरा आरा, (और) उत्सर्पणीका पांचमा आराकी मर्यादा कही ॥ २ ॥ तीसरो, सुखमदुखमानामें आरो, दो क्रोडाक्रोडसागरोपमप्रमाणें (इसमें) मनुष्यतिर्यंचका एक पल्योपमका आयु, (तथा) एक कोशको शरीर होय, एकान्तरे आमलाप्रमाणें आहार करे, ६४ पांशुलि हुवे ७९ दिनतक अपना युगल पुत्रादिककी पालना करे, कल्पवृक्ष सर्व मनोरथ पूरण करे, सरलपणासें मरके देवगतिकों प्राप्त होवे, (यह) अवसर्पणीका तीसरा आरा (और) उत्सर्पणीका चौथा आराकी मर्यादा कही ॥ ३ ॥ (चोथा) दुखम सुखमा नामें आरा, ४२ हज़ारवर्ष ऊणा, एक क्रोडाक्रोड सागरोपम प्रमाणें (इसमें) मनुष्य, तिर्यंचका, उत्कृष्टा एक पूर्व क्रोड वर्षका आयु, (तथा) पांचसैं धनुष्यप्रमाणें शरीर होवै, नित्य भोजन करे, (इसमें) युगलिया न होय, सर्व संसारी असिमसीकसी आजीवका कर्मका करनेवाला होय, (इससें) केई जीव, देवता मनुष्य तिर्यंच नारकी, ए चारुंहिगति जाणेंवाले होय, और केई जीव सर्व कर्म खपायके पांचमी मोक्षगतिकोंभी प्राप्त होवे, (यहां)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अवसर्पणीका चोथा आरा (और) उत्सर्पणीका तीसरा आराकी मर्यादा कही ॥ ४ ॥ (पांचमो) दुःखमा आरो, इकवीस हज़ार वर्षप्रमाणें (इसमें) मनुष्योंको उत्कृष्टो सात हाथप्रमाणें सरीर (और) १३० वर्षप्रमाणें आऊखो होय, (मरके) चारेइ गतिमें जावे (परंतु) सर्वकर्म खपायके कोई मोक्ष न जावे, (यह) अवसर्पिणी कालका पांचमा आरा, (और) उत्सर्पिणीका दूसरा आराकी मर्यादा कही ॥ ५ ॥ (छट्ठो) दुखमदुखमा नामें आरो, २१ हज्जार वर्षप्रमाणें (इसमें) मनुष्योंको उत्कृष्टो २० वर्षको आयु, (तथा) १ हाथको शरीर वैताढ्य पर्वतादिकका विलांमें रहनेवाले होय, धर्मकर्म करके रहित होय, सर्व, मनुष्य, क्रूरकर्मी, न्यायमार्गरहित, मरके प्राये नरकनिगोदादि दुर्गतिमें जावे, यह, अवसर्पिणी कालका छट्ठा आरा (और) उत्सर्पिणीका पहेला आराकी मर्यादा कही ॥ ६ ॥ इसतरे अवसर्पणी उत्सर्पणीका ६ आराकी मर्यादा जैनसिद्धान्तोंमें कहीहै,

प्रश्नः—६ आरेरूप अवसर्पणी (वा) उत्सर्पणी कालमें, कितने २ परमात्मा ज्ञानगुणयुक्त, जैनधर्ममें मुख्य, चतुर्विध संघ स्थापन करनेंवाले तीर्थंकर होतें हैं,

उत्तर—छ आरे रूप एकेक कालमे, २४ चौवीस तीर्थंकर भगवान् होतें हैं,

प्रश्नः—अभी प्रचलित कौनसा काल तथा कौनसा आरा है,

उत्तर—अभी अवसर्पणी कालका पांचमा आरा है,

प्रश्नः—ये अवसर्पणी कालका कौनसा आरातक युगलिया

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मनुष्य होता रहा (फेर) कौनसै प्रकारसें संसार संबन्धी नीति मर्यादा प्रवर्त्तन भई,

उत्तर—अवसर्पणी कालका तीसरा आरा, बहुतसा व्यतीत होनेंतक तो, असिमसिकर्मादिक रहित युगलिया मनुष्य, तिर्यंच होता रहा (इस उपरांत) दक्षण भरतार्ध मध्यखंडमें, सातकुलकर एक वंशमें उत्पन्न भए, कुलकर उसकों कहेतें हैं, (कि) जिणोंनें तिस तिसकाल मुजब, मनुष्योंके वास्ते नीतिमर्यादा बान्धी है, (और) पाठा फेरसें सप्तमनु कहेतें हैं, जंबूद्वीप पन्नतीके मतसें १५ कुलकर भी कहे हैं, इनोंसें मनुष्योंकी राजनीति आदि कितनीक नीतियें मनुष्य योग्य सामान्य मर्यादा बान्धी गई है, विशेष मनुष्योंकी मर्यादा प्रथम तीर्थपतिके आधीन है, वैही सर्वदा कालमे प्रवर्त्तते है,

प्रश्नः—किस प्रकारसें कुलकर उत्पन्न भये, (और) क्या क्या नीतिमर्यादा प्रवर्त्तन भई,

उत्तर—तीसरे आरे उतरतां, दशजातिके कल्पवृक्ष हीयमान कालके सबब अल्प फल देनेंवालें, रहगए, (तब) युगलक लोकोनें अपनें अपनें वृक्षोंका ममत्वकर लिया, जो कोई युगल, दूसरेका कल्पवृक्षके पास फलादिक कुछ मांगे तो आपसमें क्लेश करे, (इसवास्ते) युगल पुरुषोंके दिलमें विचार आया, (कि) कोई ऐसा पुरुष होय, सो सर्वका न्याय करे, इसीसमें एक युगलकों, एक बनके श्वेत हस्तीनें देखकर, अत्यंत प्रेमसें अपने स्कंधपर चढालिया (जब) युगल हाथीपर बैठा थका वनमें फिरनें लगा, (तब) और युगल लोकोनें विचारा, यह युगल सर्वमें बडा है, सो हाथीपर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चढा हुवा फिरता है, (इसवास्ते, इसकों अपना राजा न्यायाधीश बनाओ, ऐसा विचारके युगललोकोंने न्यायाधीशपणें स्थापन किया, इसका विमलवाहन नाम हूवा, (इसके) चन्द्रयशा नामें भार्या हुई, (इसनें) सर्व युगल लोकोंकों, जूदा जूदा कल्पवृक्ष बांटके दे दीये (जब) कोई संतोषरहित युगलिया, दूसरेके कल्पवृक्षसें कुछ मांगता तो दूसरा क्लेश करता हूवा उसकों साथ लेके राजाके पास आता (तब) विमलवाहन (हा) तुमनें यह क्या कामकिया, ऐसी हकारकी दंडनीति करता इससें अपराधी युगल डर जाता था (सो फेर) वैसा काम कभी न करता था इस प्रथम कुलकरका देहमान ९०० धनुषका हुवा (सो) युगल (तथा) हस्ती पिछले भवमें पश्चिममहाविदेहक्षेत्रमें वाणियापणें दोनुं भाइ हुए थे, (जिसमें) एक तो सरल था (और) दूसरा कपटी था (परन्तु) आपसमें स्नेह बहुतथा, कपटी जो कहेता (सो) सरल मानलेता था, अन्तमें सरल भाई मरके युगल मनुष्य हूवा, (और) कपटी मरके हाथी हूवा, (इससें) एकेक को देखनेंसें ईहापोह करतां जातिस्मरण ग्यानकों प्राप्त हूवा, (तब) स्नेहवस होकर हाथीनें भाईकों स्कंधेपर चढालिया, इसका विस्तारसंबन्ध आवश्यकसूत्र बृहद्वृत्तिसें जाणलेना, (इति प्रथम कुलकर संबन्ध) ॥ १ ॥ दूसरा कुलकर, विमलवाहनका पुत्र चक्षुसान् नामें कुलकर हूवा (तिसके) चन्द्रकांता नामे भार्या हूई (और) ८०० धनुषप्रमाण देहमान हूवा, इसके पिण पूर्ववत् हकारकी दंडनीति रही ॥ २ ॥ इति ॥ (तीसरा) यशोमान् नामें कुलकर हूवा (जिसके सरूपा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नामें भार्या हूई) (और) ७०० धनुषका देहमान हुवा, इसके थोडे अपराधमें हकारकी, विशेष अपराधमें (मा) ऐसा काम मत करो, ऐसी दूसरी मकारकी दंडनीति हूई, इससें सर्व युगल बहुत डरनें लगे ॥ ३ ॥ इति ॥ (चोंथा) अभिचन्द्रनामें कुलकर हूवा (जिसके) प्रतिरूपा नामें भार्या हूई (और) ६५० धनुषप्रमाण देहमान हूवा, इसके पिण हकार, मकार, की दंडनीति रही ॥ ४ ॥ इति ॥ (पांचमा) प्रशेनजित् नामें कुलकर हूवा, (जिसके) चक्षुस्मती नामें भार्या हूई, (और) ६०० धनुषप्रमाण शरीर हूवा, इसके सामान्यपणासें हकार, मकारकी दंडनीति रही, (और) विशेष अपराधीकों धिक्कारकी दंडनीति करी, जिसको धिक्कार कहे देता, सो युगल जाणता मेरा सर्वस्व हरलिया ॥ ५ ॥ इति ॥ छट्ठा मरुदेव नामें कुलकर हूवा, (इसके) श्रीकांता नामें भार्या हूई, इसका ५५० धनुषप्रमाणें शरीर हूवा, इसकी वखतमें तीनुं दंडनीति रही ॥६॥ इति ॥ सातमा नाभिनामें कुलकर हूवा, (इसके) मरुदेवी नामें भार्या हूई, इसका ५२५ धनुषका देहमान हूवा, इसकी वखतमें जघन्य अपराधीकों, हकार, कांइंक विशेष अपराधीकों, मकार, (और) उत्कृष्ट अपराधीकों, धिकार, इसीतरे तीनुं दंडनीति रही, (तथापि) दिन दिन हीन कालके सबब असंतोषी युगल बहुत होनें लगे, बहुतसे अपराध करनें लगे, तीनुं दंडनीतिका भय नहिं मानणें लगे, (इस वखतमें) नाभिकुलकरके, मरुदेवी भार्याकी कूखसें, चवदे स्वप्न सूचित श्रीऋषभदेव कुमार पुत्रपणें उत्पन्न हूवे, (ये) श्रीऋषभ देवकुमर क्रोडों देवतावोंके पूजनीक हूवे, (और) युवान अवस्थामें राज्यपदकों धारण करके

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संपूर्ण पुरुष, स्त्रीयोंकी कला (तथा) राज्यनीति ! धर्मनीति आदिककों प्रवर्त्तन करनेंवाले, प्रजापति, महादेव, ब्रह्मादि अनेक नामधारक, प्रथम ईश्वर, इसकालमें इस पृथिवीपर येही हूवे हैं (इसीतरे) सातकुल कर हूवे,

प्रश्नः—श्रीऋषभदेवस्वामी कहांसें आयके, मरुदेवी माताकी कूखमें उत्पन्न भए (और) कोण प्रकारसें देवताओंके पूजनीक, संपूर्ण कलाकों (तथा) धर्मनीतिकों प्रवर्त्तन करनेंवाले प्रथम ईश्वर भए ॥

उत्तर—५२ बोलगर्भित श्रीऋषभदेव स्वामीके अधिकारसें जाणना, वह श्रीऋषभदेव स्वामीका अधिकार इसी ग्रन्थके पूर्वार्धमें दीया है, सो वहांसें देखना, नमोस्तु भगवते श्रीपार्श्वनाथाय समस्तविघ्नव्यूहखंडनाय नमो नमः श्रीस्तंभणपार्श्वनाथाय, नमोस्तु भगवते श्रमणवर्द्धमानमहावीराय कर्महस्तिविदारणे सिंघाय, नमोस्तु त्रिपद्यै द्वादशांगबीजरूपायै, नमोस्तु श्रीसुधर्मादिसर्वअनुयोगधरेभ्यः, नमोस्तु श्रुताय नमोस्तु श्रुतदेवतायै नमोस्तु संघभट्टारकाय अपडिवाई गुणधारकाय, श्रमणसंघाय नमः नमोस्तु सम्यक् दर्शनादिचतुष्केभ्यः, नमोस्तु विनयादि सर्वसद्गुणेभ्यः इति श्रीखरतर सद्बिरुदालंकृते कोटिकाख्ये गच्छे श्रीजिनकीर्त्तिरत्नसूरिशाखायां क्रमात् तत्परंपरायां वरीवर्त्तति श्रीमज्जिनकृपाचन्द्रसूरयस्तेषामंतेवासी ज्येष्ठः समभवत्, विद्वच्छिरोमणिः श्रीमदानंदमुनिः तत् संगृहीते तस्याऽनुजेन उपाध्यायश्रीजयसागरेण संस्कार्ता ते श्रीजंगमयुगप्रधानश्रीमज्जिनदत्तसूरीश्वरचरिते श्रीमज्जिनचन्द्रसूरीश्वरादितत्संतानचरित्रवर्णनो नाम नवमः सर्गः समाप्तः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only